

FOREWORD.

Owing to the untimely death of Mr C D Dalal, M.A , the editor, this work is published for the present without its Introduction and Notes We are also aware that owing to the great pressure of other work that Mr Dalal had on his hands at the time he was editing this work, he could not correct the several mistakes that have crept in the text

Scholars of old Gujarati are only a few in number and those few are not free or prepared to undertake to complete this work just at present Hence this First Part of the work containing only the Text is sent out to the public with a promise that it will be followed soon with a Second Part which will contain a critical Introduction and Notes written by the veteran old Gujarati scholar Mr Keshav Harshad Dhruva, B A , of Ahmedabad.

10-4-20

J S KUDALKAR
Curator of State Libraries.

प्राचीनगुर्जरकाव्यसंग्रहः



अनुक्रमणिका.

पद्यसंग्रहः

	Page.
शेवंतगिरिराज ...	1
नेमिनाथचतुष्पदिका ...	8
छत्रसमालङ्कारयुक्तपद्य ...	11
समसाराज ...	27
सिद्धिभिरकाय ...	38
✓ जंजुसादिचरित ...	41
सप्तश्लोचिराज ...	47
कल्लुलीराज ...	59
साक्षिभरकव्य ...	62
दहामातृका ...	67
चर्चरिका ...	71
मातृकाचतुष्पद ...	74
सम्पत्त्वमार्गचतुष्पद ...	78
श्रीनेमिनाथकाय ...	83

गद्यसंग्रहः

आराधना ...	86
अतिचार ...	87
सर्वार्थार्थनमस्कारस्तवन ...	88
नवकारपद्यालपानम् ...	89
अतिचार ...	91
पृथ्वीचन्द्रचरित ...	93
शरतरपदावलीपदपदानि ...	131

APPENDICES.

					Page.
I	श्रीवस्तुपाठतीर्थपात्रावर्णनम्	1
II	रेवयक्पसंखेवो	8
III	उज्जयन्तस्तव	10
IV	उज्जयन्तमहातीर्थकल्प	12
V	रैवतकल्प	15
VI	अम्बिकादेवीकल्प	17
VII	श्रीगिरिनाथकल्प	19
VIII	Inscription of the Reign of Alapkhan in the temple of Sthambhana Pārsvanatha at Cambay	22
IX	Inscriptions on the Satrunjaya Hill pertaining Samarā's installation of the image of Ādīshvara	23
X	पेथडरास	24



प्राचीनगूर्जरकाव्यसङ्ग्रहः

प्रथमो भागः



रेवंतगिरिरासु



परमेसरतित्येसरह पयपंकय पणमेवि ।
 भणित्सु रासु रेवंतगिरे अंविकदिवि सुमरेवि ॥ १ ॥
 गामागरपुरवणगहणसरिसरवरि सुपणसु ।
 देवभूमि दिसि पच्छिमह मणहरु सोरठदेसु ॥ २ ॥
 जिणु तहिं मंडलमंडणउ मरगयमउडमहंतु ।
 निम्मलसामलसिहरभरे रेहइ गिरि रेवंतु ॥ ३ ॥
 तसु सिरि सामिउ सामलउ सोहगसुंदरसारु ।
 जाइवनिम्मलकुलतिलउ निवसइ नेमिकुमारु ॥ ४ ॥
 तसु सुहदंसणु दसदिसि वि देसदेसंतरु संघ ।
 आवइ भावरसालमणउ हलि रंगतरंग ॥ ५ ॥
 पोरुयाडकुलमंडणउ नंदणु आसाराय ।
 वस्तुपाल थरमंति तहिं तेजपालु दुइ भाय ॥ ६ ॥
 गुरजरधरधुरि धवलकि वीरधवलदेवराजि ।
 विहु बंधवि अवयारियउ तूमू दूसममाझि ॥ ७ ॥
 नायलगच्छह मंडणउ विजयसेणसूरिराउ ।
 उवणसिहि विहु नरपवरे धम्मि धरिउ दिहु भाउ ॥ ८ ॥
 तेजपालि गिरनारतले तेजलपुरु नियनामि ।
 कारिउ गढमढपवपवरु मणहरु धरि आरामि ॥ ९ ॥

तहि पुरि सोहिउ पासजिणु आसारायविहार ।
 निम्मिउ नामिहि निजजणणि कुमरसरोवरु फारु ॥ १० ॥
 तहि नयरह पूरवदिसिहि उग्रसेणगढडुगु ।
 आदिजिणेसरपसुहजिणमंदिरि भरिउ समग्गु ॥ ११ ॥
 बाहिरिगढ दाहिणदिसिहि चउरियवेहिविसालु ।
 लाडुकलहहियओरडीय तडि पसुठाइकरालु ॥ १२ ॥
 तहि नयरह उत्तरदिसिहि सालथंभसंभार ।
 मंडण महिमंडल सयल मंडप दसह उत्सार ॥ १३ ॥
 जोइउ जोइउ भवियण पेमि गिरिहि दुयारि ।
 दामोदरु हरि पंचमउ सुवन्नरेहनइपारि ॥ १४ ॥
 अगुण अंजण अंविलीय अंवाडय अंकुलु ।
 उंवरु अंवरु आमलीय अगरु असोय अहल्लु ॥ १५ ॥
 करवर करपट करुणतर करवंदी करवीर ।
 कुडा कडाह कयंव कड करव कदलि कंपीर ॥ १६ ॥
 वेपल्लु वंजल्लु वडल वडो वेडस वरण विडंग ।
 वासंतो वीरिणि विरह वंसियालि वण वंग ॥ १७ ॥
 सोंसमि सिंवलि सिरसमि सिंधुवारि सिरखंड ।
 सरल सार साहार सप सागु सिगु सिणदंड ॥ १८ ॥
 पल्लवफुल्लफुल्लसिय रेहइ ताहि वणराइ ।
 तहि उज्जिलतलि धम्मियह उल्लडु अंगि न माइ ॥ १९ ॥
 बोलावो संघटणीय कालमेघंतरपंथि ।
 मेलहविय तहिं दिढ घणीय वस्तपाल वरमंति ॥ २० ॥

(प्रथमं कण्डम्)

दुविहि शुद्धरदेसे रिउरायविहंडणु ।
 कुमरपालु भूपालु जिणसासणमंडणु ।
 तेण संठाविओ सुरठदंडाहिवो ।
 अंवरुओ सिरे सिरिमालकुलसंभवो ।
 पाज सुविसाल तिणि नठिय ।
 अंतरे धवल पुणु परव भराविय ॥ १ ॥

धनु सु धवलह भाउ जिणि पाग पयासिय ।
 बारविसोत्तरवरसे जसु जसि दिसि वासिय ।
 जिम जिम चडइं तडि कडणि गिरनारह ।
 तिम तिम ऊडइं जण भवणसंसारह ।
 जिम जिम सेउजलु अगिग पालाट ए ।
 तिम तिम कलिमलु सयलु ओहट्ट ए ॥ २ ॥
 जिम जिम वायइ वाउ तहि निज्झरसीपलु ।
 तिम तिम भवदुहदाहो तक्कणि तुट्टइ ।
 निचलु कोइलकलयलो मोरकेकारवो ।
 सुंमए महुयरमहुयुंजारवो ।
 पाज चडंतह सावयालोयणी ।
 लापारामु दिसि दीसए दाहिणी ॥ ३ ॥
 जलदजालववाले नीझरणि रमाउलु ।
 रेहइ उज्जिलसिहरु अलिकज्जलसामलु ।
 वहलवुहुधातुरसभेउणी ।
 जत्थ उलदलइ सोवन्नमइ मेउणी ।
 जत्थ दिप्पंति दिवो सही सुंदरा ।
 गुहिर वर गरुय गंभीर गिरिकंदरा ॥ ४ ॥
 जाइ कुंदु विहसंतो जं कुसुमिहि संकुलु ।
 दीसइ दस दिसि दिवसो किरि तारामंडलु ।
 मिलियनवलवलिदलकुसुमझलहालिया ।
 ललियसुरमहिवलयचलणतलतालिया ।
 मल्लिपधलकमलमपरंदजलकोमल ।
 विउल सिलवट्ट सोहंति तहिं संमला ॥ ५ ॥
 मणहरघणवणगहणे रसिरट्टसिय किंनरा । --
 गेउ मुहुं गायंतो सिरिनेमिजिणेसरा ।
 जत्थ सिरिनेमिजिणु अच्छप अच्छरा ।
 असुरसुरउरगकिंनरयचिज्जाहरा ।
 मउडमणिफिरणपिंजरियगिरिसेहरा ।
 हरसि आवंति बहुभत्तिभरनिज्जरा ॥ ६ ॥



सामियनेमिकुमारपयपंकयलंविउ ।
 धरधूल वि जिण धन्न मन पूरइ वंछिउ ।
 जो भव कोडाकोडि ।
 अञ्चु सोवहु घणु दाणु जउ दिज्जए ।
 सेवउ जडकम्मघणगंठि जउ तिज्जए ।
 तउ उज्जितसिहरु पाविज्जए ॥ ७ ॥
 जम्मणु जोव जीविय तसु तहिं कयत्थु ।
 जे नर उज्जितसिहरु पेक्कइ घरतित्थु ।
 आसि गुरजरधरय जेण अमरेसरु ।
 सिरिजयसिंघदेउ पवरु पुहवीसरु ।
 हणवि सोरठु तिणि राउ पंगारउ ।
 ठविउ साजणु दंडाहिं सारउ ॥ ८ ॥
 अहिणवु नेमिजिणिंद तिणि भवणु कराविउ ।
 निम्मलु चंदरु बिंवे नियनाउं लिहाविउ ।
 थोरबिक्कंभवायंभरमाउलं ।
 ललियपुत्तलियकलसकुलसंकुलं ।
 मंडपु दंडघणु तुंगतरतोरणं ।
 धवलिय वज्जिरुणझणिरिक्किंरुणिघणं ।
 इफारसपसहीउ पंचासीय वच्छरि ।
 नेमिभुयणु उद्धरिउ साजणि नरसेहरि ॥ ९ ॥
 मालवमंडलगुहमुहमंडणु ।
 भावडसाहु दालिधुग्वंडणु ।
 आमलसारसोवहु तिणि कारिउ ।
 किरि गयणंगण सुरु अवयारिउ ।
 अवरसिहरवरकलस झलहलइ मणोहर ।
 नेमिभुयणि तिणि दिट्ठट्ठ दुह गलइ निरंतर ॥ १० ॥

(द्वितीयं वडवम्)

दिसि उत्तर कम्मभीरदेसु नेमिदि उम्माहिंय ।
 अजिउ रतन दुह थंय गरुय संचाहिंय आविंय ॥ १ ॥

हरसवसिण घणकलस भरिवि ति न्हवणु करंतह ।
 गलिउ लेवमु नेमिविंबु जलधार पडंतह ॥ २ ॥
 संघाहिवु संवेण सहिउ नियमणि संतविउ ।
 हा हा धिगु धिगु मह विमलकुलगंजणु आविउ ॥ ३ ॥
 सामियसामलधीरचरण मह सरणि भवंतरि ।
 इम परिहरि आहार नियमु लइउ संघधुरंधरि ॥ ४ ॥
 एकवीसि उपवासि तामु अंबिकदिवि आविय ।
 पभणइ स पसन्न देवि जय जय सदाविय ॥ ५ ॥
 उट्टेविणु सिरिनेमिविंबु तुलिउ तुरंतउ ।
 पच्छलु मन जोएसि वच्छ तुं भवणि वलंतउ ॥ ६ ॥
 णइ वि अंबि"कंचण"बलाणइ ।
 "विंबु मणिमउ तहिं आणइ ॥ ७ ॥
 पढमभवणि देहलिहि देउ छुडि पुडि आरोविउ ।
 संघाहिवि हरिसेण तम दिसि पच्छलु जोइउ ॥ ८ ॥
 ठिउ निच्चलु देहलिहि देवु सिरिनेमिकुमारो ।
 कुसुमबुट्टि मिल्हेवि देवि किउ जइजइकारो ॥ ९ ॥
 वइसाहीपुंनिमह पुंनवतिण जिणु धप्पिउ ।
 पच्छिमदिसि निम्मविउ भवणु भवदुहतरु कप्पिउ ॥ १० ॥
 न्हवणविलेवतणीय वंछ भविणजण पूरिय ।
 संघाहिवि सिरिअजितुरतनु नियदेसि पराइय ॥ ११ ॥
 सयलवित्ति कलिकालि कालकलुसे जाणवि छाहिउ ।
 झलहलंति मणिविंबकंति अंबिकुरुं आइय ॥ १२ ॥
 समुदविजयसिचदेविपुत्तु जायवकुलमंडणु ।
 जरासिंधदलमलणु भयणभडमाणविहंडणु ॥ १३ ॥
 राइमईमणहरणु रमणु सिवरमणि मणोहरु ।
 पुनवंत पणमंति नेमिजिणु सोहगुसुंदरु ॥ १४ ॥
 वस्तपालि वरमंति भूयणु कारिउ रिसहेसरु ।
 अट्टावयसंमेयसिहरवरमंडपुमणहरु ॥ १५ ॥
 कउडिजकु मग्देवि दुह वि तुंगु पासाइउ ।
 धम्मिय सिरु धूणंति देव वलिवि पलोइउ ॥ १६ ॥

तेजपालि निम्मविउ तत्थ तिहुयणजणरंजणु ।
 कल्याणउ तउ तुंगु सुयणु लंघिउगयणंगणु ॥ १७ ॥
 दीसइ दिसि दिसि कुंडि कुंडि नोझरणउमालो ।
 इंद्रमंडपु देपालि मंत्रि उद्धरिउ विसालो ॥ १८ ॥
 अइरावणगयरायपायमुद्दासमठंकिउ ।
 दिट्ठु गयंदमु कुंड विमलुनिज्झरसमलंकिउ ॥ १९ ॥
 गयणंगं जं सयलतित्थअवयारु भणिज्झइ ।
 पक्कालिवि तहि अंगु दुक्क जलअंजलि दिज्झइ ॥ २० ॥
 सिंदुवारमंदारकुरवककुंदिहि सुंदरु ।
 जाइजूइसयवस्तिविद्धिफलेहि निरंतरु ॥ २१ ॥
 दिट्ठ य छत्रसिलकडणि अंबवणु सहसारामु ।
 नेमिजिणेसरदिक्कनाणनिच्चाणह ठामु ॥ २२ ॥

(तृतीयं कव्यम्)

गिरिगरुयासिहरि चडेवि अंबजंवाहिं वंबालिउं ए ।
 संमिणी ए अंबिकदेविदेउलु दीट्ठु रम्माउलं ए ॥ १ ॥
 वज्जइ ए तालकंसाल वज्जइ मदल गुहिरसर ।
 रंगिहिं नचइ वाल पेखिवि अंबिकमुहकमलु ॥ २ ॥
 सुभकरु ए ठविउ उच्छंगि विभकरो नंदणु पासिक ए ।
 सोहइ ए ऊजिलसिंगि सामिणि सोहसिंघासणी ए ॥ ३ ॥
 दावइ ए दुक्कहं भंगु पूरइ ए वंछिउ भविद्यजण ।
 रक्कइ ए चउविट्ठु संघु सामिणि सोहसिंघासणी ए ॥ ४ ॥
 दस दिसि ए नेमिक्कुमारि आरोही अवलोइउं ए ।
 दीजई ए तहि गिरनारि गयणंगणु अवलोणासिहरो ॥ ५ ॥
 पहिलइ ए सांघकुमारु बीजइ सिहरि पज्जून पुण ।
 पणमइं ए पामइं पारु भविद्यण भीसण भवभमण ॥ ६ ॥
 ठामि ठामि रयणसोवन्न चिंन जिणेसर तहिं ठविय ।
 पणमइ ए ते नर धन जे न कलिकालि मलमयलिया ए ॥ ७ ॥
 जं फलु ए सिहरसमेयअट्टावयनंदीसरिहिं ।
 तं फलु ए भवि पामेइ पेखेविणु रेवंतसिहरो ॥ ८ ॥

गहगण ए माहि जिम भाणु पञ्चयमाहि जिम मेरुगिरि ।
 त्रिहु भुयणे तेम पहाणु तित्थमाहि रेवंतगिरि ॥ ९ ॥
 धवलधय चमर भिंगार आरत्ति मंगलपईव ।
 तिलय मडड कुंडल हार मेघाडंबर जावियं ए ॥ १० ॥
 दियहिं नर जो पवर चंद्रोय नेमिजिणेसरवरभुयणि ।
 इह भवि ए भुंजवि भोय सो तित्थेसरसिरि लहइ ए ॥ ११ ॥
 चउविहु ए संघु करेइ जो आवइ उज्जितगिरे ।
 दिविस बहू रागु करेइ सो मुंचइ चउगइगमणि ॥ १२ ॥
 अठविह ए ज्ञय करंति अठाई जो तहिं करइ ए ।
 अठविह ए करम हणंति सो अठभवि सिज्झइ ए ॥ १३ ॥
 अंबिल ए जो उपवास एगासण नीवी करहं ए ।
 तसु मणि ए अच्छई आस इहभव परभव विवहपरं ॥ १४ ॥
 पेमिहि मुणिजण अन्नह दाणु धम्मियवच्छलु करहं ए ।
 तसु कही नहीं उपमाणु परभाति सरण तिणउ ॥ १५ ॥
 आवइ ए जे न उज्जिति घर धरइ धंधोलिया ए ।
 आविही ए हीयह न जंति निष्फलु जीविउ सासुतणउं ॥ १६ ॥
 जीविउ ए सो जि परि धनु तासु संमच्छर निच्छणु ए ।
 सो परि ए मासु परि धनु वलि हीजइ नहि वासर ए ॥ १७ ॥
 जहिं जिणु ए उज्जिलठामि सोहगसुंदरु सामलु ए ।
 दीसइ ए तिहणसामि नयणसंलूणउं नेमिजिणु ॥ १८ ॥
 नोद्धरण चमर ढलंति मेघाडंबर सिरि धरीइं ।
 तित्थह एसउ रेवंदि सिंहासणि जयइ नेमिजिणु ॥ १९ ॥
 रंगिहि ए रमइ जो रासु सिरिविजयसेणिस्सरि निम्मविउ ए ।
 नेमिजिणु तूसइ तासु अंविक् पूरइ मणि रली ए ॥ २० ॥

(चतुर्थ कडवम्)

॥ समस्तु रेवंतगिरिरासु ॥

नेमिनाथचतुष्पदिका

(सोहगसुंदर घणलाघनु सुमरवि सामिउ सामलवनु ।
 सखि पति राजल चडि उत्तरिय वारमास सुणि जिम वज्जरिय ॥ १ ॥
 नेमिकुमरु सुमरवि गिरनारि सिद्धी राजल कन्नकुमारि ॥ आंकिणी ॥
 श्रावणि सरवणि कहुयं मेहु गज्जइ विरहिरि झिज्जइ देहु ।
 विज्जु झवकइ रक्खसि जेव नेमिहि विणु सहि सहियइ केम ॥ २ ॥
 सखी भणइ सामिणि मन झूरि दुज्जणतणा म वंछित पूरि ।
 गयउ नेमि तउ विणठउ काइ अछइ अनेरा वरह सयाइ ॥ ३ ॥
 बोलइ राजल तउ इहु वयणु नत्थी नेमिसमं वररयणु ।
 धरइ तेजु गहगण सवि ताव गयणि न उग्गइ दिणयरु जाव ॥ ४ ॥
 भाद्रवि भरिया सर पिक्खेवि सकरुण रोअइ राजलदेवि ।
 हा एकलडी मइ निरधार किम ऊवेपिसि करुणासार ॥ ५ ॥
 भणइ सखी राजल मन रोइ नीठुरु नेमि न अप्पणु होइ ।
 सिंचिय तरुवर परि पलवंति गिरिवर पुण कड डेरा हुंति ॥ ६ ॥
 साचउं सखि वरि गिरि भिज्जंति किमइ न भिज्जइ सामलकंति ।
 घण वरिसंतइ सर फुटंति सायरु पुण घणुओइ दुलित्ति ॥ ७ ॥
 आसोमासह अंसुप्रवाह राजल मिल्हइ विणु नमिनाह ।
 दहइ चंदु चंदणहिमसीउ विणु भत्तारह सउ वि वरीउ ॥ ८ ॥
 सखि नवि खीना नेमिहिरेसि मन आपणपउं तउं खय नेसि ।
 जिणि दिक्खाडिउ पहिलउं छेहु न गणिउ अट्टभवंतरनेहु ॥ ९ ॥
 नेमि दयालू सखि निरदोसु कीजइ उग्रसिणऊपरि रोसु ।
 पसुयभराविउ भूकउ वाहु मुहु प्रियसरिसउ कियउ विहाहु ॥ १० ॥
 फत्तिग क्षिप्तिग उगइ संझ रजमति झिझिउ हुइ अतिझंझ ।
 राति दिवसु अछइ विलवंत बलि बलि दय करि दयकरि कंन ॥ ११ ॥
 नेमितणी सखि भूकि न आस कायरु भग्गउ सो घरवास ।
 इमइ इमी सनेहल नारि जाइ कोइ छंटवि गिरनारि ॥ १२ ॥
 कायरु किम मखि नेमिजिणंदु जिणि रिणि जित्तउ लकु नरिंदु ।
 फुरइ सासु जा अग्गलि नास ताव न मिल्हउं नेमिहि आस ॥ १३ ॥

मगसिरि मगु पलोअइ बाल इणपरि पभणइ नयणविसाल ।
 जो मह मेलइ नेमिकुमार तसुणी वेल बहउ सचिवार ॥ १४ ॥
 एहु कदाग्रहु तउ सखि मिलिह करिसि काइ तिणि नेमिहि हिल्लि ।
 मंडि चडाविउ जो किर मालि हे हे कु करइ दोहणकालि ॥ १५ ॥
 अठभव सेविउ सखि मह नेमि तसु ऊमाहउ किम न करेमि ।
 अवगन्नेसइ जइ मह सामि लग्गी अछिसु तोइ तसु नामि ॥ १६ ॥
 पोसि रोस सवि छंडिवि नाह राखि राखि मह मयणह पाह ।
 पडइ सोउ नवि रयणि विहाइ लहिय छिह मवि दुख अमाइ ॥ १७ ॥
 नेमि नेमि तू करती मुद्धि जुव्वणु जाइ न जाणिसि सुद्धि ।
 पुरिसरयणभरियउ संसारु परणि अनेरउ कुइ भत्तारु ॥ १८ ॥
 भोली तउ सखि खरी गमारि वरि अच्छंतइ नेमिकुमारि ।
 अन्नु पुरिसु कुइ अप्पणु नटइ गइवरु लहिय कु रासभि चडइ ॥ १९ ॥
 माहमासि माचइ हिमरासि देवि भणइ मह प्रियलइ पासि ।
 तइ विणु सामिय दहइ तुसारु नयनवमारिहि मारइ मारु ॥ २० ॥
 इहु सखि रोइसि सहु अरन्नि हत्थि कि जामइ धरणउ कन्नि ।
 तउ न पत्ती जिसि माहरी माइ सिद्धिरमणिरत्तउ नमि जाइ ॥ २१ ॥
 कंति वसंतइ हियडामाहि याति पत्तीजउं किमह लसाइ ।
 सिद्धि जाइ तउ काइत बीह सरसी जाउ त उग्रसेणधीय ॥ २२ ॥
 फागुण चागुणि पन्न पडंति राजलङ्घुकि कि तरु रोयंति ।
 गन्धि गलिवि हउं काइ न मूय भणइ विहंगल धारणिधूय ॥ २३ ॥
 अजिउ भणिउ करि सखि विम्मासि अछइ भला वर नेमिहि पास ।
 अनु सखि मोदक जउ नवि हुंति छुहिय सुहाली कि न रूचंति ॥ २४ ॥
 मणह पासि जइ बहिलउ होइ नेमिहि पासि तनलउ न कोइ ।
 जइ सखि वरउं त सामल धीरु घणविणु पियइ कि चातकु नीर ॥ २५ ॥
 चैत्रमासि यणसइ पंगुरइ वणि वणि कोयल दहका करइ ।
 पंचवाण करि धनुष घरेवि येअइ मांडी राजलदेवि ॥ २६ ॥
 जुइ सखि मानउ मासु वसंतु इणि मिलिजइ जइ हुइ कंतु ।
 रमियइ नय नय करि मिणगारु लिजइ जीवियजुव्वणमारु ॥ २७ ॥
 सुणि सखि मानिउ मुधु परिणयणु नवि ऊपरि थिउ वंध्यवयणु ।
 जइ पडियअइ चुपइ नेमि जीविय जुव्वणु जलणि जलेमि ॥ २८ ॥

वइसाहह विहसिय घणराइ मयणमित्तु मलयानिलु वाइ ।
 फुटि रि हियडा माझि वसंतु विलवइ राजल पिक्किउ कंतु ॥ २९ ॥
 सन्वी दुक्क घोसरिवा भणइ संभलि भमरउ किम ग्गण्णुणइ ।
 दीस पंच थिरु जोन्वणु दोइ खाउ पियउ विलसउ सहु कोइ ॥ ३० ॥
 रमणि पसंसइ राजल कन्न जीह कंतु वसि ते पर धन्न ।
 जसु प्रिउ न करइ किमइ मुहाडि सा हउं इक्क ज भुंडनिलाडि ॥ ३१ ॥
 जिह्म विरलु जिम नप्पइ तरु घणविओगि सुसियं नइप्पूरु ।
 पिक्किउ फुल्लिउ चंपइविल्लि राजल मूछी नेहगहिल्लि ॥ ३२ ॥
 मूछी राणी हा सखि धाउं पडियउ खंडइ जेवडु घाउ ।
 हरिय मूछ चंदणपवणेहिं सखि आसासइ प्रियवयणेहिं ॥ ३३ ॥
 भणइ देवि विरती संसार पडिणि पडिखि मइ जादवसार ।
 नियपडिवन्नउं प्रभु संभारि मइ लइ सरिसी गढि गिरिनारि ॥ ३४ ॥
 आसाढह दिहु हियउं करेवि गज्जु विज्जु सवि अवगन्नेवि ।
 भणइ वयणु उग्रसेणह जाय करिस्तु धम्मु सेविस्तु प्रियपाय ॥ ३५ ॥
 मिलिउ सखी राजल पभणंति चिणय जेम नमिरिय ग्वज्जंति ।
 अउगी अच्छि सखि झखि मन आल तपु दोहिल्लउं तउं सुकुमाल ॥ ३६ ॥
 अठ भव विलसिउ प्रियह पसाइ किमइ जीवु सखि सुख न धाइ ।
 हिव प्रिय सरिसउं जीविय मरण इण भवि परभवि निमि जु सरणु ॥ ३७ ॥
 अधिकु मासु सवि मासहि फिरइ छहरितुकेरा गुण अणुहरइ ।
 मिलिवा प्रिय ऊवाहुलि इय सउ मुकलाविउ उग्रसेणधूय ॥ ३८ ॥
 पंच सखीसइ जसु परिवारि प्रिय ऊमाही गइ गिरिनारि ।
 सखीसहित राजल गुणरासि लेइ दिक्क परमेसरपासि ॥ ३९ ॥
 निम्मल केवलनाणु लहेवि सिद्धी सामिणि राजलदेवि ।
 रयणसिहसैरि पणमवि पाय वारइ मास भणिया मइ भाय ॥ ४० ॥
 नेमिकुमरु सुमरवि गिरिनारि सिद्धी राजल कन्नकुमारि ।



उवएसमालकहाणयछप्पय

छप्पयछंद

विजय नरिंद जिणिंदवीरहत्थिहिं वय लेविणु ।
 धम्मदासगाणि नामि गामि नयरिहिं बिहरइ पुणु ।
 नियपुत्तह रणसीहराय पडिवोहणसारिहिं ।
 करइ एस उवएसमालजिणवयणवियारिहिं ।
 सयपंचन्यालगाहारयणमणिकरंड महियलि मुणउ ।
 सुहभावि सुद्ध सिद्धंतसम सवि सुसाहु सावय सुणउ ॥ १ ॥
 रिसहनाह निरहार वरिस बिहरिउ अपमत्तउ ।
 वडमाण छम्मास करइ तप गुणहि निरुत्तउ ।
 अवर वि जिणवर दिक्क लेवि तव तवइ सुनिम्मल ।
 तिणि कारणि उपदेशमाल धुरि तप किय बहुफल ।
 नियसत्तिसारि अणुसारि इणि तपआदर अहनिस्सि करउ ।
 भो भविय भावि जम्मणमरणदुहसमुद दुत्तर तरउ ॥ २ ॥
 सव्व साहु तुम्हि सुणउ गणउ जग अप्पसमाणउ ।
 कोह कह वि परिहरउ धरउ समरस संपराणउ ।
 तिहुयणगुरु सिरिवीर धीर पण धम्मधुरंधर ।
 दासपेसदुव्वयण सहइ घणदुसह निरंतर ।
 नरतिरियदेवउवसग्ग बहु जह जगगुरु जिणवर खमइ ।
 तिम खमउ खंति अग्गलि करी जेम्म रिउदलवल नमइ ॥ ३ ॥
 सव्व सुणइ जिणवयण नयणउल्हासिहिं गोयम ।
 जाणइ जइ वि सुयत्थ तह वि उच्छइ पहु कहु किम ।
 भइकचित्त पवित्त पढम गणहर सुयनाणी ।
 न करइ गव्व अपुव्व करवि मनि मन्नइ वाणी ।
 छंडीइ मान ज्ञानहतणउ विणउ अंगि इम आणीइ ।
 गुरुभत्ति कह वि नवि मिल्हीइ ग्रंथकोडि जइ जाणीइ ॥ ४ ॥
 दहिवाहणनिवधूय वीरजिणपढमपवत्तणि ।
 चंदनवाल विसाल गुणिहिं गज्जइ गुहिरप्पणि ।

अह्निसि रायकुंयारिस्सहस सेवइं पय भत्तिहिं ।
 जाणइ नाणनिहाण माण पुण नाणइ चित्तिहिं ।
 दिणदिक्खि देक्खि आवतु डमक साधु सा ऊठि करी ।
 अभिगमण नमण वंदण विणय सुणइ वयण आणंदभरी ॥ ५ ॥
 वाणारसिनयरीनरिंद नामिहिं संवाहण ।
 पुर अंतेउर पवर अवर ह्य गय बहु साहण ।
 कत्तासहस सुख अछइ पुण पुत्त न इक्खय ।
 राय पत्त पंचत्त लच्छि लिवइ रिउ दुक्खय ।
 नेमित्तिवयणि राणीउयरि कुंयर जाणि पट्ठिहिं चविउ ।
 तिणि अंगवीरि अरि त्रासुवी रज्जबंध सह राहविउ ॥ ६ ॥
 कियसिंगारउदार अंग आरीसइ पिक्खइ ।
 पाणी पडी मुंद्री सयल तणु तिणिपरि दिक्खइ ।
 अंतेउरआवासि पासि भववासि विरत्तउ ।
 भरहेसर वरझाण नृण केवल संपत्तउ ।
 एउ चक्खवट्ठि विसयारसिहिं रमइ रंगि जणु इम गणइ ।
 तसु अप्पकज्ज अप्पिहिं सरिउं किं परजणजाणावणइ ॥ ७ ॥
 सेणिय करइ पसंस दुमुहदुच्चवणि निवारइ ।
 रायरिसि कासग्गि रहिउ रणि अरिअण मारइ ।
 सिरककज्ज सिरि हत्थ घट्ठि संजम संभालइ ।
 मनिहिं बद्ध बहु पाप आप आपिहिं पक्कालइ ।
 गति कहइ वीर सत्तम नरय मगहराय अचरिज भयउ ।
 तिणि समइ देव जय जय भणइं प्रसनचंद केवलि जयउ ॥ ८ ॥
 भरहसरिसु बल झुज्झि बुज्झ संजम अणुसरयु ।
 कुण वंदइ लहुभाय ठाय तिणि कासग्ग करयु ।
 इह ऊपानं नाण माण धरि वच्छर रहियु ।
 सहइ भुक्क बहु दुक्क तह वि न हु केवल लहियु ।
 नियवहिनिबंभिसुंदरिवयणि मयमयगल जव परिहरइ ।
 रिसहेसरनंदणवाहुबलि सयल कज्ज तक्कणि सरइ ॥ ९ ॥
 कहिय ईदि अतिरूप सुणिय सुर वंभणवेसिहिं ।
 पुहवि पत्त मज्जणइ रूप पेक्खइं सुविसेसिहिं ।

कियसिणगार सणकुमार नरनाह निरंतरु ।

हक्कारइ अत्थाणि जाणि आवि देसंतरु ।

खणि देहि हाणि इम वयण सुणि रज्ज छंडि संजम ग्राहिउ ।

सयसत्त वरिस चारित्तधर सहइ रोग लब्धिहिं सहिउ ॥ १० ॥

करइ रज्ज कंपिल्लनयरि छल्लखंडनरेसर ।

जाइसमरणि जाणि पुन्वभवबंधव मुणिवर ।

वोहइ बहु उवएस सहसि पुण तोइ न गुज्झइ ।

भोग भवंतरि बद्ध तिण विसयारस मुज्झइ ।

सो बंभदत्त बंभणि किउ अंध अधिक पातग करी ।

संपत्तउ सत्तउ सत्तमनरगि सु जि साधु पत्त सिद्धहं पुरी ॥ ११ ॥

सेणियकुलि कोणियनरिंदसुय निवइ उदाइय ।

पाडलिपुरि गुरुभत्त रत्त पोसइसामाइय ।

खत्तियपुत्त जाणि तिणि देसह कट्टिउ ।

उज्जेणि पज्जोयराय ओलगइ अणिट्ठिउ ।

इणि वयरि अवर अलहंत छल वरिस वार व्रत धारयुं ।

तिणि दुट्ठि तह वि अवसर लहवि निव उदाइ निसि मारयु ॥ १२ ॥

चंपापुरि सुंनार नारिसयपंचह सामी ।

सासिमत्त अहरत्ति गेह नवि छंडइ कामी ।

तिणि मारी इक नारि अवरनारिहिं सो मारीउ ।

पढम भज्ज नररूपि विप्पकुलि सो पुण नारीउ ।

सयपंच भज्ज जे चोर तस घरणि इकु सा नारि हूय ।

पहुवीरपासि पुच्छइ सु नर जा सा सा सा विप्पधूय ॥ १३ ॥

कोसंबी ससि सूर चीर बंदइ सविमाणय ।

मिग्गवइ महासत्ति जंत चंदण नवि जाणइ ।

निसि एकल्ली जाइ पाइ लग्गेवि ग्वभावइ ।

पडिवज्झइ नियदोस रोस मिल्हइ मिल्हावइ ।

सुहभावि शुद्ध केवल भयु भुजग विनाणिहि जाणियउ ।

जिम पवत्तणी स भवपार गय विनय अंगि तिम आणियउ ॥ १४ ॥

जंबुकुमार विलासभवणि पडिवोहइ भज्झइ ।

प्रभव पंचसयजुत्त पत्त तहिं परधणकज्झइ ।

कणयनचाणुंकोडि छोडि व्रत वंछइ सुहमणि ।

तं पिक्खवि तसु वयणि सयल पडिबुज्झइ तक्खणि ।

सगवीसअधिकसयपंचसिउं रायग्गिहि संजम लयउ ।

सो दूसमि पंचमगणहरह सोस चरिमकेवलि भयउ ॥ १५ ॥

सुंसुमरागिहिं रत्त पत्त रायग्गिहिनयरिहिं ।

दात्त चिलाइपुत्त जुत्त घणघरि बहुचोरिहिं ।

कुंयरि करीय करि नट्ट दुट्ट अडविहिं अणुसरिउ ।

वाहर पत्तउ पुट्टि सिट्ठि पुत्तिहिं परिवरिउ ।

सो रिक्खि दिक्खि त्रिहु अक्षरिहिं खगसीस छंडइ करम ।

कीडियहं कट्ठि अडइ दियसि सहरसारि दोसइ परम ॥ १६ ॥

जायवपुत्त जिणिंदसीस दंडण गुणजुग्गह ।

अंतराय जाणिइ लेइ नियलद्धि अभिग्गह ।

वारवई छम्मास भमइ गुणि रमइ समिद्धउ ।

भुक्क दुक्क बहु सहइ लहइ आहार न सुद्धउ ।

मोदफसीहकेसरसदिय कर्म कूटि केवल कलिउ ।

संपत्त सिद्धि संपत्ति सुह तपतरु इम पुप्फिय फलिउ ॥ १७ ॥

हुंति जि पंडियपवर अवरदुव्वयणि न कुप्पइ ।

खंदगमरिसुसीस जेम आपार न लुप्पइ ।

२ पालयकयउवसग्ग लग्ग मण तीहं सज्झाणिहिं ।

जंत्तिहिं जीविय चत्त पत्त सवि सिद्धह ठाणिहिं ।

सो अग्गिदट्ठ नरगिहिं गयउ वाडव भव भमिसिइ घणउ ।

भो भविय भावि इम कोह अरि खंतिग्गि हेलां हणउ ॥ १८ ॥

पुञ्जइ सुरवर पाय राय नितु नमइं निरग्गल ।

तपि सिज्झइं नवनिद्धि सिद्धि सवि सरइं समग्गल ।

तपह लेस हरिणसवलह जिम जगि जस होवइ ।

न कुल्लम न प्पसिद्धि रिद्धि नवि तसु कुड जोवइ ।

निंदुक्क जरु पपत्तलि लुल्लइ बहुवंभण वोहिय यलिहिं ।

कोसलियपुयपरिणीनि जीय भजीय सुद्धि अच्छिपकुलिहिं ॥ १९ ॥

एसु माटुआचारसार जइ लोभि न दुल्लइ ।

यपरसामि संपत्त नयरि पाटल सम तुल्लइ ।

सुणवि तासु गुणवत्त रत्त धणसिद्धिकुमारी ।
 कणयकोडिसंजुत्त पत्त सासइं वरनारी ।
 गुरुरयणवयणपडिवोह सुणि सुद्धसीलसंजमि रहि ।
 जिम तेणि मुक्क तिम मुक्कीड रमणि रयणकोडिहिं सही ॥ २० ॥
 नंदिसेण दोहग्गनडिउ निद्धणवंभणसुय ।
 भवविरत्त चारित्त गहवि तव तवइ अचब्भुय ।
 वेयावच्चपसंस इंदकियकसिहिं पहुत्तउ ।
 बंधिय अंति नियाण सग्गि सत्तमि सो पत्तउ ।
 दसचउरसारनरखयरधूयसहसबहुत्तरिमणिवर ।
 सोहग्गसार वसुदेव ह्य हरिकुल वंसपयासकर ॥ २१ ॥
 पत्त दिवसि चारित्त कन्हलहुवंधव रयणिहिं ।
 गयसुकुमाल मसाणि रहिउ कासग्गि जिणवयणिहिं ।
 वंभणि वंधवि पालि सीसि वइसानर दिद्धउ ।
 सिरह सरिस दुक्कम्म दहवि सुणि तरुणि सिद्धउ ।
 तस दुट्ठदुरियभारभूरिय उयर फुट्ट नरय गमह ।
 जिम सहिउं तेणि तिम संसहु लहु लच्छि सुपरक्कमह ॥ २२ ॥
 थूलभइ गुरुवयणि कोसवेसाहरि पत्तउ ।
 चित्तसालि चउमासि रहिउ रसविगइनिरत्तउ ।
 पुव्ववेर संभारि समर समरंगणि जित्तउ ।
 जिणसासणि जयवंत सुहड सुपरिहिं विदित्तउ ।
 ग्वरग्वग्गधारसिरि संचरिउ सरिउ सीह जिम इक्कमन ।
 जे सीलभाव दुद्धर धरइं ते सुसाहु ते धन्न धन ॥ २३ ॥
 तवसी इक्क उपकोसगेहि गिउ गुरु अयमन्निय ।
 थूलभइसुणिसरिसु करिसु तव इम मनि मन्निय ।
 अत्थलाभ सुणि वयण रयणकंवल भणि चहइ ।
 सहवि अयत्थ सुवत्थ आणि वेसाकरि मिल्लइ ।
 चंपेवि ग्वालि पडिवोहिउ सुगुरुपामि पत्तउ भणइ ।
 निंदीइ लोकि सो गुरुवयण अप्पमाण इह जो कुणइ ॥ २४ ॥
 गुणिअणसरिसउं गव्व म करि भूरग्व मच्छरि धमि ।
 न हु निव्वडइ समत्थ जइ वि गहइ गयमरकसि ।

सुहृदभणी संभृतविजय दुक्कर ति पसंसिय ।
 तसु सीसिहिं पुण थूलभइसुणिवरगुण विंसिय ।
 तिणि कम्मि कोसवेसिहिं नडिऊ चडिउ हत्थ दुज्जणतणइ ।
 अपकित्ति अलिय अज्ज चि अजस महिमंडलमाहि स्थाझणइ ॥ २५ ॥
 म करउ मच्छर माण जाण सरिसउ जगि कोइ ।
 पूरउ पुण्य प्रभावि पावि पुण हीणउ होइ ।
 बाहुसुबाहु सुसाहु सुणवि गुण किउ मनि मच्छर ।
 तिणि हीणत्तण पत्त पीढमहपीढिहिं दुहकर ।
 परजम्मि बंभिसुंदरि सुधूय महि महिला महियलि सुणउ ।
 सिरिरिसहभरहवाहुबलिहिं त्रिहुं प्रभाव पुन्नहतणउ ॥ २६ ॥
 अणगल नीर विपार सुहम जीवाइअरक्कण ।
 इण कारणि बहुकट्ट अप्पफल कहइ वियक्कण ।
 छट्ठिहिं सट्ठिसहस्स वरिस तप तपइ अज्झानिहिं ।
 पारण पुण इक्कीसवारजलधोइयधानिहिं ।
 सो तामलि रिसि एरिस तपी मास दुन्नि अणसणि सरिउ ।
 ऊपात्त इंद्र ईसाणि तिणि सुक्कमग्ग न हु अणुसरिउ ॥ २७ ॥
 कंवलरयणविनाणि जाणि जग उत्तमचंगिम ।
 नरवरपिक्कणि जाइ माइ पुत्तह पभणइ इम ।
 आवि इक्क खण पुत्त पत्त सेणिय तुह मंदिर ।
 लेउ क्रियाणउं माइ ठाइ ठावउ जिणि तिणि परि ।
 न क्रयाणउं कुइ एउ सामि तुम्ह सालिभइ य वयण सुणि ।
 भववासविरत्त चरित्त लिइ छंढि सुक्क सहु कणयमणि ॥ २८ ॥
 अयवंतीसुकुमाल नयरि उज्जेणि पसिद्धउ ।
 नलिणीगुलमविचार सुणवि तक्कणि पडिबुद्धउ ।
 अज्जसुद्धत्थिमुण्हत्थि वय हेत्थि मत्ताण्हिं ।
 कासगि रहिउ सीयालि खड्ड मण लग्गु विमाण्हिं ।
 सुहझाणि ठाणि तिणि सुर हुओ रमणि वत्तिसे व्रत लिउ ।
 तसु नंदणि तिणि धानकि पछइ महाकालदेउल किउ ॥ २९ ॥
 रायगिहिं मेयज्ज भज्जनववर विवहारिउ ।
 पुब्बमित्त सुरि वोहि दिक्क दुक्किहिं लेवारिउ ।

विहरंतउ तिहिं पत्त दुट्टसोनारह मंदिरि ।

क्रौंचि कणय जब खड्ड वड्ड वड्डउ तिणि तस सिरि ।

दृढघाह दिट्ठि दुइ नीकलीय ढलिय धरणि निचलु भयउ ।

तस पंग्विप्राण रक्षा करी धरी ध्यान सिद्धिहि गयउ ॥ ३० ॥

धणगिरिघरणिमुनंदउयरि जायउ जाईसर ।

छम्मासिउ पिउपासि वयर संपत्तउ वयधर ।

तस समीवि मुणिकज्जि गुरिहि वायण अणुजाणीय ।

धन्न सीहगिरिसीस जेहिं मन्निय इय वाणीय ।

जे माणगण मनि परिहरी सुगुम्बयण इम सहहइ ।

ते सुद्ध साधु सुकुलीण सविगुणनिहाण गुम्बटि लहइ ॥ ३१ ॥

संगमसूरि गिलाण वासि संजमबिहि रक्कइ ।

धम्मच्छलि तस सीस दत्त गुरुदोस निरिक्कइ ।

ग्वित्तविहार सविज्ज पिंड अंगुलि दिप्पंतिय ।

नित्यवास नितु सरसु असणु दीवय मणि चिंतिय ।

मन्नंतउ मुनि अप्पउं सगुण निगुण भणवि गुरु परिभवइ ।

घोरंधपार घण सह करि सम्मदिट्ठि सूर सिक्कइ ॥ ३२ ॥

यद्धमाण विहरंत नयरि सावत्थिहि आवइ ।

गोसालउ चउसाल आप तित्थयर भणावइ ।

मंखलिपुत्तासरुव कहइ पहु पुच्छिउं सोमिहिं ।

जिणवरमंमुह मुक्क तेउलेसा तिणि रीसिहिं ।

तं पिक्खि सुगुम्परिभव असह सुनक्कत्त मुनि विचि थयउ ।

तिणि तेजि दट्ठ आराधना करवि सग्गि अच्युति गयउ ॥ ३३ ॥

नाहियवादि नरिद नयरि सेतंवी पणसी ।

पाससीस विहरंत पत्त तहिं गणहर केसी ।

नरयगमणि इकचित्त सुगुम्बयणिहिं पडिवोहिउ ।

सावयधम्म सुरम्म करवि तिणि अप्पउं सोहिउं ।

लहुकालि काल करि सु जि सरिउ मूरिआभसुविमाणि सूर ।

इम दुरियदुक्क दूरिहिं हणी सयल सुक्क साधइ सुगुरु ॥ ३४ ॥

तुरमिणिपुरीनरिंद दत्त वंभणकुलि बहुबल ।

माउलकालिगमूरिपामि पुच्छइ जन्नह फल ।

अंगपीड अंगमिय सुगुरु सबं चिय जंपइ ।
 जागि जीववधि नरय सुणवि सु जि कोपइ कंपइ ।
 अहिनाण जाण सत्तमदिवसि मलप्रवेश मुहि तुझतणइ ।
 दक्खिन्न दुट्ठभय परिहरिय धम्मवयण मुणि इम भणइ ॥ ३५ ॥
 आसि मरीइ मुणिंद भरहसुय नियवय छंडइ ।
 कियपरिषायगवेस रिसहपहुसरिस त हिंडइ ।
 पडिवोहइ बहुलोय दिक्क जिणपासि लिवारइ ।
 अन्नदिवसि अतिकुटिल कपिल तसु वयण विचारइ ।
 तसु शिष्यकाजि फुड नवि कहइ इत्थ उत्थि बहु धम्म छइ ।
 भव कोडिसागर भमिउ हुउ धीरजिण तउ पछइ ॥ ३६ ॥
 कन्हमरणि बलभइ तवइ तव तुंगिपगिरिसिरि ।
 जाइ सरण इक हरिण रहइ अह्निसि रिषिपरिसरि ।
 कट्टकज्जि रहकार पत्त यनि साख कपावइ ।
 जिमणवेल जाणेवि लेवि मुणि मृग तहि आवइ ।
 ओ दियइ दान ओ सुडनप ओ विहुगुण मनि चितवइ ।
 सिरि पडइ डाल समकाल त्रिहुं वंभलोय सुरगति हवइ ॥ ३७ ॥
 पूरणसिट्ठि विभेलगामि लिइ तापसदिक्का ।
 दीण खयरजलथलचरह अप्प चिहुभागिहिं भिक्षा ।
 वारवरिस बहुकट्ट छट्ठतप करइ दयाविण ।
 पायालिहिं चमरिंद चमरचंचाहिव हुय तिण ।
 अभिमाणि सग्गि सोहम्मि गघउ वज्जदंड पिक्खवि पुलिउ ।
 सिरिवीरनाहपयतलि रहिउ तउ सयल वि धंधलु टलिउ ॥ ३८ ॥
 सुसुमारपुररोहि कहइ निव सउणसमीहओ ।
 वारत्तयरिपि भीयबालप्रति भणइ म वीहउ ।
 इयवयणह बलि धंधमारि पज्जोय सु जित्तउ ।
 नेमित्तिउ भणि हसइ राउ रिसिपासि पहुत्तउ ।
 इम गिहिपसंग सुट्ठयमुणिइ थोडउ अइमालिन्नकर ।
 परिहरइं दूरि इण कारणिहिं सव्वसंग चारित्तधर ॥ ३९ ॥
 चंदवडिस नरिंद नयरि साकेइ सुसावय ।
 निश्चिइं नियआवासि सुट्ठ सामाइय ठावय ।

दीवअवधि कासग्ग करिय निच्चल हुइ पालइ ।
 दासी पुण दीवेल घल्लि चउपहर उजालइ ।
 पूरिय प्रतिज्ञ प्रहउग्गमणि परम प्रीति पामिउ पवर ।
 सुकुमालअंग सुहृद्धानमण सग्गलोइ संपन्न सुर ॥ ४० ॥
 सावय सागरचंद रहिउ कासग्गि महावनि ।
 कमलामेलाहरणचैर नभसेन धरइ मनि ।
 घल्लइ सिरि अंगार तह वि सो झाणनिरत्तउ ।
 पोसहवय दढ पालि टालि दुह सग्गि पहुत्तउ ।
 जइ हुंति दुसह उवसग्ग सहइ स गिहत्थ सुकुमालतणु ।
 ता अइदुद्धरचारित्तधर साहु केम न सहंति पुण ॥ ४१ ॥
 चंपापुर अढारकोडिधणवइ कोहुंविय ।
 पोसह करि कासग्गि रहिउ निसि भुज आलंविय ।
 इंद्रप्रसंस असहहत अमरेहिं परिक्रिय ।
 मत्तागइंदभुयंगघोररक्कसभय दक्रिय ।
 न हु चलिउ मेरुचूलाअचल कामदेव गिहवइ सुथिर ।
 पहुवीर पयासिउ प्रहसमइ सीसवग्गअग्गलि सुविर ॥ ४२ ॥
 रायग्गिहि इक रंक अछइ अइदुक्किउ अग्गइ ।
 उज्जाणी जण जत्त पत्त तहिं भिक्क सु मग्गइ ।
 अलहतउ अइरोसि दोसि नियकम्मिहिं नडिउ ।
 चूरिसु लोग समग्ग एम चिंनिय गिरि चटिउ ।
 दोलेइ टोल परवततणा गडघडाट सुणि नट्ट सहु ।
 पापाणि तेणि सो चंपिऊ नरयदुक्क पामिऊ दुसहु ॥ ४३ ॥
 वद्धमाण वय लिद्ध जाव वीजऊ वरसालऊ ।
 मुंढ तुंढ मंढेवि पुंठि विलगऊ गोसालऊ ।
 जिणवयणिहिं विधि जाणी तेजलेइया तपि साथी ।
 तह अट्ठंगनिमित्त कह वि विज्जा निण साथी ।
 उम्मग्गचारि अनरथभरिउ गुग्गोही गरविहिं नडिउ ।
 मंगलिसुय मोय किलेस करि दुहसापरि दुत्तरि पटिउ ॥ ४४ ॥
 दढपहारि घट चोर जाइ कुसथलिमिउं चोरिहिं ।
 गीरकज्जि धावंन विप्प मारिउ निणि घोरिहिं ।

वंभणभञ्ज सगम्भ हणिय बालक फुरकंनउ ।
 पिक्खवि भववेरग्गि लेइ संजम दिप्पंतउ ।
 संभरणअवधि छंडिय असण तिणि ज गामि छम्मास रहि ।
 अक्कोम बंधवह दुसहसह सिद्धि पत्त दुक्कम दहि ॥ ४५ ॥
 वीरसेणसेवक्क सहसमल्ल त्ति पसिद्धउ ।
 कालसेनरिउराय जेण विहुवांहिहिं वद्धउ ।
 तिणि गुणि संग्वनरिदि किद्ध सामंत विदित्तउ ।
 वेरग्गिहिं व्रत लेवि तीण अरिदेसि पहुत्ताउ ।
 पचारिय पूरव बाहुवल कालसेनि कुट्टाविउ ।
 सव्वट्टसिद्धि सुरवर सरिउ कोह कह वि तस नाविउ ॥ ४६ ॥
 सावत्थोनिवकणयकेतुसुय ग्वंदग नामिहिं ।
 दिक्ख लेवि जिणकप्प करइ विहरइ पुरगामिहिं ।
 व्रत लिद्धइ तस ताय नेहि सिरि छत्त धरावइ ।
 तह वि अवद्धउ बंधुपासि कंतीपुरि आवइ ।
 तस बहिन सुनंदा रायघरि मग्गि जंतु तिणि दिट्ठ मुणि ।
 नरवरि अलीकशंका धरिय हरिय प्राण तस तिणि रयणि ॥ ४७ ॥
 दीरघसिउं रइरत्ताचित्त चुलुणी मयणातुरि ।
 वंभदत्तनियपुत्तदहण दक्खइ लक्खाहरि ।
 वरधन मंत्री सुरंगसंगि रक्खिउ परपंचिहिं ।
 फिरिय फिरिय महिमज्झि रत्त पुण लहइ सुसंचिहिं ।
 इह कस्स कोइ न हु बल्लहउ भवसरूप नडपिक्खणउं ।
 सुहियां जि मूढ मोहिय भणइ हणइ कज्ज पर तहतणउ ॥ ४८ ॥
 तेयलिपुरि निय कणयकेतु पउमावइ राणी ।
 मंत्री तेयलिपुत्त भञ्ज तस पुट्टिल नाणी ।
 जाय मत्त सवि पुत्त राय निय लोभि मरावइ ।
 राणी मंत्री कहेवि एक सुय छन्न रहावइ ।
 नरनाह पत्त पंचत्ता सु जि कुंयर राय महत्तइ कियउ ।
 महत्तउ पुण पुट्टिलसुरवयणि पडियुद्धउ केवलि थियउ ॥ ४९ ॥
 रत्तलोभ मनि धरवि भरह पहुत्ताउ समरंगणि ।
 बाहुवलहिं तहिं दिट्ठिमुट्ठिमुज्झिहिं जित्तउ त्वणि ।

रोसि चडिउं रणि चक्क भरह भाइसिरि मिल्हइ ।
 धिग विसयारसि लुद्ध मुद्ध सासयसुह ठिल्लइ ।
 इम चित्ति चित्ति संजम सबल बाहुव्वलि कासगि रहिउ ।
 भरहेसर पत्त अवज्झपुरि भायनेह कित्तिम कहिउ ॥ ५० ॥
 भज्जा विसयविकारिभारि पइमारणि चल्हइ ।
 सूरियकंत कलत्त भत्तभीतरि विस घल्हइ ।
 रायपएसि सुधम्म रम्म पोसहवय पारिय ।
 करइ पारणउं जाव ताव तस्सणि विसि घारिय ।
 सुहझाणि ठाणि निअ आणि मण सगगलोइ संपन्न सुर ।
 दुक्कमचारि सा नारि पुण भमइ भूरि भव भीडभर ॥ ५१ ॥
 वीरवयणि जाणेवि नरय सेणिय चित्तइ मनि ।
 कोणिय रज्ज ठवेसु लेसु संजम जाई वनि ।
 हल्लविहल्लहं हार गुरुयभायवरसिउ दिद्धउ ।
 कूड करी कोणिक्कि रायसेणिय तव वद्धउ ।
 नियताय कट्टपंजरि धरी खाण पाण वे राहवइ ।
 सयपंच घाय दिणि दिणि दियइ पुत्तनेह एरिस हवइ ॥ ५२ ॥
 वणियपुत्त चाणिक्क कवड बहुबुद्धि वियाणइ ।
 चंदगुत्तसाहिज्जकज्जि पव्वयनिव आणइ ।
 तससरिसी अतिप्रीति करीय अरिकंटय टालिय ।
 नंदनरिंदह रज्जनयरि पाडलि उटालिय ।
 विसकन्न जाणि परिणाविउ सो वि मित्त जमपुरि लयउ ।
 नियकज्ज करवि विहडिउ पछइ मित्तनेह एरिस भयउ ॥ ५३ ॥
 परसुराम जमदग्गिपुत्त रेणुयअंगुव्वभम ।
 कत्तविरिय नरनाह दणइ मासीसुय दूदम ।
 अप्पण पइ तस रज्ज लेवि हत्थिणपुरि रहियउ ।
 ग्वत्तिपवंस असेस फरसुल्लालिहिं निणि दहियउ ।
 निवघरणि नट्ट पच्छन्न टिय तस सुभूम सुय चक्कइ ।
 निहलइ वंस वंभणतणउ निययनेह एरिस हवइ ॥ ५४ ॥
 अज्जमहागिरिमूरि भूरिभयपायनिवारण ।
 गिइ जिणकप्पि करंति तस्स तुलणा अइदारण ।

कुलधरनियसुहसयणसंग निस्सा सवि छंडिय ।

अपडिवद्धविहारसार संजमगुणमंडिय ।

सावयघरि अज्जसुहत्थि गुरि गुणपसंस हरपिहिं करिय ।

अइआदर दिक्कि सुकारणिहिं पाडलपुर तिणि परिहरिय ॥ ५५ ॥

सेणियभारणिपुत्त मेह भज्जट्ट विमुक्किय ।

वीरपासि वय लिद्ध बुद्धि निसि संजम चुक्किय ।

पुव्वजम्म परिकहिय पुण वि थिर किद्धउ वीरिहिं ।

वहुजइजणसंवट्ट सहइं अइदुसह सरीरिहिं ।

सो रायवंसअवयंसमणि मणिन अप्प तृणसम गणइ ।

चापरइ विजयवेमाणि सुह रहिउ सिद्धि घरअंगणइ ॥ ५६ ॥

चेडयधूपसुजिद्धसुद्धमहासइअंगुभम ।

विज्जाहरपेढालपुत्त विज्जावलदुद्धम ।

त्वायगसम्मदिट्ठि अंग इग्यारइ जाणइ ।

तह वि विसयरसरंगि अंगि अतिदपण आणइ ।

उज्जेणि उमावेसायसिहि करवि कूड हेल्ला हणिउ ।

सो सच्चइ सच्चइं नरय गय विसयदोस एरिस भणिउ ॥ ५७ ॥

बारवईपुरि पत्त नेमिपहु केवलनाणी ।

दसदसारनरनाह कन्ह निसुणइ जिणवाणी ।

सहसअठार मुणिंदचंद विधिचंदणि चंदइ ।

नरपमूमि चिहुदुक्कक निम्मूल निकंदइ ।

तित्थयरगुत्ता वंथइ सुट्टअसुहकम्म हेल्ला हरद ।

पूजाप्रणामचंदणविणय सगुणसाट्टसंगति करइ ॥ ५८ ॥

चंडरुइ गुरु म्हरोसि रोसाल विदित्तउ ।

उज्जेणीउज्जाणि सगुणसोसिहिंसिउं पत्तउ ।

नयपरणीन कुमार हसिय पभणइ दिउ दिक्का ।

सुरि सीस तस थंपि केस लुंच्चिय दिप सिक्का ।

सो सीसभावि संजम लियइ मग्गि लग्गि गुरु स्तिर घरी ।

निम सहइ पाप दुव्वपण जिम लहइ वेउ केवलसिरि ॥ ५९ ॥

गयकलभे परिचरिउ सूर्यर सुमिणइ मुणि दिट्ठउ ।

तिणि अहिनाणि सुसीससहिय पुण कुगुरु अणिट्ठउ ।

निसि चंपइ अंगार सूगचिण मन्नइ प्राणिउ ।

तव अंगारयमह सूरि अभविय इम जाणिउ ।

ते सीस सवे निवपुत्त हूय सूरि करह वक्करभरिउ ।

तिहिं देखि सयंवरि आवते पुव्वजम्म तरुणि सरिउ ॥ ६० ॥

पुष्पचइसुय पुष्पचूल भइणी तह भज्जा ।

सुमिणि नरयदुह देखी पुष्पचुला वयसज्जा ।

अन्नियसुयगुरुकज्जि खीणजंघावल जाणी ।

आणांती सा भत्तपाण हूय केवलनाणी ।

पुच्छेइ सूरि मह नाण कहिं सु पण गंगभीतरि कहइ ।

तव दुट्ठदेवि उवसग्ग सहि सुगुरु तत्थ केवल लहइ ॥ ६१ ॥

सिद्धि पत्त मरुदेवि तपिहिंविणु इणि आलंबणि ।

के वि करंति पमाय ति पणि अच्छेरयसम गिणि ।

जिणि कारणि पुव्वंमि जम्म थावरतरुभीतरि ।

वोरिसंगि बहु अंगि सहिय दुह कम्म विनिज्जरि ।

सुहभावि पावि परिसुक्कमण सरलसार संतोसमय ।

जिणणि नाभिकुलगरघरणि रिसह झाणि निव्वाणि गय ॥ ६२ ॥

लद्धि पत्त पत्ते य बुद्ध सुहसिद्धि समाणइ ।

अच्छेरयसमतुल्ल बुल्ल किवि ते मनि आणइ ।

निहिसंपत्ति स चित्ति धरवि विवसाय ति छंडइ ।

सामग्गी परिहरिय करिय पातग निय दंडइ ।

करकंडुदुमुहनमिनग्गइ चिहुचरित्त चितिय सुपरि ।

धरि धम्म रम्म उज्जमसहिय मुक्क माय अपमाय करि ॥ ६३ ॥

ससगभसगनिवपुत्तवहिणि सुकुमालिय कुमरी ।

चंपापुरि चारित्त लेइ रुपिहिं किर अमरी ।

फिरइ तरुण तस पासि रागि रत्ता गयगमणी ।

रक्कइ बंधव वेड लेइ तिणि अणसण समणी ।

बहुदिवसि तापि तपि मूरझामुइय जाणि वनि परठवी ।

ओसहविसेसि सु जि सज्ज करि सत्थयाहि गेहिणि ठवी ॥ ६४ ॥

सु बहुसीसपरिवारसार मिढंनविदित्तउ ।

महुरापुरि सिरिमंगुसूरि रसणिदिइं जित्तउ ।

नगरखालि उप्पन्न जक्क बहु दुक्क निहालइ ।
 सुविहियजणपडिबोहकजि नियजीह दिखालइ ।
 जिप्पह मुणिद रसणिदियह अणजित्तइ एरिसु हुउ ।
 जग्गह जि जोग जुगतिहिं सदा म म म मोहनिद्रां सुउ ॥ ६५ ॥
 गिरिसुय ग्रहिउ पुलिदि पुण्फसुय तयसी सेवइ ।
 सुयडा अडवीमजिझ अछइ पक्कोदर वेवइ ।
 इक्क भणइ लिउ भारि अवर पुण विणय पयासइ ।
 अंतरसंगविसेसि दोस गुण नरनइपासइ ।
 इम जाणि निगुणसंगति तिजउ सगुणसंग अणुदिण करउ ।
 झगमगइ जेम जगमजिझ जस भवसमुद तत्तणि तरउ ॥ ६६ ॥
 सिरिधावच्चापुत्तसूरि सुकसूरि अणुक्कमि ।
 सेलगसूरि पमायपंकि पडियउ अइदुदमि ।
 गया सीस सवि छंडि एक्क पंथग मुणि रहिउ ।
 खामंतइं पगि लागि पच्चवासरि तिणि कहियउ ।
 मियमहुरवयणि सुनिपुणपणइ ठविउ सुद्धसंजमि स गुरु ।
 सो सूरि पुण वि चारित्त वरि सिचुंजय सिद्धउ सधर ॥ ६७ ॥
 सेणियनंदण नंदिसेण बारस संवच्छर ।
 धीरसीस वय छंडि वेस धरि वसइ समच्छर ।
 दस प्रतिबोध्याचिणु न लेइ आहार निरंतर ।
 इक्क न बुज्झइ भणइ वेस दसमा तुम्हि सुंदर ।
 इण वेसवयणि पुण वेसधर चरण वरवि सुर संपजइ ।
 इय जस्स सत्ति देसुणतणी अहह सो वि संजम तिजइ ॥ ६८ ॥
 वरससहस नव कट्ट करिय कंडरिय न सुद्धउ ।
 अंति दुट्ठपरिणाम कामवशा नरयनिवद्धउ ।
 अचिरकालि परिपालि सुद्ध संजम संपत्तउ ।
 पुंडरीक सच्चवट्टसिद्धि सुहयुद्धिनिरुत्तउ ।
 बहु दुक्क सहवि नवि लद्ध सुह अप्प दुक्कि बहुसुख लहिउ ।
 विहु बंधव एवड अंतरउ भावभेदि भगवति कहिउ ॥ ६९ ॥
 नयरि कुसुमपुरि राय भाय दुइ ससि सरप्पह ।
 ससी न मन्नइ धम्म रम्म मन्नइ विसयासुह ।

तपजपविण सो पत्त नरगि त्रीजइ दुहत्तत्तउ ।
 करवि सूर दुहचूर सग्गि सत्तमइ स पत्तउ ।
 ससि रडइ सूरसुरअग्गलिहिं तणु तच्छिय दुह दिक्खवउ ।
 सो भणइ जीव विणु तणु दहिहिं नरयदुक्क किम रक्खिवउ ॥ ७० ॥
 सुग्गइमग्गपईय नाण जे दियइं निरुप्पम ।
 तिहं गुरु किं पि अदेय नत्थि जगमज्झि जगुत्तम ।
 दिक्खउ जेम पुलिंदि सिवगजक्खह नियलोयण ।
 तिण सरिसउं सुर वत्त करइ भत्तह दिय चोयण ।
 केवलइं दाणि तूसइ न गुरु अंतरंगभत्तिहिं वरइ ।
 तिणि कारणि बिहुपरि करि विणय जिम वाहिरि तिम अंतरइ ॥ ७१ ॥
 अंवचोर चंडाल चडिउ अभयडकरि कंपइ ।
 दय नामिणी सुविज्ज मज्झ इम सेणिउ जंपइ ।
 विणयविवज्जिय विज्जकज्ज करिवइ नवि जग्गइ ।
 सिंहासणि वइसारि भारि गुरु करि सो मग्गइ ।
 ओ कहइ विज्ज ओ लहइ फल बिहुह कज्ज तरक्कणि सरिउ ।
 इण कारणि जिणसासणि विणय सुगुरु सीस अणुक्कमि करिउ ॥ ७२ ॥
 दगसूयरउ तिदंडि तामलित्ती पुरि अच्छइ ।
 नापितपासि सु विज्ज लेवि देसंतरि गच्छइ ।
 महिमा मोट्टिम पत्त दंड गयणंगणि रहियउ ।
 पुच्छिउ नरवरि जाम ताम सच्चउ नवि कहियउ ।
 गुरुलोपि कोपि विज्जा गई गयणदंड गडयडि पडिउ ।
 लज्जियउ लोकि हसिउ सयलि इम सु नाणनिन्हवि नडिउ ॥ ७३ ॥
 वंभण एक अनेककूडकवडाइनिरुत्तउ ।
 उज्जेणिहिं कट्ठियउ देसि चम्मरि स पत्तउ ।
 त्रिहुं गामहं विच्चालि करइ तप वेसि त्रिदंडी ।
 भगतलोकघरसार मुसइ निसि सु जि पाखंडी ।
 अहं च डिउ हत्थि नरवरतणइ नयण कट्ठि नडियौ घणउ ।
 बहु सुरइ अति सोचइ सु चिर निंदइ नियकुडक्कणउ ॥ ७४ ॥
 दुहरंग वरदेव कुट्टिरुपिहिं पहु चंदइ ।
 छींक करइ जव वीर नाम मरि कहि अभिणंदइ ।

सेणियप्रति चिर जीव अभयप्रति जा चड विहुपरि ।
 कालसूरप्रति कहइ म मरि म म जीविय अणुसरि ।
 मगहेसर पुच्छइ ए कवणु कवण एस परमत्थ पुण ।
 जिण भणइ विप्पसेडुयचरिय चिहु प्रकारि नरआचरण ॥ ७५ ॥
 वरि अंगमीइ मरण सरण जिणधम्म धरिज्जइ ।
 जियहिंसा पुण घोर घोरदुहहेउ न किज्जइ ।
 कालसूरियह पुत्त सुलस जिम पाव निवारउ ।
 परपीडा परिहरह तरह संसार असारउ ।
 कुलकारण किं पि म लिक्खउ गुणह रूप मुख्यडि धरउ ।
 परलोगमग्ग जाणउं सुपरि कुपरि कुकम्म म आयरउ ॥ ७६ ॥
 हेजिइ हित अरिहंत कह वि नवि प्राणि करावइ ।
 तं पुण दिइ उपदेस जेण किज्जइ सुख आवइ ।
 जं सुरवइ सुरवग्गि सग्गि एरावणवाहण ।
 जं भरहादिव रज्जसज्ज भुंजइ सुहसाहण ।
 जं जं अवर वि सुरअसुरनरमुक्क सुक्क माणइ घणउ ।
 तिहुयणह मज्झि तं सयल फल जिणवरउवएसहतणउं ॥ ७७ ॥
 ग्वत्तियकुंडि जमालि बीरजामाइ खत्तिउ ।
 सुहंसणभत्तार सार वयभारपवत्तिउ ।
 नवि मन्नइ किज्जंत किज्ज इय आगमवाणी ।
 निन्हवि तेण कुदिट्ठि दुट्ठि किय बहु गुणहाणी ।
 नियकित्ति मुसिय सुर किच्चिस्सिय मिलिउ मिच्छमइ मोहियउ ।
 सयपंच माहु साहुणि सहस ढंक्सट्ठि पुण वोहियउ ॥ ७८ ॥
 जिम मासाहम पंग्वि मुग्घिहिं मा साहस जंपइ ।
 वयवयणि पइसेवि भंम लितउ नवि कंपइ ।
 निम अवरह उयणम दिति कियि फुटवयणाकरि ।
 पणि अप्पणि न करंति रम्म जिणधम्म तणीपरि ।
 वेरगावाणि नड उच्चइ जलहिं जालि पाणी गलइ ।
 इम कम्मभारि भारिय भणी जाइ भूर भवजलनलइ ॥ ७९ ॥
 धम्मवीय जिणराइ आणि दीवंतर दिज्जउ ।
 अघिरति मयल वि ग्वद्ध देमचिरते अध ग्वद्धउ ।

पासत्ये पुण खुट्टि खित्ति खाइव सहु हारिउ ।
 संजमि ए सुभखित्ति सव्व वावीय वट्टारिउ ।
 त्रिहु भेदि जीव ते करसणी राजदंडि अप्पउं दहइ ।
 सुविहियमुणि रायपसायवसि सुख सुगालि लच्छी लहइ ॥ ८० ॥
 इणिपरि सिरिउवणसमालकहाणय ।
 तवसंजमसंतोसविणयविज्जाइ पहाणय ।
 सावयसंभरणत्य अत्थपय छप्पयछंदिहिं ।
 / रयणसिंहसुरीससीस पभणइ आणंदिहिं ।
 अरिहंतआण अणुदिण उदय धम्ममूल मत्थइ हउं ।
 भो भविय भत्तिसत्तिहिं सहल सयल लच्छिलीला लहउ ॥ ८१ ॥
 ॥ इति श्रीउपदेशमालासर्वकथानकछप्पया ॥

समरारासु

पहिलउ पणमिउ देव आदीसरु सेत्तुजसिहरे ।
 अनु अरिहंत सव्वे वि आराहउं बहुभत्तिभरे ॥ १ ॥
 तउ सरसति सुमरेवि सारयससहरनिम्मलीय ।
 जसु पयकमलपसाय मूरुपु माणइ मन रलिय ॥ २ ॥
 संघपतिदेसलपूहु भणिमु चरिउ समरातणउ ए ।
 धम्मिय रोलु निवारि निसुणउ श्रवणि सुहावणउ ए ॥ ३ ॥
 भरइ सगर दुइ भूप चक्रवति त हउ अतुलवल ।
 पंडव पुहविप्रचंट तीरथु उधरइ अतिसवल ॥ ४ ॥
 जावडतणउ संजोगु हउअं सु दसम तय उदण ।
 समइ भलेरइ सोइ मंत्रि वाहडदेउ ऊपजण ॥ ५ ॥
 हिव पुण नवी य ज घात जिणि दीहाडइ दोहिलए ।
 खत्तिय ग्वग्गु न लिति साहसियह साहसु गलण ॥ ६ ॥
 तिणि दिणि दिनु दिक्काउ समरसीहि जिणधम्मवणि ।
 तमु गुण करउं उद्योउ जिम अंधारइ फटिकमाणि ॥ ७ ॥
 सारणि अभियतणी य जिणि बहावी मरुमंटलिहिं ।
 किउ कृतजुगअवतारु कलिजुगि जीतउ बाहुवले ॥ ८ ॥

समरऊ ए साहसधीरु वाहविलग्गउ वट्ट अ जण ।
 बोलई ए असमवीरु दूसमु जीपइ राउतवट्ट ए ॥ १ ॥
 अभिग्रह ए लियइ अविलंबु जीवियजुव्यणवाहवलि ।
 उधरऊ ए आदिजिणविंबु नेसु न मेल्लइ आपणउ ए ।
 भेटिऊ ए तउ पानपालु सिरु धूणइ गुणि रंजियउ ए ॥ २ ॥
 वीनती ए लागु लउ वानु पूछए पहुता केण कज्जे ।
 सामिय ए निसुणि अडदासि आसालंबणु अम्हत्तणउ ए ।
 भइली ए दुनिय निरास ह ज भागी य हींदुअतणी ए ।
 सामिय ए सोमनयणेहिं देपिउ समरा देइ मानु ॥ ३ ॥
 आपिऊ ए सब्बवयणेहिं फुरमाणु तीरथमाडिवा ए ।
 अहिंदर ए मलिकआणसि दीन्ह ले श्रीमुखि आपण ए ।
 पतमत ए पानपणसि किउ रलियाइतु घरि संपत्तो ।
 पणमई ए जिणहरि राउ समणसंघो तहि वीनविउ ए ॥ ४ ॥
 संधिहि ए कियउ पसाउ बुद्धि विमासिय बहूपरे ।
 सासण ए घर सिणगारु वस्तपालो तेजपालो मंत्रे ।
 दरिसण ए छह दातारु जिणधर्मनयण वे निम्मला ए ।
 आइसी ए रायसुरताण तिणि आणीय फलही य पघर ॥ ५ ॥
 दूसम ए तणी य पुणु आण अवसरो कोइ नही तसुत्तणउ ए ।
 इह जुग ए नही य वीसासु मनुमात्रे इय किम छरए ।
 तउ तुहु ए पुत्तप्रकासु करि ऊघरि जिणवरधरसु ॥ ६ ॥

चतुर्थभाषा-संघपतिदेसलु हरपियउ अति धरमि सचेतो ।

पणमई सिधसुरिपयकमलो समरागरसहितो ।
 वीनती अम्हत्तणी प्रभो अवधारउ एक ।
 तुम्ह पसाइ सफल किया अम्हि मनोरहनेक ॥ १ ॥
 सेत्तुजतीरथ ऊघरिवा ऊपन्नउ भावो ।
 एकु तपोधनु आपणउ तुम्हि दियउ सहाउ ।
 मदनु पंडितु आइसु लहवि आरासणि पहुचइ ।
 सुगुरवणु मनमाहि धरिउ गाढउ अति रुचइ ॥ २ ॥
 राणेरा तहि राजु करइ महिपालदेउ राणउ ।
 जीवदया जगि जाणिजए जो वीरु सपराणउ ।



पातउ नामिहि मंत्रिवरो तसुतणइ सुरज्जे ।
 चंद्रकन्हइ चकोरु जिसउ सारइ बहुकज्जे ॥ ३ ॥
 राणउ रहियउ आपुणपई पाणिहि उपकंठे ।
 टंकिय वाहइ सूत्रहार भांजइ घणगंठे ।
 फलही आणिय समरवीरि ए अतिबहुजयणा ।
 समुद्र विरोलिउ वासुगिहिं जिम लाघा रयणा ॥ ४ ॥
 कूआरसि उछवु हूअउ त्रिसिंगमइनहरे ।
 फलही देपिउ धामियह रंगु माइ न सहरे ।
 अभयदानि आगलउ करुणारसचित्तो ।
 गोत्ति मेलहावइ पडरालुअह आपड बहुवित्तो ॥ ५ ॥
 भांडू आख्या भाउघणउ भवियायण पूजइ ।
 जिम जिम फलही पूजिजए तिम तिम कलि धूजइ ।
 खेला नाचइ नवलपरे घाघरिरयु झमकइ ।
 अचरिउ देपिउ धामियह कह चित्तु न चमकइ ॥ ६ ॥
 पालीताणइ नयरि संघु फलही य वधावइ ।
 बालचंद्र मुनि वेगि पवरु कमठाउ करावइ ।
 किं कणूरिहि घडीय देह पीरसायरसारिहि ॥ ७ ॥
 सामियमूरति प्रकट थिय कूप करिउ संसारे ।
 मागी दीन्ह वधावणी य मनि हरयु न माए ।
 देसलज्जह चरित्रि सह रलियातु थाए ॥ ८ ॥

पञ्चमी भापा-संघु बहुभक्तिहिं पाटि वयसारिउ ।
 लगनु गणिउ गणघरिहिं विचारिउ ।
 पोसहसाल खमासण देयए ।
 सुरिसेयंवरमुनि सवि संमहे ए ॥ १ ॥
 घरि वयसवि करी के वि मन्नाविषा ।
 के वि धम्मिय हरसि धम्मिय धाह्या ।
 बहुदिसि पाठविय कुंकुमपत्रिया ।
 संघु मिलइ बहुभली य मज्जाडया ॥ २ ॥
 सुदगुंसियसुरिवासि अहिसिंचिउ ।
 संघपति कल्पनरु अमिय जिम सिंचिउ ।

ओसवालकुलि चंदु उदयउ एउ समानु नही ।
 कलिजुगि कालइ पाखि चांद्रिणउं सचराचरिहिं ॥ ९ ॥
 पाल्हणपुरु सुप्रसीधु पुनवंतलोयह निलउ ।
 सोहइ पाल्हविहार पासभुवणु तहि पुरतिलउ ॥ १० ॥

भास—हाट चहुटा रूअडा ए मढमंदिरह निवेसु त ।

वाविकूवआरामघण घरपुरसरसपएस त ।
 उवएसगच्छह मंडणउ ए गुरु रयणप्पहसूरि त ।
 धम्मु प्रकासइं तहि नयरे पाउ पणासइ दूरि त ॥ १ ॥
 तसु पटलच्छीसिरिमउडो गणहरु जखदेवसूरि त ।
 हंसवेसि जसु जसु रमए सुरसरीयजलपूरि त ॥ २ ॥
 तसु पयकमलमरालुलउ ए ककसूरि मुनिराउ त ।
 ध्यानधनुपि जिणि भंजियउ ए मयणमल्ल भट्टिवाउ त ॥ ३ ॥
 सिद्धसूरि तसु सीसवरो किम वन्नउं इकजीह त ।
 जसु घणदेसण सलहिजए दुहियलोयवप्पीह त ॥ ४ ॥
 तसु सीहासणि सोहई ए देवगुप्तसूरि बईटु त ।
 उदयाचलि जिम सहसकरो जगमतउ जिण दीटु त ॥ ५ ॥
 तिह पट्टपाटअलंकरणु गच्छभारघोरेउ त ।
 राजु करइ संजमतणउ ए सिद्धिसूरिगुरु एहु त ॥ ६ ॥
 जोइ जसु वाणीकामपेनु सिद्धंतवनि विचरेउ त ।
 सावइजणमणइच्छिय घण लीलइ सफल करेउ त ॥ ७ ॥
 उवएसवंसि वेसटह कुलि सपुरिसतणउ अवतारु त ।
 वयरारगि कउतिगु किसउ ए नही य ज रतनह पारु त ॥ ८ ॥
 पुन्नपुरुपु ऊपट्टु तहिं सलपणु गुणिहि गंभीरु त ।
 जणआणंदणु नंदणु तसो आजडु जिणधमधीरु त ॥ ९ ॥
 गोत्रउदयकरु अवयरिउ ए तसु पुट्टु गोसलसाहु त ।
 तसु मेहिणि गुणमत भली य आराहइ निगुनाहु त ॥ १० ॥
 संघपति आसधरु देसलु लूणउ तिणि जन्म्या संसारि त ।
 रतनसिरि भोली लाच्छि भणउं तोहत्तणी य घरनारि त ॥ ११ ॥
 देसलधरि लच्छी य निमुणि भोली भोलिमसार त ।
 दानि सीलि लूणाघरणि लाछि भली सुविचार त ॥ १२ ॥

द्वितीयभाषा-रत्नकुपि कुलि निम्मली य भोलीपुत्तु जाया ।
 सहजउ साहणु समरसीहु बहुपुत्तिहि आया ॥ १ ॥
 लहूअलगइ सुविचारचतुर सुविवेक सुजाण ।
 रत्नपरीक्षा रंजवइ राय अनु राण ॥ २ ॥
 तउ देसल नियकुलपईव ए पुत्र सधन ।
 रूपवंत अनु सीलवंत परिणाविय कल ॥ ३ ॥
 गोसलसुति आवासु कियउ अणहिलपुरनयरे ।
 पुत्र लहइ जिम रयणमाहि नर समुद्रह लहरे ॥ ४ ॥
 चउरासी जिणि चउहटा यरवसहि विहार ।
 मढ मंदिर उत्तंग चंग अनु पोलि पगार ॥ ५ ॥

२ तिहि अछइ भूपतिहि सुवण सतखणिहि पसत्थो ।
 विश्वकर्मा विज्ञानि करिउ घोइउ नियहत्थो ॥ ६ ॥
 अभियसरोवरु सहसलिंगु इकु धरणिहि कुंडल ।
 कित्तिपंभु किरि अवररेसि मागइ आखंडल ॥ ७ ॥
 अज्ज वि दीसइ जत्थ धम्मु कलिकालि अगंजिउ ।
 आचारिहि इह नयरतणइ सचराचरु रंजिउ ॥ ८ ॥
 पातसाहि सुरताणभीबु तहिं राजु करेई ।
 अलपखानु हींदूअह लोय घणु मानु जु देई ॥ ९ ॥
 साहु रायदेसलह पूतु तसु सेवइ पाय ।
 कला करी रंजविउ खानु बहु देइ पसाय ॥ १० ॥
 मीरि मलिकि मानियइ समरु समरथु पभणीजइ ।
 परउवयारियमाहि लीह जसु पहिली य दीजइ ॥ ११ ॥
 जेठसहोदरि सहजपालि निज प्रगटिउ सहजू ।
 दक्षणमंडलि देवगिरिहि किउ धम्मह वणिजू ॥ १२ ॥
 चउवीसजिणालय जिणु ठविउ सिरिपासजिणिंदो ।
 धम्मधुरंधरु रोपियउ धर धरमह कंदो ॥ १३ ॥
 साहणु रहियउ पंभनयरि सायरगंभीरे ।
 पुव्वपुरिसकीरितितरंडु पूरइ परतीरे ॥ १४ ॥

तृतीयभाषा-निसुणऊ ए समहप्रभावि तीरधरायह गंजणउ ए ।
 भवियह ए करुणारावि नीठुरमनु मोहि पडिउ ए ।

समरज ए साहसधीरु बाहबिलग्गउ बह अ जण ।
 बोलई ए अस्मवीरु दूसमु जीपइ राउतवट ए ॥ १ ॥
 अभिग्रह ए लियइ अविलंबु जीवियजुव्यणवाहवलि ।
 उधरज ए आदिजिणविंबु नेमु न मेल्हउ आपणउ ए ।
 भेटिऊ ए तउ पानपानु सिरु धूणइ गुणि रंजियउ ए ॥ २ ॥
 धीनती ए लागु लउ धानु पृछए पहुता केण कजे ।
 सामिय ए निसुणि अडदासि आसालंबणु अम्हतणउ ए ।
 भइली ए दुनिय निरास ह ज भागी य हींदुअतणी ए ।
 सामिय ए सोमनयणेहिं देपिउ समरा देइ मानु ॥ ३ ॥
 आपिऊ ए सन्ववयणेहिं फुरमाणु तीरथमाडिवा ए ।
 अहिदर ए मलिकआएसि दीन्ह ले श्रीमुखि आपण ए ।
 पतमत ए पानपएसि किउ रलियाइतु धरि संपत्तो ।
 पणमई ए जिणहरि राउ समणसंधो तहि वीनविउ ए ॥ ४ ॥
 संधिहि ए कियउ पसाउ बुद्धि बिमासिय बह्यपरे ।
 सासण ए वर सिणगारु वस्तपालो तेजपालो मंत्रे ।
 दरिसण ए छह दातारु जिणधर्मनयण वे निम्मला ए ।
 आइसी ए रायसुरताण तिणि आणीय फलही य पवर ॥ ५ ॥
 दूसम ए तणी य पुणु आण अवसरो कोइ नही तसुतणउ ए ।
 इह जुग ए नही य वीसासु मनुभावे इय किम छरण ।
 तउ तुहु ए पुन्नप्रकासु करि ऊधरि जिणवरधरमु ॥ ६ ॥

चतुर्थभाषा-संघपतिदेसलु हरपियउ अति धरमि सचेतो ।

पणमइ सिधसुरिपयकमलो समरागरसहितो ।

धीनती अम्हतणी प्रभो अवधारउ एक ।

तुम्ह पसाइ सफल किया अम्हि मनोरहनेक ॥ १ ॥

सेतुजतीरथ ऊधरिवा ऊपन्नउ भावो ।

एकु तपोधनु आपणउ तुम्हि दिपउ सहाउ ।

मदनु पंडितु आइसु लहवि आरासणि पहुचइ ।

सुगुरवयणु मनमाहि धरिउ गाढउ अति रुचइ ॥ २ ॥

राणेरा तहि राजु करइ महिपालदेउ राणउ ।

जीवदया जगि जाणिजए जो धीरु सपराणउ ।

पातउ नामिहि मंत्रिवरो तसुतणइ सुरज्जे ।
चंद्रकन्हइ चकोरु जिसउ सारइ बहुकज्जे ॥ ३ ॥
राणउ रहियउ आपुणपई पाणिहि उपकंठे ।
टंकिय वाहइ सूत्रहार भांजइ घणगंठे ।
फलही आणिय समरवीरि ए अतिबहुजयणा ।
समुद्र विरोलिउ वासुगिहिं जिम लाधा रयणा ॥ ४ ॥
कूआरसि उछवु हूअउ त्रिसींगमइनइरे ।
फलही देपिउ धामियह रंगु माइ न सइरे ।
अभयदानि आगलउ करुणारसचित्तो ।
गोत्ति मेल्हावइ पहरालुअह आपइ बहुवित्तो ॥ ५ ॥
भांइ आब्या भाउघणउ भवियायण पूजइ ।
जिम जिम फलही पूजिजए तिम तिम कलि धूजइ ।
खेला नाचइ नवलपरे घाघरिरिउ झमकइ ।
अचरिउ देपिउ धामियह कह चित्तु न चमकइ ॥ ६ ॥
पालीताणइ नयरि संघु फलही य वधावइ ।
बालचंद्र मुनि वेगि पवरु कमठाउ करावइ ।
किं कण्पूरिहि घडीय देह पीरसायरसारिहि ॥ ७ ॥
सामियमूरति प्रकट थिय कूप करिउ संसारे ।
मागी दीन्ह वधावणी य मनि हरपु न माए ।
देसलज्जह चरित्रि सह रलियातु थाए ॥ ८ ॥

पश्चमी भापा-संघु बहुभक्तिहिं पाटि वयसारिउ ।
लगनु गणिउ गणधरिहिं विचारिउ ।
पोसहसाल खमासण देयए ।
सुरिसेयंवरमुनि सवि संमहे ए ॥ १ ॥
घरि वयसवि करी के वि मन्नाचिया ।
के वि धम्मिय हरसि धम्मिय धाइया ।
बहुदिसि पाठविय कुंकुमपत्रिया ।
संघु मिलइ बहुभली य सज्जाइया ॥ २ ॥
सुहगुरुसिधसुरिवासि अहिसिंचिउ ।
संघपति कल्पतरु अमिय जिम सिंचिउ ।

कुलदेवत सचिया वि भुजि अवतरइ ।
 स्रहव सेस भरइ तिलकु मंगल करइ ॥ ३ ॥
 पोसवदि सातमि दिवसि सुमुहुत्तिहिं ।
 आदिजिण देवालण ठविउ सुहचित्तिहिं ।
 धम्मधोरी य धुरि धवल दुइ जुत्तया ।
 कुंकुमपिंजरि कामघेनुपुत्तया ॥ ४ ॥
 इंदु जिम जयरथि चडिउ संचारण ।
 स्रहवसिरि सालिथालु निहालण ।
 जा किउ हयवरो वसहु रासिउ हूउ ।
 कहइ महासिधि सकुनु इहु लब्धउ ।
 आगलि मुनिवरसंघु सावयजणा ।
 तिलु न पिरइ तिम मिलिय लोय घणा ॥ ५ ॥
 मादलवमविणाडुणि वज्जण ।
 गुहिरभेरीयरवि अंवरो गज्जण ।
 नवयपादणि नवउ रंगु अवतारिउ ।
 सुपिहि देवालउ संवारी संचारिउ ॥ ६ ॥
 धरि वयसवि करि के यि समाहिया ।
 समरगुणि रंजिउ विरलउ रहियउ ।
 जयतु कान्हु दुइ संघपति चालिया ।
 हरिपालो लंदुको महाधर दड धिया ॥ ७ ॥

पछी भापा-वाजिय संव असंव नादि काहल दुहुदुडिया ।
 घोडे चडइ सल्लारसार राउत सांगडिया ।
 तउ देवालउ जोत्रि वेगि घावरिरु झमकइ ।
 मम विमम नवि गणइ कोइ नवि चारिउ थकाइ ॥ १ ॥
 सिजवाला धर घटहइइ वाहिणि वहुवेगि ।
 धरणि घटकाइ रजु ऊडण नवि स्रहइ मागो ।
 हय हींसइ आरसइ करइ वेगि चहइ चइल ।
 साद किया धाहरइ अवरु नवि देई चुल ॥ २ ॥
 निमि दीवी झलहलहि जेम ऊगिउ तारायणु ।
 पावलपारु न पामियण वेगि चहइ सुग्यासण ।

आगेवाणिहि संचरण संघपति साहुदेसलु ।
 बुद्धिवंतु बहुपुंनिवंतु परिकमिहिं सुनिश्चल ॥ ३ ॥
 पाछेवाणिहि सोमसीहु साहुसहजापुतो ।
 सांगणुसाहु लूणिगह पृत सोमजिनिजुत्तो ।
 जोड करी असवारमाहि आपणि समरागरु ।
 चडीय हींड चहुगमे जोड जो संघअसुहकरु ॥ ४ ॥
 सेरीसे पूजियउ पासु कलिकालिहिं सकलो ।
 सिरपेजि थाइउ धवलकए संघु आविउ सयलो ।
 धंधूकउ अतिक्रमिउ ताम लोलियाणइ पहुतो ।
 नेमिभुवणि उछु करिउ पिपलालीय पत्तो ॥ ५ ॥
 सप्तमी भाषा-संधिहिं चउरा दीन्हा तहिं नयरपरिसरे ।
 अलजउ अंगि न माए दीठउ विमलगिरे ।
 पूजिउ परचतराउ पणमिउ बहुभस्तिहिं ।
 देसलु देयए दाणे मागणजणपंतिहिं ॥ १ ॥
 अजियजिणिंदजुहारो मनरंगि करेवि ।
 पणमइ सेनुजसिहरो सामिउ सुमरेवि ॥ २ ॥
 पालीताणइ नयरे संघ भयलि प्रवेसु ।
 ललतसरोवरतीरे किउ संघनिवेसु ।
 कज्जसहाय लहुभाय लहु आवियउ मिलेवि ॥ ३ ॥
 सहजउ साहणु तीहिं त्रिन्हइ गंगप्रवाह ।
 पासु अनइ जिण वीरो धंदिउ सरतीरिहिं ।
 पंपि करइ जलकेलि सरु भरिउ बहुनीरिहिं ॥ ४ ॥
 सेनुजसिहरि चडेवि संघु सामि उमाहिउ ।
 सुलालिताजिणगुणगीते जणदेहु रोमंचिउ ।
 सीयलो वायए वाओ भवदाहु ओल्हावण ।
 माडीय नमिय मरुदेवि संतिभुवणि संघु जाए ॥ ५ ॥
 जिणविंवइ पूजेवी कवडिजस्तु जुहारण ।
 अणुपमसरतडि होई पहुता सीहुदुवारे ।
 तोरणतलि वरसंते घणदाणि संघपत्ते ।
 भेदिउ आदिजगनाहो मंडिउ पत्रीठमहछवो ॥ ६ ॥

अष्टमी भाषा-चलउ चलउ सहियडे सेत्रुजि चडिय ए ।

आदिजिणपत्रीठ अम्हि जोहसउं ए ।

माहसुदि चउदसि दूरदेसंतर संघ मिलिया तहिं अति अवाह ॥ १ ॥

माणिके मोतिए चउकु सुर पूरइ रतनमइ वेहि सोवन जवारा ।

अशोकवृक्ष अनु आम्र पल्लवदलिहि रितुपते रचियले तोरणमाला ॥ २ ॥

देवकन्या मिलिय धवलमंगल दियइ किंनर गायहि जगतगुरो ।

लगनमहरतु सुरगुरो साधए पत्रीठ करइ सिधसुरिगुरो ॥ ३ ॥

भुवनपतिव्यंतरजोतिसुर जयउ जयउ करइ समरि रोपिउ द्रिदु धरमकंदो ।

हुंदुहि वाजिय देवलोकि तिहुअणु सीचिउ अभियरसे ॥ ४ ॥

देउ महाधज देसलो संघपते ईकोतरु कुल ऊधरए ।

सिहरि चडिउ रंगि रूपि सोवनि धनि वीरि रतनि वृष्टि विरचियले ॥ ५ ॥

रूपमय चमर दुइ छत्त मेघाडंबर चामरजुयल अनु दिन्नदुन्नि ।

आदिजिण पूजिउ सहलकंतिहिं कुसुम जिम कनकमयआभरण ॥ ६ ॥

आरतिउ धरियले भावलभत्तारिहिं पुव्वपुरिस सगि रंजियले ।

वानमंडपि थिउ समर सिरिहि चरो सोवनसिणगार दियइ याचकजन ॥ ७ ॥

भत्ति पाणी थ वरमुनि प्रतिलाभिय अचारिउ वाहइ दुहियदीण ।

धाविउ सुधम वितु सिद्धसेत्रि इंद्रउच्छवु करि ऊत्तरए ॥ ८ ॥

भोलीयनंदणु भलइ महोत्सवि आविउ समरु आवासि गनि ।

तेरइकहत्तारइ तीरथउडारु यउ नंदउ जाव रविससि गयणि ॥ ९ ॥

भवमी भाषा-संघवाछलु करी वीरि भले मालहंतडे पूजिय दरिस्ण पाय ।

सुणि सुंदरे पूजिय दरिस्ण पाय ।

मोरठदेस संघु संचरिउ मा० चउंडे रयणि विहाइ ॥ १ ॥

आदिभक्तु अमरेलीयह मालहं० आविउ देसलजाउ ।

अलवेसरु अल जवि मिलए मालहं० मंडलिकु सोरठराउ ॥ २ ॥

ठामि ठामि उच्छव हुअइ मालहं० गदि जूनइ संपचु ।

महिपालदेउ राउलु आवए मालहं० सामुहउ संघअणुरचु ॥ ३ ॥

महिपु समरु विउ मिलिय सोहइ मालहं० इंद्रु किरि अनइ गोविंदु ।

तेजि अगंजिउ तेजलपुरं मा० पूरिउ संघआणंदु । सुणि० ॥ ४ ॥

वउणथलीचेथप्रवाडि करे मालहं० तलहटी य गदमाहि ।

ऊजिलऊपरि चालिया ए मालहं० चउज्विहसंघहमाहि । सुणि० ।

दामोदरु हरि पंचमउ माल्हं० कालमेघो क्षेत्रपालु । सुणि० ।

सुवनरेहा नदी तहिं वहए माल्हं० तरुवरतणउं झमालु ॥ ५ ॥

पाज चडंता धामियह मा० क्रमि क्रमि सुकृत विलसंति । सुणि० ।

ऊची य चडियए गिरिकडणि मा० नीची य गति पोडंति ॥ ६ ॥

पामिउ जादवरायभुवणु मा० त्रिनि प्रदक्षिण देह ।

सिवदेविसुतु भेटिउ करिउ मा० उत्तरिया मढमाहि । सुणि० ।

कलस भरेविणु गयंदमए मा० नेमिहिं न्हवणु करेह ।

पूज महाधज देउ करिउ मा० छत्र चमर मेल्लेह ॥ ७ ॥

अंबाई अवलोयणसिहरे मा० सांबिपज्जूनि चडंति । सुणि० ।

सहसारासु मनोदरु ए मा० विहसिय सवि वणराइ । सुणि० ।

कोइलसाडु सुहावणउ ए मा० निसुणियइ भमरझंकारु । सुणि० ॥८॥

नेमिकुमरतपोवनु ए मा० दुइ जिय ठाउं न लहंति । सुणि० ।

इसइ तीरथि तिहुयणदुलभे मा० निसिदिनु दानु दियंति ॥ ९ ॥

समुदविजयरायकुलतिलय मा० बीनतडी अवधारि । सुणि० ।

आरतीमिसि भवियण भणइं मा० चतुगतिफेरडउ वारि । सुणि०॥१०॥

जइ जगु एकु मुहु जोइयए मा० त्रिपति न पामियइ तोइ । सुणि० ।

सामलधीर तउं सार करे मा० बलि बलि दरिसणु देजि । सुणि०॥११॥

रलीयरेवयगिरि उत्तरिउ ए मा० समरडो पुरुषप्रधानु ।

घोडउ सीकिरि सांकलिय मा० राउलु दियइ बहुमानु । सुणि० ॥१२॥

दशमी भापा-रितु अवतरियउ तहिं जि वसंतो सुरहिकुसुमपरिमल पूरंतो
समरह वाजिय विजयदहक ।

सागुसेलुसल्लइसच्छाया केतुयकुडयकयंवनिकाया

संघसेनु गिरिमाहइ वहए ।

बालीय पूछइं तरुवरनाम वाटइ आवइं नव नव गाम

नयनीझरणरमाउलइं ॥ १ ॥

देवपटणि देवालउ आवइ संघह सरयो सरु पूरावइ

अपूरवपरि जहिं एक दृईअ ।

तहिं आवइ सोमेसरछत्तो गउरवकारणि गरुड पट्टना

आपणि राणउ मृगराजो ॥ २ ॥

पान फूल कापड बहु दीजइं लणसमउं कपूर गणीजइ

जवाधिहिं मिरु निदियए ।

ताल तिविल तरविरियां वाजइं ठामि ठामि धाकणा करीजइं
 पगि पगि पाउल पेपण ए ॥ ३ ॥
 माणुस माणुसि हियउं दलिजइ घोडे वाहिणिगाहु करीजइ
 हयगय सूझइ नवि जणह ।
 दरिसणसउं देवालउ चल्हइ जिणसासणु जगि रंगिहिं मल्हइ
 जगतिहिं आन्या सिवमुवणि ॥ ४ ॥
 देवसोमेसरदरिसणु करेवी कवडिवारि जलनिहिं जोएवी
 प्रियमेलइ संघु उत्तरिउ ।
 पट्टचंदप्पहपय पणमेवी कुसुमकरंडे पूज रएवी जिणमुवणे
 उच्छवु कियउ ॥ ५ ॥
 सिवदेउलि महाधज दीधी सेले पंचे वन्नसमिद्धी अपूरवु उच्छवु
 कारविउ ।
 जिनवरधरमि प्रभावन कीधी जयतपताका रवितलि बद्धी दीनु
 पयाणउं दीवभणी ।
 कोडिनारिनिवासणदेवी अंबिक अंबारामि नमेवी दीवि
 वेलाउलि आवियउ ए ॥ ६ ॥

एकादशी भापा-संघु रयणापरतीरि गहगहए गुहिरगंभीरगुणि ।

आविउ दीवनरिंदु सामुहउ ए संघपतिसवदु सुणि ॥ १ ॥
 हरपिउ हरपालु चीति पट्टतउ ए संघु मोलविकरे ।
 पभणइं दीवह नारि संघह ए जोअण उतावली ए ।
 आउलां वाहिन वाहि वेगुलइ ए चलावि प्रिय वेडुली ए ॥ २ ॥
 किसउ सुपुत्तपुरिपु जोइउ ए नयणुलां सफल करउ ।
 निवछणा नेत्रि करेसु ऊनारिसू ए कपूरि ऊआरणा ए ।
 वेडीय वेडीय जोडि बलियऊ ए कीधउं बंधियारो ॥ ३ ॥
 लेउ देवालउमाहि बहूठउ ए संघपति संघसहिउ ।
 लहरि लागइं आगासि प्रवहणु ए जाइ विमान जिम ।
 जलपटनादकु जोइ नवरंग ए रास लउडारस ए ॥ ४ ॥
 निरुपमु हाइ प्रयेसु दीसई ए रुवडला धवलहर ।
 तिहां अच्छइ कुमरविहाक रुअडऊ ए रुअडुला जिणमुवण ।
 तीथंकर तीह चंदेवि धंदिऊ ए सयंभू आदिजिणु ।

दीठउ वेणिवच्छराजमंदिरु ए मेदनीउरि धरिउ ।

अपूरवु पेपिउ संघु उत्तारिऊ ए पइली तडि समुदला ए ॥ ५ ॥

द्वादशी भापा-अजाहरवरतीरथिहिं पणमिउ पासजिणिंदो ।

पूज प्रभावन तहिं करहिं अज्जिउ ए अज्जिउ ए अज्जिउ सफल सुछंदो ॥ १ ॥

गामागरपुरबोलितो वलिउ सेतुजि संपत्तो ।

आदिपुरीपाजह चडिऊ ए वंदिऊ ए वंदिऊ ए वंदिऊ ए मरुदेविपूतो ॥२॥

अगरि कपूरिहिं चंदणिहिं मृगमदि मंडणु कीय ।

कसमीराकुंकुमरसिहिं अंगिहिं ए अंगिहिं ए अंगो अंगि रचीय ।

जाइवडलविहसेवत्रिय पूजिसु नाभिमल्हारो ।

मणुयजनसुफलु पामिऊ ए भरियऊ ए भरियऊ ए भरियऊ सुकृतभंडारो॥३॥

सोहग ऊपरि मंजरिय बीजी य सेतुजि उधारि ।

.....ठिय ए समरऊ ए समरऊ ए समर आविउ गुजरात ।

पिपलालीय लोलिघणे पुरे राजलोकु रंजेई ।

छडे पयाणे संचरण राणपुरे राणपुरे राणपुरे पहुचेई ॥ ४ ॥

वढवाणि न विलंबु किउ जिमिउ करीरे गामि ।

मंडलि होईउ पाडलए नमियऊ ए नमियऊ ए नमियऊ नेमि सु जीवतसामि ।

संखेसर सफलीयकरण पूजिउ पासजिणिंदो ।

सहजुसाहु तहिं हरपियउ ए देपिऊ ए देपिऊ ए देपिउ फणिमणिवृंदो ॥ ५ ॥

हुंगरि डरिउ न खोहि खलिउ गलिउ न गिरवरि गव्वो ।

संघु सुहेलइ आणिउ ए संघपती ए संघपती ए संघपतिपरिहिं अपुव्वो ॥ ६ ॥

सज्जण सज्जण मिलीयतहिं अंगिहिं अंगु लियंते ।

मनु विहसइ ऊलटु घणउ ए तोडरू ए तोडरू ए तोडरू कंठि ठवंते ॥ ७ ॥

मंत्रिपुत्रह मीरह मिलिय अनु ववहारियसार ।

संघपति संघु घघावियउ कंठिहिं ए कंठिहिं ए कंठिहिं घालिय जयमाल ।

तुरियघाटतरवरि य तहिं समरउ करइ प्रवेसु ।

अणहिलपुरि बढामणउ ए अभिनवु ए अभिनवु ए अभिनवु पुन्ननिवासो॥८॥

(संवच्छरि इकहत्तरए थापिउ रिसहजिणिंदो ।

१३२

चैत्रवदि सातमि पहुत घरे नंदऊ ए नंदऊ ए नंदऊ जा रविचंदो ॥ ९ ॥

पासडसुरिहिं गणहरह नेऊअगच्छनिवासो ।

तसु सीसिहिं अंबदेवसुरिहिं रचियऊ ए रचियऊ ए रचियऊ समरारासो ।

एहु रासु जो पढइ गुणइ नाचिउ जिणहरि देइ ।

श्रवणि सुणइ सो वषठऊ ए तीरथ ए तीरथ ए तीरथजात्रफलु लेई ॥ १० ॥

इति श्रीसद्यपतिसमरसिंहरास ॥

सिरिथूलिभदफाणु ।

पणमिय पासजिणंदपय अनु सरसइ समरेवी ।

धूलिभदमुणिवइ भणिसु फाणुबंधि गुण केवी ॥ १ ॥

अह सोहगसुंदरखुववंतु गुणमणिभंडारो ।

कंचण जिम झलकंतकंति संजमसिरिहारो ।

धूलिभदमुणिराउ जाम महियलि बोटंतउ ।

नयररायपाडलियमाहि पहुतउ विहरंतउ ॥ २ ॥

वरिसालइ चउमासमाहि साह गहगहिया ।

लियइ अभिगह गुरह पासि नियगुणमहमहिया ।

अब्जविजयसंनूपसुरि गुरु वष मोकलावइ ।

तसु आणसि मुणोस कोसरेसाधरि आवइ ॥ ३ ॥

मंदिरतोरणि आवियउ मुणिवरु पिखेवी ।

चमकिय चित्तिहि दासडिय वेगि जाइ वधावी ।

वेसा अतिहि उतावलि य हारिहि लहकंती

आविय मुणिवररायपासि फरयल जोडंती ॥ ४ ॥

भास—धर्मलामु मुणिवइ भणिसु चित्रसाली मंगेवी ।

रहियउ सोहकिसोर जिम धोरिम हियइ धरेवी ॥ ५ ॥

^१ छिरिमिरि छिरिमिरि छिरिमिरि न मेहा वरिसंति ।

गलहल गलहल गलहल न बाह्ला वरंति ।

झवझव झवझव झवझव न धीजुलिय झवरुड ।

धरहर धरहर धरहर न विरहिणिमणु कंषइ ॥ ६ ॥

महुरगंभीरमरेण मेह जिम जिम गाजंते ।

पंचराण निय कुसुमवाण निम निम साजंते ।

जिम जिम पेनकि महमहंत परिमल विहसावइ ।

निम निम कामि य वरण लगि नियरमणि मनावइ ॥ ७ ॥

सीयलकोमलसुरहि वाय जिम जिम वायंते ।
माणमडप्फर माणणि य तिम तिम नाचंते ।
जिम जिम जलभरभरिय मेह गयणंगणि मिलिया ।
तिम तिम कामीतणा नयण नीरिहि झलहलिया ॥ ८ ॥

भास—मेहारवभरज्जलटि य जिम जिम नाचइ मोर ।
तिम तिम माणिणि खलभलइ साहीता जिम चोर ॥ ९ ॥

^१अइ सिंगारु करेइ वेस मोटइ मनज्जलटि ।
रइयरंगि बहुरंगि चंगि चंदणरसज्जगटि ।
चंपयकेतकिजाइकुसुम सिरि पुंभ भरेइ ।
अतिआलउ सुकमाल चीरु पहिरणि पहिरेइ ॥ १० ॥
लहलह लहलह लहलह ए उरि मोतियहारो ।
रणरण रणरण रणरण ए पणि नेउरसारो ।
झगमग झगमग झगमग ए कानिहि वरकुंडल ।
झलहल झलहल झलहल ए आभरणहं मंडल ॥ ११ ॥
मयणखग जिम लहलहंत जसु वेणीदंडो ।
सरलउ तरलउ सामलउ रोमावलिदंडो ।
तुंग पयोहर उल्लसइ सिंगारथवक्का ।

कुसुमवाणि निय अमियकुंभ किर थापणि मुक्का ॥ १२ ॥

भास—काजलि अंजिवि नयणजुय सिरि संथउ फाडेई ।
बोरीयावडिकांचुलिय पुण उरमंडलि ताडेइ ॥ १३ ॥
कन्नजुयल जसु लहलहंत किर मयणहिंडोला ।
चंचल चपल तरंगचंग जसु नयणकचोला ।
सोहइ जासु कपोलपालि जणु गालिमसूरा ।
कोमल विमल सुकंठु जासु वाजइ संखतूरा ॥ १४ ॥
लवणिमरसभरकूवडिय जसु नाहि य रेहइ ।
मयणराय किर विजयखंभ जसु ऊरु सोहइ ।
जसु नहपल्लव कामदेवअंकुस जिम राजइ ।
रिमिझिमि रिमिझिमि ए पायकमलि धायरिय सुवाजइ ॥ १५ ॥
नवजोवनविलसंतदेह नवनेहगहिह्ली ।
परिमललहरिहि मयभयंत रइकेलिपहिह्ली । -

अहरबिं व परवालखंड वरचंपावन्नी ।

नयणसल्लणी य हावभाववहुगुणसंपुन्नी ॥ १६ ॥

भास—इय सिणगार करेवि घर जव आवी मुणिपासि ।

जोएवां कउतिगि मिलिय सुरकिंनर आकासि ॥ १७ ॥

२ अह नयणकड^{एव}कहं आहणए वांकउ जोवंती ।

हाव भाव सिणगार भंगि नवनवि य करंति ।

तह वि न भीजइ मुणिपवरो तउ वेस बोलावइ ।

तवणुतुल्लु तुह देह नाह मह तणु संतावइ ॥ १८ ॥

वारहवरिसहंतणउ नेहु किणि कारणि छंझिउ ।

एवइ निठुरपणउ कंड मूसिउ तुम्हि मंडिउ ।

थूलिभइ पभणेइ वेस अह खेदु न कीजइ ।

लोहिहि घडियउ हियउ मज्झ तुह घयणि न भीजइ ॥ १९ ॥

मह विलवंतिय उवरि नाह अणुराग धरीजइ ।

एरिसु पांवसु कालु सयलु मूसिउ माणीजइ ।

मुणिवइ जंपइ वेस सिद्धिरमणी परिणेवा ।

मणु लीणउ संजमसिरीहिसुं भोग रमेवा ॥ २० ॥

भास—भणइ कोस साचउ कियउ नवलइ राचइ लोउ ।

मूं मिलिहवि संजमसिरिहि जउ रातउ मुणिराउ ॥ २१ ॥

उवसमरसभरपूरियउ रिसिराउ भणेइ ।

चिंतामणि परिहरवि कवणु पत्थरु गिहेइ ।

तिम संजमसिरि परियएवि बहुधम्मसमुज्जल ।

आलिंगइ तुह कोस कवणु पसरंतमहावल ॥ २२ ॥

पहिलउ हियडा कोस कहइ जुव्वणफलु लीजइ ।

तयणंतरि संजमसिरीहि सुह सुहिण रमीजइ ।

मुणि वोळइ जि मइ लियउ तं लियउ ज होइ ।

कवणु सु अच्छइ भुवणतले जो मह मणु मोहइ ॥ २३ ॥

भास—इणपरि कोसा अवगणिय थूलिभइमुणिराह ।

तसु धीरिम अवधारिकरि चमकिय चित्ति सुहाइ ॥ २४ ॥

अइवलवंतु सु मोहराउ जिणि नाणि निधाडिउ ।

झाणखडगिण मघणसुभइ समरंगणि पाडिउ ।
 कुसुमवुट्टि सुर करइ तुट्टि हुउ जयजयकारो ।
 धनु धनु एहु जु थूलिभइ जिणि जीतउ मारो ॥ २५ ॥
 पडिबोहिधि तह कोसवेस चउमासिअणंतरु ।
 पालिय भिग्गह ललिय चलिय गुरुपासि मुणीसरु ।
 दुद्धरदुद्धरकारगु त्ति सरिहि सु पसंसिउ ।
 संखसमुज्जलजसु लसंतु सुरनरहं नमंसिउ ॥ २६ ॥
 नंदउ सो सिरिथूलिभइ जो जुगह पहाणो ।
 मलियउ जिणि जगि मल्लसल्लरइवल्लहमाणो ।
 न्तरतरगच्छि जिणपदमसरिकियफागु रमेवउ ।
 खेला नाचइ चैत्रमासि रंगिहि गावेवउ ॥ २७ ॥
 ॥ सिरिथूलिभइफागु समत्तु ॥

जवूतामिचरिय

जिण चउवीसइ पय नमेवि गुरुचलण नमेवी ।
 जवूतामिहितणउं चरिय भविउ निसुणेवी ।
 करि सानिध सरसत्तिदेवि जिम रयं कहाणउं ।
 जवूतामिहि गुणगहण संखेवि वपाणउं ॥ १ ॥
 जंवूदीपह भरहखित्ति तिहि नयरपहाणउं ।
 राजगृह नामेण नयर पहुवि वक्काणउं ।
 राज करइ सेणियनरिद नरवरहं जु सारो ।
 तासुतणइ पुत्त बुद्धिमंत मंति अभयकुमारो ॥ २ ॥
 अन्नदिणंतरि वद्धमाण विहरंत पहतउ ।
 सेणिउ चालिउ वंदणह बहुभत्तितुरंतु ।
 मागि वहंतु माहाराज केसउं पेखेइ ।
 भोगविरत्तउ पसनचंद बहुतवण तवेइ ॥ ३ ॥
 धनु धनु माया एहरसि पसंसिउ वंदइ ।
 दुसुग्ववयणि सो चलिउ ध्यानि कुमारणि चल्लइ ।
 धम्मलाभ नयि दीयइ जाम गुनि हउ अभाओ ।

ईहं सह को एक मानि रंको अनु राओ ॥ ४ ॥
 सामिथ बंदिउ बद्धमाण सेणीयं पूछीहं ।
 जइ पसनचंद हिव करेइ काल कीछे ऊपजइ ।
 मन जाणेविण पसनचंद सामी बोलीजइ ।
 नरगावासइ सातमए नीछइ ऊपजइ ॥ ५ ॥
 बीजी पूछहं मणुय होइ बीजी अणउत्तर ।
 दुंदुहि बाजी देवकीय चालीय तिहिं सुरवर ।
 सेणिउ पूछइ सामिसाल कांहां जाईजइ ।
 केवलमहिमा पसनचंद देवे कीजीजइ ॥ ६ ॥
 सेणिउ मनि चिंताचडिओ सामी बलि पूछइ ।
 जं प्रभु तम्हे बोलीयउं तं अम्हे न बूझिउं ।
 सेणिय तम्हि बूझियउं तअं तिसउं त होए ।
 मणपरिणामह विसमगति जीवहं पुण होइ ॥ ७ ॥
 केवलनाणउ भरहखेति केतुं वरतेसिइ ।
 सामी दापीउ विज्जुमालियउ छेदु होसिइ ।
 चउसट्ठि देवे परियरिउ चउदेवे सहीउ ।
 अतिसइं दीसइ देहकंति सेणीचिति चडीउ ॥ ८ ॥
 देवहं नवि हुइ एहु नाणु थउ किम होएसिइ ।
 आजूना दीह सातमए इणि नपरि चवेसिइ ।
 किकारण पुण एहकंतिं किंरूपह अतिसउ ।
 कवणह धम्महतणइ भावियउ देवअइसउ ॥ ९ ॥

ठवणि—महाविदेहतणइ विजय बीतसोय नपरी ।

पदमरथ नामेण राउ वनमाला घरणी ।
 तास ऊयरि ऊपन्न पुत्रु सुरलोयहंहुतु ।
 बद्ध नामिइं सिवकुमार बहुगुणिहिं संजुत्तउ ॥ १० ॥
 पुब्बभवंतरतणइ नेहि सागरमुणि पहुतु ।
 आवीउ बंदण सिवकुमार बहुभक्तितुरंतउ ।
 हउं जानउं त् सुणिहिं नाह कीछे मइं दीठउ ।
 एह जन्मह तइयभवि सुझ भाइ य हंतउ ॥ ११ ॥
 जहापोह करेहि जाम पाछिलउ भय देपइ ।

जा मइं मूकी सुरह रिद्धि या कीणइं लेखइं ।
 तु चिंताविउ सिवकुमार अथिरउ संसारो ।
 भवनिन्नासण लेइसिउं अम्हि संजमभारो ॥ १२ ॥
 माइ न मेलहइं एकपुत्त सो मुनिहिं थाई ।
 दृढधम्मेण सावणण जायवि बोलावीउ ।
 पारि पारि दृढधम्म भणइ अम्ह भणीउ कीजइ ।
 दुल्लभ वेडी मणुयजम्म जतनिहिं रापीजइ ॥ १३ ॥
 कहइ धम्म सो मुनिहिं जाम तसु वयण मनेई ।
 विहुं उपवासहं पारणइ ए आंविल पारेई ।
 फासुयवेसण भत्तपाण दृढधम्मो आणइ ।
 माहि थीउ अंतेउरहं सो सील ज पालइ ॥ १४ ॥
 नवकरवालीतीपधार करमं सवि सूडइ ।
 निहणइ मोहकंदप्पराउ भवपरीयण मोडइ ।
 वारहं वरसहंतणइ अंति आऊपूं पूरीजइ ।
 पंचमदेवलोकि सिवकुमार सो देव ऊपजइ ॥ १५ ॥
 कवणह नारिहितणइ उयरि एह जीव चवेसिइ ।
 कवणह वापहतणइ कुलि एउ मंडण होसिइ ।
 उसभदत्तसेठिहिं घरणि धारणिउरि नंदण ।
 होसिइ नामिइं जंबुसामि तिहुयणि आणंदण ॥ १६ ॥
 ऊठीउ देव अणाढिउ हरपिइं नाचेई ।
 धनु धनु अम्हतणउं कुल एसु पुत्त होसिइ ।
 चविउ विमाणह वंभलोय धारणिउरि आविउ ।
 सुमिणप्रभाविइं उसभदत्त अंगेहि न माईउ ॥ १७ ॥
 जायउ पुत्रु पहाण जाम दसदिसि उदयंतउ ।
 वडइ नामिहिं जंबुसामि गुणगहण करंतु ।
 अठवरीसउ हउ जाम गुरुपासि पट्टु ।
 ब्रह्मचारि सो लियइ नीम भववासविरत्तउ ॥ १८ ॥
 जोयणवेसह पट्टु जाम कन्ना मग्गावइ ।
 बीजा धूया पाठवए तस विवारा वय ।
 मन देजिउं तम्हि अम्ह देसु अम्हि इसउं करेशउं ।

सांझहं परणी प्रहह जाम नीछइं व्रत लेसिउं ॥ १९ ॥
 माय दुल्लंघीय तणइं वघणि परिणेवउ मनीउ ।
 आठइ कन्या एकवार परिणीय घरि आवीउ ।
 आठइ परणी मृगनयणी ब्रूइवणइ बइठउ ।
 पंचसणचोरेहंसिउं प्रभवउ घरि पढठउ ॥ २० ॥
 नीद्र अणावीय सोयणीय आभरण लीयंता ।
 ते सवि अछइं थंभीया दगमग जोयंता ।
 प्रभवउ भणइ हो जंबुसामि एक साठि ज कीजइ ।
 विहुं विज्जावडइं एक विज्ज थंभणीय ज दीजइ ॥ २१ ॥
 हिब हूं कहि नवि ज लेवि पुण किसउं करेसो ।
 आठइ परणी ससिवघणी नीछइं व्रत लेसो ।
 रूपवंत अणुरत्त रमणि एउ एम चएसिइ ।
 अणहुंतासुहतणी य आस सुइ जीव करेसिउ ॥ २२ ॥
 एवडु अंतर नरहं होइ प्रभवउ चिंतेई ।
 संवेगरसि जउ गयउं मन प्रभवउ पूछेई ।
 सिद्धिरमणिऊमाहीया ह तम्हि संजम लेसिउ ।
 कम्पणइं विलवइं माइचप्प किम किम मेल्हेसिउ ॥ २३ ॥
 इंदियाल नवि जाणीइ ए को किम होइसिइ ।
 अढार नात्रां एकभवि जंबुसामि कहेई ।
 पितर तम्हारा जंबुसामि किम तृपति लहेणइं ।
 पिंड पडइ लोयहंतणइ ए ऊभा जोसिइं ॥ २४ ॥
 बाप मरवि भइंसु हुऊ पुत्रजन्म इणीजइ ।
 इणपरि प्रभवा पितरतृप्ति तिणि धीयरि कीजइ ।
 अणहुंतासुहतणी य आस हं तउं छांडेसिउ ।
 तिण करसणि जिम कलत्र भणइ अवतरता करेशिउ ॥ २५ ॥
 तम्ह रुपिहिं हउं लोभ करउं देवि मणहर रूपउं ।
 हत्थिकडेवर काग जिम भवसायर निवडउं ।
 बीजी कलत्र कहेवि नाह जइ अम्ह छंडेसिउं ।
 तिणि बानरि जिम पच्छुताव बहु चींति परेसिउं ॥ २६ ॥
 बिंदुसमाणउं विसयसुक्क आदर किम कीजइ ।

इंगालवाहग जेम तुम्हि तूस किम न छीपइ ।
 चीजी कलत्र भणइवि नाह जउ अम्ह छांडेसिउ ।
 तिणि जंबुकि जिम साणहार बहुखेद करेशउ ॥ २७ ॥
 ऊतर पडि ऊतर वह य संखेवि कहीजइ ।
 विलखी हुई ते सखि बाल जंबूसामि न बूझइ ।
 आसातरुवर सुक जाम अम्हि इशउं करेशउं ।
 नेमिहिसिउं राइमइ जिम वयगहण करेशउं ॥ २८ ॥
 आठइ कलत्रह बूझवीय पंचसयसिउं प्रभवउ ।
 माइ दाप बेउ भणइं ताम अम्ह साधुसरीसउ ।

ठबणि — प्रह बिहसइ सुविहाण प्रभवु विनवड जंबूसामि ।
 सजनलोक मोकलावि तम्हिसिउं संजम लेसिउं ॥ २९ ॥
 ग्वण एक पडबाएवि राय मोकलावण चालीय ।
 तु सुहृदसमूह करेवि भुइं कंपइं भडभडवडं ॥ ३० ॥
 जस भय भसकइ राउ जस भय नींद्र न वयरीयहं ।
 णसउ प्रभवउ जाइ नरनारी जोयण मिलीय ।
 पहुतु रायदुवारि पडिहारिइं बोलावीउ ।
 वेगिइं राउ भेटावि अम्हि अछउं उत्सुकमणा ए ॥ ३१ ॥
 पुत्तणउ विझ राय तुम्ह दरिसणि जमाहीउ ओ ।
 कारण जाणीउ राय वेगिहिं सो मेल्लावीउ ओ ।
 ट्रेठि न ग्वंडइ राउ प्रभवउ देपी आवतउ ।
 साचउ ए भडिवाउ पुरुषह आकृति जाणीइ ए ॥ ३२ ॥
 रूपगुणे संपन्न रायरमणिमन चोरतु ओ ।
 सोहइ पूजिप्रचंद उड्डव कोणी प्रणसीउ ।
 नुतउ अद्धसीय शरीर जइ कोइ जणणीजाइउ ।
 नयणे छूई नीर संवेगजलहरि वरिसिउ ।
 सामी ग्वमि अपराध अम्हे लोऊ संतावीया ए ॥ ३३ ॥
 पडिबज बोलेइ राउ कोणी मनि आणंदियउ ।
 धन पनुती माइ इसिउ पुत्र जिणि जाईउ ओ ।
 तो मोकलावी राउ चोरपल्ली सासंचरण ।
 सजनह कहीइं एउ अम्हे संजम लेइशउं ॥ ३४ ॥

जिण कारणि चइराग तं कारण अन्ह बोलीइ ए ।
 मेलही अट्टइ बाल कणयकोडि नवाणवड ए ।
 अनइ रिद्धि बहत तिहिं पुण पार न जाणीयए ।
 जंबूसामिचरित्त मरिमंडलि हउं अछरीय ॥ ३५ ॥
 इणि कारणि वपराग तृण जिम दीठउ मेलहतउ ओ ।
 अन्ह सोइ जि सामि नन्हं यन्हं अछजिउ ओ ।
 मोहजरिदणउं झुह संजमरिदिउं झुहसिउं ओ ॥ ३६ ॥

ठवणि—प्रभवउ पंचमण अट्टवहपरमाइवण्णो ।
 मविकहं ए रुठउ जाइ नीयवरहंतु नीसरइ ए ।
 चालीउ ए सिवपुरिमाथ मारथवय तिहिं जंबूसामि ।
 तिहण्णो ए जयजयकार मोहम देपीउ जंबूसामि ।
 पंचण ए रपणिहिं दाण जिम घण वरमइ भाइवए ।
 मयतऊ ए ईह गोलोक भवियजणमंवेगकरो ॥ ३७ ॥

ठवणि—कसवेगं पिइ भाउ पुत्र कलत्र धन घण ।
 देसो कुटिमरिच्छ जिण जिम जंबू परित्तरए ।
 अनइ लोक वहन वन लेया तिहिं चालीउ ।
 पंदिय जिणमण्णां मोहम्मामिपामि गयउ ॥ ३८ ॥
 भवसापर उत्तारि जम्मण मरणए बीर तउ ओ ।
 पंचमहव्ययभार मेहम्ममाणउ अंगमइ ए ।
 अनु तैतउ परिवार मोहम्मामिहिं दिरकीउ ओ ।
 हउं येइलनाण मंजमराज ह पालनां ए ॥ ३९ ॥
 पारजिणिदा नीयि येइलि हउ पासिलउ ।
 प्रभवउ घटसारीउ पाटि सिद्धि पट्टु जंबूसामि ।
 जंबूसामिगरिम पट्टं गुणं जे मंभलइ ।
 सिद्धिगुण अणंन ते नर नीयहिं पामिमिहं ॥ ४० ॥
 महिंदगुरिगुणमांन भम्म भणइ हो भामोऊ ह ।
 गिनउ राबिदियमि जे सिद्धिउ उत्तरीया ह ।
पारवसरमण्णि कयिनु नीयने पारवसर ।
मोहद विजगणयि दुग्गि पणामउ मण्णमंज ॥ ४१ ॥
 ॥ श्रीगुरुगणिका ॥

सप्तशेत्रिरासु

सवि अरिहंत नमेवी सिद्ध सूरि उवझाय ।

पनरकर्मभूमिसाहू तीह पणमिय पाय ॥ १ ॥

जिणसासणहमाहि जो सारो चउदह पूरवतणउ समुधारो ।

समरिउ पंचपरमिठि नवकारो सप्तशेत्रि हिव कहउ विचारो ॥ २ ॥

धुनु धुनु ते जि संसारे जीहं जिणवरु स्वामी ।

गुरु सुसाहु जिणभणिउं धम्म सुगडगामी ॥ ३ ॥

वारि अंगि दुलहु मणुजम्मु अनी अ विशेषिहि जिणवरधम्म ।

सम्मत् रयणु चिति निवसइ जीह सोहग ऊपरि मंजरि तीह ॥ ४ ॥

पुणु जिणसासणु दुलहउं जीव संभलि कथनु निरुपमु ।

नाणुपहाणु एकु जि जिनवरधम्म ॥ ५ ॥

भरहखित्ति खट्पंडह थित्ति केवलनाणि जिणवर जंपंति ।

वैताळ्यपरहां त्रिभि खंड होइ तहि धरमनामु निवरतन तोइ ॥ ६ ॥

उल्या त्रिहु खंडि थित्ति केवलि हम आपइ ।

तोहमांहि दुनि पंडने पडिया पापइ ॥ ७ ॥

मज्झिम पंड इकु वइनी मडिउ तेउ त्रिहुभाणि पाछइ पडिउं ।

चउथउ भाग धरमनइ लागे तेउ जोईजइ सयमइ भागे ॥ ८ ॥

ते अ नवाणवइ भाग साह मिथ्यातिहि जडिउं ।

थाकतउं कुमतिकुबोधिकुरुगुग्गहि पडिउं ॥ ९ ॥

थोडा जीव केई दीसंते जे जिणभणिअं मनिहि करंति ।

हिव तिहुपणिहि सारु समिकत्तु पामिउ जीवि जिनभणिउ नवतत्तु ॥ १० ॥

वार वरत तहं पामिउ जे जिणवरि वुत्ता ।

सुगइनिबंधण सत्ता जीव मुगति दीयंता ॥ ११ ॥

प्राणातिपातव्रतु पहिलउं होई बीजउ सत्यवचनु जीव जोई ।

त्रीजइ व्रति परधनपरिहारो चउथइ शीलतणउ सचारो ॥ १२ ॥

परिग्रहतणउं प्रमाणु व्रतु पांचमइ कीजइ ।

इणपरि भवइ समुद्धो जीव निश्चय तरीजइ ॥ १३ ॥

छट्ठउं व्रतु दिसितणउ प्रमाणु भोगुयभोगव्रत सातमइ जाणु ।

अनरधव्रतु दंड आठमउं होइ नवमउं व्रत सामायकु तोइ ॥ १४ ॥

देसावगासी दसमुं व्रतु नथी मूल ।

पोपधव्रतु इग्यारमउ संजमसमतूल ॥ १५ ॥

व्रतु बारमउं अतिथिसंविभागुउ तोइ मुकतिनयर न न मागो ।

जे ईणइ मारगि चालइ संसारे धनु सक्रियारय ते नरनारे ॥ १६ ॥

समकितमूल व्रतु बारइ गहियधरमि पालेवउ ।

ससक्षेत्रि जिनभणिया तिह वित्तु वावेवउ ॥ १७ ॥

ससक्षेत्रि जिन कहिया महामुनि वित्तु वावेजिउ विवहपरे ।

जिनवचनु आराधीउ अवक्कमु साधिउ लहइ पारु संसारुसरे ॥ १८ ॥

ससक्षेत्रि जिनसासणिहि सवली कहीजइ ।

अथिरु रिधि धनु द्रव्यु बीजउ तहि जि वावीजइ ।

तेहि क्षेत्रि वावेव्रणा थानकि लाभइ देवलोको ।

कणनी थाहरु मुक्तिफलो पामउ निसंदेहो ॥ १९ ॥

पहिलउं क्षेत्र सु जिणह भुवण करावउ चंगू ।

जीछे महिमा करइ सहु श्रीचउविहसंगू ।

मूलगभारउगूढमंडपुछकुचउकीसहिउ ।

आगइ कीजइ रंगमंडपु जो पुस्तकि कहिउ ॥ २० ॥

तहिं आतरइ बलामणु कीजइ आवेरउ ।

जिम जिनभवनह नालिमाहि दीसइ नीकेरउं ।

उत्तंगतोरणु थंभथोरु घांटु अतिनीकउ ।

कडीपइ नानाविधि रुपि सारु चारु तहि नोसलु जडिउ ॥ २१ ॥

विहु पक्ष फरती देहरी कीजइ अतिरूडी ।

ठवीजइ मूर्ति जिनहतणी माहि तेवड तेवडी ।

कणयकलस दंड घांटीइ धज पूरीय कियजइ ।

छोहपकनप्रासाहु भलउ जीव नीपाइजइ ॥ २२ ॥

तहि जिनवारिं कमाड भलां कीजइ अतिसुविघट ।

सारुभार दड प्रागू प जो आवइ संपुट ।

तालां कूंची सांकली अतिनीसल कीजइ ।

जउ आयमणत जाइ मूर तउ संपुट दीजइ ॥ २३ ॥

अनिमउ जिणह भुयणु किरि अमरविमाणु ।

दांसट मूरति धीनराग माहि तिहुयणुभाणु ।

कवण रूप धीतरागतण जोइ कवण विशेष ।
 अठ प्रतिहारि ज जिणहतणइ वृक्ष होइ अशोक ॥ २४ ॥
 भामंडलसुरकुसुमवृष्टिसीहासणुछत्तू ।
 भेरिचमरदेवंडुणिहिण जोइ कवण प्रभुत्तू ।
 ए धिति एसी धीतराग मेलही अवर न होई ।
 सारादिक जिनसेव करइ नवि सगलइं जोई ॥ २५ ॥
 तउ जिनजीर्णउद्धारु भवि जीव विशेषिहि करीयइ ।
 भागउ लागउ जिणह भुवणि तेउ तोइ समुद्धरियइ ।
 लीपिउ धउलीउ भीगु देइ चीत्रामु लिपीजइ ।
 इणपरि भुयणु समारीय जन्मह फलु लीजइ ॥ २६ ॥
 अनौउ जु काइं किंपि ठामु जिणभुवण सीदाइ ।
 तं निश्चिइं करावीयए बहुफलु बोलाइ ।
 आपणि सामिउ धीतरागु ईणपरि भणैइ ।
 जीर्णोद्धारहतणा पुण्य तेह अंत न होइ ॥ २७ ॥
 बीजं खेवु सुजिनह बिबु ते इहां विचारो ।
 मणिमय रयण सुवर्णमए बिंब रूपम कारो ।
 हिव जिनभुवणह गृहचैत्यदेवरा छ कहीसइ ।
 कीजइ कणयभिगार कलस जे नीर भरीसइ ॥ २८ ॥
 तउ सीलमइ करावीयइ जिनभवन ठवीजइ ।
 पारइ पीनलमइ भलां ग्रिहचैति पूजीजइ ।
 घरि देवालाइं कराविय नीकाइ मणोहर ।
 जीछे तिहुयणसरण सामि पूजीजइ जिणवर ॥ २९ ॥
 सुगंधि नीरि सनाथु करइ जिण जीणि आणंदिहि ।
 ते संसारह कसमलह नवि छीपइ विंदिय ।
 अंगलहणे सूक्ष्म करउ सुफरां बहुमूलां ।
 नियनियसक्ति करावियइ कीजे देवंगतूलां ॥ ३० ॥
 कीजइ ओरसु रूयडा सिरगंध घसेवा ।
 कपूरचटे वाटीइ कपूरु जिनस्त्रीमुखि देवा ।
 मूकइ जिणभुयणिहि धोति अतिनीकी घूपी ।
 चालाकुंची पूंजणीइ पीगाणी कूपी ॥ ३१ ॥

अतिसुगंधिहि सिरखंडिहि कपूरिहि आंगी ।
 कीजइ सामी वीतराग प्रभु नवनवभंगी ।
 कस्तूरिहि कुंकुमिहि तिलउ निलाडिहि सामी ।
 ते पुण वितपति करइ भली अतिनीकइ धामी ॥ ३२ ॥
 तउ आभरण चडावियइ सोव्रणमय घडिया ।
 हीरे माणिकि मोतीए बहुरणे जडिया ।
 अतिरूपडउं आभरणउं भलउं कीजइ संपूरउ ।
 नीकउं सिहरउं पूठिउं इतलि अनइ मसूरउ ॥ ३३ ॥
 कानिहि कुंडल सिरि मुकुटु किरि जगिउ भाणूं ।
 जाणे तिहयणि सयल लोक अभिनवउं विहाणूं ।
 उरह माल कंठि सांकलउं मुक्तावलिहार ।
 नयणि निहालिन वीतरागु रूपउं सुरसार ॥ ३४ ॥
 बाहुजुयलि वेउ बहिरम्हा अतिनीका सोहई ।
 टीळुं श्रीवत्सु सारूपार भवियण मणि मोहइ ।
 सोनाकेरी पालठी कीजइ जिनपत्ते ।
 सोहइ वीजउरउं रूपडउं सामीजिणहत्थे ॥ ३५ ॥
 इणि विनेकिहि बहु य विशेषिहि जिणवरपूज सलखणी य ।
 करउ मनरंगिहि नवनवभंगिहि श्रीसंवनयणसुहामणी य ॥ ३६ ॥
 एती अ जोइ आभरणतणी पूजा नीपत्री ।
 दिव आरंभिसु जिणह अंगि सुरहां कुसमघ्नी ।
 कीजइ कुसमे चंगेरीयण पूज कारणि रूपडी ।
 चावरीइ दीहु देवकाजि अन्नइ छाजी छवटी ॥ ३७ ॥
 रायचंपु केतकी जाइ सेवघ्नी परिमल ।
 वडलि सिरीवालउ वेअलु अनु करणी पाडल ।
 नीलउघ्नी विनि पूजमाहि सोहइ अतिचंगी ।
 वितपति दोसइ रूपडे तिणि नवनवभंगी ॥ ३८ ॥
 नीकउं कणयरु पूजमाहि वरणकि सोहंती ।
 परिमलु पसरइ कुसुमजाति पाछइ विहसंती ।
 कुंदु अनइ मुयकुंदु वालु जई परिजाते ।
 एसे कुसुमि करउ पूज तुम्हि निहयणपत्ते ॥ ३९ ॥

सुरहउ सख्यउ वावची अनइ कल्हार ।
 सहयइ सोहइ बीतराग सामी सुरसार ।
 नीलउत्री नागवेलि पानमाहि जा सोहइ ।
 ईणपरि पूजइ सामिसाल नरनारी धन्न ॥ ४० ॥
 एहि रामणीयइ पूज तोइ नीकी सोहंती ।
 तउ नक्षत्रहतणी माल दीवाशू चंगी य ।
 खेलीयइ माहि भुयण जिणविंवहकेरी ।
 आणी कुसुमे पूजियइ ते सवि संखेवी ॥ ४१ ॥
 समोसरणु जो पूजीयण जो तिनिपयारुं ।
 चिहु पखि दीसइ बीतराग जहि तिहुयणसारु ।
 तउ पूजा नीपत्री गूठि धूपउटजउ लीजइ ।
 बीजणिय ऊखेवितु गुरु तहि घंटी वाजइ ॥ ४२ ॥
 धूप अगुरु सातिवारेसि डावडी जि कीजइ ।
 दंडासणे अतिख्यडे जिणभुवण पुंजीजइ ।
 आखेरिहिं मंजूस भली अन्नय चउकीवट ।
 ढोइउ आखे करउ भली य मंगलीक आठ य ॥ ४३ ॥
 वज्रमाणु वरकलसु अनइ भदासणु छत्तू ।
 दप्पणु नंदावरतु तहि साथिउ श्रीवत्तू ।
 अठ मंगलीक तीण पाटि भरियइ जिनआगइ ।
 इणपरि जं धन वेवीइ ए तं लेखइ लागइ ॥ ४४ ॥
 दीवा कीजइ जिनभुवणि छत्रत्रउ दीजइ ।
 चमर ढलंते बीतराग तेहि धनु वेवीजइ ।
 ते उलोच कारावियइ जिणभुवणमज्झारे ।
 वाचोटा मरवर अ लंब कीजइ जिनवारे ॥ ४५ ॥
 तोरण बंदुरवाली वारि सापि जिणभुवणि ।
 पूजा जोइ सहु कोइ आयइ तीणि निणि ।
 पूजा जोइवा जिणह भुयणि तोइ सुहगुरु आवइ ।
 तउ संघिहि आग्रहु करीउ तीछे रदाविय ॥ ४६ ॥
 पडपड वेला एक प्रभु अहां उच्छयु होसिइ ।
 संघवयणु मानेवि सुगुरु निसि सिखं पइसइ ।

तिणि वेलीं वइसणां पाटि जोइ पाटह्ला ।
 चउकीवटि वइसंति सुगुरु तउ भावइ भह्ला ॥ ४७ ॥
 वइसइ सहइ श्रमणसंघ सावय गुणवंता ।
 जोयइ उच्छवु जिनह भुवणि मनि हरप धरंता ।
 तीळे तालारस पडइ बहु भाट पदंता ।
 अनइ लकुटारस जोइई खेला नाचंता ॥ ४८ ॥
 सविह सरीपा सिणगार सवि तेवड तेवटा ।
 नाचइ धामीय रंभरे तउ भावइ रुडा ।
 सुललित वाणी मधुरि सादि जिणगुण गायंता ।
 तालमानु छंदगीत मेलु वाजिंत्र वाजंता ॥ ४९ ॥
 तिविलां झालरि भेरु करडि कंसालां वाजइ ।
 पंचशब्द मंगलीकहेतु जिणभुवणइं छाजइ ।
 पंचशब्द वाजंति भाटु अंवर वहिरंती ।
 इणपरि उच्छवु जिणभुवणि श्रीमंघु करंतउ ॥ ५० ॥
 तउ आरत्ती परगुणउं कीउं आरती पटऊपरि ।
 ऊठिउ संघपति विधिहि सहिउ तउ साहीउ विहुकरि ।
 नीर लुण ऊतारियए कुसुम ऊतारी ।
 संघपति ऊठी सेसि भरइं सइहत्थिहि माडी ।
 संघपति आरती ह्लिया हुइ जउ वार वडेरी ।
 आरती जोगी थांभली अ आणउ गरुपरी ॥ ५१ ॥
 पाछइ जिणगुण गाइ पडइ सह पालउ लोक ।
 श्रीसंघु तोह अ दानु दियई जीह जेसा जोगू ।
 ऊतारीइ आरतीअ तोह संघपति सइ हरखिउ ।
 रोमांचीसारीरु तहि जिणदंसणु देखीउ ॥ ५२ ॥
 मंगलीकु ऊतारीयए घंट वाजइ सरुई ।
 श्रीसंघु करइ प्रभावना जिणसासणि गरुई ।
 तउ विधि वांदिपउ वीतराग श्रीसंघु ऊतारीउ ।
 इणपरि सुकृतभंडारु तोइ भव्यजीविहि भरियउ ॥ ५३ ॥
 जे जिन भुवणतणां कृत्य ईह छेडइ कहिया ।
 ते गृहचैत्य करावियइ सविशेषिहि सहिया ।

अनि अ ज काई कोइ ठामु मूं हूइं वीसरियउं ।

तेउ तुम्हि भविय करावि जि अ सहइ सांभरियउं ॥ ५४ ॥

उछवुं जिनभुवयणि हरपि नियमणि करइ संघु जयवंतु ।

नितु हिव त्रीजउ क्षेत्रु कहिसु पवित्तु सुणउ जीव जे जिणभणित्तु ॥ ५५ ॥

त्रीजउ क्षेत्रु सु संभलउ ए वरलोयणे जं भणिउं वीयराइ ।

गुणगंभीर सो जिणह वयणु मृगलोयणे तसु नवि ऊपम काइ ॥ ५६ ॥

वचन इकेका मूल नही वरलोयणे जं बोलइ भगवंतु ।

त्रिहु भुवणे चूडामणि य मृगलोयणे सह जाणइ अरिहंतु ॥ ५७ ॥

पढ कवण व्याप जिनवचनतणउ वर० बुज्झइ लोकु अलोकु ।

सउ जि सिद्धंत ज सलहीअइ ए मृग० देअइ सिद्धिसंजोगु ॥ ५८ ॥

गणधर करइ जं पुब्बधर वर० सुयकेवलहि करंतु ।

दसपूरवधर जं करइ मृग० तं भणियउ यइ सिद्धित्तु ॥ ५९ ॥

त्रिहु भुवणहतणउ जाणियइ वर० आगममाहि विचारु ।

चउदपूरव इग्यार अंग मृग० करइ गोतसु सुतिहारु ॥ ६० ॥

सूत्रहार तहि निउछणा ए वर० जिणि जाणउ एउ सूत्र ।

त्रिपदी आपी य वीरनाथिइ मृग० आघउं गोतम वूतु ॥ ६१ ॥

केवलनाण बुच्छित्ति गयउं वर० गया सवि पूरवधर ।

जे हुंता गुरु प्रज्ञघणउं मृग० गया सु ते मुनिवरा ॥ ६२ ॥

अल्पप्रज्ञह नवि धाहरण वर० जिणवयणुं निरुपसु ।

तीण कारणि श्रीसंघ मिलीय मृग० पोथे ठवीउ आगसु ॥ ६३ ॥

भक्षाभक्ष सो बुज्झियण वर० अन्नो गम्मागंसु ।

कृत्याकृत्य परीछियण मृग० जाणीयइ धर्माधर्मु ॥ ६४ ॥

धन जीवी लाहुउ लिउ ए वर० बुज्झियइ एहु विचारु ।

श्रीसिद्धंतु लिग्यावियण मृग० जोउ त्रिहुभुवणह सारु ॥ ६५ ॥

त्रीजउ क्षेत्रु इस धावीषण वर० चित्ति संवेगु धरेउ ।

वेवीउ वित्त लिग्यावियण मृग० श्रीसिद्धान्त जणउ ॥ ६६ ॥

बाहदंड पोथा कराउण वर० पोथीय नीसी य तोट ।

ज्ञानलगइ सवि लाभ हुइ मृग० एह विचार तूं जोइ ॥ ६७ ॥

पाठां दोरी घीटणां वर० वर मिद्धान्ह भत्ति ।

यानीदोरा उत्तरीय मृगलोयणे पोथीय पोथीय सत्ति ॥ ६८ ॥

कामदेव जिम चलइ नही वीतरागह धर्म ।
 वीरनाहु जिणवरु दियइ तसुनी ऊपम्म ॥ ९७ ॥
 सदाचारु सुविचारु कुसलु अनइ निरहंकारु ।
 शीलवंत निकलंक अनइ दीनगणआधार ।
 जिनह वचनि तिम सातधातु जीह आवक भेदी ।
 जाणे तीह गर्भवासवेलि मूलहुंति छेदी ॥ ९८ ॥
 जाणइ ऊचितु सह काय साचउ विषहार ।
 त्रिधा सुद्धि मनमाहि वसइ इकु निश्चउ सारु ।
 उत्सर्ग अनइ अपवाद एह जाणइ सविसेपू ।
 भणियइ आवकतणी भावीय मूलइ सा जीह एहु विवेक ॥ ९९ ॥
 जे पुण आवकतणा भविय कहोयइ जिणसासणि ।
 ते गुणु जिण भणइ आवियह जाणेवा नियमा ॥ १०० ॥
 त्रिधा सुद्धि वीतराग वसइ मनभीनरि जीह ।
 सुलहउ सिवपुरतणउ चासु तो आवक तीह ।
 पढइ गुणइ जिणवयणु सुणइ संयेगि संपूरिय ।
 मोल सनाहि पहिरिइ ग्रामऊपरि खुरी ॥ १०१ ॥
 ईहं तु आवकतणउ श्लेष्ट वायु मवि दीस ।
 जे तुम्हि भविषउ अच्छइ काइ धर्मनणी जगीस ।
 जिम भरपेसरि वायी रिसहेमरनंदणि ।
 गृह्यासऊपरि जानु जासु पसरीउ निहुयणि ॥ १०२ ॥
 तिम तुम्हि चायेउ भलीपरि भविउ इउ बिसु ।
 लहिसउ फल निरवाणनपरि तिम निहं बहतु ।
 पहिहुं कोजइ महायिनउ गुणधायक जाणी ।
 पाय पपातीय सहहायि सेउ कुंकुम बाणी ॥ १०३ ॥
 पाछइ भोजनुं भलीयभक्ति मयिगेकिहि मलिषउ ।
 दीजइ आवकआयिकां एउ आगमि कहिउ ।
 उपरि उगाहि फूल पान कापट अनुमानिय ।
 दीजइ निजभक्ति भलां गरुणइ बहुमानि ॥ १०४ ॥
 भरपेसर जिम आवकह दीजइ आपासे ।
 मोगा जे जिनयणणि अछइ गणगुणह नियाम ।

वाछिलनी परि एक कीसउ परि हुअइ असंख ।
 विधिमानु फरसइ सह कोइ नरनारी दुःख ॥ १०५ ॥
 वाछिलनी परि एकजीभ हउं कहिउं न सकउं ।
 एकह वारु सारु सकु तुम्ह कहौउ अज मू किउं ।
 जं जं कीजइ कुणवकाजि अतिभलां भलेरां ।
 ता कीजइ साहमिय प्रति अजी अधिकेरां ॥ १०६ ॥
 कीधे काजे कुदंवतणे अतिघणउ संसारो ।
 जं कीजइ साहमिअकेरउ काजि ते परत भंडारो ।
 हणपरि वाछिल आवकह कीजइ सुरचंगू ।
 हव ते कहौइसिइ जिणभयणि वाछिल अंतरंगू ॥ १०७ ॥
 जिणपरि लोग समाराअए सवि साहमिअकेरु ।
 थाकइ जिम संसारमझि यलि यलि एउ फेरु ।
 कीजइ आवकआविकारहि वरपोषशाल ।
 जीछे करिसिइ धरमध्यान तु हरपि सवि काले ॥ १०८ ॥
 पडुजीवरक्षा सवि काल तीछे दीसंती ।
 समकितसिउं वार य व्रत जीव अनेकिइ लहंती ।
 प्रतिमा नीम अभिग्रह संपज्जइ तिणि हाट ।
 अनेकि सुकृत ऊपजइ कुहियाकडेवरमाट ॥ १०९ ॥
 तीछे सुगुरु वपाणु करइ आगमभंडार ।
 सह समाधियइ सांभलइ व्यथ नरनारे ।
 थापनाचार्य चउकीवटउ सिहासण कीजइ ।
 नउकरवाली चिरवला महपत्ती मूंकीजइ ॥ ११० ॥
 संधारा उत्तरउट पाटि कीजइ पुंछणा ।
 करे पोसाल पाटला अनइ दंडाळणा ।
 काजामेलणी य पउंजणी य काजाऊधरणी ।
 पौषधसालहतणइ ठामि ए काजइ करणी ॥ १११ ॥
 कीजइ कमली टवणी य बाचीजइ सिद्धांतु ।
 ज्ञान पदंता जीय तोता कर्मक्षय अनंतु ।
 जइ ज्ञान पटिलेखा मोरचीली य ठे तोई ।
 दीसई आगर पटवटा अनइ जइणा होई ॥ ११२ ॥

त्रीजउ क्षेत्रु इम वावउ निरुपम लिघउ लाभु हुंतातणउ ।
 जिम अट्ठकम्म गंजीउ भवदुह भंजीउ सिद्धिनयरि खेमिइ मुणउ ॥६९॥
 हिव श्रीश्रमणसंघभत्ति करउ जीव तुम्हि यथासक्ति ।
 पहिलउ कीजइ तोइ पावयणा अनी य विशेषिहि आयरियठवणा ॥७०॥
 इणपरि श्रमणुक्षेत्रु वावीजइ निश्चय भवसायक तरीजइ ।
 जे जिनवरि मुनि कहिया आगमि क्रियासार अनइ खरतर संजमि ॥७१॥
 पंचमहव्यभारु धरंता दस अनु न्यारि उपगरण वहंता ।
 नव कल्पिइ विहार करंता ते मुनि भणियइ चारित्तवंता ॥ ७२ ॥
 जे मुनि पंच समिति छइ समिता त्रिहुहि गुप्तिहि जे अछइ गुपिता ।
 सीलंग सहसअठार वहंता ते मुनि भणियइ उपसमवंता ॥ ७३ ॥
 जे मुनि निम्मल निरहंकार सदाचार दीसइ सुवियार ।
 जे धुरि जूता गणगच्छभारा ते मुनि भणिया गुणह भंडारा ॥ ७४ ॥
 इणपरि भट्टा क्षेत्र विशेषि दियउ दानु तुम्हि भवि हरखि ।
 जिम तु छटउ भवना भार पामउ सिवसुखु निरुपमसार ॥ ७५ ॥
 जे जिनआण सदा छइ रत्त वावीस परीसइ सहइ अपमत्त ।
 जिनआदेसु धरइ सिरिऊपरि ते जि महामुनि नमीयइ सुरवरि ॥ ७६ ॥
 वईतालीसदोपसुविमुद्धउ लियइ आहारु जे जिणवरि दिट्टउ ।
 इंदियविपयन्यापि नवि गूचइ तवि नीमि संजमि खण विन मूचइ ॥७७॥
 किंसुं घणउं हउं कहउ विचारो मुनिरयणगुण न लहउं पारो ।
 अनुव्रतु चालइ जे जिनआण ते मुनि भणीयइ मेरुसमाण ॥ ७८ ॥
 प्रसंसीइ मुनि जिहि गुणि सहिया ते गुण जिणवरि श्रमणी कहिया ।
 एकु विशेषु पुण श्रमणी दीसइ यहइ उपगरण तोइ पंचवीसइ ॥ ७९ ॥
 चालइ ग्वद्धार तोइ ऊपरि सीलवंत ति नमीइ सुरवरि ।
 महासती जे छइ अपमत्त धारा भणइ हुंतेहि पवित्त ॥ ८० ॥
 जीइ जिनआण हियइ परिणमी ते श्रमणी तोइ मेरइ समी ।
 जे सिद्धी जिणआण करंती धनु धनु श्रमणी ते महासती ॥ ८१ ॥
 जिणसासणु जेहि य इम उज्जालिउ कसिमल पावपंकु पव्वाल्लिउ ।
 एउ साह अनइ श्रमणी वित्त वाविन धामी हुईउ सचित्त ॥ ८२ ॥
 जा हिवटांतुं संपति अच्छइ इसीप चराष न पामिसि पछइ ।
 जउ भलसेत्रिहि वित्त न वाविसि पाछइ परभवि किसउ लुणाविसि ॥८३॥

वराप टली वितु वाविसि सारु ऊगिसि खडसलु काइ कतवारु ।
 जउ भलक्षेत्रि वरापहं वाविसि तउ इकुगुणइ अणंतगुणं पाविसि ॥८४॥
 ए भलुं क्षेत्रं जिनवरि कहिया बावे धम्मी भावणसहिया ।
 तउ सीचे अनुमोदनापाणी जिम हुइ सकली गय निरुवाणी ॥ ८५ ॥
 ईणपरि वावीजइ मुनिखेनु दीजइ भक्त पालु स्रजंतु ।
 विद्यादानुं जउ दीजइ सारु जिणु भणइ तेह पुन्य नहीं पारु ॥ ८६ ॥
 ओषधआदि सहु स्रजतउ तं तं दीजइ नियघरिहुंतउं ।
 अनिउ ज्ज काई मुनि उपगरइ तं स्रजंतुं वहरउं करइ ॥ ८७ ॥
 जं जं मुनि जोअइ स्रजंतउं तं तं दीजइ नियघरुहुंतउं ।
 गुरु आवंता कीजइ अभिगमणउं दीजइ भक्ति थोभयंदनउ ॥ ८८ ॥
 विनउ वेयावचु अनीउ विशेषिउ कीजइ भवीउ महामुनि देखीउ ।
 पर्युपास्ति तही कीजइ घणी य जिम जिम जिनवरि आगमि भणीय ॥८९॥
 एह ज परि श्रमणी जाणेवी करउं भक्ति तुम्हि हरिख धरेवी ।
 जे स्रज महामुनि दीजइ तं तं श्रमणी कीजइ ॥ ९० ॥
 आगइ तोइ पूर्वहि सुणीजइ धनु धनु सारथवाह कहोजइ ।
 घीउ बिहिराबिउ जिणि मुणिंदउ तिणि फलि इयउ पढम जिणंद ॥९१॥
 हथिणाउरि नयरि श्रेयंसिहि पाराबिउ रिपुसु इक्षुरसिहिं ।
 तिणि फलि तिण भयि केवलु ज्ञानु दिइन भविकु मुनि इणपरि दानु ॥९२॥
 घोर जिणेसर छट्टा भास चंदण पारावइ कोमास ।
 तीणि दानि शिव संपति पामी दियउ दानु तुम्हि अनुग्रन धामी ॥९३॥
 जोइन संगमि कीउं मुनि पारावीउ खंट खोरु घीउ ।
 तिणि फलि तु सर्वार्थसिद्धि पामी पाछइ होसिइ सिवसुहगामी ॥ ९४ ॥
 इउ भल्लउ खेतू यावउ वितू अतिफलीअइ संवेगचिचू ।
 सिवसुह संपत्ती देइन भत्ति सामिसालु आगमि भणित्ति ॥ ९५ ॥
 हिय तोइ श्रावकतणउं क्षेत्रु भवी कहोसइ ।
 जउ जिणसासणतणी भूमि अतिभलउं फलीमिइ ।
 फिसउ सुश्रावक जाणियउ जिणसासणभितरि ।
 श्रीवीनरागतणी य आण मानइ सिरजपरि ॥ ९६ ॥
 समकितमूल वार घरत पालइ नरनारि ।
 नियसइ हियटइ वीनरागु एक जि सुरसारु ।

ईइ सातइ क्षेत्र इम बोलीया आगमअणुसारे ।
 पुण तुम्हे वाचीपं भलीयपरि वित्त आपणरे ॥ ११३ ॥
 न्यायनीति वितु लिउं तीउ थानकि वावे ।
 जिणसासणि वेवीतु कुलि कमल सु चडावे ।
 संघसमुदाइ सट्ट कोइ तीरथ बंदावे ।
 देवजात्र गुरुजात्र करीइ तउ भलउ भणावे ॥ ११४ ॥
 इम वितु सु वेचउ धम्म सु संचउ अप्पं जीव म बंचसुउ ।
 यली न लहिसउ प्रस्ताणु एसउ करउ सफलु भव माणसउ ॥ ११५ ॥
 सातक्षेत्र इम बोलीया पुण एकु कहीसिइ ।
 कर जोडी श्रीसंघपासि अविणउ मागीसइ ।
 काईउ ऊणं आगउं बोलिउं उत्सुहु ।
 ते बोल्या मिच्छा दुकडं श्रीसंघविदीतुं ॥ ११६ ॥
 मूं मूरप तोइ १ कुण मात्र पुण सुगुरुपसाऊ ।
 अनइ ज त्रिभुवनसामि वसइ हियडइ जगनाहो ।
 तीणि प्रमाणिइ सातक्षेत्र इम कीधऊ रासो ।
 श्रीसंघु दुरियह अपहरउ सामी जिणपासो ॥ ११७ ॥
 संवत्त तेरसत्तावीसण माहमसवाटइ ।
 गुरुवारि आवी य दसमि पहिलइ पम्बवाडइ ।
 तहि पूरु हूऊ रासु सिव सुम्ब निहाणूं ।
 जिण चउवीसइ भवीयणह करिसिइ कल्याणूं ॥ ११८ ॥
 जां सिसि रवि गयणंगणिहि ऊगइ महिमंडलि ।
 ता घरतउ एउ रासु भविम जिणसासणि ।
 निम्मल ज ग्रह नक्षत्र तारिका व्यापइ ।
 गयणंतु श्रीसंघ अनइ जिणसासणु ॥ ११९ ॥

इति सप्तक्षेत्रासः समाप्तः ।

कहलीरासः

गणवह जो जिम दुरीउविहंडणु रोलनिवारणु तिहयणमंडणू पणमवि सामीउ
पासजिणु ।

सिरिभेहेसरसरिहिं वंसो धोजीसाहह वंनिमु रासो धमीय रोलु निवारीउ ।

सगपंडु जिम महीयलि जाणउं अठारसउ देसु वपाणउं गोउलि धनि
रमाउलउ ॥

अनलकुंडसंभम परमार राजु करइं तहिंछे सविवार आबूगिरिवरु तहिं पवरो ।

विमलडवसहीं आदिजिणंदो अचलेसरु सिरिमासिरि वंदो तसु तलि
नयरी य वन्नीयण ।

जणमणनयणह कम्मणमूली कहली किरि लंकविसाली सरप्रवचावि
मणोदूरी य ॥

वस्त—तम्हि नयरी य तम्हि नयरी य वसइं वह लोय ।

चिंतामणि जिम दुच्छीयहं दीइं दानु सविवेय हरिसि य ।

सचइं सीलि ववहरइं कूडकपटु नवि ते य जाणइं ।

गलीउं जलु वाडी पीइ धम्मकम्मि अणुरत्त ।

एकजीह किम वन्नीइ कहली सु पवित्त ॥

हिमगिरिधवलउ जिमु कविलासो गुरुमंडणु पुतलीयविणासो पासभूयणु
रलीयामणउं ।

भवीयहं गुरु मणि आणंदु आणइ जसहटनंदणु तं परिमाणइ सतरि भेदि
संजमु परिपालइ ।

विहिमगि सिरिपहसुरि गुण गाजइ एगंतर उपवास करइ धोजा दिण
आंविल पारेइ ।

सासणदेवति देसण आवइ रयणिहिं ब्रह्मसंति गुरु वंदीइ कविलकोटि श्रीय-
सुरि विहरंतइ ।

मालारोपण कीयां तुरंतइ सइ नर आवीय पंचसयाइं समिकति नंदइं वह य वयाइ ।

छाहटनंदणु बहु गुणवंतउ दीग्व लीइ संसारविरत्ताउ ।

लापणछंदपरमाणपरिरुणु आगमधम्मवियारवियरुणु ।

छत्रीसी गुरुगुणि जुत्ताउ जाणीउ नियपदि ठविउ निम्नउ ।

माणिकपहसूरि नाम् श्रीयसूरिप्रतीछीउ कळलीपुरि पासजिणभूपणि अहिठीउ॥
 सावयलोय करइं तसु भत्ती भवनवधम्ममहसवजुत्ती ।
 श्रीयसूरि आरासणिअठाही अणसणविहि पहतउ सुरनाही ।
 निवीय आंविलि सोसीय नियकाया माणिकपहसूरि बंदउ पाया ।
 विणठदेह जस धवलह राणी पायपखालणि हुई य पहाणी ।
 माणिकसूरि जे कीध जिणघम्मपभावण इकमुहि ते किम वन्नउ भवपाव-
 पणासण ॥

कालु आसन्नु जाणेवि माणिकसूरि नयरिकछुलि जाएवि गुणमणिगिरि ।
 सेठि दासलसुउ वादिगयकेसरी विरससंसारसरिनाहतारणतरी ।
 संघु मेलवि सिरिपासजिणमंदिरे वेगि नियपादि गुरु ठबिउ अइसइ परे ।
 उदयसिंहसूरि कीउ नाभि नाचंती ए नारिगण गच्छभरु सयलु समपीजए ।
 सुरु जिम भवियकमलाई बिहसंतओ नयरि चड्ढावली ताव संपत्तओ ॥
 वन्न चत्तारि वरवाणि जो रंजए राउलो धंधलोदेउ मणि चमकए ।
 कोइ कम्माली पाऊयासुठओ गयणि खापरिथीइं भणइ हउं वादीओ ।
 पंडिते वंभणे तापसे हारियं राउलोधंधलोदेविहिं चिंतियं ।
 वादिहिं जीतउं नयरो नवि कोउ हरावइ उदयसूरि जइ होए अम्ह माणु रहावइ ॥
 वस्त—जित्त नयरि य जित्त नयरि य सयलमुणिसीह ।
 नीरंतइं नीरु पडो गरुयदंडटंवरु करंतइं ।
 धंधलु राउलु चित्रवइ सामिसाल पइ मझि संतइं ।
 वंभण तपसीय पंडीपा जं त न बंधइं बाल ।
 सु गुरु कम्मालिउ निज्जणीउ अम्ह अप्पउ वरमाल ॥
 धंधलजिणहरि सवि मिलिय राणालोय असेस ।
 उदयसूरि संधिहिं सहीउ नियसइ ए नियसइ ए नियसइ वरहरि पीठि ॥
 सत्थिपमाणी हरावोउ मंघिहिं ए मंघिहिं ए मंघिहिं वाडुकमठो ॥
 सेयंवर तउं हिय रहिजे जे गुरुसिद्धिहिं चंडो ।
 विमहरु आवतु परिपलि जे लंपीउ ए लंपीउ ए लंपीउ दंडु पयंडो ॥
 तउ गुरि मुहंतां मिलिहकरि होई गरहु पणेण ।
 पाईउ लीपउ चंचुपडे गिलीउ ए गिलीउ ए गिलीउ छालभुयंगो ॥
 पाउपिछि वि संमुहीय डरडरंतु धीउ वाघो ।
 जोयणहार सवि पलभलीय हीयइई ए हीयटई ए हीयइइ पहीउ दाघो ॥

तउ गुरि मूकीउ रयहरणु कीधउ सोहु करालो ।
 वायह जं ता दूरि थीउ हरिसीउ ए हरिसीउ ए हरिसीउ नयरु सवालोल ।
 इत्थंतरि मुणि गयणठिय तसु सिरि पाडोय ठोव ।
 हुउ कमालीउ कालमुहो लोकिहिं ए लोकिहिं ए लोकिहिं बाईय बूव ॥
 छंडीउ माणु कवालधरो धाईउ वंदइ पाय ।
 खमिखमि सामि पसाउ करी जीतउं ए जीतउं ए जीतउ तहं मुणिराय ॥
 वस्त—ताव संधीउ ताव संधीउ ठोव मंतेण ।

गणहरि करि कम्मालीयह भिन्नभरीउ अप्पीउ मुहत्तिण ।
 रामिहिं जिम वायसह इहु निजुत्त सु हरीउ सत्तीण ।
 धारावरसि कयंतसमि भिंडीउ डिंभीउ ताम ।
 प्रतपउ कोडि वरीस जिनउदयसूरिरवि जाम ॥
 चड्ढावलिहिं विहरीउ प्रभु पहुतउ मेवाडि ।
 पासु नमंसीउ नागद्रहे समोसरीउ आहाडि ॥
 जालु कुहालिय नीसरणी दीवउ पारउ पेदि ।
 वादीय टोडरु पइ धरण पहुत्तउ पमणउ पेदि ॥
 केवलिसुकति न जिणु भणए नारिहिं सिद्धि सजाणि ।
 उदयसूरि पमणउ पलीउ जयत ल रायअधाणि ॥
 केवलिसुकति म भ्रंति करे नारि जंति ध्रुव सिद्धि ।
 तिसमयसिद्धा वज्जि जीय लीहं आहान विसुद्ध ॥
 पीच पीर दीठंतु दीउ जिच्छु नंदिसुणिदेवि ।
 गयकुंभयलि आरुहीय पढमसिद्ध मग्देवि ॥
 विवरणु पिंडविसुद्धि कीउ धमविहिग्रंथु प्रसिद्ध ।
 चीयवंदणदीवीय रचीय गणहरु भूअणि प्रसिद्ध ॥
 अम्हहं साजणसेठे छम्मासहं कालो ।
 वसतिणि ऊपरि ऊपनउ पदि द्राविजि वालो ॥
 तेरदुरोत्तरयरिसे अप्पउं सापेहं ।
 चड्ढावलि दिविहो जमि लोह लिहावी ॥
 कछली जाएवि परमकल सु गच्छभारुधरो ।
 पंचम धरिस वहंति सजणनंदणु दीम्पीउ ।
 देवाणसु लहेवि गोठीय सत्तमे वरिस लहो ।

चउदीसि मेलीउ संघु आरीठवणउं विविहपरें ।
 मोतमसामिहिं मंघु आपात्रीजइ दिणी दीइण ।
 जोगवहाणु वहेवि अंग इग्यारइ सो पढण ।
 त संजमि रणि जीतु सयरह चुकउ पंचसरो ॥
गूजरधर मेवाडि मालव ऊजेणी वह घ ।
सावय कीप उवपार संघपभावण तहिं घणी घ ॥
सात्रीसइ आपाडि लखमण मयधरसाहुसओ ।
छयणीनयरमझारि आरिठवणउं भीमि किओ ॥
 कमलसूरि नियपादि सहं हथि प्रज्ञासुरि ठवीओ ।
 पमीउ पमावीउ जीघु अणसणि अप्पा सधु कीओ ॥
 पणि पहुत्तउ सुरलोइ गणहरु गंगाजलविमलो ।
तासु सीसु चिरकालु प्रतपउ प्रज्ञातिलकसुरे ॥
 जिणसासणिनहचंदु सुहयुरु भवीयहं कलपतरो ।
 ता जगे जयवंत उम्हाउ जां जगि जगइ सहसकरो ।
तेरत्रिसठइ रासु कोरिंटावडि निम्मिउ ।
 जिणहरि दिंतसुणंतं मणवंछिय सवि पूरवउ ॥

कट्टलीरासः समाप्तः ॥

सालिभद्रकक्क

भलि मंजणु कम्मरिवल वीरनाहु पणमेवि ।
 पउसु भणइ कक्ककरिण सालिभद्रगुण केइ ॥ १ ॥
 कित्थ वच्छ कुवलयनयण सालिभद्र सुकमाल ।
 भहा पभणइ देव तुहु कह थिउ इत्तियवार ॥ २ ॥
 कारुत्तामयनीरनिहिं समवसरणि ठिउ सामि ।
 अज्जु माइ महं वंदिघउ वीरनाहु सिवगामि ॥ ३ ॥
 खरउं कुड्डु ता पुत्त कहि का देसण किय वीरि ।
 कवणु अत्थु वखाणिइउ कंचणगोरसरीरि ॥ ४ ॥
 खारसमुइह आगलउ माइ कहिउ संसार ।
 संजमपवहणहीण तसु किमइ न लवभइ पारु ॥ ५ ॥

गयममत्त धीरियपवर जे जगि पुरिसपहाण ।
 सालिभद भदा भणइ संजमु सोहइ ताण ॥ ६ ॥
 गारववज्जिउ विन्नवउं काइउ मग्गउं माइ ।
 जइ मोकलउ तउ व्रतु लियउं तुम्हह पाय पसाइं ॥ ७ ॥
 घणकुंकुमचंदणरसिण तुह तणु वासिउ वच्छ ।
 वपह परीसह किम सहिसि मुणि गंगाजलसच्छ ॥ ८ ॥
 घाणइ पीलिय पंचसइं खंदगसुरिहि सीस ।
 साहु माइ दुस्सहु सहइं परिस धम्म जिगीस ॥ ९ ॥
 निवि वउ लिज्जइ तरुणपणि सालिभद सुकुमाल ।
 मुहु कुलमंडण कुलतिलय कुलपईव कुलवाल ॥ १० ॥
 नाउं गच्चिहिं कुलतणइं पाविज्जइ भवछेउ ।
 माइ मरीचि भव भमिउ चडमाणजिणुदेउ ॥ ११ ॥
 चिरणु लेसिजइ पुत्त तुहु नंदण नीयपवीण ।
 रोजंती भदा भणइं मइं किम मेलिहसि दीण ॥ १२ ॥
 चारुचक्रियलदेव तह वासुदेव बलवंत ।
 माइ तडि द्विय परिणह कड्डिउ लेइ कयंतु ॥ १३ ॥
 छण मइलंछणसमवयण तुह भज्जा वत्तीस ।
 ते विलवंती पेसभरि किम करिसि कुलईस ॥ १४ ॥
 छारु जेम उड्डइ सयलु अंतेउरु घरसारु ।
 माइ जीवु जउ संचरइ छंडेविणु ढंडारु ॥ १५ ॥
 जणणि भणइ जां बालपणु तां पुत्तह पडिवंधु ।
 तारुन्नइ बुल्लाविअउ बह्नु उन्नाडइ कंधु ॥ १६ ॥
 जाणिउ देह असारवल्लु भरहिं मूकउ मोहु ।
 ताव माइ तमु विहिडियउं केवलनाण निरोहु ॥ १७ ॥
 झलकंतउ कंचणघडिउ सत्तन्नमिपासाउ ।
 विहवह कोडाकोडि घण कहि कोइ जणउ ठाउ ॥ १८ ॥
 झाणानलि जिणि कम्मवणु बालिउ गहिउं नाणु ।
 धीरनाहु महु हिव सरणि रिद्धि रमणि अपमाणु ॥ १९ ॥
 भरवइ सेणिउ तुम्ह पहु सुरगोभदु सुनाउ ।
 निचु नवलं आभरण कहि को चित्ति विस्ताउ ॥ २० ॥

नाहकु सेणिउ तुम्ह महु जइ फिरि कहिइउ माइ ।
 ता धणु कंचणु गेहवलु ग्वण वि न चित्ति सुहाइ ॥ २१ ॥
 दलदलेसि धम्मत्थ पुण धम्मगहिछा वाल ।
 धम्म करेवा महु समउ तुहु धणुरक्कण वाल ॥ २२ ॥
 दालिसि चरण म माइ मइ देइ महावपसिक्क ।
 वद्धमाणजिणवरकिरिहिं पुत्तिहिं लब्भइ दिक्क ॥ २३ ॥
 ठणकइ पुत्त सु चित्ति महु पुत्तविट्ठणिय नारि ।
 विहवह मुचइ दुहु सहइ दीणी परघरवारि ॥ २४ ॥
 ठामि ठामि जिउ हिंदिइउ भव चउरासीलक्क ।
 माइ जि सहिया नरपदुहु ताह कु जाणइ संख ॥ २५ ॥
 डेरपिसि सुणिपइ सीहसरि निसुणिसि सिवफिक्कार ।
 भुकिइउ तिसिइउ वच्छ तुह किम हिंढिसि नरसार ॥ २६ ॥
 डालिहि चडियउ डालिसउ माइ महल्लयेउ ।
 पच्छइ कहि हउं चरणु कहि वद्धमाणुजिणदेउ ॥ २७ ॥
 ढिलइं चमर वर पुत्त तुहु सीसि धरिज्जइ छत्तु ।
 मणिसीहासणि वइठणउं किणि कारणि वइचिच्छु ॥ २८ ॥
 ढाउ विलग्गउ माइ महु सिवपुरि रज्जहरेसि ।
 वोलावउ ठिउ धीरजिणु रहिसु न भवह किलेसि ॥ २९ ॥
 नवउं अंतेउरु नवउं घरु नवजोवणु नवरंगु ।
 सालिभहु नवकणयतणु ढल करि चरणपसंगु ॥ ३० ॥
 नाणु रसायणु करिसु हउं कम्मिधणदाहेण ।
 तिणि आऊरिसु माइ तणु जरा न दुक्कइ जेण ॥ ३१ ॥
 तिरुअरतलि आवासु मुणि भिक्खइ भोयणु पाणु ।
 भूमंडलि आसणु सपणु वच्छ चरणु दुहठाणु ॥ ३२ ॥
 तालउ भंजिवि पइसरइ माइ गेहि जमराउ ।
 छुट्टइ वालु न बुडु जणु पडइ अचिन्तिउ घाउ ॥ ३३ ॥
 थल डंगर पाहण सघण कक्कर कंठ तुसार ।
 पाणहवज्जिउ गुरि सहिउ हिंढिसि केम कुमार ॥ ३४ ॥
 थाहररहि न मञ्जु मणु माइ कहिउ तउ सम्मु ।
 धीरनाहु जिणु ववहरउ लेसु चरण धणु धम्म ॥ ३५ ॥



दहविह धम्मु करेसि किम किम सोसिसि निय अणु ।
 वुच्छ तहं ता दोहिलउं होसिह तुह सीलंगु ॥ ३६ ॥
 दाणसीलतवभावणह अणु न सोसिउ जेहिं ।
 माइ मणूभवु दुल्लहउ आलिहि हारिउ तेहिं ॥ ३७ ॥
 धम्मु किइउ जिम रिसहजिणि तिम किज्जइ सुअ इत्थु ।
 पुहिलउं साखिहिं पसरिउ अंति पयासिउ तित्थु ॥ ३८ ॥
 धाडउ जमरायहतणउ पडइ अचिंतिउ माइ ।
 कट्ठिउ लिज्जइ जीवु तिणि धुंव न वाहर काइं ॥ ३९ ॥
 नवकण्णूरिहि पूरिया नंदण कोमल केस ।
 केतगिवालइं वासिया किम उद्धरिसि असेस ॥ ४० ॥
 नारायणबंधवु निसुणि तहिं दिणि दिक्खिउ वालु ।
 सीसु अग्नि दुस्तहु सहइ माइ सु गयसुकुमाल ॥ ४१ ॥
 पट्ट सुअ तहं पहरियां रसियउं दिव्व अहार ।
 सुअ उच्चासिहिं सोसिया केम करेसि विहार ॥ ४२ ॥
 पालिसु पंच महव्वइं वारस अंग पडेसुं ।
 वीरनाहिसुं माइ हउं नवकण्णिहि विहरेसु ॥ ४३ ॥
 फेणिरायह सिरि पुत्तं मणि मुल्लेण य बहुमुल्ल ।
 सा गिण्हंता पाणहर संजमभरु तस तुल्ल ॥ ४४ ॥
 फाडिज्जइ करवत्तु सिरि पाइज्जइ कथोरु ।
 माइ दुक्खु नारय सुणिउ महु उद्धसइ सरीरु ॥ ४५ ॥
 वत्तीसहं पल्लंकि तउं सयणु करइ नितु जाइ ।
 इंगरि कासुगि करिसि किम वलि किज्जउं तह काय ॥ ४६ ॥
 वार मास कासगि रहिउ वाहवलि सुणिराउ ।
 नाणह कारणि तिणि सहिउ सीअ लूअ जलु घाउ ॥ ४७ ॥
 भमिसि विहारिहिं भारिअओ नंदण तुं सुकुमाल ।
 वीर जिणंदह चरणु पुणु सुणि वावज्जउं फालु ॥ ४८ ॥
 भारु माइ भुक्खिय बहइ रासहवसहपमुक्क ।
 आरंकुसकसि ताडियइं ताहं कु जाणइ दुक्खु ॥ ४९ ॥
 मयलंछण जिम नारयहं सयलहं किल भत्ताम ।
 तं वत्तीसहं वहुअरहं एक्खु देव आघारु ॥ ५० ॥

माइ महामुणि योमजिण कुलगुरु मह संताणि ।
 तसु महं अप्पं अप्पिउं जिम सुहु होइ निषाणि ॥ ५१ ॥
 यइ तउं संजमु लेसि सुअ मेलिहवि सयलु सिणेहु ।
 ता गोभहु अभागिइउ हा धिगु छुड्डउ गेहु ॥ ५२ ॥
 याइवनाइगु नेमिजिण गुणसोहग्गनिवासु ।
 माइ सिद्धिपट्टणि गयउ मेल्लेविणु गिहवासु ॥ ५३ ॥
 रहि रहि नंदण वयणु सुणि मा मा महं संतावि ।
 तुह विणु नितु कुंण पूरिसइ मुक्काहरणह चावि ॥ ५४ ॥
 राहडि पूरिय माइ तइं महुकेरी सविवार ।
 दिक्क दियावह जिणभणिय जा तियलोअह सार ॥ ५५ ॥
 लेहकहंसउं संजमु लियए नंदसेणु मुणिराउ ।
 सो संजमुप्पव्वइपडिउ सुअ भोगह कम्मपसाय ॥ ५६ ॥
 लाहइं विणिज्जु करेसु हउं छेहउ माइ चएसु ।
 ईणि असारि देहडि य संजमु सारु गहेसु ॥ ५७ ॥
 वच्छ ति नारी दुक्कनिहि जाहं न कंतु न पुत्तु ।
 मुहुत्तइं नंदण जाइयइं हिंवि आविउं निरुत्तु ॥ ५८ ॥
 वार स माइ सलक्खणीय तं मुहुत्तु सुपविच्तु ।
 धत्त ति वंधव जणइजण चरणु लेइजइ पुत्त ॥ ५९ ॥
 सहसाकारिहिं गहियवउ सुमइ कंडरिएण ।
 नंदण तेण य नरइदुह पामिय भट्टवएण ॥ ६० ॥
 सारउं साटउं मिलिय मुह माइ कहिउ तउ सम्मु ।
 वीरनाहु किउ ववहरओ लेसु चरणु धणु रम्मु ॥ ६१ ॥
 एलह मणोरह इजिसइं सज्जण होसिइ सोसु ।
 नंदण तुं थाइसि समणु एउ महु कम्महं दोसु ॥ ६२ ॥
 पाससासवेयणपमुहवाहि माइ तणु मूल्ह ।
 जीउ तेहिं धंधोलियह उड्डइ जिम लहु तूल ॥ ६३ ॥
 समल देह कप्पड समल रत्तिदिवस गुरुआण ।
 होइसिइं तुं भद्दा भणइ परआइत्त पराण ॥ ६४ ॥

सालिभद्दु जंपइ जणणि ए महु कहिउ जिणेण ।
 संजमविणु भवभयहरणु ताणु न किज्झइ केण ॥ ६५ ॥
 हंसतरोअंता पाहुणउ ताम हसंता होउ ।
 सालिभद्दु संजमु लियइ महु बुज्झिअइ पमोहु ॥ ६६ ॥
 हारमउडकुंडलकलिउ चडिउ पुरिसविमाणि ।
 वीरपासि पट्टतउ कुमरु जण दिज्जंतइ दाणि ॥ ६७ ॥
 क्षमासमणि भदातणइं दिक्खिउ जिणिहि कुमारु ।
 सालिभद्दु वहु तवु करइ आगमु पढइ अपारु ॥ ६८ ॥
 क्षामेविणु जिण मुनिसहिउ अणसुणु गहिउ उववु ।
 सव्वद्वह सिद्धिहि गयउ सालिभद्दु तहिं धवु ॥ ६९ ॥
 महाविदेहि सु मुणि गहवि केवलनाणु लहेवि ।
 सासयसुकु वि पाविसहि भवियद धम्मु कहेवि ॥ ७० ॥
 इह कहियउ कक्कह कुलउ इकहत्तरि कड्याइ ।
 भवियउ संजमु मणि धरउ पढहु गुणहु निमुणेहु ॥ ७१ ॥

सालिभद्दकाक समाप्त.

दूहामातृका

भले भलेविणु जगतगुरु पणमउं जगह पहाणु ।
 जासु पसाइं मूढ जिय पावइ निम्मलु नाणु ॥ १ ॥
 उँकारिहि उचरउ परमिट्ठिहि नवकारु ।
 सिवमंगलु कल्लाणकरो जासु वि नामुचारु ॥ २ ॥
 नवनिहि धम्मिहि संपडए सक्कचक्कदरिरिडि ।
 धम्मु इक्क करि धीर जिय सह कर आवइ सिडि ॥ ३ ॥
 मणगयवरु झाणुंकुसिण ताणिउ आणउ ठाउं ।
 जइ भंजेसइ सोलवणु करिसइ सिवफलहाणि ॥ ४ ॥
 सिज्झइ तरु सवि कज्जट जसु हियइइ अरिहंतु ।
 चित्तामणिसारिच्छ जिय णहु महाफलु मंतु ॥ ५ ॥
 धंघइ पडियउ जीव तुहं त्वणि त्वणि तुहइ आउ ।
 दुग्गइ कोइ न ररिस्सइ सपणु न वंघवु ताउ ॥ ६ ॥

अणहंता पयडेसि तुहु दोस पराया मूढ ।
 नियदोसण पव्वयसरिस ते सवि कारिस गृढ ॥ ७ ॥
 आह किजिय जिणधम्मु करि सुत्थइ संबलु लेवि ।
 अग्गइ किंषि न पामिसण अत्थइ भरिया गेह ॥ ८ ॥
 इण भवि लब्धी रिद्धि पइ परभवि केव लहेसि ।
 अच्छिसि तिणि धणि मोहियउ जइ न सुपत्तह देसि ॥ ९ ॥
 ईसरु देखिउ कोइ नरु नीधिणु मणि दमेइ ।
 एउ न जाणइ मूढ जिउ जणु वावियउं लुणेइ ॥ १० ॥
 उप्पलदलजलविट्ठु जिव तिव चंचलु तणु लच्छि ।
 धणु देखंता जाइसए दइ मन मेलत अच्छि ॥ ११ ॥
 ऊयरु जउ भरिवउं कुपुुरिसह तो भरियउ भंडारु ।
 इक्खि जीव पुत्तिहि पवर लक्खह कोडि आधार ॥ १२ ॥
 रिणि राउलि जलि जलणि धरि तक्करि धणु घणु जाइ ।
 धम्मकज्जि जउ मग्गियए ताव परमुहु थाइ ॥ १३ ॥
 रोस करंता जीव रोह अच्छइ अवगुण तिन्नि ।
 अप्पउं ताविसि परु तवसि परतह हाणि करेसो ॥ १४ ॥
 लिहियउं लब्भइ सिरतणउं जइ चालियइ समुदु ।
 लच्छिहि केसवु संगहिउ तिणि विसि धारिउ रुदु ॥ १५ ॥
 लीलइ धम्मु जु होइंसए सेवंता जिणनाहु ।
 तं नवि मिच्छत्तिहि सहिउ जइ तपु करिसि अवाहु ॥ १६ ॥
 एकहि ठावि वसंतडा एवहु अंतरु होइ ।
 अहिडंकिउ महियलु मरण मणि जीवइ सहु कोइ ॥ १७ ॥
 ऐ आणाइ समतण जीव न वृद्धइ हेव ।
 हिंडइ रोसि पूरिया न करइ उपसमसेव ॥ १८ ॥
 ओदउ तहु लोभहतणउ जीव न फिट्ठइ निच्चु ।
 अहनिंसि तेण भमाडियउ न गणइ किच्चु अकिच्चु ॥ १९ ॥
 औसरि नेह अभिग्ग पुणु पिच्छिस हिय भजंति ।
 चंदूपल किरणेहि तहि दूरठिया बिहसंति ॥ २० ॥
 अंधउ अंधइ ताणियए कवणु कहेसइ मग्गु ।

केवलपट्ट निव्याणि गड धम्मु मतंतरि भग्गु ॥ २१ ॥
 अकयधम्मि जइ माणुसह हुइ नयकारु वि अंति ।
 तिणि पुत्तिहि तह देवगइ अहवा मुत्ति न भंति ॥ २२ ॥
 कवडिहि माया मूढ जिउ वंचइ लोउ अप्पाणु ।
 तिणि पाविहि भवि भवि दुहिय नवि पावइ निव्याणु ॥ २३ ॥
 खज्जइ कालु कयंत जगि को अज्ज वि को कल्लि ।
 संजमि गयवरि आरुहिउ सिद्धिसरणि जिय चल्लि ॥ २४ ॥
 गयवरमत्ता जेम हिव मा हिंडसि नरसीह ।
 हणि कसाय दमि इंदियइ गणिया लब्भइ दीह ॥ २५ ॥
 घडिय न लब्भइ अग्गलिय इंदह अक्कइ वीरु ।
 यउ जाणिउं जिणधम्मु करि जावह बहइ सरीरु ॥ २६ ॥
 डवि जाणिज्जइ सो दिवसु जणु पुणु मरइ निरुत्तु ।
 छडेविणु घरहल्लोहलउ धम्मु करेवा जुत्तु ॥ २७ ॥
 चंचलु चित्तु पवंगु जिम वयबंधण न धरेसि ।
 धम्मरामि विणासियइ मूढा हत्थ म लेसि ॥ २८ ॥
 छन्नउ पयडउ जीव तुहुं उज्जसु करि जिणधम्मि ।
 सुहियं दुहियं माणुसह पासु न मेल्लइ कम्मु ॥ २९ ॥
 जरजज्जरि देहडी हुई य पंडरि ह्या केस ।
 अरि जिय धम्मु करेजि तउं गइय स वालियवेस ॥ ३० ॥
 झलहलंत जिणवरपडिम जेइ करावइ दन्वि ।
 सग्गपवग्गहतणा सुह ते पामेसइ सन्वि ॥ ३१ ॥
 ज हु चिंतता विहवसिण कज्जु अनेरउं होइ ।
 राउलि बलियउ कुब्बलउ देव न बलियउ कोइ ॥ ३२ ॥
 टलइ मेरु नियठाणह जइ पच्छिम उग्गह सूरु ।
 पुब्ब कियउं तो नवि चलइ कम्ममहाभरपूरु ॥ ३३ ॥
 ठगियउ हिंडिसि जीव तुहु घारिउ विसि मिच्छत्ति ।
 सम्मत्ताह रयणह रहिउ न लहसि सिवसंपत्ति ॥ ३४ ॥
 डणउ जेम्ब गलि संकलिउ भवि भवि कुणबउ जीव ।
 नवि छुट्ठिज्जइ तो वि तह जइ लंघिजइ दीवु ॥ ३५ ॥
 ढणहणंति इंदिय तुरय पाडेसइ भवखोहि ।

देविणु वरसंजमिकविउ अरि जिय सग्गि निरोहि ॥ ३६ ॥
 णवि हसंतु वि जोइयए निचलु झाणु घरेवि ।
 ता दीसइ जिम जगतगुरु सहजाणंडु सु देउ ॥ ३७ ॥
 तउं एकल्लउ सहसि जिय खाएसइ परिचारु ।
 विहवु विहंचिउ लेइ जणु पाव न विहचणहारु ॥ ३८ ॥
 थक्केसइ घणु सघणु जणु कोइ न सरिसउ जाए ।
 पावु पुटु तं अज्झियए तं परि अग्गइ थाइ ॥ ३९ ॥
 देइ देइ मन आलसु करि महुरालाविहि दाणु ।
 चलिय देइ हिव विहवसिण करि सफलउ अप्पाणु ॥ ४० ॥
 धर उप्पज्जइ केवि नर परउवयारसमत्थ ।
 कइ देइ के कम्मवसि जणजण उड्डइ हत्थ ॥ ४१ ॥
 नइ वहमाणी सघणजल सुक्कइ इयर तलाय ।
 दायर वड्डइ रिद्धिडी मग्गण निघण थाइ ॥ ४२ ॥
 पढिउ गुणिउ घणु तवु तविउ संजमु किउ चिरकालु ।
 जइ कसाय नवि वसि करसि ता सहु इंदियजालु ॥ ४३ ॥
 फलु दिक्खिउ तरवरतणउं दिट्ठि म घल्लिसि बाल ।
 तं नवि पाविसि पुत्तविणु छट्ठिसि पारी लाल ॥ ४४ ॥
 वलि किज्जउं तइ सुहगुरुह जा जगु मारगि लाइ ।
 उम्मग्गह दंसणि गमणि जणु पुणु पुहवि न माइ ॥ ४५ ॥
 भरहेसरि आपरिसघरे उप्पन्नउं वरणाणु ।
 भावण सच्चहि अग्गलि य तपु संजमु अपमाणु ॥ ४६ ॥
 मयणु न खीणउ जाहतणि ते नवि वंभचारि ।
 मयणविट्ठणह संजमि लुंचणि छारि न दोरि ॥ ४७ ॥
 जसि धवलउ जगु जेहि मुणि नाउं लिहाविउ चंदि ।
 कम्म हणवि जे सिद्धि गय ताह चलण नितु वंदि ॥ ४८ ॥
 रे वाहा मग्गेण वहि मा उम्मूलि पलास ।
 कल्हे जलहरु थक्किसए कयण पराई आस ॥ ४९ ॥
 लइ वयभरु परिहरवि घरु भंजिवि भवनिथलाइं ।
 जाव न पहुच्चइ तुज्झतणि जमरावत्स दलाइं ॥ ५० ॥
 वयणु न जंपउ दीणु कसु जं भावइ तं थाउ ।

अधिरकडेवरकारिणिहि कहि किम खिज्जइ काउ ॥ ५१ ॥
 सुमिणंतरि मेलावडउ अहनिस्सि पहर चियारि ।
 पसरिथ निय निय दिसि चलए अरि जिय सुमणु विचारि ॥ ५२ ॥
 परकिसोर मत्तकरि दमइ करि करेविणु कटु ।
 निय जीवु कोवि न वसि करए थिउ गलियारु विघट्टु ॥ ५३ ॥
 संजमि नियमिहिं जे गया ते गणि सारा दीह ।
 अवर जि पावारंभि गय ताह फुसिज्जउ लीह ॥ ५४ ॥
 हिंढेविणु भवकोडिसइ लद्धउ माणुसजम्मु ।
 तत्थ वि विसयह मोहियउ न करइ जिणवरधम्मु ॥ ५५ ॥
 क्षणभंगुरु देहहतणउं अरि जिय कोइ विसासु ।
 भाव न सुचइ जिणु मणह जाव फुरक्कइ सासु ॥ ५६ ॥
 मंगलमहासिरिसरिसु सिवफलदायगु रम्मु ।
 दूहामाई अक्खियइ पउमिहिं जिणवरधम्मु ॥ ५७ ॥

इति श्रीधर्ममातृका समाप्ता ।

चर्चरिका



जिण चउघोस नमेविणु सरसइपय पणमेवि ।
 आराहउं गुरु अप्पणउ अविचलु भावु धरेवि ॥ १ ॥
 कर जोडिउ सोलणु भणइ जीविउ सफलु करेसु ।
 तुम्हि अवधारह धंमियउ चच्चरि हउं गाणसु ॥ २ ॥
 मणि उंमाहउ अंमि सुहु मोकट्टि करिउ पसाउ ।
 जिम्ब जाइवि उज्जितगिरि बंदउं तिहुयणनाहु ॥ ३ ॥
 नइ विसमी ठुंगर घणा पूत दुहेलउ मग्गु ।
 भूयटियह सणसि तुष्टं दूवलि होसइ अंगु ॥ ४ ॥
 वालइ जोपणि नं गिया अंमि जि तहिं गिरिनारि ।
 ते जंमंतरि दूत्थिया हिंढहिं परघरवारि ॥ ५ ॥
 इअ असारी देहडी अंमि जि विट्ठपइ साक ।
 तिणि कारणि उज्जितगिरि बंदउं नेमिफुआक ॥ ६ ॥
 करि करयत्ती कूयटी सिरि पोडली ठवेयी ।

मिलियउ धम्मियसाधडउ उज्जिलमग्गि वहेई ॥ ७ ॥
 इह वढवाणइ चउहटइ दीसइ सीहविमाणु ।
 रंनहुलइ घोलावी अंमुलअग्गेवाणि ॥ ८ ॥
 इय वढवाणइ जि हटइ हियडउं रह न करेइ ।
 दिवि दिवि थंदइ नेमिजिणु चडियउ गिरिसिहरेहिं ॥ ९ ॥
 पाइ चहुटइ ककरीउ उन्हालइ लू वाई ।
 जे कायर ते बलिपा जे साहसिय ते जाइं ॥ १० ॥
 साहिलडा सरवरतलिहिं उग्गिउ दवणछोडु ।
 उज्जिलि जंते धंमिणु सुंथिउ नेमिहिं मउडू ॥ ११ ॥
 सहजिगपुरि बोलेविणु गंगिलपुरहिं पडुत्तु ।
 माढी कहिजि संदेसडउ अंनु जिणेजे पुत्तु ॥ १२ ॥
 जइ लखमीधरु बोलियं पेखिवि बहु य पलास ।
 तउ हियडउं निवर थिउं मुक कुटुंबह आस ॥ १३ ॥
 विसमिय दोत्तडि नइ धणिय डुंगर नत्थि खेऊ ।
 हियडउं नेमि समप्पियउं जं भावइ तिं व नेऊ ॥ १४ ॥
 करवंदियालं बोलियउं अणंतपुरु जहिं ठाई ।
 दिवउ तहि आवासडउ हियउं विअडिं थाईं ॥ १५ ॥
 नालियरीडुंगरितडिहिं बहुचोराउलिठाईं ।
 धम्मियडा बोलिउ गिया अमुलतणइ सहाईं ॥ १६ ॥
 भालडागदुसुंनउ अविषडउं यसेइ ।
 धम्मिय कियउ वीसावढ सुरधारडीवरेहिं ॥ १७ ॥
 ओ दीसइ उहुंघलउं सो डुंगरु गिरनार ।
 जहिं अच्छइ आवासियउं सामिउ नेमिकुमारु ॥ १८ ॥
 मंगूखंभि न मणु रहिउ अंनु वढडेउ दिटु ।
 खडहड अंशु पखालिपं गोवाडलिहिं पडुटु ॥ १९ ॥
 भाद्रनई जइ बोलिउ नाचइ धंमिउ लोउ ।
 उज्जिलि दीवउ बोहियउ सुरठडिय हउ जोउ ॥ २० ॥
 खंडइ देउलि जउ गिया सांकलि बोलिवि ।
 धंमिय कियउ आवासडउ वंचूसरितलि नेई ॥ २१ ॥
 उज्जिलमग्गि बहंता रउ लागइ जसु अंगि ।

वलि किज्जउं तसु धमियह इंदु पसंसह सग्गि ॥ २२ ॥
 जे मलि मइला पहियडा ते मइला म भणेजे ।
 पावमली जे मइलिया ते मइला ह सुणेजे ॥ २३ ॥
 एउ थाउह लोडवं कोटवं तलि गिरिनारु ।
 ओ दीसइ ववणथली धवलियतुंगपयार ॥ २४ ॥
 घर पुर देउल धवलिया धज धवली दीसंति ।
 धंमी सा ववणथली ऊजिलितलि निवसंती ॥ २५ ॥
 वउणथली मेलेविणु जउ लागउ गढमग्गि ।
 तउ धंमिउ आणंदियउ हरिसु न माइउ अंगि ॥ २६ ॥
 रिसहजिणेसरु वंदियउ गढि आवासु करेवी ।
 नाचइ धंमिउ हरसियउ हियडइ नेमि धरेवी ॥ २७ ॥
 गढु बोली जउ चालीयउ तउ मणि पूरिय आस ।
 वलि किज्जउ हउं जंघडिय जोयण बूढ पंचास ॥ २८ ॥
 दोलह उपरि मागउउ सो लंघणउ न जाइ ।
 पाउ खिसियउ विसमउ पढइ हियं विअडइं थाई ॥ २९ ॥
 अंचणवाणी नइ वहइ दिहु दमोदरु देउ ।
 अंजणसिलहिं जि अंजिया धन्न ति नयणा वेउ ॥ ३० ॥
 तरवरुतणइ पलांवडे रुडउ मागु जंघेयि ।
 कालमेषु जोहारियउ बल्लापदि जाणवी ॥ ३१ ॥
 अंवाजंबूराइणिहिं बहु वणराइ विचित्त ।
 अंघिलिण करवंदिणहिं वंसजालि सुपचित्त ॥ ३२ ॥
 नीझरपाणिउ खलहलइ वानर करहिं चुकार ।
 कोइत्तसहु सुहावणउ तहिं हुंगरि गिरिनारि ॥ ३३ ॥
 जउ मइं दिट्ठी पाजडी उंच दिहु चडाऊ ।
 तउ धंमिउ आणंदियउ लड सिवपुरि ठाउ ॥ ३४ ॥
 हियडा जंघउ जे वहइं ता ऊजिति चडेजे ।
 पाणिउ पीउ गइंदवइ हुग्य जलंजलि देजे ॥ ३५ ॥
 गिरिवाइं झंझोटियउ पाप धाहर न लहंति ।
 कडि ओटइं कडि धक्का हियडउं सोसह जंति ॥ ३६ ॥
 जाव न धंधलि घल्लिया लखुपत्तीपाण ।

तांव कि लब्धहिं चितिया हियडा ऊणत्ताण ॥ ३७ ॥

हुंगरडा अधो फरिं लग्गउ सीयलि वाउ ।

ह्य पुणं नवदेहडी अंसुलि कियउ पसाऊ ॥ ३८ ॥

चर्चरिका समाप्ता

मातृकाचउपइ

त्रिभुवनसरणु सुमरि जगनाहु जिम फिटइ भवदवं दुहदाहु ।

जिणि अरि आठ करम निर्दलीय नमो जिन जिम भवि नावऊ बलिय ॥ १ ॥

आंचली-सवि अरिहंत नमिवि सिद्ध सूरि उज्झावय साहु गुणभूरि ।

माईयवावनअक्षरसार चउपईवंधि पढिउं सुविचारु ॥ १ ॥

भले भणेविणु भणीअइ भलउं तिहुयणमाहि सारु एतलउं ।

जिनु जिनवचनु जगह आथारु इतीउ भूकिउ अवरु अस्सारु ॥ २ ॥

मीढउं पढिउं भवनागमा जउ समिकत्ति लीणु आतमा ।

जिनह वयणि करिजे निहु ठाउ हृदय रहवि तिहुयणनाहु ॥ ३ ॥

लीह म लंघिसि जिणवरिभणी जो रिधि वंच्छह सिवसुहतणी ।

चहुंगति फीटइ फेरउ बडउ पाच्छइ जाइउ सिवगढि चडउ ॥ ४ ॥

लीहं बीजी वे उपरि करे देवु गुरु हीयडइ संभरे ।

क्षणु एकू मन करिसि प्रमादु जिम तुम्हि पामउ मुक्तिसवाहु ॥ ५ ॥

अँकारि सुमरि अरिहंतु जो अठकमहं कालु कियंतु ।

अनु सिवसुखत्तणउ दातारु मनह म मेलिहसि तिहुयणसारु ॥ ६ ॥

नव निहाण ते पामइं तिम जीह जिणवयणु हियइ परिणमइ ।

सिवसंपत्ति तीहहकडी जीह जिणआण हियइंसउं जडी ॥ ७ ॥

मनु चंचलु जे अविचलु करइं जिणह आण सिरऊपरि धरइं ।

हणइं कसाय इंदीय संवरइं ते सिवनयरि सुखि संचरइं ॥ ८ ॥

सिद्धउं काजु सहू तीहतणउं जेहि जीवि कीधउं जिणवरभणिउं ।

छेदिउ आठकरमनी बेलि गया मुक्ति दुई पेलावेलि ॥ ९ ॥

बंधइं पडिया दीह मन गमउ अप्पारामि जिणवरिसउं रमउ ।

भयह तापु नवि लागई अंगि उडु बहुफल पामउ सिवसंगि ॥ १० ॥

अनुव्रतु जिनह आण मनि धरे उपसमु विवेकु संवरु करे ।
 अरिवरु अंतरंगु निग्रहे इणि परि जीव सुकृतु संग्रहे ॥ ११ ॥
 आलिहि अलीउ म झंपिसि किमह जे जिनुवयणु हियइं तू गमह ।
 करमुबंधु पडतउ चीतवे भापासमि वि सहजि अनुभवे ॥ १२ ॥
 इणि संसारि दृपभंडारि लइन जीव काय धम जगारि ।
 धीतरागि जं आगमि कहीउ करे तइ जि यणु भावनसहीउ ॥ १३ ॥
 ईमह म कारसि कूडउ सोसु सोचइ जिनह वयणि करि तोसु ।
 जोइउ आगमतणउ विचारु पाच्छइ भरिन परतभंडारु ॥ १४ ॥
 उप्पलदलउप्परि जिम नीरु ते सउं चंचलु जीव सरीरु ।
 धणु कणु रइणु सइणु तिम सह दीसइ धम्म एणु घर रह ॥ १५ ॥
 उपरि देखि दैव न हु हाथु तेरहि तिहुयणि कोइ न सनाथु ।
 नासीउ पइसिजान जिनसरणि जिम न पामीअह जंमणमरणि ॥ १६ ॥
 रिद्धिहितणउ लाभु इम लेजि सातिहि पेति धीतु वावेजि ।
 उपर सिंचे भावनानीरि वगसरु नोही जिम ताहरइ सीरि ॥ १७ ॥
 रीणु दीणु ते चहुगति भमइ जे जिन धीतराणु नवि नमह ।
 नोही काइ धरमवासना ते नही जाई सुक्किआसना ॥ १८ ॥
 लिपावीइ सुतु सोढंतु तेह लाभ नवि लाभइ अंतु ।
 ज्ञानतणउ गुण एवहु कोइ धीतराग तु ज्ञानलगु होइ ॥ १९ ॥
 लीलअमत संसारु तरेसि जइ जीव जिनधमु परहुणु लेसि ।
 सुगुरनी जाम बिलगीउ करी जान जीव भवसाइरु तरी ॥ २० ॥
 एकह परि पामिसि भवपारु जइ समिकत कर अंगीकारु ।
 वीरनाथु कहइ आगमि तोइ विणु समिकत सिद्धि नवि होइ ॥ २१ ॥
 ए अ वचनु जोइ जिणवरतणुं तहि ऊपमा किसी हउं भणउं ।
 जिणहं वइण न ऊपम काइ त्रिभुवनतणी सुद्धि जेह माहि ॥ २२ ॥
 ओघहं पडीउ पापु जे करिसि तउ संसारु अनंतउ फिरिसि ।
 जोईउ पणु सिद्धंत विचारु करिसि धम्म तउ पामिसि पारु ॥ २३ ॥
 ओपधु करे जीव जिनि भणिउं अछइ दुपु अठकरमहतणउं ।
 बाहिजि ओपदि काई तु थाइ धरमोपधविणु दुपु न जाइ ॥ २४ ॥
 अंतु न लाभई इह संसार काइ तु जीव हीइ न विचार ।
 एक जु धमु करे सपाइ लेउ मेल्हइ सिवनअरीमाहि ॥ २५ ॥

अनुदिनु भक्ति करे जिनराय पूजि त्रिकाल तासु पहुपाय ।
 मानपतु दोहिलइं पामेसि पाच्छइ जिनपति काहा नमेसि ॥ २६ ॥
 कपटिहि मायां वंचइं लोकु ते नवि लहइं सिद्धिसंजोगु ।
 भमइइं जीव चहुंगतिहि मज्झारि इणपरि भव पूरइं संसारि ॥ २७ ॥
 खज्जइ जगु एउ कालकु अंति एह एतला नही काइ भ्रंति ।
 जिणह वइणु विडिजा इकमणउ भउ फीदिसइ कितांतहतणउ ॥ २८ ॥
 गन्धवासि जो दिलउं जाण तउ तउं माने जिनवरआण ।
 फेइइ दुपु सह जिनराउ तउ सिवनइरि अ पावइ ठाउ ॥ २९ ॥
 धरिं घरु हिंडिसि जीव अणाहु जइ न नमिसि जिनु तिहूअणनाहु ।
 जिनुधमविणु सुपु नहीं संसारि अवर टमालि दीस मन हारि ॥ ३० ॥
 उअइं सरिसु भम्मु जइ करिसि तउ भंडोरु परत नउ भरिसि ।
 जे यणु लागिसि लोकप्रवाहि रडभड हुइसइ चुहुंगतिमाहि ॥ ३१ ॥
 चक्रवति पट्पंडइ धणी हंतो रिद्धि तीहंनइ धणी ।
 जो रिद्धिहिं परित्ताणु होउ त वंसु संभुमु निरगि नवि जंत ॥ ३२ ॥
 छविह जीव करेजे रप जइ तुम्हि जिणसासणि छउ दप ।
 आतमवत्तु जीव सवि गणे धम्मह तउं सारु इउ मुपे ॥ ३३ ॥
 जगगुरु जगरपणु जगनाहु जगबंधु जगसथवाहु ।
 जगतारणु जिउ जगआधारु जिणविणु अवरि नही भवपारु ॥ ३४ ॥
 जडइ पापु जिम तरुअरि पनु जइ मनमाझि यसइ इकु जिनु ।
 जापुलसेपुलि कांइ करेसि जिनि एकलइं मुकति पामेसि ॥ ३५ ॥
 असिदिहु पंचप्रमिष्ठि सुमरेजि इणपरि असुभुं करमु पपेजि ।
 सुभउं करमु वाघजे घणउं जिम सुपु लह सिवनगरीतणउं ॥ ३६ ॥
 दलइ मेरु जो परवतराजु जो रवि पच्छिम ऊगई आहु ।
 जो सायरु मिल्हइ मज्जाइ तोइ जिनभासिउं अलीउ न धाइ ॥ ३७ ॥
 ठगीसि रापे कुगुरि कुवोधि जिनकसवट्ठो लेजे सोधि ।
 पूजइवानो आसतणी रिधि संग्गहे सुकितनी घणी ॥ ३८ ॥
 दसोइ कालमूअंगमि लोकु तेह नवि लागई औपधजोगु ।
 यीतराग मंत्रवादी य विणउं विसु पसरइ अठकरमहतणउं ॥ ३९ ॥
 दलिइ पासइ देजे दाउ घणरणजौवन करिसि म गाउ ।
 जगसरुपु देपे इंदीआलु करे धमु परहरीउ टमालु ॥ ४० ॥

णवणवपरि भग्गऊ भवचारु सांमीअ करिउ अम्हारी य सार ।
 असरणसरणु तुहं जि जगनाह भवि पडंत अम्ह देजे बाहु ॥ ४१ ॥
 तनु धनु जीवीउ जीवनु जोइ रिद्धि समिद्धि सहअणु सह कोइ ।
 दिवस पांच मेलावउ होइ पाछइ वलीउ न दीसइ कोइ ॥ ४२ ॥
 धरधर कंपइं काइरचित्त देपीउ मुनिवर माहासत्त ।
 धीरा सत्तवंत जे जाण पालइं दीपसहीउ जिणआण ॥ ४३ ॥
 दमि इंदिअ दुग्गइदुआर लूसीउ लिअइं सुकितु सविचार ।
 जे न जिणिसि जिणवयणविचारि देसिइं दूषु बहसंसारि ॥ ४४ ॥
 धरमध्यानि करि निमलु चितु जिम हुइ जीव जनसु सुपवितु ।
 धमिहि सिवह सौपसंपत्ति धमिहि वलीउ न भवि उत्तपत्ति ॥ ४५ ॥
 नर नीतु नमो नीमि जिणनाहु आठकरम जिणि दिन्हौ दाउ ।
 मोहराउ रिणि भंजीउ करी लीलहं लईं सामि सिवपुरी ॥ ४६ ॥
 पढइ गुणइ वरकाणइं सुतु पुणु बुझइं नही तोइ ततु ।
 रागु द्वेषु मनभीतरि धरइं ईमइ वेखविडंवउ करइं ॥ ४७ ॥
 फलइ करमु परभवद्वतणउं जइ रिद्धिरहि जीउ हीडइ घणउं ।
 दुषु सुषु सह पइ लागम आवइं सिजिउं सरिसु आतमा ॥ ४८ ॥
 बलि कीउ जीवीउ तीहं संसारि जे दिन गमइ पापव्यापारि ।
 सफलु जनसु तीहं नरनारि जे जिनधमि द्विद चित्तमझारि ॥ ४९ ॥
 भविं भवु बोलइं जीव अनंत जाणइं नही वइणु अरिहंत ।
 न सुणइं अंतरु पावइ पुत्रु तीहं सोकल कांइं सिरिज्या कान ॥ ५० ॥
 मइणु जि मारइं ते जगि सूर जे मारीयइं मइणि ते भूर ।
 धीरा सुभट सतु ऊटवइ मारीउ मयणु नाउं नीठवइं ॥ ५१ ॥
 य करइं तप्पु नीसु संजसु तीहं दुर्गतितनउ नही कोइ गंसु ।
 जीहं स रोईउ हुइं जिनधंसु विलसइं मुकतिसोपु निरुपंसु ॥ ५२ ॥
 रहिसिइं पूत कलत घरवारु रहिसिइं सहणु सह परिवारु ।
 रहिसिइं धणुकणुरइणुभंडारु जीउ एकलउ जाइ निधारु ॥ ५३ ॥
 लइं जिनदीप सूकि संसारु आठकरम दहीउ करि च्छारु ।
 निरुपसु सुषु सिवनहरीतणउं लहिसि जीव आगमि जिनभणिउ ॥ ५४ ॥
 वचनव्यापु जोइ जिणवरतणउ अरथ गंभीरु अच्छइं तहिं घणउ ।
 जो साइरि जलविदहं पारुं तउ लभइ सिद्धंतविचारु ॥ ५५ ॥

शरउपरि मूढा मन पेलि जिनधम्मु लाघउ पाइ म ठेली ।
 तिहुअणचिंतामणि जिनधम्मु करीन जीव भाजइ भवभ्रंमु ॥ ५६ ॥
 पणि पणि आउ गलंतउ देपि भवि पडंतु अपुं म ऊयेपि ।
 करि न धम्मु जं केवलिकहीउ जा सिवपुरि लेपउं विखहीउ ॥ ५७ ॥
 सहजि जीउ भवगूतलि करइ कर्म बुद्धरादाणी घणु घरइ ।
 जे कर्मतणउ नही य ऊधारु भवगोतिहिं दुखु सहिसि अपारु ॥ ५८ ॥
 हरिपु बिपादु करिसि मन कोइ जइ जीव आपद संपदं होइ ।
 अवगु फलीसइ पुवभवकिउं नं भोगवै कोइ अणकिउं ॥ ५९ ॥
 जंघइ दीव पुदवि समुद गिरिकंदरा भमइ बहुरुद ।
 रिद्धिकाजि इत्सीउ रझभडइ न कौ धम्मु जिणि रिधि संपडइ ॥ ६० ॥
 क्षुणुभंगुरु एउ सहइ जाणि म करिसि जीव धरमनी काणि ।
 विणसइ सहइ कहइ आगम्मु अविनसुरु एकु जिणधम्मु ॥ ६१ ॥
 मंगल करउं सवि अरिहंत जे अच्छइं सिवलच्छीकंत ।
 मंगल सिद्धि सूरि उवज्झाय मंगलं करउं साहुणा पाय ॥ ६२ ॥
 मंगलमूलु सबहिं आगम्मु जो जगमाहि अच्छइं निरुपम्मु ।
 जसु अतिसइ न लाभइ अंतु मंगलु करउ सोइ जि सिद्धंतु ॥ ६३ ॥
 जा ससिसूरु भूषणु व्यापंति जा ग्रह नक्षत्र तारा हुंति ।
 जा वरतइ वसुहव्यापारु तां सिवलच्छि करउ मंगलाचारु ॥ ६४ ॥

मातृकाचउपइ समाप्ता

सम्यक्त्वमाईचउपइ

भले भणउं माईधुरि जोइ धम्मह मूलु जु समिकतु होइ ।
 समकतुविणु जो क्रिया करइ तातइ लोहि नीरु घालेइ ॥ १ ॥
 ऊंकारि जिणु पणमेसु सतगुरुतणउं वयणुं पालेसु ।
 आगम नवतत वृज्झिसि तिमई समिकतु रयणु होइ तसु तिमइ ॥ २ ॥
 नर नवकारु सुमरि जगसारु चउदह पुव्वह जो समुच्चारु ।
 समिकत जइ लाभइ संसारिं जाणे छुरी पढी भंडारि ॥ ३ ॥
 मनु चंचलु अट्ठाणि पडेइ घडियमाहि सातमिय ह नेइ ।
 मनु मयगलु शुभ ध्यानु करंति प्रसंनचंद जिम सिद्धिहिं जंति ॥ ४ ॥

सिद्धिसुख जगि सह को लहइ दृढसमिकतु जइ हियडइ रहइ ।
 दृढ समिकतु श्रेणिकराय होइ प्रथम तिथंकरु होसइ सोइ ॥ ५ ॥
 धन जि गुरपारपड करंति गुरु विणु समिकतु किमइ न हुंति ।
 मुहुतु एकु समिकतु फरसेइ पुदगल अरधमाहि सिद्धि विनेइ ॥ ६ ॥
 अच्छइ मोहचरहु इणि समइ समिकतु रयणु न लाभइ किमइ ।
 कुगुरु सुगुरु अंतरु न हु करइ इणि कारणि नउगति जिउ फिरइ ॥ ७ ॥
 आगमवयणु पंचमइ अरइ केवलनाणु प्रभव हुइ परइ ।
 इसइ कालि समिकतदृढचित्त ते नर जाणे जगह पवित्त ॥ ८ ॥
 इणि भवि परभवि सुख लहेउ सतगुरुतणउं वयणु पालेहु ।
 बीतराग जउ वंदिसि पाप ऊडइ पापु होइ निम्मल काय ॥ ९ ॥
 इंदियालु जगि दीसइ लोइ बालवृद्धु न हु छटइ कोइ ।
 धरमसंबलु जइ सरिसउ लेइ पार गया तउ सुखु माणेइ ॥ १० ॥
 ऊगमतइ जे नर दीसंति चउंजणकंधि नडिया ते जंति ।
 सुकिय दुकिय वे सरिसा चलइं सजनभीत बोलावी बलइं ॥ ११ ॥
 ओसरि बावियइ लाभु न हुंति सजलु होइ बीजह चूकंति ।
 सुधउं दानु मुनिहि जो देइ संगमतणउ लाभु सो लेइ ॥ १२ ॥
 रिद्धिहितणउ लाभु जगि लेहु दस खेव्रे तुम्हि धनु बावेहु ।
 दीन्हादानह नासु म जोइ सुपात्रि दीन्हइ बहुफलु होइ ॥ १३ ॥
 रीतिहि दानह नथी निवार उचितु दानु दीजइ सविचार ।
 कृसनभयसिउ जउ खडु वारंति पात्रविसेपिहि पीरु स दिति ॥ १४ ॥
 लिहियं जगि लोडइ सउ कोइ कुपात्रु विसहरसादसु होइ ।
 खोरु आणि जउ मुखि घातिपइ पात्रविसेपिहि तसु विमु थियइ ॥ १५ ॥
 लोह न लंघउं सतगुरुतणी क्रिया करउं जा आगमि भणी ।
 विधिमारयु मानउं सविचार जाणउं जइ छूटउं संसार ॥ १६ ॥
 एहु करेवउं नर संसारि त्रिनि वार जउ चडिउ विहारि ।
 बीतराग जउ भणिउ करेसु दस आसातन नितु राखेसु ॥ १७ ॥
 ऐ वार मेलिहउ जिणु पूजेसु रयणिहि रमणिगमणु वारेसु ।
 न्हवणु तं दिजहि निसिभरि रहई तं विहिमंदिरु सतगुरु कहइ ॥ १८ ॥
 ओ दीसइ मंदिरु जगि सारु धम्मरयणकेरउ भंडारु ।
 चउरासी आसातन नितु रापेसु मंदिरि दिवसइ बलि होएसु ॥ १९ ॥

ओषा दीसई बहुत गमार धंमहतणी न पूछई सार ।

जिण गुरि दीठइ दूरिहि जंति दुलहु माणसुजंमु आलि गमंति ॥ २० ॥

अंतरु विधि अविधिहि जाणंति मंदिर पइठ निसिहि न करंति ।

तालारासु रयणि न हु देइ लउडारसु मूलह वारेइ ॥ २१ ॥

अइसउ मंदिरु जगि प्रवहणु होइ धंमिउ लोउ चडइ सुह कोइ ।

पंचप्रमिट्ठिनो जापउ करउ संसारसमुदु जिम लोलइ तरउ ॥ २२ ॥

कहियइ थूलिभहु सुणिराउ मयण चरड भंजइ भडिवाउ ।

छ विगइ सो जनु चित्रसाली रहइ जगहमाहि थूलिभहु लीह लहइ ॥ २३ ॥

खडभड रापि न इणि संसारि जुगप्रधान जोइ धंमु विचारि ।

सुद्धउ धरसु करिसि जइ किमइ जंमणमरणह छुटिसि तिमइ ॥ २४ ॥

गलइ आउ जिम अंजलिनीरु सीलु जु पालइ सो नर धीरु ।

कपिलनारि पेलइ विन्नाणि सीलु सुदरसनतणउं वखाणि ॥ २५ ॥

घडतउ फोडतउ वार न लाइ कर्मतणी विसमी गति काइ ।

जं जं करसु करइ तं होइ लपमणि दससिरु जीतउ जोइ ॥ २६ ॥

निच्छइ साहसिउ वज्रकुमारु इंदु पसंसइ जो दयसारु ।

सुर वे आविया जउ सत पडइ कुमरु पारेवासउं घडि चडइ ॥ २७ ॥

चलइ सबलवाहणु मरनाहु वीरवंदन हुउ अतिघणुं भाउ ।

दसाणभहु अतिगरवु करेइ इंदिहि जीतउ रिधि दाखेइ ॥ २८ ॥

छंडइ राजु रिद्धि पणमाहि इंदि जीतउ तं न सुहाइ ।

वीरपासि संजमुभरु लेइ इंदिहिं हारिउ चलण नमेइ ॥ २९ ॥

जनमु वधरसामिउ तिमसमइ छ मास रोयतउ रहइ न किमइ ।

धणगिरि विहरतु पहुतउ घरेइ साति पूतु हिय शोली घरेइ ॥ ३० ॥

झटकह तउ शोली घातिपउ भारि गुरुह लेउ समपिउ ।

गुरु पभणइ पउ तिणि आपेहु कुमरह आवी सार करेहु ॥ ३१ ॥

निच्छइ जुगप्रधान जिउ होइ इह गुणवज्जणु सकइ न कोइ ।

पालणइ सुनउ श्रवणि सुणेइ इमारअंग तउ आणावेइ ॥ ३२ ॥

टलइ न पायज कुमरह किमइ मायली झगडउ मांडियउ तिमइ ।

राज विदोतु पूतु हउं लेसु मंदिर नेतउ परिणावेसु ॥ ३३ ॥

ठप्पर मिलिया जगटउ करइ कुमरु अणावी तउ चिचि धरइ ।

यणफल रमणा सा दोइ धणगिरि रजोहरणु दापेइ ॥ ३४ ॥

डगडगतउ मनु रहइ न किमइ मायटी भवि भवि लाभइ तिमइ ।
 सुगुरुमेलावउ दुलहउ हुंति पंचमहाव्रत सीहगिरि दिति ॥ ३५ ॥
 दाढसु कीयउं बालकुमारि सीहगिरि तउ हालियउ विहारि ।
 सीस भणइं अम्ह वयण कु देइ वयरड मुनि तुम्ह काजु करेइ ॥ ३६ ॥
 न गणउं अवरसीस जयसीह सीहगिरितणा सीस हुइ लीह ।
 अभिनवदीपितु वयण कु देइ सीहगिरितणउं वयणु मानेइ ॥ ३७ ॥
 तपु संजमु किउ वरिससहसु जीवदया पालिय गुणह निवासु ।
 अंतकालि अटझाणि पडंति कंडरीकु सातमियहं जंति ॥ ३८ ॥
 पुंडरीकु वरिससहसु कीउ रज्जु विउ घडियहं तउ सारिउ कज्जु ।
 पावज ले गुरु संमुहउ थाइ पंचविमाणे पुंडरीकु जाइ ॥ ३९ ॥
 दस दिसि पसरिउ जगि जसवाउ नवअंगवित्तिकरण गुरुराउ ।
 धंभणि धप्पिउ पासजिणंहु पणमहु सुहगुरु अभयमुणिंहु ॥ ४० ॥
 धनु सु जिणवल्लहु वक्काणि नाणरयणकेरी छइ ग्वाणि ।
 वइतालीससुहु पिंहु विहरेइ त्रिविधुमंदिरु जगि प्रगट्ट करेइ ॥ ४१ ॥
 नर निसुणहु सतगुर वक्काणु अंतस वूझउ थिउ सु जाणु ।
 कुगुरवाणि तउ विसु उतरेइ सुगुरवाणि जउ अमिउ झरेइ ॥ ४२ ॥
 परिणइ अट्ट नारि करि लेइ वइवणइ वइठउ कथा कहइ ।
 प्रभवु चोरु मंदिरि पइसेइ असुयणनिंद सयलजण देइ ॥ ४३ ॥
 फट्टउ जंयुकुमरु इम भणइ विचाहुमहोच्छयु प्रभवु न गणइ ।
 जंयुकुमरु जउ इसउ भणंति सवि धंभिया टगमग जोयंति ॥ ४४ ॥
 वंधव अम्हसउं साटि करेज विहुं विगावट्ट इक धंभणी देज ।
 कुमरु भणइ विद्या किसउं करेसु रिद्धि परिहरी प्रहं वतु लेसु ॥ ४५ ॥
 भणइ प्रभवु नवजोवण नारि परणिय पुन्नवमिण संसारि ।
 कामभोग भोगवि इणि समइ जोवण गइ वतु लेजे तिमइ ॥ ४६ ॥
 मयणु चरइ सो मइ वसि किउ मोहराउ पाडिउ नाधियउ ।
 मधुविंदसाटस इहु संसारु निसुणि प्रभवु तहु जोइ विचारु ॥ ४७ ॥
 जगु पिंटाणु सयलु वरतेइ तहु विणु पितरह पिंहु कु देइ ।
 महेसरदत्तारुथा जउ कहइ प्रभवुउ सांभलिउ मनमाहि रहइ ॥ ४८ ॥
 रतिपनि जाणउं तइं वमि कियउ नात्रानणउं मंघंयु किम थियउ ।
 अढारह नात्रारुथा कहंति प्रभवु सांभली तउ नूभंति ॥ ४९ ॥

लहणउ लाभइ इह जगमाहि जंजुसामिघरि रिद्धि न माइ ।
 हूँती रिद्धि कुमरु परिहरइ प्रभवु पराई लेवा फिरइ ॥ ५० ॥
 वयणु कहउ पुणु नीजइ वाइ जंजुकुमर तुहु परिणिउं काई ।
 वालकुमारउ तउं व्रतु लियत नियनियमंदिरि अट्टय रहत ॥ ५१ ॥
 सांभलि प्रभव ज काइउं हुंत जइ घरि रह त संसारि पडंत ।
 कथा कहिउ प्रतिबोवेषु नारि बलिउ न आवइं इणि संसारि ॥ ५२ ॥
 पडभइ केही रिद्धिहितणी नचाणवइ कोडि सोना छइं घणी ।
 जोमणइ हाथिहि तउ हउं देसु मणवंचिय भागण पूरेसु ॥ ५३ ॥
 सा सिवकाजउ प्रगुणी करइ दानु दियंतउ तउं नीसरइ ।
 माय वापु अट्टनारि चडंति पंचसयसहितु प्रभवु वइसंति ॥ ५४ ॥
 हल्लिय सिविका गाजे रली बल्लिय ढक्क बुक्क काहली ।
 सिविका उत्तरिउ चलण नमंति सुहमसामि सइं हयि व्रतु दिति ॥ ५५ ॥
 लंघिउ सायरु जउ व्रतु लिउ पंचमगतिप्रस्थानउ कियउ ।
 जंजुसामिउच्छु देसेइ बहुतु लोकु जाइउ व्रतु लेइ ॥ ५६ ॥
 खयउं पापु जउ पावज लई घरसंसारचित्त तउ गई ।
 मनि जोतइ इंद्रिय वसि धाईं करमं जिणिय नर सिद्धिहि जाईं ॥ ५७ ॥
 मंगलु पहिलउ सोहमसामि बीजउ मंगलु जंबूसामि ।
 अगणिउ मंगलु प्रभव भणंति चउत्थउ मंगलु नारिहि हुंति ॥ ५८ ॥
 गणियइ जुगवरु सोहमसामि बीजउ जुगवरु जंबूसामि ।
 बीजउ जुगवरु प्रभवु भणंति सिज्झंभवु चउत्थउ जाणंति ॥ ५९ ॥
 लंछणि सीह गोपसु पुच्छंति जुगप्रधान जमि केता हुंति ।
 विसहस चउं आगला कहेइ छेहिलउ दुपसहु तउ जाणेइ ॥ ६० ॥
 मंनउं जुगवरु जिणेसरसूरि पावु पणासइ दरिसण दुरि ।
 संदेहु म करहु जिम समिकतु रहइ भवि भवि बोधिबीजु जिउ लहइ ॥ ६१ ॥
 हासामिसि चउपईवंधु कियउ माईतणउ छेहु मइ नियउ ।
 ऊणउ आगलउ किपि भणेउ जूगहु भणइ संघु सयलु खमेउ ॥ ६२ ॥
 श्रीनंदउ समुदायरि रहइ नंदउ विहिमंदिरु कवि कहइ ।
 नंदउ जिणेसरसूरि मुणिहु जा रवि ऊगइ ऊगइ चंडु ॥ ६३ ॥
 माईतणउ अगसरु धुरि कियउ चहसठिचउपइया वंधु धियउ ।
 सुद्ध मनि जे नर निसुणंति अणंतसुरु सिद्धिहि पावंति ॥ ६४ ॥

श्रीनेमिनाथभाग्य

मिद्धि जेहिं सड घर वरिय ते निवधर नमेयी ।
 फागुबंधि पदुनेमिजिणुगुण गाणसउं केवी ॥ १ ॥
 अह नवजुव्वण नेमिकुमर जादवकुलभवलो
 काजलसामल ललवलउ सुललिपमुहकमलो ।
 समुदविजयसिवदेविपुतु सोहगसिंगारो
 जरासिंधुभटभंगभीमु वलि रुवि अप्पारो ॥ २ ॥
 गहिरसहि हरिसंरु जेण पुरिय उइंदो
 हरि हरि जिम हिंदोलियउ भुयदंडपयंडो ।
 तेयपरिक्कमि आगलउ पुणि नारिविरत्ताउ
 सामि सुलरुणसामलउ सिवसिरिअणुरत्ताउ ॥ ३ ॥
 हरिहलहरसउं नेमिपदु सेलइ मास वसंतो ।
 हावि भावि भिन्नइ नही य भामिणिमाहि भमंतो ॥ ४ ॥
 अह सेलइ गडोगलिय नीरि पुणु मयणि नमावट
 हरिअंतेउरमाहि रमड पुणि नाहु न राचट ।
 नयणमलूणउ लटसदंतु जउ तीरितिं आविउ
 माड वापि वंथविहिं मांड वीवाह मनाविउ ॥ ५ ॥
 घरि घरि उत्सव वारयण राउल गहगहण
 तोरण पंदुरवाल फलस घयवट लललहण ।
 फलटि भागिय उगगसेणधूय राजल लाया
 नेमिज्जमाहीय वाल अहभयनेहनिवज्जा ॥ ६ ॥
 राउमणसम तिहु भुयणि अउर न अलइ नारं ।
 मोहणविद्धि नयल्लटीय उप्पनीय मंसारे ॥ ७ ॥
 अह सामलफोमल पेडापास किरि मोरकलाउ ।
 अरुणंदमनु भालु मयणु पोमड भएयाउ ।
 पंकुडिगाहीय सुंहरियां भरि सुयणु भमावट
 लाटी लोपणटाकुललइ मुर मग्गा पाटइ ॥ ८ ॥
 किरि मिमिविण कपोड कर्त्ताहिंदो कूरंता
 नागा वंसा गरुडंणु दादिमकल देता ।

अहर पवाल तिरैह कंदुराजलसर रुडड
 जाणु बीणु रणरणई जाणु कोइलटहकडलउ ॥ ९ ॥
 सरलतरल सुयवल्लरिय सिंहण पीणघणतुंग ।
 उदरदेसि लंकाउली य सोहइ तिवलतुरंगु ॥ १० ॥
 अह कोमल विमल नियंबविव किरि गंगापुलिणा
 करिकर जरि हरिण जंघ पल्लव करचरणा ।
 मलयपति चालति बेलहीय हंसला हरावइ
 संझाराणु अकालि वालु नहकिरणि करावइ ॥ ११ ॥
 सहजिहिं लडहीय रायमण सुलखण सुकमाला
 घणउं घणेरउं गहगहण नवजुव्वण वाला ।
 भंभरभोली नेमिजिणवीवाह सुणेई
 नेहगहिल्ली गोरडी हियडइ विहसेई ॥ १२ ॥
 सावणसुकिलछट्टि दिणि वावीसमउ जिणंदो
 जलइ राजलपरिणयण कामिणिनयणाणंदो ॥ १३ ॥
 अह सेयतुंगतरलतुरइ रइरहि चडइ कुमारो
 कविहिं कुंडल सीसि मउड गलि नवसरहारो ।
 चंदणि जगटि चंदवचलकापटि सिणगारो
 केवडियालउ खुणु भरवि वंजुडउ अतिफारो ॥ १४ ॥
 धरहि छत्तु बित्तु चमर चालहिं मृगनयणी
 लूणु उत्तारिहिं वरबहिणी हरिसुज्जलवयणी ।
 चहुपरि बइसइ दसारकोडि जादवभूपाला
 हयगयरहपायकचक्कीसिकिरिहिं झमाला ॥ १५ ॥
 मंगल गापहिं गोरडीय भइह जपजपकारो
 उगसेणघरनारि वरो पटुतउ नेमिकुमारो ॥ १६ ॥
 अह सहिय पयंपय हल सहि ए तुह वल्लहउ आवइ
 मालिअटालिहिं चडिउ लोउ मण नयणु सुहायइ ।
 गउलि वइठी रायमण नेमिनाहु निरम्बइ
 पसइपमाणिहिं चंचलिहिं लोअणिहिं कइम्बइ ॥ १७ ॥
 किम किम राजलदेविनणउ सिणगार भणेयउ ।
 पंपइगोरी अघोइ अंगि चंदनुलेयउ ।

खुंणु भराविउ जाइकुसमि कसतूरी सारी
 सीमंतइ सिंदूरेह मोतीसरि सारि ॥ १८ ॥
 नवरंगि कुंकुमि तिलय किय रयणातिलउ तसु भाले ।
 मोतीकुंडल कनि थिय बिबालिय करजाले ॥ १९ ॥
 अह निरतीय कज्जलरेह नयणि मुहकमलि तंवोलो
 नगोदरकंठलउ कंठि अनु हार विरोलो ।
 मरगदजादर कंचुयउ फुडफुल्लहं माला
 करि कंकण मणिवलयचूड खलकावइ वाला ॥ २० ॥
 रुणुझुणु ए रुणुझुणु ए रुणुझुणु ए कडि घघरियाली
 रिमिझिमि रिमिझिमि रिमिझिमि ए पयनेउरजुयली ।
 नहि आलत्तउ बलवलउ सेअंसुयकिमिसि
 अंखडियाली रायमए प्रिउ जोअइ मनरसि ॥ २१ ॥
 बाडउ भरिउ जीवडहं टलवलंत कुरलंत ।
 अहूठकोडिरु उद्धसिय देपइ राजलकंतो ॥ २२ ॥
 अह पूछइ राजलकंतु कांइ पमुबंधणु दीसइ
 सारहि बोलइ सामिसाल तुह गोरखु हुस्यइ ।
 जीव मेल्हावइ नेमिकुमरु सरणागइ पालइ
 थिणु संसारु असारु इस्यउं इम भणि रहु वालइ ॥ २३ ॥
 समुदविजय सिवदेवि रामु केसखु मन्नावइ
 नइपवाह जिम गयउ नेमि भयभमणु न भावइ ।
 धरणि घसकइ पडइ देवि राजल बिहलंघल
 रोअइ रिजइ वेसु रूखु बहु मन्नइ निष्कलु ॥ २४ ॥
 उगगसेणधूय इम भणइ दूपहिं दाझइ देहो
 कां विरतउ कंत तुहं नयणिहि लाइवि नेहो ॥ २५ ॥
 आसा पूरइ त्रिहुभुवण मू म करि ह्यासी
 दय करि दय करि देव तुम्ह हउं अछउं दासी ।
 सामि न पालइ पडिबन्नउं तउ कासु कहीजइ
 मयगलु उयट संचरण किणि कानि गहीजइ ॥ २६ ॥
 नेमि न मन्नइ नेहु देह संवच्छरदाणूं
 ज्जलगिरि संजम लियउ हुय केवलमाणूं ।

राजलदेविसउं सिद्धि गयउ सो देउ थुणीजइ

मलहारिहिं रायसिहरसरि किउ फागु रमीजइ ॥ २७ ॥

इति श्रीनेमिनाथफागु.

प्राचीनगद्यसङ्ग्रहः

आराधना

(संवत् १३३० मां लखेला ताडपत्रमांथी)

ज्ञानाचारि पुस्तकपुस्तिकासंपुटसंपुटिकाटोपणाकबलीऊतरीठवणीपाठा-
दोरीप्रभृतिज्ञानोपकरणअवज्ञा, अकालिपठन अतिचार विपरीतकथनु उत्स-
न्नप्ररूपण अश्रद्धानप्रभृतिहु आलोयहु । दर्शनाचारि देवद्रव्य भक्षितु
उपेक्षितु प्रज्ञाहीनत्तु जिनभुवनआशातना अधोयति देवपूजा गुरुद्रव्य-
ग्रहण गुरुनिदा द्रव्यलिङ्गिएसउं संसर्गु विवआशातना स्थापनाचार्यआशा-
तना शंका आकांक्षा विचिकित्सा मिथ्यादृष्टिप्रसंसा मिथ्यादृष्टिपरिचउ ए
पांच अतिचार आलोयउं । चारि आचारि प्राणातिपात मृयावाद अदत्तादान
मैयुनपरिग्रह ए पांच अणुवन दिगुविरति भोगपरिभोगविरति अनर्थदंड-
विरति ए तिन्नि गुणव्रत । सामायिकु देसावकासिकु पौपधु अतिधिसंविभागु
ए च्यारि सिध्याव्रत; ईहतणइ विपइ जु कोइ अतिचारु आसेवियउ सु हुं
आलोयहुं । तपाचारि अनशन ऊनोदरिता वृत्तिसंक्षेपु रसत्याग कायक्लेशु
संलीनता परविधवाद्यतपतणइ विपइ प्रायश्चित्तु चिनउ धैयावृत्यु स्वाध्यानु
कायोत्सर्ग पइविधआभ्यंतरतपतणइ विपइ जु अतीचारु सु हुं आलोयहुं ।
वीर्याचारि संतइ बलि संतइ वीरि जु धर्मानुष्ठानि उद्यमु नहीं कियउं सु
हुं आलोयहुं । सम्यक्त्वप्रतिपत्ति करहु, अरिहंतु देवता मुसाधु गुरु जिनप्र-
णीत धर्मु सम्यक्त्वदंडकु ऊचरहु, सागारप्रत्याखानु ऊचरहु चऊहु सरणि
पइसरहु । परमेश्वरअरहंतसरणि सकलकर्मनिर्मुक्तसिद्धसरणि संसारपरी-
चारसमुत्तरणयानपात्रमहासत्त्वसाधुसरणि सकलपापपदलकवलनकलाकलितु-
केवलप्रणीतधर्मुसरणि सिद्ध संघगण केवल श्रुत आचार्य उपाध्याय
सर्वसाधु व्रतिणी श्रावक श्राविका इह ज काइ आशातना की हुंती ताह
मिच्छा मि दुषाडं । गुढिकाइ जीव आउकाइ जीव तेउकाइ जीव वाउकाइ
जीव यणस्पइकाइ जीव वेइंदिय त्रेंदिय चउरिंद्रिय जलचर स्थलचर रोचर

जि जंतु ताह मिच्छा मि दुक्कडं । पनर कर्मभूमि जि मनुष्य त्रीस अकर्मभूमि
जि मनुष्य तीहिं मिच्छा मि दुक्कडं । छप्पनअंतरद्विपतणा मनुष्य तीहं मि-
च्छा मि दुक्कडं । सातनरकतणा नारकि दशविध भवनपति अष्टविध व्यंतर
पंचविध जोइसी दैविध वैमानिकदेवा किं बहुना । दृष्ट अदृष्ट ज्ञात अज्ञात
श्रुत अश्रुत स्वजन परजन मित्रु शत्रु प्रत्यक्षि परोक्षि जे केइ जीव चतु-
रासी लक्षयोनि जपना चतुर्गतिकि संसारि भ्रमंता महं दुमिया वंचिया
सेहिया सीरीविया हसिया निंदिया किलामिया दामिया पाछिया चूकिया
भवि भवांतरि भवसति भवसहस्रि भवलक्षि भवकोटि मनि वचनि काइं
तीह सर्वहइं मिच्छा मि दुक्कडं । अटार पापस्थान चोसिरावइ इहुसर्चू प्राणा-
तिपातू सर्चू मृषावाद् सर्चू अदत्तादानू सर्चू मैथुनू सर्चू परिग्रहू सर्चू
क्रोधू सर्चू मानू सर्वइ माया सर्चू लोभू प्रेसु ठेपु कलहु अभ्याख्यानु रति
अरति पैशून्यु मिथ्यादर्शनशाल्यु परपरिवादू अटार पापस्थान त्रिविधिहिं
मनि वचनि काइ करणि करावणि अनुमति परिहरउ । अतीतु निंदउ वर्तमानु
संवरहु अनागतु पावरहु । पंचपरमेष्ठिनमस्कार जिनशासनिसार चतुर्दश-
पूर्वसमुद्धार संपादितसकलकल्याणसंभार विहितदुरितापहार क्षुद्रोपद्रव-
पर्वतवज्रप्रहार लीलादलितसंसार सु तुन्हि अनुसरहु, जिणि कारणि चतु-
र्दशपूर्वधर चतुर्दशपूर्वबंधिउ ध्यानु परित्यजिउ । पंचपरमेष्ठिनमस्कार
स्मरहि, तउ तुन्हि विशेषि स्मरेवउ, अनइ परमेश्वरि तीर्थकरदेवि इसउ
अर्थु भणियउ अच्छइ, अनइं संसारतणउ प्रतिभउ म करिसउ, अनइ
रुद्धिनमस्कार इहलोकि परलोकि संपादियइ ॥ आराधना समाप्तेति ॥

यदस्मै परिभ्रष्टं मानाहीनं च पद्मवेत् ।

स्तन्यं तदुपैः सर्वं कस्य न स्थलते मनः ॥

संवत् १३३० वर्षे आश्विनसुदि ५ गुरानगरे आश्विनश्याम् ॥

अतिचार

(संवत् १३४० ना अरसामां दृष्टायता जगता तादृशप्रमाणी)

कालवेला पटवं, विनपहीण वष्टमानहीण उपमानहीण गुरुनिणह्य अने-
राकणहइं पटवं, अनेरइं कहइं व्यंजनहइं अर्थहइं तदुभयहइं कृष्टउ अरतः
कानइ मात्रि आगलउ ओछउ देवदणवांदणइ पटिपामणइ सहाउ करतां

पढतां गुणतां हुउ हुयइ, अर्थकूड कहइं हुइ, सृष्ट अर्थु वेउ कूडां कथां हुइ, ज्ञानोपकरण पाटी पोथी कमली सांपुडं सांपुडी आशातन पगु लागउ थुंऊ-
लागउं पढतां प्रदेय मच्छरु अंतराइउ हउं कीधउ हुइं, तथा ज्ञानद्रव्यु भक्षितु
उपेक्षितु प्रज्ञापराधि विणास्य विणासितउं ज्वेख्यं हुंती सक्ति सारसंभाल न
कीधियइ, अनेरइ ज्ञानाचारिउ कोइ अतीचारु हुउ सुक्ष्मवादरु मनि वचनि
काइ पक्षदिवसमांहि तेह सवहि मिच्छा मि दुक्कडुं ॥

सातमइ भोगोपभोगव्रति सचित्ताद्रव्यविगइ खासहाइ पाणही पानि
फोफलि वइसणि आसणि सयणि न्हाणुअइ अंगोहलि फलि फूलि भोजनि
आच्छादनि जु कोइ अतिचारु हुयउ पक्षदिवसमांहि

वारि भेदि तपु छहि भेदि बाह्य अणसण इत्यादि उपवास आंबिल
नीविय एकासण पुरिमइ व्यासणं यथाशक्ति तपु, तथा ऊनोदरितपु वृत्ति-
संखेवु । रसत्यागु कायकिलेसु, संलेखना कीधी नहि, तथा प्रत्याख्यान एका-
सणां विपुरिमइ साढपोरिसि पोरिसिभंगु अतीचारु नीविय आंबिलि
उपवासि कीधइ विरासइं सचित्ता पाणीउ पीधउं हुयइ पक्षदिवसमांहि

प्रतिषिद्ध जीवहिंसादिकतणइ करणि कृत्य देवपूजा धर्मानुष्ठानतणइ
अकरणि जि जिनवचनतणइ अश्रद्धधानि विपरीतपरुपणा एवं बहुप्रकारि
जु कोइ अतीचारु हुपउ पक्षदिवसमांहि ॥

सर्वतीर्थनमस्कारस्तवन

(संक् १३५८ मां लयायेला कागडना पुस्तकमांथी)

पहिलउं त्रिकालु अतीन अनागत वर्त्तमान बहत्तरि तीर्थंकर सर्वपाप-
क्षयंकर हउं नमस्करउं ।

तदनंतम पांचे भरते पांचे ऐरवते पांच महाविदेहे सत्तरिसउ उत्कृष्ट-
कालि विहरमाण हउं नमस्करउं ।

तउ पहिलइ सौधर्मि देवलोकि यन्नीस लाख, बीजइ ईसानि देवलोकि
अट्ठावीस लाख, श्रीजइ सनतकुमारि देवलोकि बारलाख, चउत्यइ माहेंद्र-
१ देवलोकि आठ लाख, पांचमइ ब्रह्मदेवलोकि च्यारि लाख, छट्ठइ लानकि

देवल्लोकि पंचास सहस्र, सानमइ शुक्लदेवल्लोकि च्यालीस सहस्र, आठमइ सहस्रारि देवल्लोकि छ सहस्र, नवमइ आणति देवल्लोकि विसइ, दसमइ प्राण-
नि देवल्लोकि विसइ, इग्यारमइ आरणि देवल्लोकि बारमइ अच्युतदेवल्लोकि
त्रिह दउहु दउहु सउ, अनइ देठिले त्रिह त्रैवेयके इग्यारोत्तर सउ, माहिले
त्रिह त्रैवेयके सत्तोत्तर सउ, ऊपइले त्रिह त्रैवेयकि एकु मउ, पंच पंचोत्तरवि-
माने, एवंगारइ स्वर्गलोकि चउरासी लाख सत्ताणयइ सहस्र त्रैवीम आगला
जिनभुवन वांदउं । अनंतरु भुवनपतिमज्जे असुरकुमारमज्जे चउमठि लाख,
नागकुमारमज्जे चउरासी लाख, सुवन्नकुमारमज्जे वहत्तरि लाख, वापकु-
मारमज्जे छन्नवइ लाख, दीवकुमार दिसाकुमार अहिहकुमार विज्जुकुमार
धुणियकुमार अग्गिकुमार छहं मध्यभागे छहत्तरि छहत्तरि लाख, एवंगारइ
पालाल्लोकि सातकोडि वहत्तरिलाल्ख जिनमंदिर स्तयउं । अथ मनुष्यलोकि
नंदोत्तर वरि दीपि वावन्न, च्यारि कुंडलवलिग, च्यारि न्यकि वलिग, च्यारि
मानुषोत्तरि पर्वति, च्यारि इक्षार पर्वति, पंच्यासी पांचे मेरे, धीस गजदंत
पर्वति, दस कुरपर्वति, त्रीस सेलसिहरे, असीव क्षारसेलसिहरे, सरि-
सउ पैताह्यपर्वति, एवं च्यारि सइ त्रिसट्ठि जिणालडपडिमं, एवं आठ
कोडि छप्पन्न लाख सत्ताणयइ सहस्र च्यारि सइ छियामिया तियल्लुके
गाह्यतानि महामंदिर त्रिकाल तीह नमस्कार करउं ॥

सर्वनीयंमहाराजमयम् ।

नवकारव्याख्यानम्

नमो अरिहंतारणं ॥ १ ॥ माहरउ नमस्कार अरिहंत हउ । किमा जि
अरिहंत; रागादेषकपिआ अरि वयरी जेहि हणिपा, अथवा चतुषष्टि इंद्र-
संबंधिनी पूजा महिमा अरिहद; जि उत्पन्नदिव्यविमलयेवल्लज्ञान, चउत्रीम
अतिशयि समन्वित, अष्टमहाप्रानिहार्यशोभायमान महाविदेति नेत्रि
वितरमान तीह अरिहंत भगवंत माहरउ नमस्कार हउ ॥ १ ॥

नमो सिद्धारणं ॥ २ ॥ महारउ नमस्कार सिद्ध हउ । किमा जि सिद्ध;
दृष्टाष्टकर्मभूत करिउ, जि मोक्षि गया । आठ कर्म किमा भणिपइ । जानार-
णीउ १ दरिभणारणीउ २ वेदनीउ ३ मोहनीउ ४ आयु ५ नाम ६ गोचु ७
अंतराउ ८ इंद्र आठकर्मभूत करिउ जि सिद्धि गया । किमा ज सिद्धि;
लोभनणइ अप्रविभाणि पंचत्तान्द्रीम लक्षणेजनप्रमाणि जियउं उच्चाणु छनु

तिसह आकारि ज सिद्धिसिला, अमलनिर्मल जलसंकास जु अजरामर-
स्थानु, तेह ऊपरि योजनसंवंधियह चउवीसमह य विभागि जि सिद्ध अनंत
सुखलीण ति सिद्ध भणियह । तीह सिद्ध माहरउ नमस्कारु हउ ॥ २ ॥

नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ माहरउ नमस्कारु आचार्य हुउ । किंसा जि
आचार्य; पंचविधु आचारु जि परिपालह ति आचार्य भणियह । किंसउ पंच-
विधु आचारु । ज्ञानाचारु, दर्शनाचारु, चारित्राचारु, तपाचारु, वीर्या-
चारु, यउ पंचविधु आचारु जि परिपालह ति आचार्य भणिह । तीह
आचार्य माहरउ नमस्कारु हउ ॥ ३ ॥

नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ माहरउ नमस्कारु उपाध्याय हुउ । किंसा
जि उपाध्याय; द्वादशांगी जि पढह पढावह । किसी ज द्वादशांगी; आचा-
रांगु १ सुयगहु २ ठाणांगु ३ समवाउ ४ विवाहपन्नत्ति ५ ज्ञाताधर्मकथा ६
उवासगदसा ७ अंतगडदसा ८ अणुत्तरोववाइयदसा ९ पणहवागरणु १०
विपाकश्रुतु ११ दृष्टिवादु १२ ए वार आंग जि पढह पढावह ति उपाध्याय
भणियह । तीह उपाध्याय माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ४ ॥

नमो लोए सव्वसाहणं ॥ ५ ॥ ईणि लोकि जि केई अछह साधु । यउ लोक
च किंसउ भणियह । अठाई द्वीपसमुद्र पनर कर्मभूमि । जि किसी; पांच भरत
पांच ऐरवत पांच महाविदेह खेत्र, ईह पनर कर्मभूमिमाहि जि केई अछह
साधु । किंसा जि साधु; रत्नत्रउ जि साधह । किंसउ रत्नत्रउ; ज्ञानु दर्शनु
चारित्रु यउ रत्नत्रउ जि साधह ति साधु भणियह । तीह साधु पंचमहा-
व्रतपरिपालक । पंचमहाव्रत किंसा भणियह । प्राणातिपात्तु १ मृपावादु २
अदत्तादानु ३ मैथुनु ४ परिग्रहु ५ रात्रीभोजनु । जि विवर्जह ति साधु
भणियह । तीह साधु सर्वही माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ५ ॥

एसो पंच नमोकारो ॥ ६ ॥ एउ पंच परमेष्ठिनमस्कारु । पंचपरमेष्ठि
किंसा । जि पूर्वोक्तभणिया अरिहंत १ सिद्ध २ आचार्य ३ उपाध्याय ४
साधु ५ इह पंचपरमेष्ठिनमस्कारु भावि क्रियमाणु हुंतउं किंसउं करह ॥ ६ ॥

सव्वपावपणासणो ॥ ७ ॥ सर्वपापप्रणासकारियउ हुह । ईणि जीवि
चतुर्गतिकि संसारि भवभ्रमणु करतह हुंतह जि असुभलेइया उपायी पापु
सु ईणि पंचपरमेष्ठिनमस्कारि महामंत्रि सुमरीतह हुंतह क्षउ हुयह ॥ ७ ॥

मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होह मंगलं ॥ ८ ॥ ईणि संसारि दधिचंदन-
दूर्वादिक मंगलीक भणियह । तीह मंगलीक सर्वहीमाहि प्रथमु मंगलु एहु ।

ईणि कारणि सुभकार्यआदि पहिलउं सुमरेवउं, जिय ति कार्य एहतणइ
प्रभावइ वृद्धिसंता हुयइ । यउ नमस्कार अतीतअनागतवर्त्तमानचउवीसी-
आदिजिनोक्तसार, सुतुम्हे विसेपहइ हिवडातणइ प्रस्तावि अर्थयुक्तु ध्येयु
ध्यातव्यु गुणेवउ पढेवउ । जु किसउ ।

जिणसासणस्स सारो चउदसपुब्बाण जो समुद्धारो ।

जस्स मणे नवकारो संसारो तस्स किं कुणइ ॥

अनइ एहु नमस्कार स्मरता इहलोकतणा भय नासइ ।

यदुक्तं—अडविगिरिरत्नमञ्ज्जे भयं पणासेइ चित्तिओ संतो ।

रक्कइ भविषसयाइं माया जइ पुत्तभंडाइ ॥

वाहिजलजलणतक्करहरिकरिसंगामविसहरभण्णि ।

नासंति तक्खणेणं जिणनवकारप्पभावेणं ॥

हियइगुहाए नवकारकेसरी जाण संठिओ निच्चं ।

कम्महुगंठिदोघद्वयं ताण परिणट्ठं ॥

नमस्कारस्य स्वरूपं भण्यते । ईणि नवकारि नवपद पांच अधिकार सत्त-
सट्ठि अक्षर, तीहमाहि छ भारी इकसठि लघु । इसउं नमस्कारतणउं माहात्म्यु ।

एसो मंगलनिलओ भयविलओ सयलसंतिसुहजणओ ।

नवकारपरममंतो संतियमित्तो सुहं देउ ॥

अप्पुब्बो कप्पतरु एसो चिंतामणी य अप्पुब्बो ।

जो झाइ सयलकालं सो पावइ सिवसुहं विउलं ॥

नवकारव्याख्यानं समाप्तम् ॥

अतिचार.

संवत् १३६९ मां लखेला ताडपत्रमांथी.

तउ तुम्हि ज्ञानाचार दरिसणाचार चारिआचार तपाचार वीर्याचार
पंचविधआचारविपइया अतीचार आलोउ । ज्ञानाचारि कालवेला पढिउ
गुणिउ चिनयहीनु बहुमानहीनु उपधानहीनु गुननिन्दुनु अनेरीकन्हइ पढिउं
अनेरउ कहिउ । व्यंजनकूट अक्षरकूट कानइ मात्र आगलउ ओछउ देववं-
दणइ पडिकमणइ सज्झाओ करतां पढतां गुणतां हुओ हुइ, अर्थकूट तदु-
भयकूट, ज्ञानोपकरण पाटी पोथी ठवणी कमली सांपटा सांपटी पतिआसा-
तना पमु लागउ धुकु लागउ पढतां गुणतां प्रठेयु मच्छरु अनराइ हुउ कीचउं

हुइ भवसगलाइमाहि तेह मिच्छा मि दुक्कडं । मृपावादि सहसातकारि
 आलु अभ्याख्यानु दीधउं, रहसमंत्रभेदु कीधउ, मृपोपदेसु दीधउ, कुडउ लेखु
 लिखिउ, कुडी साखिधापणि मोसउ, कुणहइसउ राडि भेडि कलहु विद्याविदि,
 जु कोइ अतिचारु मृपावादि व्रति भवसगलाइमाहि हुउ त्रिविधि त्रिविधि
 मिच्छा मि दुक्कडं । अदत्तादानि विराइउं छानउं फोदुउं लीधउं दीधउं वावरिउं
 घरि बाहिरि खेत्रि खलइ पाडइ पाडोसि अणमोकलाविउ चोरीच्छाई चोर-
 प्रति प्रयोगु कीधउ, नवउं पुराणउ रसु विरसु सजीवु निजीवु मेलिउं, कूडी
 तल कूडइ थापि कूडउ कहिउ हुइ, अतीचारु अदत्तादानि व्रति भवसगलाइ-
 माहि हुउ तेह सबहइ मिच्छा मि दुक्कडु । मैथुनव्रति लुहुडपणि आपणा विराया
 सोल खंडया सिउणइ सिउणांतरि, दृष्टिविपर्यासु, आठमि चउदसितणा नी-
 मभंगु, अनंगक्रीडा परविवाहकरणु तिव्रभिलापु धरिउ हुइ, अनेरा जु कोइ
 अतिचारु मैथुनव्रति भवसगलाइमाहि हुअउ तेह सबहइ त्रिविधि त्रिविधि
 मिच्छा मि दुक्कडं । हव हियामाहिं सम्पक्त्व घरउ । अरिहंत देवता, सुसाधु
 गुरु, जिणप्रणीतु धर्म, सम्पक्त्वदंडकु ऊचरउ । हिव अठार पापस्थानक वो-
 सिरावउ । सर्वू प्राणातिपात, सर्वू मृपावाद, सर्वू अदत्तादान, सर्वू मैथुन, सर्वू
 परिग्रह, सर्वू क्रोधु, सर्वू मानु, सर्वू माया, सर्वू लोभु, रागु, द्वेषु, कलहु, अभ्या-
 ख्यानु, पैशुन्यु, रति, अरति, परपरिवादु, मायामृपावादु, मिथ्यात्वदरिस्ण-
 सत्यु ए अठारपापस्थान मोक्षमार्गसंसर्गविघनसमान त्रिविधि त्रिविधि वोसिरा-
 वउ, अतीतु निंदउ, अनागतु पचकूउ, वर्तमानु संवर । सागाम्प्रत्याग्यानुउ ।
 एमिउं खमाविउं मइं खमिउ छव्विह जीवनीकाय ।

सिद्धह दिन्ना लोपणा नइ मह चइरु न पायु ।

हिव दुकृतगरिहा करउं । जु अणादि संसारमाहि हींडतइ इतइ ईणि
 जीवि मिट्पात्यु प्रयतांविउ । कुतीर्थे संस्थापिउ, कुमार्गे प्ररुपिउ, सन्मार्गे
 अवलपिउ । हिव ऊपाजि मेलिह सरीरु कुहुंयु जु पापि प्रयतिउ, जि अधि-
 गरण हलऊ गल घरट घरटी ग्यांडां कटारी अरहट पावटा कूप तलाव कीयां
 कराव्यां अनुमोद्या, ते सये त्रिविधि त्रिविधि वोसिरावउ । देवस्थानि द्रवि
 वेवि पूजा महिमा प्रभावना कीधी, तीर्थजात्रा रथजात्रा कीधी, पुस्तक
 लिग्गाव्यां, सार्धमिकयालत्य कीयां, तप नीयम देवचंदन वांदणाइ सज्याइ
 अनेराइधर्मानुष्ठानतणइ विपइ जु ऊजसु कीधउ सु अम्हारउ सफलु हुआ ।
 इति भावनापूर्वक अनुमोदउ

पृथ्वीचन्द्रचरित्र

(वाग्विलास)

या विश्वकल्पवल्लीवल्लीलया कल्पितप्रदा ।

प्रदत्तां वाग्विलासं मे सा नित्यं जैनभारती ॥ १ ॥

धर्मश्चिन्तामणिः श्रेष्ठो धर्मः कल्पद्रुमः परः ।

धर्मः कामदुघा धेनुर्धर्मः सर्वफलप्रदः ॥ २ ॥

पुण्यलगइ पृथ्वीपीठि प्रसिद्धि, पुण्यलगइ मनवांछितसिद्धि; पुण्यलगइ निर्मलबुद्धि, पुण्यलगइ धरि कद्विवृद्धि; पुण्यलगइ शरीर नीरोग, पुण्यलगइ अभंगुरभोग; पुण्यलगइ कुटुंबपरिवारतणा संयोग, पुण्यलगइ पलाणीयइ तुरंग, पुण्यलगइ नवनवा रंग; पुण्यलगइ धरि गजघटा, चालतां दीजइ चंदनछटा; पुण्यलगइ निरुपम रूप, अलक्ष्य स्वरूप; पुण्यलगइ वसिवा प्रधान आवास, तुरंगमतणी लास, पूजइ मन चीतवी आस; पुण्यलगइ आनंददायिनी मूर्ति, अद्भुत स्फूर्ति; पुण्यलगइ भला आहार, अद्भुत शृंगार; पुण्यलगइ सर्वत्र बहुमान, धणुं कित्युं कहीयइ पामीयइ केवलज्ञान ।

एह पुण्यऊपरि राजाधिराज पृथ्वीचंद्रतणउ कथासंबंध भणीयइ । ता ईणइ राजुप्रमाणि रत्नप्रभापृथ्वीपीठि असंख्याता द्वीप समुद्र वर्त्तइ । तांह माहि पहिलउ जंबूद्वीप लक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि लवणसमुद्र दिलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेहपरइ धातकीखंडद्वीप च्यारिलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि कालोदधि समुद्र आठलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह परइ पुष्करवरद्वीप सोललक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि पुष्करवरसमुद्र वज्रीसलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । आगलि चारुणिद्वीप ६४ लक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि चारुणीसमुद्र एककोडि २८ लक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । ईणिपरि ठाण विमणा द्वीप समुद्र जाणिवउ । कवण कवण । क्षीरद्वीप क्षीरसमुद्र घृतद्वीप घृतसमुद्र इक्षुद्वीप इक्षुसमुद्र नंदीसररद्वीप नंदीसरसमुद्र अरुणद्वीप अरुणसमुद्र अरुणवरद्वीप अरुणवरसमुद्र अरुणवरावभासद्वीप अरुणवरावभाससमुद्र इत्यादिक द्वीपसमुद्र असंख्यात । तेहमाहि पहिलु जे जंबूद्वीप, तेहनी नाभिइ मेरुपर्वत जिसिउ प्रदीप, तेहनुं दक्षिण उत्तरइ सातक्षेत्र चऊद महानदी छ वर्षधर पर्वत वर्त्तइ ।

किंसा ते क्षेत्र । भरतक्षेत्र १ हैमवतक्षेत्र २ हरिवर्षक्षेत्र ३ महाविदेहक्षेत्र ४
 रम्यक्षेत्र ५ ऐरण्यवतक्षेत्र ६ ऐरवतक्षेत्र ७ । किसी महानदी । गंगा १ सिंधु २
 रोहिताशा नदी ३ रोहिता ४ हरिकांता नदी ५ हरिसलिला नदी ६ सीतोदा ७
 सीतानदी ८ नारीकांता ९ नरकांता १० रूप्यकूला नदी ११ सुवर्णकूला नदी १२
 रक्तवती १३ रक्तानदी १४ । कस्या कस्या वर्षधर । हिमवंतपर्वत १ महा-
 हिमवंत २ निपथ ३ नीलवंत ४ रुक्मीपर्वत ५ शिखरीपर्वत ६ । हिव जे कहिउं
 भरतक्षेत्र तेहमाहि २५ योजनप्रमाण वैताळ्यपर्वत ३२ सहस्र देश । ईहमाहि
 साढापंचवीसदेश आर्य, थाकता अनार्य जाणिवा । ऋषभदेवतर्णा पुत्रतणें नामिईं
 सयलदेश जाणिवा । ते कुण कुण काश्मीरदेश १ कीर २ कावेर ३ कांबोज ४
 कमल ५ उत्कल ६ करहाट ७ कुरु ८ काण ९ कथ १० कौशक ११ कोसल १२
 केशी १३ कास्त १४ कारूप १५ कछ १६ कर्णाट १७ कीकट १८ केकि १९
 कौलगिरि २० कामरूप २१ कंकण २२ कुंतल २३ कालिंग २४ करकूट २५
 करकंठ २६ केरल २७ पस २८ पर्पर २९ पेट ३० गौड ३१ अंग ३२ गौप्य ३३
 गार्गक ३४ चौड ३५ चिह्निर ३६ चैत्य ३७ जालंधर ३८ टंकण ३९ कोडि-
 याण ४० डाहल ४१ तुंग ४२ ताजिक ४३ तोसल ४४ दशार्ण ४५ दंडक ४६
 देवसभ ४७ नेपाल ४८ नर्त्तक ४९ पंचाल ५० पल्लव ५१ पुण्ड्र ५२ पौड ५३
 प्रत्यग्रथ ५४ अर्युद ५५ वधु ५६ वंभीर ५७ भट्टीय ५८ मोहिष्मक ५९ मद्रो-
 दय ६० मुकुंड ६१ मुरल ६२ मेद ६३ मरु ६४ मुद्गर ६५ मंकेन ६६ मल्लवर्त्त ६७
 महाराष्ट्र ६८ मयन ६९ रोम ७० राटक ७१ लाट ७२ ब्रह्मोत्तर ७३ ब्रह्मावर्त्त
 ७४ ब्राह्मणवाहक ७५ विदेह ७६ वंग ७७ वैराट ७८ वनवास ७९ वनायुज ८०
 बाल्हीक ८१ बल्लव ८२ अवन्ति ८३ बहि ८४ शक ८५ सिंहल ८६ सुम्ह ८७
 सुर्पर ८८ सोवीर ८९ सुराष्ट्र ९० सुहड ९१ अस्मक ९२ हूण ९३ हर्माक ९४
 हर्माज ९५ हंस ९६ हुहुक ९७ हेरक ९८ एवं देश अट्ठाण् अनइ आदन हावस
 मुगदिसुं धनगिरि सीकोत्तर चोलनाट पांड्य तालीउ त्रिहृति भोट महाभोट
 चीण महाचीण बंगाल पुरसाण मगध वच्छ गाजणाप्रमुप अनेक देश वर्त्तईं ।

तीहमाहि वपाणीयइ मरहट्टदेस । जीणइ देसि ग्राम, अत्यंत अभिराम;
 भलां नगर, जिहां न मार्गीयइं कर । दुर्ग, जिस्पां हुइ स्वर्ग; धान्य, न नीप-
 जइ सामान्य; आगर, सोनारूपातणा सागर । जेह देसमाहि नदी बहइं, लोक
 सुपइं निर्वहइं । इसिउ देश, पुण्यनणउ निवेश, गरूअउ प्रदेश । तीणि देसि
 पट्टाणपुर पाटण वर्त्तईं; जिहां अन्याय न वर्त्तईं । जीणइं नगरि कउसीसे करी
 सदाकार पापलि पोडउ प्राकार; उदार, प्रतोली दार; पातालभगी धाई, महा-

काय पाई, समुद्र जेहतु भाई; जे लिइ कैलासपर्वतसिउं वाद, इस्या सर्वज्ञदेव-
तणा प्रासाद; करइं उल्लास, लक्षेश्वरीकोटीध्वजतणा आवास; आनंदइं मन,
गरुडं राजमचन; ऊपरि अपंड, सुवर्णमय दंड, ध्वजपटल लहलहइं प्रचंड ।
जेह पाटणमाहि अनेक आश्चर्य वापरइं, चउरासी चउहटां कलकलाट करइं ।
किस्यां ते चउहटां । सोनीहटी १ नाणावटहटी २ जवहरीहटी ३ सौगंधीपाहटी
४ फोफलिया ५ सूत्रिया ६ पटसूत्रिया ७ घीया ८ तेलहरा ९ दंतारा १०
वलीयार ११ मणीयारहटी १२ दोसी १३ नेस्ती १४ गांधी १५ कपासी १६
फटीया १७ फडीहटी १८ परंडिया १९ रसणीया २० प्रवालीया २१ त्रांवहटा
२२ सांपहडा २३ पीतलगरा २४ सोनार २५ सोसाहडा २६ मोतीप्रोर्गी २७
सालवी २८ मीणारा २९ कुंआरा ३० चूनारा ३१ तुनारा ३२ कूदारा ३३
गुलीयारा ३४ परीयटा ३५ घांची ३६ मोची ३७ सुई ३८ लोहटिया ३९
लोढारा ४० चीन्नाहरा ४१ सतुआरा ४२ कागलीया ४३ मयपहटी ४४ वेड्या
४५ पणगोला ४६ गांछा ४७ भाटभुंजा ४८ बीवाहडा ४९ त्रांवडीया ५०
भइंसायत ५१ मलिन नापित ५२ चोपा नापित ५३ पाटीवणा ५४ त्रांगडीया
५५ वाहीत्रा ५६ काठवीठीया ५७ चोपावीठीया ५८ सूपडीया ५९ साधरीया
६० तेरमा ६१ वेगलीया ६२ बसाह ६३ सार्धूआ ६४ पेल्हा ६५ आटीआ ६६
दालीया ६७ दडडीआ ६८ मुंजकूटा ६९ सरगरा ७० भरयारा ७१ पीतलहटा
७२ कंसारा ७३ पत्रसागीआ ७४ पासरीआ ७५ मंजीठीया ७६ साकरीया ७७
सावूर ७८ लोहार ७९ सूत्रहार ८० वणकर ८१ तंबोली ८२ कंदोई ८३ बुद्धि-
हटी ८४ कुत्रिकापणहटी एवं चउरासी चउहटां जाणिवा ।

जीणइं नगरि अनेक पामीयडं रत्न, जीहतणां कीजइं यत्न । किस्यां ते
रत्न । अश्वरत्न गजरत्न पुरुरत्न स्त्रीरत्न अनइं पद्मराग पुष्पराम माणिक
सींघलिया गुल्होद्धारमणि मरकत कर्कतन वज्र वैद्युर्य चन्द्रकांत सूर्यकांत
जलकांत शिबकांत चंद्रप्रभ साकरप्रभ प्रभानाथ अशोक वीनशोक अपराजित
गंगोदक मसारगल्ल हंसगर्भ पुलिक सौगंधिक सुभग सांभाग्यकर विपहर
धृतिकर पुष्टिक शत्रुहर अंजन ज्योती रम शुभरुचि शूलमणि अंशु कालि देवा-
नंद रिष्टरत्न कीटपंगि कसाउला धूमराड गोमूत्र गोमेद लमणीया नीला तृण-
पर गडगाइ यज्ञधार पट्कोण कणी चापडी पिरोजा प्रवाला मौक्तिकप्रमुखा
रत्नेकरी दीसइं भरियां हाट, अनेकसुवर्णमय घाट; पिहली घाट, चालड घोट-
तणां घाट, लोकनइं नहीं किसिउं ऊचाट । जिहां पुण्य विद्याल, तीसी पोमाल;

जिहां छात्र पढे चउसाल, तिसी नेसाल; जिहां अध्यात्मतणी वात दढ, तिसां अनेक मढ; जिहां लोक जिमई अपार, तिसा सत्रूकार; जिहां पाणी पियइ सर्व, तिसी पर्व; जिहां रमलि कीजइ स्वभावि, तिसी बावि; जिहां आनंद हुआ, तिसा कूआ; पद्मवनखंडमंडित प्रवर, महाकाय सरोवर; जिहां रंगि कीजइ रयवाडी, तिसी वाडी; जिहां सीतल फुरकइ पवन, तिसां पापलियां वन; इसुं अन्यायरहई दाटण, पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध पुहिठाणपुर पाटण ।

तीणि पाटणि राजाधिराज पृथ्वीचंद्र इसिई नामिई राज्य 'प्रतिपालइ, भुजवलिकरी वइरी वर्ग टालइ । जीणि राजा गौडदेशनउ राउ गांजिउ, भोटनउ भांजिउ; पंचालनउ राउ पालउ पुलइ, कानडादेसनउ कोठारि रुलइ, दोरसमुद्रतउ दोयणां दोयइ, बावरउ वारि वइठउ टगमग जोयइ; चौडनउ दंडि चांपिउ, कास्मीरनउ कांपिउ; सोरठीयउ सेवइ, तुडि न करइ देवइ; अंगदेसनउ अंगि ओलगइ, जालंधरनउ जीवितव्यकारणि रिगइ; घणुं कियुं कहीयइ, रिपुकुलकालकेतु शरणागतवज्रपंजर पंचम लोकपाल । जीणं रिपु सर्वे निर्घाट्यां दुर्गे सर्वे आपणा कीधा, वयरीनइ देसवटा दीधा । इसिउं निःकंटक साम्राज्य प्रतिपालइ । तेह नरेश्वरनइ बुद्धिनिधान, परमहंसनामि प्रधान; जेउ सहिजिई रूपिई रूडउ, पाटरहिं नहीं कूडउ; राउलउ अर्थ सारइ, लोक जगारइ, वपरविग्रह चारइ; पालइ दीन दुस्थित निराधार, करइ साधुजन उपगार; शस्त्रि शस्त्रि कुशल अपार, गुहिर गंभीर, अतिहिं धीर; मुहि मीठउं भापइ, काज कीधां जि दापइ; चिहुं बुद्धितणउं निधान, सविहुं अमात्यमाहि मूलिगु प्रधान; रायतणउं प्रतिशरीर, इसिउं ते मंत्रीश्वर; नरेश्वररहइ, शिवमय सुपमय कल्याणमय दिवस अतिक्रमइ ।

अन्यदा प्रस्तावि राजा रातितणइ प्रस्तावि स्वप्न एक दीठउ, जेहनउं फल छइ अत्यंत भीठउं । किसुं ते स्वप्न । इसिउं जाणइ नरेश्वर सुवर्णवर्ण-फांति, देयरहइ मन आंति; पलकते नेउरि झलकते कुंडलि हाथि वरमाल, अर्द्धचंद्रसमभाल; रूपि विशाल, इसी बालदेवी देपइ भूपाल । जेतलइ तेहतणी वरमाला फंटिकंदलि लागी, तेतलइ रायनइ निद्रा भागी; जागिउ नरेश्वर, चींतवइ अलयेसर । किसिउ स्वप्नतणउ घटइ विचार, तेतलइ प्रभातावसरि हउ मांगलिकशांख तणउ ओंकार हुआ तिवलितणा दोंकार, मृदंगतणा घोंकार; भटनणा मांगलिक्यध्वनि, राजा आनंदिउ मनि; शुभहेतु स्वप्नतणउ मनि विचार घरी, पालंक परिहरी; क्षण एक राजा मट्टापाडइ आब्या । मट्ट-

सिउ विनोद नीपजाब्या पछइ खानमज्जनादिक प्रभातकरणीय कीधुं, याचकर-
हइ दान दीधउं । ति वारें गणनायक दण्डनायक पायक वृत्तिनायक वहीवाहक
तलवर माडम्बिक कौटुंबिक इन्द्रजाली फूलमाली धातुर्वादी मन्त्रवादी तन्त्र-
वादी यन्त्रवादी कपटाइत चपटाइत अङ्गरक्षक अङ्गमर्दक मीठाबोला सुहाबो-
ला कथाबोला साचाबोला जूठाबोला अनइ अनेक राजराजेश्वर मण्डलेश्वर सा-
मन्त तंत्रपाल तलवर्ग चउरासीया महामात्य मन्त्रीश्वर श्रीगरणा वयगरणा
धर्माधिगरणा सेनाधिपति आगरीया व्यवहारीया राजद्वारिक भण्डारी
कोठारी कापडभण्डारी पूगभण्डारी रसोईया पाणहरी श्रेष्ठ सार्थवाह पीठमर्द
चारवधू वीणकार वंशकार उतिकार आउजी पखाउजी पटाउजी आलवणकार
लाक्षणिक तार्किक छान्दसिक मुखमाङ्गलिक वैद्य ज्यौतिषी पाहरी पङ्गधर
कुन्तधर धनुर्धर छत्रधर बालकहार सेजपाल थईयात पण्डित कवि लेखक
योध महायोध माल मसाहणी पाण्डव पडंतरप्रमुखसकललोकि करी सश्रीक
राजा राजसभां बईठा ।

राजसभा किसी छइ । जीणि राजसभां कुंकुमजलि छटा दीधी छइ,
विविधमुक्ताफल चतुष्क पूरिया छइ, कर्पूरतणा शंख आलिप्या छइ, लुण्णा-
गरजवाधितणा परिमल महमहइ छइ, मोतीतणी सिरि लहलहइ छइ, फूलपगर
भरिया छइ, कटीप्रमाणपायपीठसंयुक्त पुरूपप्रमाण सुवर्णमय सिंहासन
मांडिउं छई । तीणि सिंहासणि राजा बइठा । किसउ राजा दीसइ छइ,
मस्तकि श्वेतातपत्र छइ; पासइं ढलइं चामर पवित्र, बाजइं विचित्र वादित्र;
मस्तकि मुगट, कानि कुण्डल, हृदयि हारार्जहार, महाउदार, धनदतणउ
अवतार, रुपतणु भण्डार । घणउं किसिउं कहीयइ । जिसउ पृथ्वीलोकतणउ
इन्द्र, जिसउ सोलकलासम्पूर्ण चन्द्र, इसउ दीसइ छइ पृथ्वीचन्द्र नरेन्द्र ।
तिसिइ अबसरि प्रतीहार आविउ प्रणाम नीपजाविउ । राजांसाहो दृष्टि
दीधी, ऊणि वीनती कीधी; जी अयोध्यानगरीहंतउ दूत तम्हारइ द्वारांतरि
आविउ मनितणइं उत्साहि, जइ हुइ आदेस तु मेल्हउं माहि । हूउ राजा-
तणउ आदेस, दूति कीधउ सभामाहि प्रवेस । रायरहइ कीधउ जुहार, अलं-
करिउं योग्य आसण उदार । राजा दूतरहइ बहुमान दीधउं, कुशल प्रश्न
कीधउं । आनन्द ऊपनउ अत्यन्त, हिय दूत वीनवइ कार्य विशेष चन्त ।
जिहां लोकरहइं नही किसिउ क्लेश, जिहा नही वइरीतणउ प्रवेश, पुण्यतणउ
निवेश; अनेक ग्रामनगर, सोनारूपातणा आगर; मनोहर छइ कोसलादेस ।

तिहां छइं नगरी अयोध्या । किसी ते नगरी । धनकनकसमृद्ध, पृथ्वी-
 पोठि प्रसिद्ध; अत्यंत रमणीय, सकललोकस्पृहणीय; पृथ्वीरूपिणीकामिनीरह-
 इं तिलकायमान, सर्वसौंदर्यनिधान; लक्ष्मीलीलानिवास, सरस्वतीतण्ड आ-
 वास; अतुलदेवकुलि मंडित, परचक्रि अखंडित, सदा सुठाकुरि पालित, रमणी-
 यराजमार्गि शोभित, उत्तंगप्राकारवेष्टित; सदा आश्चर्यतण्ड निलय, वसुधाव-
 नितावलय, निरूपमनागरिकतण्ड ठाम, मनोभिराम; जनितदुर्जनक्षोभ, सज्ज-
 नोत्पादितशोभ; पुरुषरत्नोत्पत्तिरोहिणाचल, कुलवधूकल्पलतारत्नाचल । जीणइ
 नगरी देवगृह मेरुशिपरोपमान, धवलगृह स्वर्गधिमानसमान; अनेक गवाक्ष
 वेदिका चउकी चित्रसाली जाली त्रिकलसां तोरण धवलगृह भूमिगृह भांडागार
 कोष्ठागार सत्रागार गढ मढ मंदिर पडवां पटसाल अधहटां फडहटां दंडकलस
 आमलसार आंचली बंदरवाल पंचवर्ण पताका दीपइं । सर्वोसर मंत्रोसर
 मांजणहरां सप्तद्वारांतर प्रतोली रायंगण घोडाहडि अपाडउ गुणणी रंगमंडप
 सभामंडपसमृद्धि करी मनोहर एवंविध आवास । जेह नगरिमाहि दोसी
 नेस्ती साह बसाह पटउलीया पडसुत्रिया पजूरीआ बीजउरीआ कणसारा भण-
 सारा मपारा नवकर भोजकर भला लामा अनेक लोक बसइ । पांचसइं व्यव-
 साइया व्यवसायविपइ उल्लसइ । जेह नगर पापलीया अनेकि कृया वावि स-
 रोवर नइ नीक निरुपम उद्यान आंव नींव जांबू जंबीर बीजपूरप्रमुख वृक्षावली
 करी प्रधान च्यारि पोलि, प्रधान कोसीसातणी ओलि; प्रभातसमइ सूर्यतणे
 किरणेकरी प्रासादतणे शिपिरि धजकलश झलकइ, धजऊड ललकइ ।
 घणउं किंसुं कहैइ, जिसी होइ अमरावती भोगावती अथवा अलका
 लंका इसी नगरी अयोध्या बपाणीइ । तीणि नगरी ईश्वराकुर्वशावतंस
 विहितवयरीकुलविध्वंस निजकुलकमलराजहंस अतुलबल पराक्रम त्रिवि-
 क्रमसमान राजा श्रीसोमदेव राज्य प्रतिपालइ, प्रजा संसालइ, अन्याय टालइ ।
 जे राजा सत्यवाचा राजा श्रीहरिचंद प्रतिज्ञा राजाश्रीयुधिष्ठिर निर्भय भीम
 आपन्न जीमूतवाहन विद्या दृहस्पति लावण्य लवणार्णव रूपि कंदर्प प्रताप
 मार्त्तंड ओदारिं बलि राजा अद्भुतदानि चिंतामणि सेवरुजनकल्पवृक्ष चतुरंग-
 वाहिनीसमुद्र । घणउ किशिउ कहैइ महासासनु अरडकमल्लजगङ्गापणउ प्रता-
 पलंकेश्वर परराष्ट्रीरायहृदयशल्य इसिउ प्रतापीउ राजा राज्य प्रतिपालइ । तेह
 राजातण्ड अंतःपुरिमाहि प्रधान गुणनिधान भर्तारतणी भक्तिविषय महासा-
 यधानि स्त्री कमललोचना इसिइं नामि पट्टराज्ञी बर्त्तइ । जेह राणी, सहजि

मधुरवाणी; सीलवंतिमाहि वपाणी, गुणि करी जाणी; घणूं किसईं; इंद्राणी, जिह
आगलि बहिइ पाणी। तेह राणीतणइ कुक्षितउ समुत्पन्न मदनभ्रमनणी मंजरी,
कुंकमि करी पिंजरी, रत्नमंजरी, इसइ नामिइं कन्या वर्त्तइ। ते कन्या जइ भ-
णिवा गुणिवा योग्य हईं तु पंडितरहिं आपी। तोणि आपणकहुइ संस्थापी, पंडि-
त अणसंतापी कन्या समग्रकला व्यापी; ता ते कन्या बहुत्तरि कला जाणइ, चउ-
सठि विज्ञान वपाणइ। किसी ते बहुत्तरि कला लिपितकला १ पठित २ गणित
३ गीत ४ नृत्य ५ वाद्य ६ व्याकरण ७ काव्य ८ छंद ९ अलंकार १० नाटक
११ साटक १२ नखच्छेद्य १३ पत्रच्छेद्य १४ आयुधाभ्यास १५ गजारोहण १६
तुरंगारोहण १७ गजशिक्षा १८ तुरंगमशिक्षा १९ रत्नपरीक्षा २० पुरुषलक्षण
२१ स्त्रीलक्षण २२ पशुलक्षण २३ मंत्रवाद २४ यंत्रवादतंत्रवाद २५ रसवाद
२६ विषवाद २७ गंधवाद २८ विद्यानुवाद २९ युद्ध ३० नियुद्ध ३१ तर्कवाद ३२
संस्कृत ३३ प्राकृत ३४ उत्तर ३५ प्रत्युत्तर ३६ देशभाषा ३७ कपट ३८ वित्त-
ज्ञान ३९ विज्ञान ४० सिद्धांत ४१ वेदांत ४२ गान्ध ४३ इंद्रजाल ४४ विनयकला
४५ आचार्यविद्या ४६ आगम ४७ दान ४८ ध्यान ४९ पुराण ५० इतिहास ५१
दर्शनसंस्कार ५२ खेचरी ५३ अमरी ५४ वाद ५५ पातालसिद्धि ५६ धूर्तशं-
वल ५७ वृक्षचिकित्सा ५८ सर्वकरणी ५९ काष्ठघटन ६० कृत्रिममणिकर्म ६१
वाणिज्य ६२ वश्यकर्म ६३ चित्रकर्म ६४ पापाणकर्म ६५ नेपथ्यकर्म ६६ धर्मकर्म ६७
धातुकर्म ६८ यंत्ररसवतीकर्म ६९ हस्ति ७० प्रयोगोपाय ७१ केवलीविधिकला ७२
ए बहुत्तरि कला जाणइ। हिव चउसठि विज्ञान कित्यां। नृत्य १ कवित २ चित्र ३
वादित्र ४ मंत्र ५ यंत्र ६ तंत्र ७ विज्ञान ८ दंभ ९ जलकर्म १० गीतगान ११ तालवायण
१२ मेघवृष्टि १३ फलकृष्टि १४ आरामरोपण १५ आकारगोपन १६ धर्मविचार
१७ शाकुनसार १८ क्रियाकल्प १९ संस्कृतजल्प २० प्रासादरीति २१ धर्मनीति
२२ वर्णिकावृद्धि २३ सुवर्णसिद्धि २४ सुरभिनेलकरण २५ लीलामंचरण २६
गजाश्वनिरीक्षण २७ पुरुषस्त्रीलक्षण २८ वसुचर्चभेद २९ अष्टादशलपि-
परिच्छेद ३० तत्कालयुद्धि ३१ वास्तुसिद्धि ३२ वैद्यकक्रिया ३३ कामक्रिया ३४
घटभ्रम ३५ सारिपरिभ्रम ३६ अंजनयोग ३७ चूर्णयोग ३८ हस्तलाघय ३९ शा-
स्त्रपाठ्य ४० नेपथ्यविधि ४१ वाणिज्यविधि ४२ मुग्धमंढन ४३ मालिपंढन ४४
कथाकथन ४५ पुष्पप्रयन ४६ चक्रोक्ति ४७ काव्यशक्ति ४८ मारवेप ४९ सन-
लभाषाविशेष ५० अभिधानज्ञान ५१ आभरणपरिधान ५२ नृत्योपचार ५३
गृहाचार ५४ रंघन ५५ केशबंधन ५६ घाणानाद ५७ चिन्तायाद ५८ अंकविचार

५९ लोकव्यवहार ६० वशीकरण ६१ वारितरण ६२ प्रश्नप्रहेलिकाज्ञान ६३ धर्मध्यान ६४ ए कहीयइं सर्वकलाविज्ञान, जाणइ सकल शास्त्र वपाणइ चउसट्टि विज्ञान ।

इति श्रीअञ्जलान्छे श्रीमाणिस्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे
वाग्विलासे प्रथमोऽासः ।

द्वितीयोऽासः

हिव ते कुमरि, चडी यौवनिभरि; परिवरी परिकरि, क्रीडा करइ नवनवी परि । इसिइं अवसरि आविउ आपाठ, इतरगुणि संवाद; काटइइं लोह, घामतणउ निरोह; छासि पाटी, पाणी वीयाइ माटी; विस्तरिउ वर्षाकाल, जे पंथीतणउ काल, नाठउ दुकाल । जीणिइ वर्षाकालि मधुरध्वनि मेह गाजइ, दुर्भिक्षतणा भय भाजइ, जाणे सुभिक्षभूपति आवतां जयदका वाजइ; चिहुं दिसि बीज झलहलइ, पंथी घरभणी पुलइ; विपरीत आकाश, चंद्रसूर पारियास; राति अंधारी, लवइं तिमिरी; उत्तरनउ ऊनयण, छापउ गयण; दिसि घोर, नाचइं मोर; सघर, वरसइ घारावर; पाणीतणा प्रवाह पलहलइं, बाडिऊपरि वेला वलइं, चीपलि चालतां शकट खलइं, लोकतणां मन धर्मऊपरि वलइं; नदी महापूरि आवइं, पृथ्वीपीठ ह्वावइं; नवां किसलय गहगहइं, वल्लीवितान लहलहइं; कुडुंबोलोक माचइ, महात्मा वड्ठां पुस्तक वाचइं; पर्वततउ नीझरण विछटइं, भरियां सरोवर फूटइ । इसिइ वर्षाकालि राजा सोमदेवतणउं कराविउं सरोवर भराणुं, समुद्रसमाणउं; वधावणीउ धायउ, राजाकन्हइ आपउ; राजा मनि गहगहतउ, सरोवर जोइवा पुहुतउ; दीठउं भरिउं सरोवर, ऊपनउ आनंदभर; जोसी तेडी महोत्सवतणुं मुहूर्त लीयउं, अभीष्ट जनरहइं तेडउं कीधउं; इसिउं करतां आविउ आसो मास, दिसि सप्रकास; कमलवन उल्लास, हंसतणु विलास; कादव सूकइं, नइ निर्गलपणउं मूकइं; विकसइं कुसमकली, परमेश्वर सर्वज्ञ पूजतां पूजइ मनतणी रली; तिसिइ आसोसुदि पंचमीतणइ दिवसि मोटइ आडंबरि नरेश्वर सरोवरतणी पालि पुहुता, यजपट दीसइ लहलहता ।

तिसिइ समइं अनेक ब्राह्मण मिलिया । कवण कवण । दुवे त्रिवाडी व्यास पाठक देवाईत मोपाईत सुराईत चंद्राईत देवशर्म्म मोपशर्म्म यज्ञशर्म्म

सोमशर्म श्रीधर देवधर गंगाधर गदाधर लक्ष्मीधर श्रीवच्छ पद्मनाभ पुरुषो-
त्तमप्रसुख ब्राह्मण मिलिया, शांति करिवानइं कारणि कलिकलिया; गलेत्रागा,
वेदध्वनि उच्चरिवा लागा। जे ब्राह्मण १८ पुराण १८ स्मृति जाणइ। ते किस्व्या
पुराण। भागवतपुराण १ भविष्योत्तरपुराण २ मत्स्यपुराण ३ मार्कंडेयपुराण ४
विष्णुपुराण ५ वाराहपुराण ६ शिवपुराण ७ वामनपुराण ८ ब्रह्मपुराण ९
ब्रह्मांडपुराण १० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण ११ आग्नेयपुराण १२ पद्मपुराण १३ लिङ्ग-
पुराण १४ नारदपुराण १५ स्कंदपुराण १६ कूर्मपुराण १७ गरुडपुराण १८।

ते किसी स्मृति। मानवीस्मृति १ आत्रेयीस्मृति २ वैष्णवीस्मृति ३
हारीतकीस्मृति ४ याज्ञवल्कीस्मृति ५ शनैश्वरीस्मृति ६ अंगिरास्मृति ७
आपस्तंबीस्मृति ८ सांवर्त्तकीस्मृति ९ कात्यायनीस्मृति १० बृहस्पतीस्मृति
११ पारासरीस्मृति १२ शंखीस्मृति १३ लिखितास्मृति १४ दाक्षीस्मृति १५
गौतमीस्मृति १६ शातातपीस्मृति १७ वाशिष्ठीस्मृति १८।

तिसिइ रत्नमंजरी कुंअरि राजारहइं बीनती करावी, तिहां कुतिग जोइवा
आवी। जेहतणइ परिवारि, सपी अनेकप्रकारि; कस्तूरिका कर्पूरिका लीलावती
पद्मावती चंद्रावती चंद्रउली चंपू हंसी सारसी वगुलीप्रमुख अनेक सपी वर्त्तइ।
तीहं सहित तिहां आवी। पितारहइं प्रणाम नीपजावी उत्संगि वइठी, दिव्य
रूप देपी रायतणइ मनि चिंता पइठी। एहयोग्य कवण वर, किं नर, किं विद्या-
धर, इसीउं चींतवतइं नरेश्वर, सरोवरमणी दृष्टि दीधी। तु निर्मल जलि, वइठा
कमलि; हंस करइं रमलि, च्यारइं दिसि वासीइं परिमलि; कारंड कुरंज कल-
हंस कलगलइं, ताप टलइं; मोर वासइं, सर्प नासइ; आडि पंपीआ तरइं, ब्राह्मण
खान करइं; माहि शतपत्र सहस्रपत्र कमलवन, दीसतां प्रीति पमाडइं मन; देहुरी
दंडकलस झलहलइं, लहरि ऊछलइं। इम जोतां राजहंस एक सरोवरइंतउ ऊडी
वइठउ राजातणइं हाथि, निहालिउ नरनाथि। तु रुडउ रूपवंत, भलीयामणउ,
सोहामणउ; श्वेत, लावण्योपेत; जिसिउं लक्ष्मीदेवतातणउ चमर, जीणइं मोही-
यइं अमर, कुंदकुसुमस्तवकसमान प्रधान पक्षिकुलावतंस। इसिउं हंस कुति-
गकरी कुमारी लीधउ, राजा दीधउ। जेतलइं जोअउ कुमरी, तेतलइं हंसि
जिमणी पांप बिस्तारी; कुमरि पांपमाहि घाती, भलीपरि साती। ऊपटिउ हंसु,
तत्काल पडिउ ध्वंसु। धसमसतउ ऊठिउ राउ, कहइं भाउ धाउ, बलिउ नी-
माणि घाउ। राउतपागऊ पलभलिया, घोर सवि मिलिया। धाउं गणा, ब्राह्मण

घरभणी ऊजाणा; दुये नाठा, सवे त्रिवाडी त्राठा । वुंव पडी राउ घायउ हंस-
पूठिइं जेतलइं, हंस धाई पइठउ कमलमाहि तेतलइं । जे वारु, ते पइठा सरो-
वर माहि तारु; समग्र सरोवर गाहिउ, पणि हंस न साहिउ । निश्वास मेलही
राउ पाछउ बलिउ, परिघउ परिवार मिलिउ । राणी ते वात जाणी, मूर्छा
पामी सप्राणी, सचेत कीथी छांटी छांटी पाणी; राजा आवासी आव्या,
कन्यातनुं दुःख धरता छ मास अतिक्रमाया ।

तिसिइ आविउ वसंत, हूउ शीततणउ अंत, दक्षिणदिसितणउ शीतल
वाउ वाइं, विहसइं वणराइं ।

सव्वे भल्ला मासडा पण वइसाह न तुल्ल ।

जे दवि दाघा रूपडां तींह माघइ फुल्ल ॥

मउरिया सहकार, चंपक उदार; वेउल वकुल, भ्रमरकुल संकुल, कल-
रव करइं कोकिलतणां कुल । प्रवर प्रियंगु पाडल, निर्मल जल, विकसित क-
मल; राता पलास, सेवंत्री वास; कुंद मुचकुंद महमहइं, नाग पुन्नाग गहगहइं ।
सारसतणी श्रेणि, दिसि वासीइं कुसुमरेणि; लोकतणे हाथि वीणा, यन्त्रादंबर
झीणा; धवल शृंगार सार, मुक्ताफलनणा हार; सर्वांगसुंदर, वनमाहि रमइ
भोग पुरंदर । एक गीत गवारइं, दान दिवारइं; विचित्र वादित्र वाजइं, रमलि-
तणां रंग छाजइं । एकिवादिइं फूल चूइं, वृक्षतणा पल्लव पूइं; हीडोलइं हींचइं,
झीलनां वादिइं जलिइं मौंचइं; कैलिहरां कउतिग जोभइं, प्रीतमंत होपइं । वनपा-
लकि अवसर लही वसंत अवनरियातणी वार्ता कही । राजा सोमदेव आव्या
वनमाहि, तेह जि सरोवर देपी कुंअरि सांभली मनमाहि । तेतलइं पुरुषि
एकइं तेह सरोवरहुंतुं एक कमल लेइ रापरहइ दीघउं, राजा हाथि लीघउं ।
तेतलइं तेह जि कमलमण्णइंती नोसरी रत्नमंजरी कुमरि, दीठी नरेश्वरि ।
दुःखतणां व्याप चूरियां, लोक आक्षर्य पूरिया । नगरमध्य वार्ता जणावी, राज्ञी
कमललोचना आयी । दीठी चेटी, हूइ परमानंदतणी पेटी, परियरी चेटी । तिहां
मांडिया ययामणां, महोत्सवि करी सुहामणां; विचित्र वादित्र वाजिया लागी ।
ते कयण कयण । वीणा विपंगी पल्लवी नकुलोष्टी जपा विचित्रिका हस्तिना
परयादिनी कुञ्जिका घोषयनी मारंगी उदयरी त्रिसरी झंपरी आलविणि
छरना रावणहन्ता ताल कमल घंट जयघंट शालरि उंगरि कुरकनि कमरउ
पापरी टाक टाक टाक भुंम नोमाण तांपरी कटुभालि सेहक कांसी पाठी

पाऊ सांप सींगी मदन काहल भेरी धुंकार तरवरा । ईणिपरि मृदंगपटुपडहप्रमुख
वादित्र वाज्यां, दुःख दूरि ताज्यां । इकवीस मूर्छना ह्मणपंचास तान, इस्यां
हुई गीत गान; याचक योग्य प्रधान वस्त्रदान । कस्यां ते वस्त्र । सूथिला संग्रा-
मां दाडिमां मेघवनां पांडुरां जादरा कालां पीयलां पालेवीयां ताकसीनीयां
कपूरीयां कस्तूरीयां फूदडीयां चउकडीयां सलवलीयां ललवलीयां हंसवडि
गजवडि उडसाला नर्म पीठ अटाण कताण झूना शामरतली भइरव सुद्धभइरव
नलीवद्धप्रमुख वस्त्र जाणिवां । ईणिपरि महोत्सवभरि, साथि कुमारि, नरेश्वर
पहुता नगरि । मनतणइ उल्लासि, आव्या आवासि । रायरहइ कुमरीतणउं
स्वरूप विमासतां ऊपनी आकाशवाणी, ए वार्त्ता कहिस्यइं केवलनाणी । राजा
तां आश्चर्य धरतइं हुंतइ प्रधान तेडाविउ, तिहां आविउ । ते प्रणाम करी बह-
ठउ तउ राजां बोलाविउ । हे मंत्रीश्वर विचारि, पाणिग्रहणयोग्य हुई रत्नमंजरी
कुमारि । तु मंडावीयइ स्वयंवर, मैलीयइं सवे नरेश्वर, कन्या आपणी इच्छा
वरइ वर । इसिउ आलोच कीधउ, तु राजा सविहुं दूतरहइं आदेश दीधउ; जु
को पृथ्वीपीठि राय नइ राणउ, तम्हे जाणउ, ते समग्र ईणि स्थानकि आणउ ।
तिवारपूठिइं स्वयंवरमंडप सूत्रधारपाहिं कराविवा मंडाविउ, हुं तुम्हकन्हइं
आविउ । हिय तुम्हे तिहां पाउ धारउ, ए धीनती अवधारउ, राजासोमदेवतणइं
मनि आनंद वधारउ ।

इसी वार्त्ता सांभली दूतहुइं बहुमान देतु कटक लेइ राजा पृथ्वीचंद्र
स्वयंवरभणी चालिउ, कटकभारि पातालि शेष नाग हालिउ । हाथीया घोडा,
नहीं थोडा । कस्या ते हाथीया छइ । सिंहलद्वीपतणा, जाजनगरतणा, भद्रजातीक,
उल्ललितसुंडादंड, प्रचंड, पर्वतसमान, जलधरवान, चपलकान, मदजल झरता,
आलि करता, अतुलबल, उच्छृंगल, गलगर्जित करता गजेंद्र सांचरियां, तर-
लतेजी तरवरिया । कस्या ते । हयाणा भयाणा कूंकणा कास्मीरा ह्यठाणा पइ-
ठाणा सरसईया सींधउरा केकाइला जाइला उत्तरपंथा पाणीपंथा ताजा तेजी
तोरछा काच्छला कांवोजा भाडेजा आरठ बालहीकज गांधार चांपेय तैतिल
त्रैगर्त्स आर्जनेय कांदरेय दरद सौवीर क्षेत्रशुद्ध प्रमाणशुद्ध चपल सरल तरल
वंचासणा परीछणा । जोयउं सहइं, वपूकारिया रहइं; बांकी द्रेठी, सभर पूठि;
छोटे काने, सूधइ बानि; सइरनी ललवलाई, नीछटनी कलाई, पूंछतणी आय-
ताई; पलाणतणी सामंन्नाई; बांकी तुंडवालि, बहुली पेटवालि, शुहि ल्हा,

घरभणी ऊजाणा; दुवे नाठा, सवे त्रिवाडी त्राठा । पुंव पडी राउ धापउ हंस-
पूठिहं जेतलहं, हंस धाई पइठउ कमलमाहि तेतलहं । जे वारु, ते पइठा सरो-
वर माहि तारु; समग्र सरोवर गाहिउ, पणि हंस न साहिउ । निश्वास मेलही
राउ पाछउ बलिउ, परिघउ परिवार मिलिउ । राणी ते वात जाणी, मूर्छा
पामी सप्राणी, सचेत कीधी छांदी छांदी पाणी; राजा आवासी आव्या,
कन्यातणुं दुःख धरता छ मास अतिक्रमाया ।

तिसिह आविउ वसंत, हूउ शीततणउ अंत, दक्षिणदिसितणउ शीतल
वाउ वाहं, विहसहं वणराहं ।

सव्वे भल्ला मासडा पण बइसाह न तुल्ल ।

जे दधि दाधा रंपडां तीह माथह फुल्ल ॥

मउरिया सहकार, चंपक उदार; वेउल वकुल, भ्रमरकुल संकुल, कल-
रय करहं कोकिलतणां कुल । प्रवर प्रियंघु पाडल, निर्मल जल, विकसित क-
मल; राता पलास, सेवंत्री वास; कुंद मुचकुंद महमहहं, नाग पुन्नाग गहगहहं ।
सारसतणी श्रेणि, दिसि वासीहं कुसुमरेणि; लोकतणे हाथि वीणा, यन्त्राडंबर
झीणा; धवल शृंगार सार, मुक्ताफलतणा हार; सर्वांगसुंदर, वनमाहि रमहं
भोग पुरंदर । एकि गीत गवारहं, दान दिवारहं; विचित्र वादित्र वाजहं, रमलि-
तणां रंग छाजहं । एकि वादिहं फूल चूटहं, वृक्षतणा पट्टव पूटहं; हीडोलहं हींचहं,
झीलनां वादिहं जलिहं सींचहं; केलिहरां कउतिग जोअहं, प्रीतमंत होयहं । वनपा-
लकि अवसर लही वसंत अवतरियातणी वार्त्ता कही । राजा सोमदेव आव्या
वनमाहि, तेह जि सरोवर देवी कुंअरि सांभली मनमाहि । तेतलहं पुरुषि
एकहं तेह सरोवरहुंतुं एक कमल लेहं रापरहहं दीधउं, राजा हाथि लीधउं ।
तेतलहं तेह जि कमलमध्यहंतो नीसरी रत्नमंजरी कुमरि, दीडी नरेश्वरि ।
दुःखतणां व्याप चूरियां, लोक आश्चर्य पूरिया । नगरमध्य वार्त्ता जणावी, राजी
कमललोचना आवी । दीडी वेटी, हुइ परमानंदतणी पेटी, परिवरी चेटी । तिहां
मांटिया वयामणां, महोत्सवि करी सुहामणां; विचित्र वादित्र वाजिवा लाग्ता ।
ते कवण कवण । वीणा विपंची बल्लकी नकुलोष्टी जया विचित्रिका हस्तिना
फरयादिनी कुब्जिका घोषवनी सारंगी उदंवरी त्रिसरी झंपरी आलविणि
छरना रावणहत्था ताल कंसाल घंट जयघंट झालरि उंगरि कुरकचि कमरउ
घाघरी टाक टाक टाक घुंम नीसाण तांबकी कटुआलि सेहक कंसी पाठी

तेहमाहि नरेश्वरतणां कटक न लहइ माग, न लहइ नदीतणा ताग; न
 सरुइ चाली घोडा हाथी, न को जाणइ साथी। विपम पर्वतमाला, डावी जिमणी
 दवतणी ज्वाला, जई न सकइ चडिया नइ पाला, तेतलइ दीसिवा लाग़ा भील
 अत्यंत काला। तिवारइ राजापृथ्वीचंद्र चींतविउं आवी विपम वेला, जई थाई
 भील भेला; तु किम झुझीयइ, जइ परदल नबूझीयइ। जेतलइ राजा इसिउं चींत-
 विउं तेतलइ ते कटक अटवीऊपरि हुई पारि पहुतुं, मनि गहगहतुं। आगलि नगर
 एक देपइ, ते हर्ष कुणतणइ लेपइ। सवे कटकीया लोक आश्चर्य धरइ, परस्परइ
 इसी बात करइ। कुणहिं काई जाणिउं, ए कटक इहां कुणि आणिउं; दैव
 रुठउ, पुणि देव दाणव कोइ तूठउ; जीणइ एवहुं सानिध्य कीधउं, हेलांमात्र
 कटक इहां लीधउं। अथवा राजा पृथ्वीचंद्र धन्य, जेहनुं गरुडं पुण्य। जेह
 कारणि इस्युं कहइ। जे गया विदेसि, पडिया क्लेशि; ताणीया पाणीनइ पूरि,
 आक्रम्या क्रूरि; चांप्या सधरि, डसिया विपधरि; धरियां राइ, भेल्या घणे घाइ;
 मुरडिया मोगे, दहविया रोगे; ऊपाटिया वंदि, पडिया विछंदि; तीहं सविहं-
 नइ धर्मनउ आधार, ए साचउ विचार। लोकरहइ इसी बात करतां राजाइ
 तिहां आंवावृक्षहेठलि आव्या, ऊतारा नीपजाव्या। तेतलइ धातु, पुलतु;
 पाछउ जोतउ, कायरपणइ रेतउ; पुरुष एक नरेश्वरतणइ शरणि पडठउ। तेतलइ
 तरुआरि ताकता, हणिहणि भणी हाकता; केई पुरुष आव्या। तेहइ राजा
 बोलाव्या। आपु ए चोर, महाकठोर, जे एहनइ रापइ ते दोर। तिवारइ राजातणे
 सेवके कहिउं अरे ए कहीइ राजा पृथ्वीचंद्र, एहस्युं पहुची न सरुइ इंद्र। तिवार
 इं ते पुरुष कहिवा लाग़ा। नरेश्वर पहिलउं बात अवधारउ, तउ चोर ऊगारउं।
 अम्हे तलार, करउं नगरतणी सार। पुणि ए चौर, दुर्दान्त अपार; ए चिवि-
 पवेसि हेरइ, बोलाविउ बोल फेरइ; चटइ मालि अटालि, पडसइ परनालि
 पालि; कमाड ऊघाटइ, पुणि स्रुतु कोइ न जगाटइ, अघोर निद्रा दिइ; कान-
 फोटना आभरण लिइ; कटारी पायबंधन वाढइ, पर्वतप्राय केऊण काढइ;
 गडिउं चोर पचाडई, राउला भंडार फाडइ; दोसइ दिसि ज्ञान, पुणि रात्रिइं
 साक्षात् मृतान्त; विणासीतउ न मानइ चोरी, बांधइउं वादी जाइ दोरी; लोक
 सांरुल घोटइ, घटी न रहइ पोडइ; हाकिउ ऊजाइ, मंघिउ घमो घाट, करि
 फीसइ करवालि, जाइ लोकलक्षविचालि; गढमंदिर फाटइ, धीजि अटइ।
 इस्यु ए चोर गढनइ परनालि पद्मनउ लावउ, पाछी बांधउ, दत्ते दोर ओटि

आसणि सूधा; हसमंत हयहेपारवि अंवर वधिर करता । सुरवीर साहसिक
 कालूआ किरडिया किहाडा नीलडा सेराहा कविला धूंसरा मांकडा दोरीपा
 बोरीया द्वादशावर्त्तव्यजनगुणि शोभित शालिहोत्रशास्त्रप्रणीतलक्षणलक्षित ।
 ससइं घसइं, साटि पइसइं, जुडइं, दउडइं । जिस्या सूर्यतणा रथ छूटा हुइं तिस्या
 अनेक तुरंगम सांचरिया । तउ पायक पहटिया । किस्या ते पायक । सुरवीर
 विक्कांत दुर्दीत पद्म पेहे लीघे अमइं, वयरीरहइं आक्रमइं; पवनवेगि पुलिइं, योधस्युं
 जुटइं, सेल्ल कुंत तोमर ताकइं, वयरीरहइं हाकइं; वेला लामी, न मेल्हइं
 स्वामी; नवनवां आयुध लिइं, एक वार आकाश पडतां घाढ दिइ । किहईं
 न दीसइ धाका, जीह लगइ हुइ जयपताका; जे घाई पुलइं ऊच्छलइं । इस्या
 पायकनी मिली कोडि, जीह माहि नहीं पोडि । हिव रथ विस्तरिया । किस्या
 ते रथ । चपलतुरंगमजूता, सुखिइं सुभट चालइं माहि बइठा सता; छत्रीसे
 दंडायुधे भरिया, वायुवेगि सांचरिया; धडहडाटि धरामंडल धंधोलइं, रजमाहि
 रविबिंब रोलइं; ऊपरि घज लहलहइं, जाणे देवसंबंधीयां विमान गहगहइं;
 घांट वाजइं, वयरी भाजइं; मूर्त्तिवंता जिस्या मनोरथ, इस्या अनेक सांचरिया
 रथ । ईणिपरि चतुरंग दल चालतां हुतां नरेश्वररहइं वाटइं अनेक ग्राम नगर
 आवइं, लोक नवनवां भेटणां नीपजावइ । मार्गि जातां आवी एक अटवी ।

हिव ते किसीपरि वर्णविची । जेह अटवीमाहि तमाल ताल हंताल
 मालूर खर्जूर अर्जुन चंदन चंपक वकुल विचिकित्त सहकार कांचनार जांबू
 जंवीर वानीर कणवीर कीर केलि कदंब निंव नारिंग नालीपरि द्राप दाडिमी
 देवदारु अंकुल कंकिलि नाग पुन्नागवल्ली यूथिका मालती माघवी जपा
 मग्न्यक दमनक पारधि केतकी मुचकुंद कुंद मंदार तगर सेवत्री राजगिरि
 सिरिपां सांवलि सिरघू सीसमि साग टींहूसार आक आकमंदार कपित्थ वील
 वहिटां करण घरण घव पदिर पलाश बड वेडस पींपल पींपर ऊंयर कटंबड
 घाहुही घामण पीप पेजड पीरणीं कइर करंज वाउल बीजुरी आमली आंविली
 वोरि इंगोरि गोरडोपाप्रमुख वृक्षावली दीसइं, वोहंतां सूर्यतणां किरण
 माहि न पटसइं । अनटं विलाइं सिवानणा पेट्कार, घूक्तणा घूत्कार; व्याघ्र-
 तणा पुरहाराड, न लाभइं याट नइ घाट; माहि वानरपरंपरा उछलइ, मदोन्मत्त
 गजेंद्र गुल्गलइं; मिहनादभयभीन मयगल पलभलइं । जिस्या दवि दाघा
 पील, निस्या भील । मूअर पुरकइं, चीघ्रा पुरकइं; येताल किलकिलइं, दावानल
 प्रम्यलइं; रीछ सांचरइं, विम्वतणा मूध विचरइं । इसी महाराट्ठ अटवी ।

४ पद्म ५ छुरिका ६ तोमर ७ कुंत ८ त्रिशूल ९ भाला १० भिंडमाल ११ सु-
संदि १२ मक्षिक १३ मुद्गर १४ अरल १५ हल १६ परशु १७ पट्टि १८ शवि-
ष्ट १९ कणय २० कंपन २१ कर्चरी २२ तरवारि २३ कुदाल २४ दुस्फोट २५
गदा २६ प्रलय २७ काल २८ नाराच २९ पाश ३० फल ३१ यंत्र ३२ द्रस
३३ दंड ३४ लगड ३५ कटारी ३६ वह्नि । इस्यां हथीआर झलहलहं, कायर
पुलहं । रथ जूडंता दूरापाती लघुसंधानी शब्दवेधी धनुर्धर धाया, वाण मेलहते
आकाश छाया । एकि घोडे चडहं, एकि ऊतावला पडहं; कायर रडहं, सुभट
भिडहं, घोध जुडहं । घोडा मुह मूकी धाहं, चूटे पगि ऊजाहं; हस्तीतणा सुंडादंड
चूटहं, एकिना शिर फूटहं । इसिह युद्धि प्रवर्त्ततहं हुंतहं राजा पृथ्वीचंद्रतणुं
दल वयरीए एकवार भागं, नासिया लागं । समरकेत हूउ सानंद, पृथ्वीचंद्र
हूउ निरानंद; चींतवड ए किसी चात, माहरा दलरहडं काहं हूउ उपघात ।
राजा चींतवतहं हुंतहं बीर एक आकाशमार्गि आविउ, तीणहं कउतिग नीपजा-
विउ । तीणं दीठइ वयरीना हाथतु हथियार पडियां, पृथ्वीचंद्रना कटकरहडं
चडियां । राजासमरकेतु बांधी पृथ्वीचंद्रतणे पगतली आणिउ, पुण ते बीर
तिवारपूठिहं कुणहीं न जाणिउ । तत्काल जयजयारव ऊछलिउ, राजापृथ्वी-
चंद्रतणउ बीरवर्ग मिलिउ ।

इति श्रीअंचलगच्छे श्रीमामिष्यसुंदरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचंद्रचरित्रे

द्वितीयोच्छासः ।

तृतीयोच्छासः



जइ मान मोडिउ, तउ समरकेतु बंधहुंतउ छोटिउ; पिहराबी बोलाचीउ ।
तुं मनि गर्व आणे, माहरी चात न जाणे । किवारहं सूर्य पूर्व छांटी पश्चिम उदय
मांडहं, समुद्र मर्यादा छांडहं; मेरु ढलहं, आकाशानउ नक्षत्रराशि गलहं; पापीया-
घरि धर्म पलहं, पाणीमाहि अग्नि प्रज्वलहं; धूमंटल पलभलहं, कुलाचलचक्र
चलहं; अमृतहुंतउ विष धाहं, पृथ्वी रसानलि जाहं; कृपणि दान दीजहं, पुणि
मुक्षकन्हइ प्राणि शरणागत चोरहं किम लीजहं । निवारहं जे आविउ छहं
शरणि, ते लागु राजातणे चरणि; स्वामी तुं धन्य जीणि तहं हूं ऊगारिउ,
नहींतु तलारे हुंतु मारिउ; पटतउ संसारि; होयन मनुष्यजन्मनणी हारि ।
गजा कहिउं तु किमिउ, जेहुंतुं मन इमिउं । यिचारि ते कहिया लागु । अंग-

नाठउ, तुम्हनई शरणइ पड़ठउ । पुणि ए पापी, जीणि प्रजा संतापी; ए तुम्ह म
 थापउ, अम्हरहई आपउ । नहींतु घायप्रहार देसिउं, प्राणिहिं लेसिउं । अम्हा-
 रउ ठाकुर सपराणउ, तेह आगलि कोई राय नइ राणउ । सांभलउ ए घात,
 ए आगलि दीसइ पद्मपुरनगर महाविख्यात । तिहां छइ राजा समरकेतु, अति-
 सचेतु, वयरी प्रति साक्षात् केतु । जेतलइ तेउ ए घात जाणिसिइ, तेतलइं
 ताहरा अहंकारतणउ अंत आणिसिइ । एह कारणि चोर आपी निर्दोष धाउ,
 पछइ तुम्हे भावइ तिहां जाउ । इसी वात्सी सांभली आपणां सुभटसाम्बहं जोई
 राजा पृथ्वीचंद्र हस्या, तउ ते सुभट उलहस्या । ऊठिया ते घोर, ताकवा लागी
 तोमर तीर । नाठा तलार, नासता घूठिइं बाजइ प्रहार; नीठ ते जई नगरमा-
 हि पड़ठा, तु नाभिइं सास बड़ठा । जइ वीनविउ समरकेतु राउ, देवाडइं आ-
 पणउ घाउ । समरकेतु राजा कीधउ कोप, हउ दलवई निरोप; तत्काल साम-
 हिउं दल, मिलइं सुभट सबल; बाजइं प्रयाणभेरी, वीहइं वयरी; पाठहस्ति गु-
 ढिउ, तेहऊपरि राजा चडिउ । रथ हथियारे भरिया, तुरंगम पापरिया, पायक
 सांचरिया; चतुरंग दल नीकलिउं, बाहिरि एकठउं मिलिउं; दीसइं छत्रध्वज,
 ऊललइं रज । तउ तेह दूत मोकलिउ तिहां रही, तीणें पृथ्वीचंद्रप्रतिइं इसी वात
 कही । तुं पियारइ देसि पइस, अन्याय करी इहां वधस; तउ तुं अजाण, अजी मानि
 स्वामीसमरकेतुतणी आण, नहींतु प्रकटि प्राण; चोरदंड तुझनइं होसिइं, लोक
 कउतिग जोइसिइ । ईणइं वातइं दूत अपमानी बाहिरि काढी राजा पृथ्वीचंद्रि
 दल साम्हाविउं, ए आपणइ पवै आविउं । चाल्यां वेउ दल, ऊपड़इं धूलिप-
 डल; कोइ आप पर विभाग बूझवइ नहीं, पितापुत्र सुझइ नहीं । न जाणीइं आपणां
 दल, न जाणीइ पिरायुं दल, न जाणीयइ भूतल, न जाणीइ नभोमंडल; न जाणीइ
 पूर्व न जाणीइ पश्चिम एकाकार हउं । बिहुं दल मिलते मादल बाजी, जयढक
 बाजी, रणचहण काहली बाजी; रणतूर बाजियां । त्र्यंबकतणे ब्रह्महादि जाणे
 त्रिन्हइ त्रिभुवन दलदलिवा लागी, भेरीतणे भूंनूयादि भुहि मिलिहि फादी,
 काहलतणे कोलाहले कापर कमकम्या, नीसाणतणे निनादि उच्चैः श्रवा ऊकनिउ,
 ऐरावण ऊमंडिउ, दिग्गज डहडहिवा, दाकनूक बाजी, बुंवारव फादी, बिहुं दलि
 चालते सेपनाग सलबलिउ, कुलाचलचक्र चलिउ, कूर्म करोडि भाजइ, अंबर
 गाजइ; अकालि अभस्तावि प्रलयकालनी शंका हुई । बाध्या कोध, झूझइं मोध; घाय
 जालवइं, छत्रीस दंडायुव चालवइं । कित्यां ते । घञ १ चक्र २ धनुष ३ अंकुश

दकालनु मेह; थोडा मेहनउ ब्रेह, वहिलु आवइ छेह । लक्ष्मीतणउं त न्याय
नीपनउ, हिव वैराग्य ऊपनउ; तापसदीक्षा लेसु हिव, जिम हुइ सदासिच ।

हिव समरकेतु राजा ते वार्त्ता सांभली मनि वैराग्य पामिउं, राजापृथ्वीचं-
द्रप्रतिहं शिरु नामिउ । अनइ इसी वात कही, ताहरु पुण्य अद्भुत सही । तूरहिइ
कोइ अदृष्ट देवता सानिध्य करइ, सर्व विघ्न हरइ । ताहरुं अद्भुत भाग्य, मुक्ष-
नइ ऊपनु वैराग्य । विमासी जोयुं तउ असार, संसार । जिशिउं पीपलनुं पान,
जिशिउं गजेद्रनु कान; जिशिउ संध्यानु राग, जिशिउ भमरीनु पाग, जिशिउ
मांकडनु वैराग; जिसिउ बीजननु झवकु, जिसिउ पोइणिनइ पाति पाणी-
नउ टवकउ; जिशिउ समुद्रनु कल्लोल, जिशिउ घजनु अंचल, तिसिउ सं-
सार चंचल । तुं एक कहिउं करि, माहरुं राज्य अंगीकरी । हउं तापसी दीक्षा
लेउसु, तप करिसु, संसार तरिसु । पृथ्वीचंद्रि तीहं विहुप्रति कहिउं तुम्हे
करुवउ धर्म, पणि नथी जाणता भर्म । सांभलउ वन ते वर्णवीह जे वृक्षवंत,
नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे वीरवंत, सरोवर ते जे कमलवंत, मेघ ते जे
समावंत, महात्मा ते जे क्षमावंत, प्रासाद ते जे ध्वजावंत, घाट ते जे यूथवंत,
हाट ते जे वस्तुवंत, घाट ते जे सुवर्णवंत, भाट ते जे वचनवंत, मठ ते जे
मुनिवंत, गढ ते जे अभंगवंत, देव ते जे अरागवंत, गुरु ते जे क्रियावंत, वचन
ते जे सत्यवंत, शिष्य ते जे विनयवंत, मनुष्य ते जे धर्मवंत, तुरंगम ते जे
तेजवंत, हस्ती ते जे भद्रजातिवंत, प्रधान ते जे बुद्धिवंत, कर ते जे चाय-
वंत, राय ते जे न्यायवंत, व्यवहारीया ते जे मयावंत, धर्मी ते जे दयावंत ।
अहो महाभागउ, हीयाने लोचने जागउ । जेतलूं अंतर राणी अनइ दासि,
जेतलूं अंतर दही नइ छासि, जेतलूं अंतर मधुरध्वनि नइ धासि; जेतलूं
अंतर समुद्र नइ कूपा, जेतलूं अंतर सोनईया नइ रूया, जेतलूं अंतर बाप
नइ फूपा; जेतलूं अंतर नरेश्वर नइ आहीर, जेतलूं अंतर रूपा नइ कथीर;
जेतलूं अंतर सुवर्ण नइ माटी; जेतलूं अंतर बारु भीति नइ घाटी; जेतलूं
अंतर पटउला नइ छाटी; जेतलूं अंतर पडसूत्र नइ सूतली, जेतलूं अंतर जी-
वता माणस नइ पूतली; जेतलूं अंतर खड्ग नइ छुरी, जेतलूं अंतर तंदुल नइ
बुरी; जेतलूं अंतर सूर्य नइ तारा, जेतलूं अंतर साकर नइ पारा; जेतलूं
अंतर सीह नइ सीआल, जेतलूं अंतर प्रभात नइ बीआल; जेतलूं अंतर रूंगा
नइ राग, जेतलूं अंतर सीबलि नइ साग; जेतलूं अंतर अलसला नइ नाग,

देशि श्रीपुरिनगर, तिहां श्रेष्ठि लक्ष्मीधर, श्रीलक्ष्मीई सधर । तेहतण पुत्र
हुं श्रीपति, पणि विपम दैवगति; दसकोडि द्रव्य हूंती, पणि वापुजीसाथि
पहुती । पिता परोक्ष ह्वा पृष्ठिं जं वाहणमाहि घातिउं, तं समुद्र सातिउं; कई
वाणउत्रे ग्रसिउं, हाद चोरे मुसिउं; थलवटनउ थलवटइ रहिउं, काई ठाकुरे ग्रहिउं;
घर वलिउं, समग्र मंडाण टलिउं; समग्र द्रव्य निह्नरिउं, एकलक्ष द्रव्य जगरिउ ।
पछइ अवर काजकाम छांडिउं, प्रवहण पूरिवा मांडिउं । भलइ दिवसि
प्रवहण पूरिउ, त्रिनि सइं साठि क्रियाणां चढाव्या, ससविध पकवान चढा-
व्यां; ससविध करंवा लिया, पोतां सपाणी भरिया, देवसमुद्र वापस पूजाव्या ।
पाभिल मादल वाजिवा लागां, वावरि कोलणि नाचेवा लागी, गलेला हेलहेल
करवा लागा; कूउपंभउ ऊभउ कीधउ, नागरउ पाडिउ, सिद्ध ताडिउ; घामतीउ
घामतउ लीचइवा लागु, बाजरीऊ तलि पड्डउ, नीजामउ नालि वड्डउ । आउलां
पड्डं, सुकाणी सुकाण चालवइं, मालिम वाहण जालवइं; सुरवर लहलहा,
वादित्रनादि समुद्र गाजी रह्या । हिव आगलि जातां हूंता चिली वाय वापां,
आकाशि हई मेवछाया; ऊडिउ पवन प्रवल, समुद्र हउ उच्छृंखल; कल्लोल
आकाशि ऊपडइं, बीहतां लोकरहइं डींवा चडइ; वेला लामी, वस्तु वामी; एक
हा दैव करइ, एक देवध्यान घरइं । वाहणि पर्वत आफली भागउं, श्रीपतिइ
हाथि पाटीउ लागउं । तेहनइ आधारितरतउ तरतउ त्रिहु दिवसि पारि आविउ,
वनमाहि सरोवरि जल पीउ, फलभक्षण नीपजाविउ । आगलि जाता दीठउ
योगी एक, मह साचविउ नमस्कारतणउ विवेक । जोगी कहिउं तूरहिइ एक
देसु, बीजउ लेइसु । मइं कहिउं दिइ, पछइ मुज निर्बनकन्हइं जं देपइ तं लहिइं ।
जोगी बंधछोडणी चिया देइ मस्तकि मागिउं । मइं चींतवइउं, वली पूर्व-
भवपातक जागिउं । जोगी धायु पृष्ठि, मह नासिवा वांधी मूठि । नासतु ईणि
नगरि आवी रात्रिइं गढतणइ पालि पयसी रहिउ, तलारके ग्रहिउ; तइ रापिउ,
मोडउ उपगार दापिउ ।

छासिइंकेरउ आफरु दासिइंकेरु नेह ।

कंबलकेरु मोलीउं पिसत न लागइ घेव ॥

माहरी लक्ष्मी इहसरीपी हुई, तउ कहीइ । आभातणी छांह, कुपरिसतणी
वाह; आढनउ तूर, नदीनूं पूर; ठाकुरनउ प्रसाद, मारुडनउ विपाद; वहीनउ
पटीगणउं, सृपटानउ उठीगणउं; दीवानु तेज, मात्रेईनु हेज; दासीनु स्नेह, शर-

दकालनु मेह; थोडा मेहनउ ब्रेह, वहिलु आवइ छेह । लक्ष्मीतणउं त न्याय
नीपनउ, हिव वैराग्य ऊपनउ; तापसदीक्षा लेसु हिव, जिम हुइ सदासिव ।

हिव समरकेतु राजा ते चार्त्ता सांभली मनि वैराग्य पामिउं, राजापृथ्वीचं-
द्रप्रतिइं शिरु नामिउ । अनइ इसी बात कही, ताहरु पुण्य अद्भुत सही । तूरहिइ
कोइ अदृष्ट देवता सानिध्य करइ, सर्व विघ्न हरइ । ताहरु अद्भुत भाग्य, मुझ-
नइ ऊपनु वैराग्य । विमासी जोयुं तउ असार, संसार । जिशिउं पीपलनुं पान,
जिशिउं गजेद्रनु कान; जिशिउ संघ्यानु राग, जिशिउ भमरीनु पाग, जिशिउ
मांकडनु वैराग; जिसिउ बीजननु झबकु, जिसिउ पोइणिनइ पाति पाणी-
नउ टवकउ; जिशिउ समुद्रनु कल्लोल, जिशिउ धजनु अंचल, तिसिउ सं-
सार चंचल । तुं एक कहिउं करि, माहरुं राज्य अंगीकरी । हउं तापसी दीक्षा
लेउसु, तप करिसु, संसार तरिसु । पृथ्वीचंद्रि तीहं विहुप्रति कहिउं तुम्हे
करवउ धर्म, पणि नथी जाणता मर्म । सांभलउ धन ते वर्णवीइ जे वृक्षवंत,
नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे वीरवंत, सरोवर ते जे कमलवंत, मेघ ते जे
समावंत, महात्मा ते जे क्षमावंत, प्रासाद ते जे ध्वजावंत, वाट ते जे यूथवंत,
हाट ते जे वस्तुवंत, घाट ते जे सुवर्णवंत, भाट ते जे वचनवंत, मठ ते जे
मुनिवंत, गढ ते जे अभंगवंत, देव ते जे अरागवंत, गुरु ते जे क्रियावंत, वचन
ते जे सत्यवंत, शिष्य ते जे विनयवंत, मनुष्य ते जे धर्मवंत, तुरंगम ते जे
तेजवंत, हस्ती ते जे भद्रजातिवंत, प्रधान ते जे बुद्धिवंत, कर ते जे चाय-
वंत, राय ते जे न्यायवंत, व्यवहारीया ते जे मयावंत, धर्मी ते जे दयावंत ।
अहो महाभागउ, हीयाने लोचने जागउ । जेतलुं अंतर राणी अनइ दासि,
जेतलुं अंतर दही नइ छासि, जेतलुं अंतर मधुरध्वनि नइ धासि; जेतलुं
अंतर समुद्र नइ कूया, जेतलुं अंतर सोनईया नइ रूया, जेतलुं अंतर बाप
नइ कूया; जेतलुं अंतर नरेश्वर नइ आहीर, जेतलुं अंतर रूपा नइ कथीर;
जेतलुं अंतर सुवर्ण नइ माटी; जेतलुं अंतर बारू भीति नइ त्राटी; जेतलुं
अंतर पडडला नइ छाटी; जेतलुं अंतर पडसूत्र नइ सुतली, जेतलुं अंतर जी-
वता माणस नइ पूतली; जेतलुं अंतर खड्ग नइ छुरी, जेतलुं अंतर तंडुल नइ
घुरी; जेतलुं अंतर सूर्य नइ तारा, जेतलुं अंतर साकर नइ पारा; जेतलुं
अंतर सीहू नइ सीआल, जेतलुं अंतर प्रभात नइ बीआल; जेतलुं अंतर रूंगा
नइ राग, जेतलुं अंतर सीबलि नइ साग; जेतलुं अंतर अलसला नइ नाग,

जेतलं अंतर हंस नइ काग; जेतलइ लूण नइ कपूर, जेतलइ पजूया नइ सूर;
 जेतलइ डाकिली नइ तूर, जेतलइ खाल नइ गंगापूर; जेतलइ साधु नइ चोर,
 जेतलइ हार नइ दोर; जेतलइ गजेंद्र नइ ससा, जेतलइ गुरुड नइ मसा; जेत-
 लइ कोडि नइ सवा विशा, जेतलइ काविला घाट नइ गोहीस; जेतलइ मोटा
 वृक्ष नइ रोहीस, जेतलइ व्यवसाय नइ कुठाकुर सेव; तेतलं अंतर अपरदैवत
 अनइ श्रीसर्वज्ञदेव ।

एह कारणि इसउ मनि निश्चियु आणिवउ । जिम श्री मूर्यपापइ दिवस
 नही, पुण्यपापइ सौख्य नहीं, पुत्रपापइ कुल नही, गुरूपदेशपापइ विद्या नही,
 हृदयशुद्धिपापइ धर्म नही, भोजनपापइ त्रिपति नही, साहसपापइ सिद्धि
 नही, कुलस्त्रीपापइ घर नही, वृष्टिपापइ सुभिक्ष नही, तिम श्रीवीतरागपापइ
 मुगति नही । अनइ जिहां हिंसा, तिहां नही धर्मनणी प्रशंसा । जेह कारणि
 इसिउं कहिं । जिम विलंब विणसइ काज, कुठाकुरि विणसइ राज, मार्जा-
 रिप्रचारि विणसइ छाज, अणवोलिइं विणसइ व्याज; पडपि विणसइ दान,
 कुसंगति विणसइ संतान, स्वरपापइ विणसइ गान, लुइं विणसइ मइपान,
 व्याधिइं विणसइ वान, कुमरणि विणसइ अवसान; कुपंडित विणसइ छात्र,
 क्षयणि विणसइ गात्र; पीपलि विणसइ प्रासाद, सिंदूरि विणसइ साद; आक-
 दूधि विणसइ नेत्र, तीडे विणसइ नीपनु क्षेत्र; चीभडी विणसइ कणकनु धाक,
 विषहप्रयोगि विणसइ रसवतीतणउ पाक; यरसालइ विणसइ शक्क, पयरी
 विणसइ वल्ल; जिम कुव्यसनि विणसइ सत्कर्म, तिम जीवहिंसा विणसइ
 धर्म । राजा पृथ्वीचंद्र समरकेतु श्रीपतिप्रतिइ कहिइ छइ । सांभलु परमार्थ
 हिव, टालिउ मिथ्यात्वतणी देव; आदरु दयाधर्म नइ श्रीअरिहंत देव,
 करउ सट्टरनी सेव; जिम टलइ पापकर्मतणा लेव ।

ए चार्त्ता सांभली तोह बिहुरहिइं मिथ्यात्वतणी भ्रांति टली, जैनदीक्षा
 लेवा हुई मनि उली । तेतलइ भाग्ययोगि दैवसंयोगिइं चारण श्रमगमाहत्मा
 एक तिहां आविउ, नेहे सविहु तेहरहइं प्रणाम नीपजाविउ । पणि लागी, दीक्षा
 भागी; तीणि दीधी, वांछितवार्त्ता सीधी । तिवारपूठिइं तेहे ऋषीश्वरे राजा
 भोक्लावी विहारक्रम कीधु, नरेश्वरि आचउ पीयाणउ दीघउ । पहिलुं पहुतु पद्म-
 पुरि, लोक हर्ष पमाडिया भलीपरि । तिहां परमहंस प्रधानस्थापिउ, कर्णवारनु
 भार आपिउ । हिव राजा पृथ्वीचंद्र तेह नगरहंता साते पीयाणे अयोध्या नगरी

पहुता, स्वयंवरि आव्या दीठा राय सवे गहगहता । राजा सोमदेवि साम्हइं
 आवी महोत्सवि करी माहि लिया, भला जतारा दिया । तेतलइं सूत्रहारे
 स्वयंवरमंडप नीपायु, पोयणिने पाने छायु । कर्पूर कस्तूरी महमहइं, ऊपरि
 ध्वज लहलहइं; चंद्रूआतणी विचित्राइ, पूतलीतणी काविलाई; थंभकुंभीतणा
 मनोहर घाट, पठंइ भाट; रत्नमई तोरण नइ मोतीसरि, अलंकरिउ कुसुमतणे
 प्रकरि; वादित्र वाजइं, मांगलिक्यगीत छाजइं; आरीसा झलकइं, चालतां
 स्त्रीना नेउर पलकइं । इसिइ मंडपि राययोग्य मांड्यां नामांकित सिंहासण,
 मागणहारनइं पगि पगि दीजइ वासण । तु राजासोमदेवदूत सांचरिया, जतारे
 फिरिया; राय सविहुं योग्य आकारण नीपजाव्या; मोटे आडंबरि समग्र नरेश्वर
 मंडपमाहि आव्या । जिस्या देवलोकसंबंधीया हुइं देव, तिस्या दीसइं सवि
 नरेश्वर सिंहासणि बइठा हेव । तिसिइ अवसरि राजा पृथ्वीचंद्र, जिसिउ
 साक्षात् हुइ इंद्र । इसिउ आवी स्वयंवरि सभामाहि बइठउ, सविहुं रायतणे
 मनि इसिउ शंकाभाव पइठउ । जं एउ सही कन्या वरिसिइ, अन्हारउं आवि-
 चउं किसिइ करिसिइ । राजातणइ मस्तकि छत्र, अनइ चमर ढलइं
 पवित्र । राजा पृथ्वीचंद्र देपी सकललोक इसिउ विमासइं । जिम अक्षरमाहि
 ओंकार, मंत्रमाहि हांकार, गंधर्वमाहि तुंवरु; वृक्षमाहि सुरतरु, सुगंधवस्तुमाहि
 कपूर, वस्त्रमाहि पाटणनउं चीर, वीरमाहि शूद्रकवीर, गढमाहि कालिंजरु,
 पाणिमाहि वहरागरु; वीपमाहि जंबूदीप, प्रदीपमाहि रत्नप्रदीप; पर्वतमाहि मेरु-
 भूधर, जीवनहेतुमाहि जलधर; जिम हस्तीमाहि ऐरावण, मंडलेश्वरमाहि रावण;
 तुरंगममाहि उच्चैःश्रवा तुरंग, हरिणमाहि कस्तूरीउ कुरंग; धवलमाहि वृषभ,
 प्रशस्वदिशिमाहि उत्तरककुभ; अचलमाहि धूमंडल, क्षमावंतमाहि भूमंडल;
 जिम नागमाहि शेषनाग, रागमाहि श्रीराग; जिम ध्यानमाहि शुरु ध्यान,
 दानमाहि अभयदान; मंत्रीश्वरमाहि अभयकुमार प्रधान, पानमाहि नागर-
 खंडउ पान; ज्ञानमाहि केवलज्ञान, विमानमाहि सवार्थसिद्धि विमान; गरु-
 आमाहि गगन, पवित्रमाहि पवन, दर्शनमाहि जैनदर्शन; जिम देवमाहि इंद्र,
 ग्रहगणिमाहि चंद्र; तिसिउ सविहुं रायमाहि दीसइ पृथ्वीचंद्र नरेंद्र ।

तिवारपूठिइं राजा सोमदेवि प्रतीहारपाहि कन्यारहइं तेउउ दिवराविउ,
 तउ सयवं स्त्रीए धवलमंगलपूर्व कन्याहुइं मांगलिक खान कराविउं । अंगरू-
 क्षण अनंतर कन्या सदश श्वेत कपड पहिरियां, आभरणे अंग उपांग अलं-

करियां । कित्यां कित्यां ते आभरण । हार अर्द्धहार त्रिसर प्रालंब प्रलंब कटी-
 सूत्र कांची कलाप रसना किरिट मुकुट पट शेषर चूडामणि मुद्रिका तबक
 दशमुद्रिका केयूर कटक कंकण ग्रैवेयक अंगुलीयक अंगुस्थल हेमजाल मणि-
 जाल रत्नजाल गोपुच्छक उरम्बिक चित्रक तिलक कुंडल अभ्रमेचक कर्णपीठ
 हस्तसंकली नूपुरप्रमुख आभरण जाणिवां । ईहमाहि स्त्री योग्याभरणि कन्या
 हुई अलंकृतगात्र, हुई रूपतणउ पात्र, मस्तकि धरियां सीकिरितणां छात्र ।
 कन्यातणइ सिरि सिंदूरि भरिउ माग, मुख तांबूलराग; आविडं नरविमान,
 तीणि चडी ते चाली देवांगनासमान । आगलि हुइ यादित्रध्वनि अनइ गीत
 गान । ईणिइं परिइं सकललोकहुइं आश्चर्य करती, हाथि वरमाला धरती; महो-
 त्सवसहित कुमरि, पट्टती मंडपतणइ दारि । ते देपी नरेश्वर सवे मकरध्वजइ
 मनाविया हारि, चींतवइ ए रंभा कि तिलोत्तमातणइ अवतारि । तेहतणा
 पाणिग्रहणतणी वांछा घरइं, विविध चेष्टा करइं । एकि राय आपणा हीयानउ
 हार हलावइं, एकि वांहतणा वहरिपा चलावइं; एकि रत्नमय दंडा जलालइं,
 एकि छुरी जलालइं; एकि मित्रसिउं वात्तालाप मांडइं, एकि दृष्टिरहइं विनोद
 ऊपजावइं, क्षण एक पांडइं, एकि संभालइं कानि कुंडल, ईणिपरि विविध
 चेष्टा करइं राजमंडल । तिसि समइ जि जोइवा आव्या आकाश देव अनइ
 दानव, पृथ्वीपीठि संख्या नही मानव; मिलिया सिद्ध अनइ किंनर, संख्या
 नहीं विद्याधर । हिव कन्या आभरणितेजि उल्लसती, रंभारहइं हसती; स्वपं-
 चरमंडपमाहि आवी, तु यशोधरा इसिइं नामिइं प्रतीहारीइं बोलावी । अहे
 कुमरि, अद्भुत गुण ताहरा संसारि, जेहे आकर्षिया हुंता आसमुद्रांतपृथ्वी-
 तणा राय मिलिया, इसिउं जाणिउं जेहरइं तुं वरसि तेहना मनोवांछित पासा
 ढलिया, मनोरथ फलिया ।

हिव जोइ तुहु आगलि दस्तदशमपद्मेस्तणउ नरेश्वर, स्तहिरिइं अर-
 वेश्वर; राजगृहनगरतणउ राजा मकरध्वज इसिइं नामि दीसइ । जेह राजा-
 तणइं कृपाणि राज्यलक्ष्मी वसइ, मुखि सरस्यनी उल्लसइ; तूठउ दारिम हरइ,
 दीठउ आनंद करइ; रणांगणि गयवरतणी गुडि गांजइ, शत्रुमट भांजइ; इत्यु
 भूपाल, एहतणइ कंठि घाति वरमाल । अथवा ए जोइ वाणारसीतणउ राज,
 भांजइ वपरीनगउ भटियाउ; ए सरागदृष्टि अवलोकी, जेहतणउ प्रनांप प्रसि-
 द्धउ प्रिहुं लोकि; जेहतणइ गजदलि चालतइ हुंतइ इंद्रहुंइ सपक्षपर्वततणी

शंका नीपजइ । जेहतणइ तरलतुरंगमि प्रसरइ हुंतइ वहीरहतइ प्रलयकालोद्ध-
तसमुद्रकलोलतणी शंका नीपजइ । इसिउ प्रचंडबल, अखंडभुजबल; अकल,
सकल; कर्मचंद्रनामा नरेश्वर वरि, माहरुं कहिउं करि । अथवा विदर्भदेस कुं-
डिनपुरनगरीतणउ नरपति निहालि, जे विपमकालि; वहइ कर्णदानेश्वरतणउ
अवतार, धनुर्धरपणइ हरइ अर्जुनतणउ कीर्तिप्राग्भार; जेहतणइ अतुल भंडार,
प्रबलकोठार, झूझारतणउ नही पार; करइ शत्रुसंहार, करइ भट्ट कइवार; म-
लाइवार, महाउदार, कंठि बरमाल घाती ए मकरध्वज राजा अंगीकरि भर्त्तार ।
अथवा गौडदेस इंसपुरपाटणनु स्वामी सिंहस्थ राजा जोइ, जीणि दीठइ
आणंद होइ । जेह राजासंबंधीयइ कुंदमचकुंदकुमुदकेतकीकर्पूरधवल कीर्त्ति मं-
डलि प्रसरतइ हुंतइ नवी सृष्टि स्थापी, तं अंजनाचलपर्वतरहइ कैलासपर्वततणी
पदवी आपी; यमुनातणइ स्थानकि कीधउ गंगाप्रवाहु, मित्र कीधा चंद्र नइ राहु;
सरीपा कीधा हार नइ नाग, अंतर टालिउं बग नइ काग; ईश्वरहुइ नीलकंठपणउं
टालिउं, विष्णुहुइ कृष्णपणउं पत्तालिउं; बलदेव बांधवपणउं उज्जुआलिउं ।
ईणिपरि जीणि ब्रह्मातणी सृष्टि फेरी, तेहनी किसी बात वपाणीयइ अनेरी ।
इसिउ अलवेश्वर, सिंहस्थ नरेश्वर, करि तुं आपणउ जीवितेश्वर । ईणिपरि
तीणइं प्रतीहारीयइं राजा हरिकेतु सिंहकेतु मकरकेतु धूमकेतु पद्मस्थ वीर्यवाहु
सुपर्णवाहु शंखध्वज पद्मदेव पद्मानंद क्षेमंकर पृथ्वीधर सुवाहु रत्नांगद हेमां-
गद हेमस्थ मणिरथ मणिशेपर रत्नशेखर चंद्रसोम सोमप्रभ सूरप्रभप्रमुख
नरेश्वर वर्णव्या वपाण्या, पणि रत्नमंजरी कुंअरि मनइमाहि ना आप्या ।

हिव आगलि दीठउ राजा पृथ्वीचंद्र, निहालिउ तेहतणउ गुपचंद्र,
ऊलटिउ आनंदसागर, मनि चींतवइ एउ सही गुणतणउ आगर । तिवारइं
प्रतीहारीयइं कहिउं हे कुमरि सांभलि, पुरा पूर्वइं सगर चक्रवर्ति हूउ वि-
ख्यात वसुधातलि । जेह सगरचक्रवर्तितणइ चउरासी लाप हस्ती, जीहतणि
गति महाप्रशस्ती; चउरासी लाप तुरंग, ऊललता जिस्या हुइं कुरंग, चउरासी
लाप रथ सहिजिइं सुरंग; चउरासी लाप नौसाण वाजइं, ययरीना भडवाउ
भाजइ; अत्यंत अभिराम, छन्नू कोडि ग्राम; गाम घोडउं काढतां छन्नू कोडि
साहण मिलइं, छन्नू कोडि पायक कलकलइं; चऊद सहस्र संवाध, चऊद सहस्र
अमात्य अत्यंत साधु; जेहनइ चऊदरत्न, देवता करइ यत्न; नवनिधान, बहुत्तरि
सहस्र नगर प्रधान; अन्यायरहइं दाटण, अडतालीस सहस्र पाटण; जेहे थसइं

अनेक कुटुंब, इत्या चउवीस सहस्र मटंव; जीहना वर्णनतणी कीजइ जेड, इत्या सोलसहस्र पेड; जेह चक्रवर्तितणइ सबाकोडि व्यापारी, रिद्धि अत्यंत सारी; चरणि रुण्डुणइ नेउर, इत्या चउसट्ठि सहस्र अंतेउर; बिहितोल्लास, अट्टावीस-उ लाप पिंडविलास; वत्तीससहस्र राय, प्रभाति प्रणमइ पाय; प्रत्यक्ष, पंचवीससहस्र यक्ष; बीससहस्र सोनारूपातणा आगर, नवकोडि ध्वजाधर, छत्रीस लाप दीवटीया उदार, त्रिन्निसइं साठि स्रुआर । एवंविध प्रचंडमुजदंड, साधित भरतक्षेत्रपदपेड; निरुपमस्फूर्त्ति, अद्भुतमूर्त्ति, इसिउ हूउ सगरचक्रवर्त्ति । हिव भगीरथ राजा हूउ सगरतणउ पुत्र, जीणइं गंगा समुद्रि घाति रापिउ आपणउं चरित्र । तीणइं राज्य पालिउ अनेक कोडिबरस, तेहनइ पुत्र हूआ दस । तेहमाहिइ एकरहइं कुंतल इसिउं नाम, तेह कुंतलरहइं दीधउं मरहठदेसि ठाम । तेह कुंतलतणइ बंसि जयवंत जयध्वज देवचंद्र देवानीकप्रमुख राय हूआ, तेहना प्रघट्टक कुणइ वर्णवाइं जूजुया । देवानीकनणउ पुत्र हूउ राजा शृध्वीशे-पर । जीणि पुहिठाणपुर पाटण थापिउं, स्वर्गतणउ दर्शन प्रत्यक्ष आपिउ । हिव मधुरबाणि, तेहतणउ राजा शृध्वीचंद्र जाणि । एउ नरेश्वर, ऐश्वर्यगुणि साक्षात् सुरेश्वर, धैर्यगुणि मेरु महीधर, दानिगुणि नवीन जलधर, गांभीर्यगुणि क्षीरसागर; निर्मलपणइं गंगाजल, सौम्यपणइं शशिमंडल; रूपिगुणि अश्विनीकुमार, परकलत्रपरिहरणगुणि गांगेयतणउ अवतार; विवेकगुणि राजहंस, चातुर्यगुणि बृहस्पतितणीपरि लब्धप्रशंस; शृध्वीभारवद्दणि शेषनाग, एहजपरि धरि तु अनुराग, इहां छइं ताहरउ लाग । घणउं किसिउं कहीई । एह राजा विक्रमाक्रांतक्षोणीमंडल, शौर्यश्रीवदनारविंदप्रद्योतन, सकलमहीपाललीलाललितशासन, पालिनश्रीजिनशासन, तुज वरिया योग्य छइ । ते रत्नमंजरी कुमारि प्रतीहारितणां इत्यां वचन सांभली अंगि रोमांच धरती, नेउरतणा क्षमज्ञमकार करती; हर्षभर वहती, राजादूकडी पुहती । लाज ठेली, कंडकंदलि चरमाल मेलही; तत्काल जयजयारव ऊछलिया, लोक कलकल्या; विद्याधर पुष्पवृष्टि करइं, भट्ट जयजयशब्द उचरइं; गंधर्व गीत गाइं, वादित्रीया वादित्र वाइं; चापरइ घवलमंगल, हुइं महामहोत्सव विपुल ।

इति श्रीअंबलान्ते श्रीमानिस्यमुन्दरसूरिश्ते श्रीशृध्वीचन्द्रचरित्रे
वाग्विलासं तृतीयं दृष्टासः ।

चतुर्थ उल्लासः

हिव तिसिइ अवसरि तेह राजालोकमाहि जे धूमकेतु राजा कहिउ तेह-
रहइ धूमकेतुदेवताणउ मंत्र स्फुरइ, तीणइ जं चींतवइ तं करइ । धूमकेतुदेव
अध्यासीग्रहमाहिलउ जाणिवउ । कवण कवण । अंगारक १ विकालिक २
लोहितांक ३ शनैश्वर ४ आधुनिक ५ प्राधुनिक ६ कण ७ कणकणक ८ कणक ९
वितानक १० कणसंतानक ११ सोम १२ सहित १३ अश्वासन १४ रत १५
कार्योपग १६ कर्तुरक १७ अजकरक १८ दुंदुभक १९ शंख २० शंखनाभ २१
शंखवर्णाभ २२ कंस २३ कंसनाभ २४ कंसवर्णाभ २५ नील २६ नीलाव-
भास २७ रुप्य २८ रुप्यावभास २९ भस्मक ३० भस्मराशि ३१ तिल ३२
तिलपुष्पवर्ण ३३ दक ३४ दकवर्ण ३५ काय ३६ बंध्य ३७ इंद्राग्नि ३८ धूम-
केतु ३९ हरि ४० पिंगल ४१ बुध ४२ शुक्र ४३ बृहस्पति ४४ राहु ४५
अगस्ति ४६ माणव ४७ कामस्पर्श ४८ धुर ४९ प्रमुख ५० विकट ५१ विसं-
धिकल्प ५२ प्रकल्प ५३ जटाल ५४ अरुण ५५ अग्नि ५६ काल ५७ महा-
काल ५८ स्वस्तिक ५९ सौवस्तिक ६० वर्द्धमान ६१ प्रलंब ६२ नित्यालोक
६३ नित्योद्योत ६४ स्वयंप्रभु ६५ अवभास ६६ श्रेयस्कर ६७ क्षेमकर ६८
आरंभकर ६९ प्रभंकर ७० अरजा ७१ विरजा ७२ अशोक ७३ वीतशोक
७४ वितस ७५ विवस्त्र ७६ विशाल ७७ शाल ७८ सुव्रत ७९ अनिवृत्ति ८०
एकजटी ८१ द्विजटी ८२ कर ८३ करिक ८४ राजा ८५ अर्गल ८६ पुष्प ८७
भावकेतु ८८ । इह अध्यासीग्रहमाहि धूमकेतु जाणिवउ ।

जिचारइ पृथ्वीचंद्रराजातणइ कंठि वरमाला पडी, तेतलइ धूमकेतुराजा-
हुइं रीस चडी । रोसैं हूउ विकराल, धूमकेतुदेवतातणउ मंत्र स्मरीनइ ऊछालिउं
करवाल । ते खड्ग फीटी हूउ वेताल, जे उंचउ नवताल; कंठाविलंबितकंड-
माल, करतलि कपाल; बुभुक्षाभिभूत, जिसिउ यमदूत; कान टापरा, पग छापरा;
आंपि ऊंडी, पेदि कूंडी; आंपि राती, हाथि काती; विकराल वेश, मोकला केश;
हडहडाटि हसइ, धरामंडलि घसइ; मस्तकि अंगीठउ बलइ, भैरवा जिम
कलकलइ । इसिउं रुद्र रूप, केनलुं वपाणीयइ तेहनूं स्वरूप । इसिउ वेताल
देपी संह भयभ्रांत हूउ । तेतलइ धूमकेतुराजा ऊठी कन्या उपाटी रथि धातिवा
लागउ । तेतलइ राय राणा घसमसिवा लागी । तेनलइ तेह जि वेतालहुंतउ अं-

घकार प्रसरिउं । जीणइं अंधकारि प्रसरतइं हुंतइं अवर कवण लेखइ, कोई आपणी छांह न देयइ । गजेंद्र गलगलारवि जाणीयइं, रथचक्र चीत्कारपणइं जाणीयइं; चिंधपताका किंकिणीकाणि करी जाणीयइं, तूर्य शब्दि करी जाणीयइं, नीसाण द्रह्द्रहादि जाणीयइं । इसिउ अंधकार विपहर दिवसतणा, च्यारि प्रहर रात्रितणा; छप्रहर गर्भवास सरीपुं प्रवर्तिउं ।

ह्रिच ह्रुं प्रभात, फीटी राक्षसनी घात, टलिउ अंधकारव्रत; अदृश्य नक्षत्रपदल, गगन उज्ज्वल; निःशब्द घूककुल, निर्मल दिग्मंडल; आश्रितपूर्वाचल, ह्रुं रविमंडल; विहसइं कमल, विस्तरइं परिमल; वायु घाडं शीतल, प्रसन्न महीतल; जिह्वा रातापारेवातणा चरण, तिह्वां विस्तरइं सूर्यतणा किरण । इसिइ प्रभाति हुंतइ दीसइं घोडा हाथीया, दीसइं पूरिया साथीया; दीसइं राघराणापरिवार, पुणि न दीसइं रत्नमंजरी कुमारि सार । तिवारइं सोमदेव राजा ह्रुउ संचित, परिवार ह्रुउ शोकवंत, पृथ्वीचंद्र राय ह्रुउ विजय । स्वजनवर्गसंबंधीया राईराणा तिसिइ अवसरि उल्हाणा । ते मंडप रत्नमंजरीपायइ निःश्रीक दीसिवा लागउ । जिम लवणहीन रसवती, व्याकरणहीन सरस्वती; गंधरहित चंदन, घृतरहित भोजन; खांडरहित पकवान, मानरहित दान; छंदरहित कवि, शस्त्ररहित पवि; विवेकरहित मणु, वेदरहित ब्राह्मणु; स्वर्गरहित ऐरावण, लंकाररहित रावण; शस्त्ररहित पायक, न्यायरहित नायक; फलरहित वृक्षु, तपोरहित भिक्षु, वेगरहित तुरंगम, प्रेमरहित संगम; नासिकारहित मुरमंडल, कर्णपालिरहित कर्णकुण्डल; चम्बररहित शृङ्गार, सुवर्णरहित अलंकार; तांबूलरहित भोग, प्रसिद्धिरहित प्रयोग; कंठरहित बाहुदंड, पणिछरहित कोदंड; चरणरहित बाल, राज्यरहित भूपाल, स्तंभरहित प्रासाद, दानरहित मान; मुष्टिरहित कृपाण; ठउलीरहित बाण; अणीरहित छुरी, लोकरहित नगरी । जिम पाणीरहित सरोवर, तिम रत्नमंजरीपायइ ते न शोभइ लोकनणउ न्यतिकर । ते सभा, हुई निष्प्रभा । रीझइ हुंते जेहरइं दीजइं मोतीतणा घाट, तीह भाट घोलतां न जोइ कोइ बाट; जीह रीझइ चीत, ते कोइ न गाइ गीन; जेहे ऊपजइं चित्र, ते न बाजइं बादिन; जीणं धूणीइ मस्तरु, ते कोइ न बांचइ पुस्तरु, जीहनउं यपाणीयइं औचित्य, निसिउं न होइ नृत्य । इसिइ दुःखि स्वयंवरमाहि पवर्तनइ हुंतउ पृथ्वीकंषि छुटउ । धूजइ धंभ, धूजइं कुंभ; धूजइ राघराणा आसणपीठ, वट्टे रहीउं नीठ; एकि

धूजतां पडई, कायर रडई। इम धूजि विछटी, पछई सभाविचालि पृथ्वी फूटी।
विवर नीपनुं। तेह ज माहि तेज प्रगट हूउं। जोतां हुतां तेह विवरमाहि दिव्यरू-
पधारिणी सिंहासणि बइठी स्त्री एकि दीसिवा लागी। तेह स्त्रीतणइ उत्संगि
शोभमान तेजभारि, दीठी रत्नमंजरी कुमारि। सह आश्चर्यपूरित हूउं। तीणें
स्त्रीइं विहुं हाथि कुंअरि ऊपाडी बाहिरि मेल्ही, आपणपइं माहि गई, पृथ्वी
वली तिसीइ जि हुई। असमाधि फेडी, राजा कुंअरि आवी तेडी।

तिहार लोकतणा मेला, वात पूछिवातणी नही वेला। हिव हपिंइ
लोक कलकलिया, विशेषतु उच्छव ऊकलिया। राजा कुमारि अनइ पृथ्वीचंद्र
सहित आवासि पहुता। राय ऊतारे हया। भोजन मंडपऊपरि घज लहलहिया,
विवाहमहोत्सव गहगहिया। हुईं धवलगान, नीपनां परवान; केलवीपइं
धान, स्वजनहुईं बहुमान; वापरइं पान, जिमाडीपइं जान। कामकाजना
धणी पलवटि बांधी हींइइ आकुला, मेलइं चाउरी चाकुला। मेलइं
आडणी, हिव भोजनतणी मांडणी। वइठी पांति, जिमणहार परीसणहार
बिहुरहइं पांति। पहिलउं परीस्या फलावली खंडवाच पकान, पछइ परीस्यां
उण्हा अन्न। तां विशालस्थालि, परीसी शालिदालि; घृततणी नालि, पापलि शा-
कनणी पालि; ऊपरि कर करवा वहीं वापरइं, ईणिपरि लोक भोजन करइं। आ-
चमनअनंतर दीवां कपूरमिश्र वीडां, लक्ष्मीवंततणे सवे वस्तु संपजइ प्रीडां।
हिव वेलाऊपरि राजापृथ्वीचंद्रहुईं कराविउं मंगलस्नान, विवाहयोग्य पहिरियां
यत्र प्रधान। सर्वांग शृंगार धरिउ, जाणे इंद्र अवतरिउ। गरुड गजेंद्र आविउ,
उत्तिम स्त्री वधाविउ। गजेंद्रहंतउं ऊतरी डावइ पणि सिरावसंपुट चांपतउ
माहि पहुतु। आचारविचार हआ, चउरीसमाहि च्यारि मांगलिक वत्थी, हाथ-
मेलावणइं दान प्रवत्थी। राजासोमदेवि वरहुईं गजरथ तुरंगमदान दीधउं, राजा-
पृथ्वीचंद्रि महोत्सवसहित रत्नमंजरीतणउं पाणिग्रहण कीधउं। पछइ विद्दे-
पवंत उत्सवसंयुक्त ऊताराभणी चालिउ, सकललोक जोडया मिलिउ। एकि
वपाणइ पृथ्वीचंद्र भूप, एकि वपाणइ रत्नमंजरीतणउं रूप; एकि वपाणइ
भाग्य, एकि वपाणइ सौभाग्य; एकि वपाणइ शरीरतणा शृंगार, एकि वपाणइ
परिवार; एकि वपाणइ ऊहतणां कुल, एकि वपाणइ बिहुंतणां शील निर्मल;
एकि वपाणइ लावण्य, एकि वपाणइ पुण्य। इसीपरि वपाणीतु स्थानकि आ-
विउ, विश्वहुईं आनंद ऊपजाविउ। राजासोमदेवि सविहुं रापहुटं आवर्जन

तथवललोचन; जिसिउ बालतउ हुइ प्रासाद, अथवा कैलासपर्वतसुं लिह वाद ।
 इसिउ अत्यंत शुभ, दीठउ पम २ । तउ राणीयइ दीठउ सीह । किसिउ
 ते सीह । रूप्यपिंडपांडुर, अद्भुतप्रभांडवर, रक्तोत्पलसुकुमालताल, तालूइ
 लागी आरक्त जिह्वा जिसिउ हुइ अशोकप्रवाल । विस्तीर्णकेशरसदाशोभित-
 स्कंध, वज्रसारशरीरबंध; प्रवरपीवरप्रकोष्ठ, कमलदल रक्तोष्ठ, तीक्ष्णदाढाविडं-
 वितवदन, पराप्रमत्तणउं सदन; पुच्छच्छटां पृथ्वी आस्फालतउ, पीतलोचनि
 भूमिकांति निहालतउ, मूपागतसुवर्णसमान फिरतां पिंजरनेत्र, शौर्यवृत्ति-
 तणउं क्षेत्र; अकलअगंजित, सबल अपराजित; अबीह, एवंविध दीठउ सीह ३ ।
 तु दीठी देवी लक्ष्मी । ते किसी । हिमवंतपर्वततणइ शिपरि, महाप्रखरि; पद्म-
 ब्रह्माहि योजनप्रमाणविमलकमलि संनिविष्ट, चंद्रसमानवदन, कमलसमान-
 लोचन, निर्जितसूर्यमंडल, देदीप्यमानकुंडल; उदारप्रलंबितहार, अद्भुतशृंगार;
 दिग्गजेंद्र अमृतकलसि करी अभिपिच्यमान, पगतलि चांपी रही नवनिधान;
 एवंविध सकलकल्याणपात्र, मनोज्ञगात्र, देवी लक्ष्मी दीठी ४ । तदनंतर अशोक
 चंपक नाग पुन्नाग प्रियंग पाडल सेवत्री जाइ जूही वेउल वउल श्रीदमणा
 मरूआ मंदार मुचकंद केतकीप्रमुखचनस्पतीतणे कुसुमि निष्पन्न भ्रमरभरभुज्य-
 मानपरिमल एवं विध दीठउ मालायुग्म ५ । तउ दीठउ चंद्रमा । ते किसीउ चंद्र-
 मा । रात्रितणइ समयि उदयि करी, सकल ताप हरी; रोहिणीरमण यामिनीजी-
 वितेश्वर अमृतमयमूर्ति उज्ज्वलधवल, प्रीणितचकोरकुल, एवंविध चंद्रमंडल ६ ।
 तउ दीठउ श्रीसूर्य । किसिउ ते सूर्य । प्रभाततणइ समइ जेह श्रीसूर्यतणइ
 उदइ प्रासादतणां द्वार ऊचडइ, देवहुई पूजा चडइ; पंथ सवे बहइ, सुनीश्वर
 धर्मकथा कहइ, लोक वादविशेष लहइ, मेघ मलहारुंगाइइ । माहि अनेक
 शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यचंशी कोमल विहसइ, चक्रयाक
 उल्हसइ; एवंविध प्रखरकिरणनिकर, दीठउ सहस्रकर ७ । तउ दीठउ ध्वज ।
 किसिउ ते ध्वज । कृताह्लाद, कोई एक गरूड प्रासाद; प्रखरि, तेहतणइ शिपरि;
 अखंड, सुवर्णमयदंड; तेजि करी अंकुश, कनकमय कलश; भली, रत्नमय
 पाटली; तिहां जिसी स्वर्गतउ ऊदाली, इसी फाली; निरुपम स्वरूप, तिहां सी-
 हतणउं रूप । इसिउ घंटागणि गहगहतउ बाइ लहलहतु निर्मल नीरज, राणीइ
 दीठउ ध्वज ८ । तउ दीठउ पूर्णकलस । किसिउ ते पूर्णकलस । सुवर्णवदित रत्न-
 मय पडघीयां स्थापित, कंठि पुष्पमाला व्यापित; माहि अमृतप्रूरित घटजुगली-

विराजमान, आग्रफलप्रधान; मांगलिक लक्ष्मीप्रदानतण्डु विपट्ट अनलस, दीठउ पूर्णकलस ९। तउ दीठउं सरोवर, वृक्षनणउ परिकर; पालिउन विस्तर, देहरी-नउ समहर, पाणीनउ आकर। चउकी चउपंटी झलहलहं, परउ वाड लहरि ऊच्छलहं, ऊपर जाण भरीयडं, पड कूड तरीयड। अमृतोपम नीर, दीठइं ठरइ शरीर; सारस कुरल कर्पिजल कलहंस कलगलडं, तापतणा व्याप टलडं; राज-हंस रमडं, भ्रमर भमडं; चकोर चक्रवाक कूजडं, जलकेलिनां कोड पूजडं; मोर वासडं, सर्प नासडं; आडि पंगीया तरुं, ब्राह्मण रत्नान करडं; आस्तिक लोक नित्य सारडं, कश्मल निवारड; संध्याविधि साधडं, अघमर्पणमंत्र आराधडं; धोतीयां धोयडं, कमंडल डोयडं। सिसिरगुणतणउ सहवास, जलदेवतातणउ निवास। देहरी दंडकलस आमलसारा झलकड, जलहारिणीकुलवधूतणां नूपुर पलकडं; तडि कीर्तिस्तंभ दीसड, हीयउं विहसड। वग थलड जाड, मेघ मल्हार गाड। माहि अनेक शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी सोमवंशी कमलवन विकाश पामडं, देवता जिह्वां क्रीडा कामडं। एवंविध उदार, वृत्ताकार; अत्यंतसार; महामनोहर; दीठउं पद्मवनग्वंडमंडित सरोवर १०। तउ दीठउ समुद्र। किसिउ ते समुद्र! अनंतजलु, अनंतकल्लोलकोटीसंकुल। माहि मत्स्य महामत्स्य नक्र चक्र पाठीन पीठ तिमिंगिलितणां कुल पडइ, एकि ऊपडइ। लहरि वाजडं, पाणी गाजडं; दक्षिणावर्त्तशंखतणां यूथ फिरडं, माहि अनेक प्रवहण सांचरडं। एकि पूरीडं, एकि नांगरीयडं, चाहण वाहणरहं एकि मिलि-तां आफलडं। मोतीप्रवाला आगरथकां लीजड, किहां एकड मेघिडं पाणी पी-जडं। इसिउ आश्चर्यतणउ निलय, पृथ्वीपीठहुइ बलय; गुहिर गंभीर, अनंतनीर; समुद्र, राणीयड दीठउ समुद्र ११। तउ दीठउं विमान। किसिउं विमान। सुवर्णमपभित्ति, रत्नमपविच्छित्ति; प्रशस्यकलशि करी शोभमान, गगनल-क्ष्मीहुइं कुंडलसमान; जेहमाहि अनेक देव देवी रमलि करडं, एकि श्रुति धर-डं; एकि गीत गायडं, एकि वादित्र वाडं; हीयडं हर्ष न माडं। अनेककुसुम-तणा प्रकर, चंद्रआतणा निकर; मोतीतणी सरि लहकडं, कपूरकस्तूरीतणा परिमल बहकडं; ध्वजा लहलहडं, मन गहगहडं। एवंविध विबुधवधूजनक्रीडा-स्थान, तेजःपटलि निर्जितज्ञानुप्रधान, दीठउं विमान १२। तउ दीठउ रत्नरा-शि। किसिउ ते रत्नराशि। अनेक वज्र वैडूर्य चंद्रकांत जलकांत पुष्पराग प-द्मराग मरकत कर्कटन चंद्रप्रभ साकरप्रभ प्रमानाथ अशोक वीतशोक अप-

राजित गंगोदक मसारगल्ल हंसगर्भ लोहिताक्षप्रमुखरत्नतण्ड राशि विर-
चितविश्वप्रकाश देपइ राणी मनतणइ उल्लासि १३ । तउ दीठउ निर्धूम वैश्वा-
नर । किसिउ ते वैश्वानर । कांतिभरकमनीय, प्रदक्षिणावर्त्तज्वाला करीय रम-
णीय; मधुघृतघनपरिपिच्यमान, कूर्चरहितदेवतामुखसमान; धूमरहित, तेज-
सहित; मांगलिक्यमूल, विश्वानुकूल; प्रवर, एवंविध दीठउ वैश्वानर ४१ ।

ए चतुर्दश स्वप्न देपी राणी जागी, निद्रा भागी, मनि विमासिवा लागी ।
मइं तां ए चऊद सुमिणां दीठां, ईहतणां फल हुसिइ अत्यंतमोठां । तउ स्वा-
मीकन्हइ जाइसु, निःसंदेह थाइसु । इसिउं विमासी कइ न बोलावी दासी; सखी
महिली सवि पाली, राणी स्वयमेय चाली । हंसगति हरपिइं गहगहती, जिहां
राजा तिहां पहुती जयविजय करती । रायहुइं निद्रा टाली राजातणइ आदेसि
भद्रासनि वइठी । स्वप्नवार्त्ता सांभली राजा फलु कहिउं; राज्ञी हृदयि ग्रहिउं ।
तिवार पूठिइं आपणइ स्वस्थानकि आवी, पल्यंक वइसी सखीसहित धर्मजाग-
रिका नीपजावी । प्रभाति नरेश्वरि सत्तामाहि स्वप्नपाठकपाहिइं विचार कहा-
विय, दान देउ निमित्तीवर्ग अदरिद्र नीपजाविय । संपूर्ण दिवस अतिक्रमे हुंते
परमेश्वरतणउ हूउ अवतार, देवता करइं जयजयकार ।

इति श्रीजञ्जलगन्ठे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे
वाग्विलासे चतुर्थोल्लासः ।

पञ्चमोल्लासः

तत्काल मनतणी रली, छप्पन्न दिक्कुमारिका मिली । ते कयण कयण । भोगं-
करा १ भोगवती २ सुभोगा ३ भोगमालिनी ४ तोयधारा ५ विचित्रा ६ पुष्प-
माला ७ आनंदिता ८ मेघंकरा ९ मेघवती १० सुमेया ११ मेघमालिनी १२
सुवत्सा १३ वत्समित्रा १४ वारिषेणा १५ वलाहका १६ नंदोत्तरा १७ नंदा
१८ आनंदा १९ नंदवर्द्धिनी २० विजया २१ वैजयन्ती २२ जयन्ती २३ अप-
राजिता २४ समाहारा २५ सुप्रदत्ता २६ सुप्रबुद्धा २७ यज्ञोधरा २८ लक्ष्मी-
यती २९ शेषवती ३० चित्रगुप्ता ३१ वसुंधरा ३२ श्लाघेयी ३३ सुरादेयी ३४
पृथ्वी ३५ पद्मावती ३६ एकनाशा ३७ नवमिता ३८ भद्रा ३९ सीता ४०
अलंगुसा ४१ मितकेशा ४२ पुंठरीका ४३ चागणी ४४ हासा ४५ सत्यप्रभा ४६

श्री ४७ ह्री ४८ सुतारा ४९ चित्रकनका ५० चित्रा ५१ सौत्रामणी ५२ रूप
 ५३ रूपांसिका ५४ सुरूपा ५५ रूपवती ५६ एवं अधोलोकनिवासिनी ८ ऊर्ध्व-
 लोकनिवासिनी ८ रुचकपर्वतचतुर्दिशनिवासिनी प्रत्येक ८, ८, विदिसिनिवा-
 सिनी ४ मध्यरुचकनिवासिनी ४ ईणिपरि छप्पन्नदिक्कुमारिका आवी । तेहे
 स्रतिकर्मतणी समग्ररीति नीपजावी । तदनंतर सौधर्मादिकदेवलोकइंद्ररहई
 आसनप्रकंप नीपनउ । पहिलउं इंद्रहुई कोप ऊपनउ । वज्र ऊलालिउं, ज्ञानदृष्टि
 निहालिउं । जाणिउं परमेश्वरतणउ अवतार, ऊलटिउ भक्तिभार । इंद्र मनि
 गहगहिउ, आसण छांडी उत्तरासंग करी गूडे थई मस्तकि हाथ जोडी शक्र-
 स्तव कहिउ । इंद्रि आसणि बइसी हरिणगमेसी देव बोलाविउ, तत्काल
 आविउ । इंद्रतणइ आदेसि सुघोषा घंटा आस्फालीनइ देवलोकि जणाविउं ।
 इंद्र लक्षयोजनप्रमाणि पालंकि विमाने चडी पंचरूपि परमेश्वर लेउं मेरुपर्व-
 ति आविउ । चउसठि इंद्र मिलिया, देवसमूह हृषिं कलकलिया । आठ सहस्र
 चउसठि आगला कलसि करी निर्मलजलि भरी स्नान कीधउं । तदनंतर अंग-
 स्स्नान करी विलेपन २ वस्त्रयुगल ३ वासपूजा ४ पुष्पारोहण ५ माल्यारोहण
 ६ वर्णारोहण ७ चूर्णारोहण ८ ध्वजारोहण ९ आभरणारोहण १० पुष्पग्रह
 ११ पुष्पप्रकर १२ अष्टमंगलकरण १३ धूपोत्क्षेप १४ गीत १५ नृत्य १६
 घादित्र १७ सत्तरभेदपूजातणउं करणीय सीधुं ।

तीणि अवसरि गगन गाजियां, इगुणपंचासभेदि वाजिन्न वाजियां । क-
 वणकवणपरिइं । उद्धमंताणं शंखाणं संगीषाणं खरमुहीयाणं परिपरियाणं
 अहम्मंताणं पणवाणं पडहाणं अप्फालिज्जंताणं भंभाणं हारंभाणं तालिज्जं-
 ताणं भेरीणं झह्दरीणं दुंदुभीणं आलिप्पंताणं सुखाणं मुत्तिगाणं नदीमुत्तिगाणं
 घटिज्जंताणं कच्छभीणं चित्तयीणाणं आमोडिज्जंताणं झुंकाणं नउलाणं छिप्पं-
 ताणं दुंदुकीणं चिंपाणं घाइज्जंताणं करडाणं डिडिमकाणं उच्चालिज्जंताणं त-
 लाणं तोलाणं कंसतालाणं घटिज्जंताणं रिक्किसिक्काणं सुंसरिकाणं दुंदुकीणं फू-
 मिज्जंताणं थंसाणं वेणूणं एवमईणं एगूणवज्जाए पयाइज्जंताणं । ईणि युक्तिइं,
 भावभक्तिइं, आत्मशक्तिइं, परमेश्वरहुइं स्नानमहोत्सव करी पुनरपि पंचरूपिइं
 इंद्र होई देव मातातणइं समीपि मुंकिउं । वत्रीस वत्रीस स्थाल सिंहासनादिक
 वत्रीसकोटि सुवर्णरत्नतणी दृष्टि करी, स्वामीतणइ दक्षिणहस्तांगुष्ठि करी
 अमृत संनारी, वस्त्रयुगल कुंडल श्रीदाम मेलही इंद्र स्वस्थानकि पट्टु ।

हिव प्रभाति दासीमहिणीए राज बधाविउ, स्वामी तम्हारे पुत्र आविउ । राजा बधामणी दीधी, नगरमाहि सर्व महोत्सवतणी पढ़ति कीधी । अलंकरिउ शोभार, श्रृंगारियां प्रतोलीद्वार । मंच अतिमंचतणी रचना हुई, स्वर्गपुरीतणी शोभा लई । ध्वजपताका लहकई, पुष्पपरिमल बहकई । नाचई पात्र, राजाभ-
वनि आवई अक्षतपात्र । सोमाई भणतां आवई छात्र, लोक अलंकरई आभर-
णि गात्र, उत्सव करिचा एहइ ज वात । तीणि बेलां न ऊऊई कोरण, बांधी-
पई तोरण; बांधीपई बंदरवाल, उत्सव विशाल; गुलघीउ लाहीपई, मन ऊमा-
हीपई । ईणि युक्ति जन्ममहोत्सव हुआ । नामगरणतणइ अवसरि माताहुई
बोहलई धर्म बुद्धि हुई । एहभणी धर्म इसिउं नाम दीधउ, परमेश्वरि रमलि
करतां बालपणुं लीधउं, यौवनवयि राजकन्यातणउ पाणिग्रहण कीधउं । अइई
लाप वरस कुमारपणउं पाली पंचासवरस राज्यलक्ष्मी पामी, पछइ विरक्ति-
युक्त हुउ स्वामी । नवविधलोकांतिकदेवतणी चीनतीलगइ सांवत्सरिकदान
दीधउं, पछइ महोत्सवि सहित चारित्र लीधउं । वि वरस छत्रस्थ काल अति
ब्रमी, केवललक्ष्मी पामी, विहारक्रम करइ, भव्यलोक तारइ ।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र अनइ सोमदेव उद्यानपालकरइ सादावारलाप
सुवर्णदान देई समस्तपरिवारसाथिइ लेई परमेश्वर नमस्करिया सांचरिया, स-
कललोक ऊलटि धरिया । पृथ्वीरइ अलंकरण, दीठउं स्वामीतणउं समोसरण ।
किसिउं ते । समग्र देव आवइ, समोसरण नीपजावइ । तां पहिलुं वायुकुमारदे-
वतानिर्मित संवर्त्तक वायु विस्तरइ, ते तृण काष्ठ कचवर हरइ, आकासि मेघ-
पदल पसरइ, गंधोदकि वृष्टि करइ, फूलपगर भरइ । गरुडउं रत्नमय पीठ
बाधी ऊपरि जानुप्रमाण पंचवर्ण कुसुम वरसइ, चिटुं दिसि दिव्य परिमल
घिलसइ । रत्नमय सुवर्णमय रूप्यमय त्रिनि प्रकार रुपि करी उदार, अनेक
प्रकार, मणिरत्नसुवर्णमय कउसीसां सदाकार, च्यारि प्रतोलीद्वार । तिहां
त्रिहु पासे उच्चैस्तर सुवर्णमय स्तंभ, ऊपरि मणिमय कुंभ, इंद्रधनुप्रमानमूर्ण,
रत्नमय तोरण, प्रत्यक्ष जिसी मांगलिक्यनी पालि, इसी बंदरवालि । अनेकि
विचित्र, विशाल छत्र, उदारस्वरूप, कनकमय धूललीतणां रूप; जेहे लिपित
सिंह शार्दूल गज, इस्यां निर्मल नीरज, पंचवर्ण ध्वज । इस्या समोसरणविचा-
लि, मणिप्रदपीठि विशालि; सकलमांगलिक्यमुत्प, गरुड अशोकवृक्ष; जि-
मिउ प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष, इसिउं वारगुण चैत्यवृक्ष । तेहतणी छायां रत्नमय

सिंहासणं, जगन्नाथहुइं वइसण । तेजिइं जोई सकीयइ नीठ, इसिउं रत्नमय
पादपीठ; जिस्यां विकसित सहस्रपत्र, तिस्यां पनर छत्रातिछत्र; अमर, देवहुइं
ढालइं चमर; अधरीकृतआदित्यमंडल, तीर्थकरलक्ष्मीकर्णकुंडल; पूठइं झलकइं
भामंडल । जेहतणइ दर्शनि मिथ्यात्वपटल टलइं, इसिउ आगलि धर्मचक्र
झलहलइं; दिव्य दुंदुभि वाजइ, तीणि निर्घोष गगनांगणि गाजइं, परतीर्थिक-
तणउ भडवाउ भाजइ । सहस्रप्रमाणयोजन इंद्रध्वज लहलहइं, धूपतणा परिमल
महमहइं, वादित्रतणी कोडि द्रुहद्रुहइं । मनुष्यतणी कोडि आवइं, मनि रहरहइ ।
ईणि इसिइ समोसरणि परमेश्वर जगदीश्वर नवसुवर्णकमलि पाय स्थाप-
तउ, पूछिया ऊतर आपनु; प्रभाइं दसइ दिसि व्यापतउ, भविकलोकहइं
पाप मूकावतउ, पूर्वदिसितणइ द्वारि पइसइ, पूर्वाभिमुख सिंहासनि वइसइ
चतुर्मुख होइ, भविकसंमुख जोई । संपूरी, वारपरिपदपूरी; मिथ्यात्वमातमूरी,
पापपटलचूरी, सर्वसत्त्वसाधारिणी, अमृतानुकारिणी, मधुरवाणी; लाभ जाणी;
खलाण करइ, धर्म मार्ग विस्तरइ ।

हिव बेउ नरेश्वर मनि गहगहन्ता, समोसरणियाहि पहुता । श्रीधर्मनाथ-
हुइं प्रदक्षिणा देउ, आगलि वइठा नरेश्वर बेउ । तिवारं राजापृथ्वीचंद्रि आप-
णइं विशेषवंतइं रूपि लावण्ये करी देवदानयइंद्रहुइं आश्चर्य कीयुं, श्रीधर्मनाथि
तीर्थकरि उपदेश दीवउ । किंसु ते ।

सदंशजन्म गृहिणी स्पृहणीयशीला लीलायितं वपुषि पौरुषभूषणा श्रीः ।

पुत्राः पवित्रचरिताः सुहृदोऽपदोपाः स्युर्धर्मतः खलु फलानि पचेलिमानि ॥१॥

अहो भव्य जीव ए इस्यां धर्मनां फल जाणिवां । कवण कवण । पहिलुं
तां उत्तिमकुलि अवतार, ए धर्मतणां फल सार । जइ जीव नीचकुलि अवत-
रइ, तु किसिउ पुण्य करइ । एह विश्वमाहि एक माछीतणां कुल, भीलतणां
कुल, कोलीनणां कुल । ईणिपरि थोहरी आहेडी वागुरी पाटकी मद्य घांची
चोर वेइया वावरी मेय डुंव पाणपेरणीयांनणां पापतणां कुल जाणिवां । जीव
एहे कुले अवतरी पाप करी नरकि जाइ, लायु मनुष्यजन्म निरर्थक थाइ ।
पुणि जीवहुइं उत्तिम कुल दुर्लभ । कुण तेउ उत्तम कुल ।

पंसाणं जिणवंसो सत्त्वकुलाणं च सावयकुलाइं ।

मिद्धिगई य गईणं सुत्तिसुहं सत्त्वसुक्खाणं ॥ २ ॥

वंश ते प्रशंसि जेहे जिपातणउ अवतार, वंशतणउ कवण विचार ।
 इक्ष्वाकुवंश सूर्यवंश चंदिल चाहूआण सोलंकीवंश वालावंश बावेला बाघरो-
 लावंश गुलवंश गुलवरवंश सोमदा भादीया सीदा वांदा दाहिणमा कच्छबाह
 कणवाहा हूणवंश हरीयड शकट सिलार धान्यपालवंश अनंगपाल राजपाल
 दधिपाल कलाप परमार मोरीवंश यादव सैधव निकुंभ गुहिलउत्त डोडीवंश
 डोडीपाणवंश मंकूआणा खडरवंश सोलणवंश बोडणवंश दहीयावंश प्रमुख
 वहीयावंश प्रमुखवंश जाणिवा । अनइ ब्राह्मणादिक कुलविशेष ज्ञातिविशेष
 जाणिवा । जिम कलिकाल प्रवर्तमानि चउरासी ज्ञाति बोलीयई । किसी ते
 ज्ञाति । श्रीश्रीमाली उसवाल बाघेरवाल डोंडू पुष्करवाल डीसावाल मेडत-
 वाल भाभू सूरणा छत्रवाल दोहिल सोनी पडवड पंडेरवाल पेरूआड गूजर
 मोड नागर जालहरा पडाइता कपोल जांबू बायडा बाव दसउरा करहीया
 नागद्रहा मेवाडा भटेउरा कथरा नरसिंहउरा हारल पंचमवंश सिरपंडला
 कमोह रेतकी अगरवाल जिणाणी वांभ घांघ पाल्हाउत उचित वगडू अहिछ-
 त्रवाल श्रीगउड वाल्मीकि टाकी तेलटा तिसउरा अठवग्री लाडीसाखा बघन-
 उरा सुहडवाल वीधू पद्मावती नीमा जेहराणा माथुर धाकड पल्लीवाल हरसउरा
 चित्रउडा गोला गहिवरिया लोहाणा भादीया नागउरा आणंदउरा सतला कड-
 कोलापुरी रायकवाल पेसीया पेरूया गोमित्री नारायणा टोंडू गजउडा गोपलआ
 अजयमेरा कंडोलीया कायत्य सगउडा सीहउरा जेसवाल नादेवा जाइलवाल-
 चावेल । एणि सविहुं ज्ञातिकुलवंशमाहि वपाणीइ सुश्रावककुल । जीणि
 सुश्रावकनणइ कुल जीवबधु टालीयइ, जीवदया पालीयइ; मिथ्यात्व परिहरी,
 यह, सम्पत्त्व अंगीकरीयइ; पाणीं भलीपरि गालीयइ, इंधण सोधी ज्वालीयइ;
 अथाणूं न रापीइ, अणंतकाई न चापीइ; चोरी न कीजइ, सुपात्रि दान दीजइ-
 सुतीर्थि वित्त बावी लाभ लीजइ; आलोअण लेई पाप छोईइ, परिग्रहप्रमाणि
 पुण्यवंत होईइ; उभयकाल सामायक त्रिकाल देवपूजा समाचरीइ, पुण्यभंडार
 भरीइ; बावीस अभक्ष बघीस अणंत काय टालीयइ, आठमि चऊदसि पूनिम
 अमावास चउमासी पजूसण पर्व पालीयइ, पुण्यमार्ग उजुआलीयइ । इसु श्रा-
 यकतणउ कुल, तउ पामीयइ जइ पोतइ पुण्य हुइ विपुल । उत्तिमकुलि लावइ
 हुंतइ गृहत्परहइ जय हुइ । कुकलव्रतणउ संयोग, तु हुइ पुण्यतणउ वियोग ।

किसी ते कुकलव्र । जे चालती कउयछि, साची अलछि; आत्मकुटुंब-
 जकि, फरचित्तरंजकि; कपटविषइ पटिष्ट, अतिहिं अनिष्ट; बोलति छउड ऊनार
 इ, रीसइ छोरु मारइ; जीमइ जव छोलइ, अलविइ असंयद्ध बोलइ, वगाई करती

गोददृ गिलइ, घरि विघोड करी बाहिरि मिलइ, बोलावी विसइ हाथ ऊठलइ;
 कृकृती सापिणी, चालती चीत्रिणी; पुण्यद्वारतणी आगल, नगरतणी भागल ।
 घणूं किसिउं करीयइ । जिसी निरीतणी उगादि, जिसिउं चालतउं पलेवणउं;
 जिसी दावज्वरतणी वहिनि, इसी संतापकारि तु संपजइ नारी, जउ जीव पाप-
 कर्म भारी । अनइ तु हुइ सुकलत्र, जइ पोतइ हुइ पुण्यपवित्र । किसी ते ।
 सुशील सुलील सदाचार सत्यवंती विनयवंती विवेकवंती पुत्रवंती बोलवती
 सुजाणि मधुरवाणि देवगुस्नणइ विपइ भक्त, पुण्यतणइ विपइ आसक्त; सहजि
 सलावण्य, इसी सुकलत्र तु संपजइ जइ पोतइ पुण्य । अनइ जं शरीरि संपजइ
 लीलाचंनपणूं, तं पुण्यतणउं प्रमाण । जं मधुरगति चालइ, पापमुद्धि पालइ; सहजि
 विचक्षण, शरीरि वत्रीसलक्षण; अलिकुलकज्जलइयामल केशपाश, अष्टमीचंद्र-
 समान भालस्थल, कामदेवसोदंडाकार भ्रूभंग, पूर्णचंद्रसमान वदनमंडल, आद-
 र्शनलसमान कपोलयुगल; मोक्तिकश्रेणिसमान दशनमाल, वक्षस्थल विशाल;
 प्रचंड भुजदंड, इसी रूपलक्ष्मी अगंड, तु संपजइ जइ पोतइ प्रचुरपुण्यपिंड ।
 अनइ जे द्रव्य उपाजिवातणइ कारणि एकि लोक देवदेवता आराधइ, मंत्र-
 विद्या सधरपणइ साधइ; राजसभा युद्धिवन भणी बडसइ, रणक्षेत्रि पहिलां
 पइसइ; व्यापारकला बेलवइ, धूर्तपणइं भलारहइं भोलवइं; जलमार्ग स्थलमार्ग
 आदरि आक्रमइं, भूमंडलि भूजात्रलि भमइं; जोगीपठिइं लोभि लुब्धा लागइं,
 एकि मोटा ठाकुर मागइं; एकि पाला पुलता पंथि चालइं, एकि हा देव
 भणी बडरागरि घाउ घालइं; एकि हल पेढइं, उलग करइं लागा ठाकुरकेडइं;
 रससारणि रसकृपिका पडइं, एकि कलकलतइं समुद्रि चउइं; एकि त्रिभिंसइं
 माठि मियाण बहुरइं, पिरायां कवित्य धारइं; कष्ट सहइं विपुल, पुणि लक्ष्मी
 तु पामइं जइ पोतइ हुइ पुण्य परिघल; घरि सुवर्ण मणिरत्न प्रयाल, प्रधान
 मुक्ताफल, गजरथतुरंगमादिक जाणिवा लक्ष्मीनणा विलास सकल ।

जिब जं संपजइ सत्पुत्र, एत पुण्यतणउं चरित्र । एकइं तणइ एकि कु-
 पुत्र हुइ जे बालपणि पालोइं लालोइं पणि जेतलइं पौवनभरि जाइं, तेतलइं
 माशत्रन्नामा थाइं; कृत्य अकृत्य न गिणइं, यष्टानणां वचन निष्णइं; भावी-
 प्रमानां नीट्टु बोल भणइं, अटंनारि एणत्णइं; लक्ष्मीमदि कुपात्रि घरमइं,
 पुण्यतणवि चिउमइं, पिराई भूमि ग्रमइं; पाहण वचनि उल्लमइं, रुढी घात
 बटनां सामां घमइं; स्थाननी परि भमइं, अपरहुइं हमइं; पापकरी उम-
 राइं, धर्मगर्वा लिपइ न पसइं; इत्यां जं पुत्र अभक्त अजाण, " पापणणूं

प्रमाण । अनइ जं पुत्र विवेकीया विचारवंत, सहजिइ संत सौभाग्यवंत, गुरु-
आंप्रति भक्तिवंत गुणवंत; देवगुरुधर्मतणइ विपइ तत्पर, सुपुत्र पानीयइ जइ
पोतइ पुण्यतणउ भर ।

हिव तु पानीयइ सुमित्र उत्तम, जइ पोतइ पुण्य हुइ निरुपम । एक
जीव सहजइ दुर्जनप्रवृत्ति, पापतणइ विपइ मोटी आकृति; सुहि मीठउ, चित्ति
विणठउ; पिरायां छलछिद्र जोइ, विणास विण विगोई; उपगारि केतलइ न लीजइ,
परप्रशंसा मनमाहि पीजइ; आपणपउं घणुं देवइ, अवर नहीं किसिइ लेखइ;
सजन संकटि पाडइ, परदोष ऊघाडइ; राउलइ वानइ, देवगुरु अपमानई; मूर्ति-
वंत अधर्म, दोलइ पिराया मर्म । जिसिउं विषवृक्षनउं वन, इसिउ जाणिघउं
दुर्जन । एकि जीव, सहजिइ उत्तमस्वभाव, पुण्यऊपरि भाव; उपगार करइ,
परमर्म हीयडइ धरइ; परदोष न प्रकासइ, असत्य न दोलइ हासइ; उन्मार्गि न
चालइ, पापवात्तां टालइ, गुरुरूपदेश झालइ, धर्मतउ न हालइ; नवे क्षेत्रे वेवइ धन,
जिसिउ वाचनुं चंदनु; इस्यां जीहनां सीतल मन, इस्या कहीयइ सज्जन । संपजइ
सुमित्र सज्जन सुजाण, तं पुण्यतणउ प्रमाण । इस्यां धर्मफल देपी, प्रमाद ऊवेपी;
आलस परिहरी, आदर करी; पुण्यतणइ विपइ भावनासहित लाभ लेवउ ।
जेह कारणि इसिउं कहीइ । जिम प्रासाद शोभइ ध्वजाधारि, जिम हृदय
शोभइ हारि; जिम गृह शोभइ उत्तिम नारि; जिम मस्तक शोभइ केशप्रा-
ग्भारि; जिम कर्ण शोभइ स्वर्णालंकारि, जिम शरीरि शोभइ शीलशृंगारि;
सरोवरि शोभइ कमलि, पुष्प शोभइ परिमलि; मुप शोभइ निर्मलि नेत्रयुगलि,
रात्रि शोभइ चंद्रमंडलि; विवाह शोभइ कूरि, उत्सव शोभइ तूरि, नदी
शोभइ पूरि; जिम सम्यक्त्व शोभइ प्रमायना, तिम धर्म शोभइ भावना ।
एह कारणि भावनासहित पुण्यवंति लाभ लेवउ । जिसिइ पुण्यप्रभावि सक-
लश्रेयकल्याण संपजइ ।

इसिउ उपदेश सांभली, मनतणी रुली, परमेश्वरप्रतिइ बिहुं नरेश्वरि
धीनती कीधी बली । हे जगन्नाथ । संदेह भांजिवानइ ऊभउ हाथ; तुझ टाली
अपरि संदेह न भाजइ, संदेहभंजन विरुद तूरहइ छाजइ । जेहि कारणि
इसिउं कहीइ । समुद्रि उलंघीयइ भारंडि न मसइ, गजेन्द्र बिडारीयइ सीहि न
ससइ; विपधरतणां विप जोरविपइ गुरुडि न कूकडइ, वृक्षसिहरतणां फल
लीजइ तडवडइ न दूंकडइ; संग्रामभूमिइं भिडीयइ राउति न दयामणइ, भंडा-
रीतणा भार झालियइ अभीष्टि न अलपामणइ; पर्वततणां टोल ताणीयइं

नदीतण्डू पुरि न बाहलइं, रायतण्डू मनि रंगि रहावीयइं मधुस्वरि न पाहलइं;
 समुद्रि सेतुबंध बांधीइं पर्वते न काकरइं; दृढगढतणी पोलि भांजियइं गजेंद्रि
 न वाकरइं, याचकजननां दरिद्र टालीयइं दातारि लक्ष्मीवंति न आजन्मदुस्थि;
 सकलसंदेह भांजीइं कैवलीए न छद्मस्थि । तेह कारणि तउं हे स्वामित् अम्हारा
 संदेह टालि, एक संदेह ऊपनउ सरोवरतणि पालि; एक ऊपनउ अटवीठामि,
 एक संग्रामि; एक स्वयंवरि, ए सवे संदेह अपहरि । इसी चीनती सांभली
 जगन्नाथ कहइ छइ अहो नरेश्वर सांभलउ । हिच कहीइ छइ पूर्वभव, जिसिउ
 हूउं अनुभव । ईणइ क्षेत्रि भृगुकच्छनामिइं नगर, जिहां नर्मदा नदी प्रवर;
 प्रौढ धवलग्रह, लोक पुण्यविषह सस्पृह; जीणि नगरि महाधर मंडलीक सेल-
 हत्य वरवीर राउत डवइत भाथाइत ऊडणाइत फलहकार छुरीकार नलीकार
 कुंभकार सींगडीया सावलीया जेठी यंत्रवाहा भंडारी कोठारीप्रभृति राज-
 लोक बसइं, सर्वज्ञभवन देपी मन उल्लसइ । जिहां पद्मश्रीनामि सरोवर,
 महामनोहर, जिहां राज्य पालइं द्रोणनामा नरेश्वर । तेहतणइ सागर अनइ
 पूरण इसिइ नामि पवित्रचरित्र, वि पुत्र । ते वेउ नर्मदानदीमाहि वेडी चडी
 मत्स्य विणासि वाप्रवत्तिया । तिसिइ अवसरिं मत्स्य एक साम्हउ जोई तीहप्र
 तिहं बोलिउ । रे दुराचारउ म करउ पाप, नरकि इस्यां ह्युसिइ संताप, नहीं
 छूटउ करताइ विलाप; जइ न मानउ तउ पृछउ आपणउ वाप । ए वात सांभली
 वेउ कुमर भयभ्रांत हुआ । तिसिइ नदीनइ कंठि एक दीठउ मुनीश्वर । तेहे
 वेडीतउ ऊतरी नमस्करिउ । बच्छउ तुम्हे भूरा पौत्र, हूं पालउं चारित्र; तुम्हे
 करउ अक्षत्र । तीणइं सोनइं किसिउं कीजइं जीणइं ब्रूइं कान, तीणइं
 उपाध्यायि किसिउं कीजइं जीणइं चूकइं ज्ञान, तीणइं ठाकुरि किसिउं कीजइं
 जीणइं पामीइं पगि पगि अपमान; तीणइं धर्मि किसिउं कीजइं जीणइं वाघइं
 मिथ्यात्ववाद, तीणइं यथरइं किसिउं कीजइं जीणि पाछइं ऊपजइं विषवाद,
 तीणि मित्रि किसिउं कीजइं जीणिइं थाइं प्रमाद; तीणिइं घरि किसिउं
 कीजइं जेहमाहि फूझइं साप, तीणइं स्त्रीइं किसिउं कीजइं जेहतु नितु
 संताप, तीणइं रामनिइं किसिउं कीजइं जीणि कराइ पाप । वत्स मुञ्ज
 भक्त व्यंनरि, मत्स्यमुनि अवतरी; तुम्हे जगाडिया, पुण्यमागिं लगाडिया ।
 हिच पाप परिहरउ, पुण्य करउ । तीणइं ऋषीश्वरि पुण्यनणी परठ कही, तेहे
 चिटुं प्रहो । आध्या आपणइं घरि, करइं पुण्य नवनवीपरि; दिहं दान, घरइं
 अरिहंतनणउं ध्यान; करइं सुगुरुभक्ति, जाणइं विवेकयुक्ति; करावइं प्रासाद,

पञ्चपदं सञ्चकारि साद; पालइ सम्यक्त्व, जाणइ नवतत्त्व; करइ सामायक
सार, स्मरइ पंचपरमेष्ठि नमस्कार, वे कुमार इसीपरि भरइ पुण्यभंडार ।
अन्यदा प्रस्तावि द्रोणि राजां तीह विहुंहुइ राज्य दीधवं, आपणपडं राजी-
सहित चारित्र लीधवं । निर्मल चारित्र पाली भावविशेषि पातालि वलीन्द्र
अवतरिउ, राणीइ इंद्राणि धईनइ तेह जि अणसरिउ । हिव पूरणनणइ पद्मश्री
इसिइ नामि हुई कलत्र, जे महासचरित्र । ते सागर पूरण पद्मश्री पुण्य करी
पहुता देवलोक, सोख्य भोगवी अवतरिया मनुष्यलोक । सगरतणउ जीव
हुउ तु सोमदेव नरेन्द्र, पूरणनउ जीव हुउ पृथ्वीचंद्र । पद्मश्री ईहां रत्नमंजरी
अवतरी । पूर्वतणउं धर्म फलिउ, सर्वसंयोग मिलिउ ।

विहुं नरेश्वरि ईणिपरि उपदेश सांभलिउ, श्रीधर्मनाथतीर्थकरि वली
कहिउं । हिव सांभलउ जे पूछिया संदेह, तेहनु कीजइ छेह । जिसिइ समइ रत्न-
मंजरी सरोवरतणी पालिइं पितातणइ उत्संगि वडठी, कुणरहइं देवातणी
चिंता पडठी; तिसिइ अवसरि, वलीद्रदानवेश्वरि; जानिप्रमाणि, पूर्व जाणी,
पुत्रपृथ्वीचंद्रनिमित्त रापिवा रत्नमंजरी हंसरूपिइं अपहरी आपणउ कन्हइ
आणी । छमास पातालि स्थापी, पछइ अवसरि पाछी आपी । राजा पृथ्वीचंद्र-
हुइं स्वप्न दीधवं, अदवी अनइ संग्रामांगणि महासाक्षिध्व कीधवं । अनइ स्वयं-
वरि जेतलइ धूमकेतु राजां वेतालंधकार विस्तारीनइ रत्नमंजरी रधि घाती,
तेतलइं वलीद्रतणी इंद्राणी ते मेलिहउ निपाती । छ प्रहर पातालि रापी, प्रभाति
प्रकट करी दापी; उहे दिपाडिउ पूर्वभयस्नेह, एतलइं टलिपां सवे संदेह ।
अहो पृथ्वीचंद्र ताहं विज्ञेयवंत छइ भाग्य, अद्भुत सौभाग्य । जेह कारणि
गृहस्थेपि त्रयिपडं चउतां ईणइ जि भवि ऊपजिसिइ वैलजान, एह भणी
ए भाग्य प्रधान । सोमदेवहुइं श्रीजइ भवि मुक्ति, इसी छइ मुक्ति । ए वार्ता
मनि धरी, श्रावकयोग्य धर्म आदरी, परमेस्वर नमस्करी; वे नरेश्वर सपरिवारि
स्वस्मानकि आन्या, परमेश्वरि विहारप्रम नीपजाग्या ।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र सुसरउराउ मोकलायी रत्नमंजरीसहित आपणउ
पुलिठानपुरि पाटणि आया, प्रधानि प्रदेश मण्डित्सव कराया । मरुत लोक
हाट पाटण काज काम परिहरी आभरण दूटते, वेणीदंड छूटते; पडउले
फाटते, घाटडे विणसते; घसमसादि जोडवा घाटउ राजा मण्डित्सवसहित
आपणर आवासि आइउ । रत्नमंजरी पहराणी स्थापी, कीर्त्तिइं जगन्नपी
प्यापी । राज्यसौभाग्य भोगयतां अवसरि रत्नमंजरी महीवर इमिइं नामिइं

पुत्र जन्मिउ । ते सर्वांगसुंदर, रूपिइं पुरंदर विवेकवंधुर राज्यधुरंधर सत्पुरुष-
 सिंधुर नामि महीधर प्रवर्द्धमान हूउ । राजापृथ्वीचंद्ररहइं राज्य करतां नव-
 लाप नवाणवइ सहस्र नवसइं नवोत्तर वरस अतिक्रम्यां । तिसिइ अवसारि
 कानडदेसनउ राउ सिंहकेतु इसिइं नामिइं अरुस्मात् पुहठाणपुरि पाटणि-
 ऊपरि चडी आविउ, लोकरहइं आतंक ऊपजाविउ । तत्काल चरपुरुषि पृथ्वी-
 चंद्ररहइं जणाविउ । ते सांभली राजापृथ्वीचंद्र कोपि करी करवाल ऊलालतु
 सामहिउ, सुभटवर्ग गहगहिउ; भंभा बाजी, गगनांगण रहिउ गाजी ।
 राजा आप जेतलइं हाथि चडिउ, तेतलइं मनि विमासण पडिउ । रे आत्मन्
 हुं बाह्यवइरी पूठिइं धाउं, अंतरंगवइरी पूठि न धाउं । कुण ए बुद्धि, किसी
 शुद्धि, जीतउ जोईयइ क्रोध, जेहतउ चालइ विरोध; जीतु जोईयइ मान, जेह—
 हुइं पर्वतनउं उपमान; जीती जोईयइ माया, जेहतु पामीयइ लीतणी काया;
 जीतु जोईयइ लोभ, जेहतु संसारि समयक्षोभ; जीतु जोईयइ काम, जेहतु
 फेडइं पुण्यतणउं ठाम । ईणिपरि नरेश्वरहुइं चींतवतां ऊपनउं शुक्लध्यान,
 तत्काल ऊपनउं केवलज्ञान । आव्या देव, करइं सेव; वइरी समिउ, आवी
 नमिउ; वाजइं वादित्र, महोत्सव विचित्र । देवे वेप दीधउ, राजक्रपि लीधउ;
 हंसजमलि, बइठउ सुवर्णकमलि; दिइ उपदेश, हूउ पुण्यतणउ निवेदा । एके
 आदरिउं सम्पत्त्व, एके श्रावकत्व; एके संयम, एके नियम । ईणिपरि लोक-
 हुइं लाभ देई पृथ्वीमंडलि विहारक्रम करी पृथ्वीचंद्रि राजा सिद्धिसाम्राज्य
 लीधउं, तेहतणइ पुत्रि महीधरि पहुंठाणपुरि अखंडप्रतापि राज्य कीधउं ।
 पृथ्वीचंद्रनरेश्वरतणउं चरित्र सांभली, मनतणी रली, बली; बली, विवेकवंति
 पुण्यवंत लाभ लेवउ । जिसिइं पुण्यतणा प्रभावनउ सकल श्रीसंघहुइं श्रेय-
 कल्याण ऋद्धिवृद्धिपरंपरा संपजइं ।

श्रीमदञ्जलगच्छे श्रीगुरुमाणिक्यसुरिणा ।

पृथ्वीचन्द्रनरेन्द्रस्य चरित्रं चारु निर्मितम् ॥

संवत् १४७८ वर्षे श्रावणमुदि ५ रवौ पृथ्वीचन्द्रचरित्रं पवित्रं पुरुषपत्तने निर्मितं समर्थितम् ।

पावन्मेरुर्षदी पावत् पावचन्द्रदिवाकरौ ।

वाच्यमानो जनैस्तावद्ग्रन्थोऽयं भुवि नन्दतात् ॥

इति श्रीञ्जलगच्छे श्रीमाणिक्यमुन्दरसूरिकृते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे बागिजालसे पञ्चम उद्घासः ।

खरतरपट्टावलीषट्पदानि



जिण दिट्ठइ आनंदु चडइ अइरहसु चउगुण ।
 जिण दिट्ठइ फडहडइ पाउ तणु निम्मलु हुइ पुणु ।
 जिण दिट्ठइ सुहु होइ कहु पुव्वुक्किउ नासइ ।
 जिण दिट्ठइ हुइ रिद्धि वरि दालिहु पणासइ ।
 जिण दिट्ठइ सुइ धम्ममइ अबुहहु कांइ उइक्खहहु ।
 पहु नवफणमंडिउ पासजिणु अजयमेरि कि न पिक्खहहु ॥ १ ॥
 मयण म करि धरि धणुहु वाण पुणि पंचम पयडहि ।
 रुविण पिम्मपयावि वंभहरिहरु मन विणडहि ।
 रुउ पिम्मु ता वाण मयण तापरिसहि धणहरु ।
 नवफणमंडिउसीस जाव न हु पिक्खिउ जिणवरु ।
 जइ पडिहसि पासजिणिंदवसि नाणवंत निम्मलरयण ।
 तसु धणुहरु वाण न रूप नहि न भुयप्पिम्मु हुइ हइमयण ॥ २ ॥
 नवफणिपासजिणिंदु गढिउ अन्नल्लि जु दिट्ठउ ।
 अजयमेरि संभरिनरिंदु ता नियमनि तुट्ठउ ।
 कंचणमउ अह कलसु सिहरि साणउ रत्तावियउ ।
 जणु सुतरणि तउ तवइ तिब्बु आयासिसउन्नउ ।
 जा बुज्जुमिसिण ढक्कारविण कर उज्झवि फरहरइ धर ।
 जिणदत्तसुरि धर धवलि जसि ता पसिद्धि सुरभचणि कय ॥ ३ ॥
 देवसुरिपहु नेमिचंदु बहुगुणिहि पसिद्धउ ।
 उज्जोयणु तह चट्ठमाणु खरतरघर लद्धउ ।
 सुगुरु जिणेसरसुरि नियमि जिणचंदु सुसंजमि ।
 अभयदेव सव्वंगु नाणि जिणवल्लह आगमि ।
 जिणदत्तसुरि ठिउ पट्ठि तहि जिण उजोइउ जिणचलणु ।
 सावइहि परिक्खवि परिवरिउ मुल्लि महग्घउ जिम रयणु ॥ ४ ॥
 धणुहरु धयवड धरिय सार सिंगार सुसज्जिय ।
 सोहगिण गुडगुडिय पंच वर पडिम निमज्जिय ।
 तियड अ तेअ अग्गलिय पिम्मपडिकारनिरुत्तिय ।
 रहरणरहसुचलिय गरुयमाणिण मइ अन्निय ।
 करि कडपड मुणिमहिवइहि रहिअ रुअ संपुन्नमय ।
 निणदत्तसुरिसीत्त भयण मयणकरटिघड चिहडि गय ॥ ५ ॥
 तथनलप्फभोसणह धम्मधीरिमसुविसालह ।

संजमसिरभासुरह दुसहवयदाढकरालह ।
 नाणनयणदारुणह नियमनिसनहरसमिद्धह ।
 कम्मकोवणिट्ठुरह विमलपुच्छपसिद्धह ।
 उपसमणउपरधरदुब्बिसह गुणगुंजारवजीहह ।
 जिणदत्तसुरि अणुसरह पय पापकरडिघडसीहह ॥ ६ ॥
 जरजलवहलरउह लोहलहरिहिं गज्जंतउ ।
 मोहमच्छउच्छल्लिउ कोवकल्लोल वहंतउ ।
 मयमयरिहि परिवरिउ वंचवहुवेलदुसंचरु ।
 गंधगरुगंधभीरु असुहआवत्तभयंकरु ।
 संसारसमुदु जु एरिसउ जसु पुणु पिक्खिवि सुदरियइ ।
 जिणदत्तसुरिउवएसु सुणि त परतरंडइ सुतरियइ ॥ ७ ॥
 सावय किवि कोयलिय केवि खरहरिय पसिद्धिय ।
 ठाइ ठाइ लक्खियहि मूढ नियवित्तिविरुद्धिय ।
 दरहि न किंपि परत्त वेवि सुपरुप्पर जुज्झहि ।
 सुगुरु कुगुरु मणि मुणिवि न किवि पटंतरु वुज्झहि ।
 जिणदत्तसुरि जिन नमहि पयपउम सच्चु नियमणि वहहि ।
 संसारउयहि दुत्तरि पडिय जि न हु तरंडइ चडि तरहि ॥ ८ ॥
 तवसंजमसयनियमि धम्मकम्मिण वावरियउ ।
 लोहकोहमयमोह तह व सप्पिहि परिहरियउ ।
 विसमच्छंदलक्खणिण सत्थअत्थत्थविसालह ।
 जिणवल्लहगुरुभत्तिवंतु पयडउ कलिकालह ।
 अन्निहिवि गुणिहि संपुन्नतणु दीणदुहियउद्धरणु धर ।
 जिणदत्तसुरि पर पल्ह भणु तत्तवंत सलहियइ धर ॥ ९ ॥
 वक्ख्वाणियइ परमतत्तु जिण पाउ पणासइ ।
 आराहियइ त वीरनाह कइपल्हु पयासइ ।
 धम्मु त दयसंजुत्तु जेण वरगाह पाविज्झइ ।
 चाउ त अणखंडियउ जु वंदिण सलहियइ ।
 जइ ठाइ त उत्तिममुणिवरह पवरवसहिहो चउर नर ।

तिम सुगुरुसिरोमणि सुरिवर खरतरसिरिजिणदत्त वर ॥ १० ॥

इति श्रीपद्मावलीपद्यदानि । संवत् ११७० वर्षे अश्वयुगाद्यपक्षे ११ तिथौ श्रीमद्द्वारानुगर्था
 श्रीपरतरगच्छे विधिमार्गप्रकाशिवसतिवासि श्रीजिणदत्तसूरीणां
 शिष्येण जिनरक्षितसाधुना लिखितानि ।

APPENDIX 1

श्रीवस्तुपालतीर्थयात्रावर्णनम्

अयं ध्रुवक्षीरार्णवनवसुधासन्निभचिता-

नुपाकर्ण्यार्कर्णानुपदमुपदेशानिति गुरोः ।

समस्तध्वस्तैना जनितजिनयात्रापरिकरो

ऽकरोत्सुखं प्रास्थानिकविधिमधीशो मतिमताम् ॥ १ ॥

श्लाघ्योऽतिसद्गुसहितः स हितः प्रजानां श्रीमानथ प्रथमतोर्थकृदेकचित्ताः ।

सम्भाषणाद्भुतसुधाभवचाश्चचार वाचालवारिदपथो रथचक्रनादैः ॥ २ ॥

सान्द्रैरुपर्युपरिवाहपदाग्रजाग्रज्जलीपदैर्ज्ञेयि कुट्टिमतामदङ्गिः ।

मार्गे निरुद्धस्त्रदीधितिधामसङ्गे सद्गुस्तदा भवनगर्भ इवावभासे ॥ ३ ॥

नाभेयप्रभुभक्तिभासुरमनाः कीर्त्तिप्रभाशुभ्रिमा-

काशः काशहृदाभिधेऽथ विदधे तोर्थं निवासानसौ ।

चक्रे चारुमना जिनार्चनविधिं तद्गुह्यचर्यव्रता-

रम्भस्तम्भितविष्टपत्रयजयश्रीधामकामस्वयः ॥ ४ ॥

पुष्टिभक्तिभरतुष्टया रयादम्बया हततमःकदम्बया ।

एत्य दृक्पथमथ प्रतिश्रुतं सन्निधिं समधिगम्य सोऽचलत् ॥ ५ ॥

ग्रामे ग्रामे पुरि पुरि पुवरोत्तिभिर्मर्त्यमुख्यैः

वल्लसप्रावेशिकविधितता व्योम्नि पश्यन्पताकाः ।

सूक्ताः कीर्त्तोरियममनुत प्रौढवृत्तप्रपञ्च-

व्यापह्रीलाद्भुतभुजलतावर्णनीयाः स्वकीयाः ॥ ६ ॥

अध्यायास्य नमस्यकीर्त्तिविभवः श्रीसद्गुमहस्तमा-

स्तोमादित्यमुपत्यकापरिसरे श्रीमहद्देवानुजः ।

श्रीनाभेयजिनेशदर्शनसमुत्कण्ठोद्गमन्मानस-

त्रस्त्यन्मोहमथाम्रोह विमलक्षोणीधरं धीरर्थाः ॥ ७ ॥

तत्र स्नानमहोत्सवव्यसनिनं मार्त्तण्डगण्टशुति-

क्रान्तं सद्गुजनं निरीक्ष्य निम्बिलं मान्द्रीभयन्मानसः ।

संशो माद्यदमन्दमेदुरतरश्रद्धानिधिः शुद्धधीः

मन्ग्रीन्द्रः स्वयमिन्द्रमण्डपमयं प्रारम्भयामासिवान् ॥ ८ ॥

मन्त्री मौली किल जिनपतेश्चित्रचारित्रपात्रं

ज्ञानं कृत्वा कलशलुठितैः स्मेरकादमीरनीरैः ।

चक्रे चञ्चन्मृगमदमयालेपनस्वर्णभूषा-

वर्णैः पूजाकुसुमवसनैस्तं स कल्पद्रुकल्पम् ॥ ९ ॥

मन्त्रीशेन जिनेश्वरस्य पुरतः कर्पूरपूरागुरु-

होपप्रेङ्खितधूपधूमपटलैः सा कापि तेने मुदा ।

पावहृद्धमहाध्वजप्रणयिनी स्वर्लोककलोलिनी

मिश्रेयं रविकन्यकेति वियति प्रत्यक्षमुत्प्रेक्ष्यते ॥ १० ॥

इत्थं तत्र विधाय निर्मलमनाः सन्मानदानक्रियां

सानन्दप्रमदाकुलां कुलनभोमाणिन्यमष्टाहिकाम् ।

विघ्नोन्मर्दिकपर्दिक्षविहितप्रत्यक्षसान्निध्यतः

श्रद्धावर्द्धितसम्मदादुदतरन्मन्त्रीश्वरो भूधरात् ॥ ११ ॥

अजाहरालये नगरे च पार्श्वपादानजापालनृपालपूज्यान् ।

अभ्यर्चयन्नेष पुरे च कोडीनारे स्फुरत्कीर्त्तिकदम्बमन्त्राम् ॥ १२ ॥

देवपत्तनपुरे पुरन्दरस्तूयमानममृतांशुलाञ्छनम् ।

अर्चयन्नुचितचातुरीचितः कामनिर्मथननिर्मलद्युतिम् ॥ १३ ॥

प्रीतस्फोतरुचिश्चिराय नयनैर्वामभुवां वामन-

स्थल्यामेव मनोविनोदजननं क्लृप्तप्रवेशं पुरि ।

धीमान्निर्मलधर्मनिर्मितिसमुल्लासेन विस्मापयन्

दैवं रैवतकाधिरोहमकरोत्सङ्गेन सङ्गेश्वरम् ॥ १४ ॥ (विशेषम्)

गजेन्द्रपदकुण्डस्य तत्र पीयूषहारिभिः ।

चकार मज्जनं मन्त्री वारिभिः पापहारिभिः ॥ १५ ॥

जिनमज्जनसज्जसज्जनं कलशन्यस्ततदभ्युक्तुङ्गमम् ।

अथ सङ्गमवेक्ष्य सङ्कटे विदधे वासवमण्डपोचमम् ॥ १६ ॥

संरम्भसङ्घटितसङ्घजनौघट्टामष्टाहिकामयमिहापि कृत्नी वितेने ।

सङ्घूतभावभरभासुरचित्तवृत्तिरुद्धवृत्तकीर्त्तिचयचुम्बितदिक्कदम्बः ॥ १७ ॥

लुम्पन् रजो विजयसेनमुनीशपाणिवासप्रवासितकुवासनभासमानः ।

सम्यक्त्वरोपणकृते विततान नन्दिमानन्दमेदुरमयं रमयन्मनांसि ॥ १८ ॥

दानैरानन्य वन्दित्रजमसृजदनिर्वारमाहारदानं

मानी सम्मान्य साधूनपुपदपि मुखोद्धाटकर्मदिकानि ।

मन्त्री सत्कृत्य देवार्चनरचनपरानेर्चयित्वायमुच्चै-

रम्वाप्रद्युम्नशाम्बानिति कृतसेकृतः पर्वतादुत्ततरं ॥ १९ ॥

असाधि साधर्मिकमानदानैरनेन नानाविधधर्मकर्म ।

अवाधि सा धिक्करणेन माया निर्माय निर्मायमनः सुपूजां ॥ २० ॥

पुरः पुरः पूरयता पर्यासि घनेन सान्निध्यकृता कृतीन्दुः ।

स्वकीर्त्तिवन्नव्यनदीर्ददर्श श्रीप्मेऽतिभीप्मेऽपि पदे पदेऽसौ ॥ २१ ॥

इति प्रतिज्ञामिव नव्यकीर्त्तिप्रियः प्रयाणैरतिचाह्य वीथीम् ।

आनन्दनित्यन्दविधिविधिज्ञः पुरं प्रपेदे घवलककं सः ॥ २२ ॥

समं तेजःपालान्वितपुरजनैर्वीरधवल-

प्रभुः प्रत्युद्यातस्तदनु सदनं प्राप्य सुकृती ।

युतः सङ्गेनासौ जिनपतिमथोत्तार्य रथत-

स्ततः सङ्घस्थार्चामशनवसनाद्यैर्व्यरचयत् ॥ २३ ॥

अथ प्रसादाद्भूभर्तुः प्राप्य वैभवमद्भुतम् ।

मन्त्रीशः सफलीचक्रे स्वमनोरथपादपम् ॥ २४ ॥

भक्त्याखण्डलमण्डपं नयनयश्रीकेलिपर्यङ्किका-

वर्यं कारयति स्म विस्मयमयं मन्त्री स शशुक्षये ।

यत्र स्तम्भनरैवतप्रभुजिनौ शाम्बास्विकालोकन-

प्रद्युम्नप्रभृतीनि किञ्च शिखराण्यारोपयामासिवान् ॥ २५ ॥

गुरुपूर्वजसम्बन्धिमित्रमूर्त्तिकदम्बकम् ।

तुरङ्गसङ्गतं मूर्त्तिद्वयं स्वस्यानुजस्य च ॥ २६ ॥

शातकुम्भमयान् कुम्भान्पञ्च तत्र न्यवेशयत् ।

पञ्चधा भोगसौख्यश्रीनिधानकलशानिव ॥ २७ ॥

सौवर्णं दण्डयुग्मं च प्रासादद्वितये न्यधात् ।

श्रीकीर्त्तिकन्द्योन्मद्यतनाद्भुरसोदरम् ॥ २८ ॥

कुन्देन्दुसुन्दरश्रावपावनं तोरणद्वयम् ।

इहैव श्रीसरस्वत्योः प्रवेशायैव निर्ममे ॥ २९ ॥

अर्कपालितकं ग्राममिह पूजाकृते कृती ।

श्रीवीरधवलक्ष्मापाद्वापयामास शासने ॥ ३० ॥

श्रीपालितारुये नगरे गरीयस्तरङ्गलीलादलितार्कतापम् ।

तडागमागःक्षयहेतुरेतच्चकार मन्त्री ललिताभिधानम् ॥ ३१ ॥

हर्षोत्कर्षं न केपां मधुरयति सुधासाधुमाधुर्यगर्ज-

त्तोयः सोऽयं तडागः पथि मथितमिलत्पान्यसन्तापपापः ।

साक्षादम्भोजदम्भोदितमुदितसुखं लोलरोलम्बशब्दै-

रब्देभ्यो दुग्धमुग्धां त्रिजगति जगदुर्यत्र मन्त्रीशकीर्त्तिम् ॥ ३२ ॥

पृष्ठपत्रं च सौवर्णं श्रीयुगादिजिनेशितुः ।

स्वकीयतेजःसर्वस्वकोशन्यासमिवार्पयत् ॥ ३३ ॥

प्रासादे निदधे काम्यकाञ्चनं कलशत्रयम् ।

ज्ञानदर्शनचारित्रमहारत्ननिधानवत् ॥ ३४ ॥

किञ्चित्मन्दिरदारि तोरणं तत्र पोरणम् ।

शिलाभिर्विदधे ज्योत्स्नागर्वसर्वस्वदस्युभिः ॥ ३५ ॥

लोकैः पाञ्चालिकानृतसंरम्भस्तम्भितेक्षणैः ।

इहाभिनीयते दिव्यनाट्यप्रेक्षाक्षणः क्षणम् ॥ ३६ ॥

प्रासादः स्फुटमच्युतैकमहिमा श्रीनाभिसनुप्रभो-

स्तस्याप्रस्थितिरेककुण्डलकुलां धत्तेतरां तोरणः ।

श्रीमन्त्रीश्वर वस्तुपाल कलयन्नीलाम्बरालम्बिता-

मत्युच्चैर्जगतोऽपि कौतुकमसौ नन्दी तवास्तु श्रिये ॥ ३७ ॥

अत्र यात्रिकलोकानां विदातां व्रजतामपि ।

सर्वथा सम्मुखैवास्ति लक्ष्मीरुपरिवर्त्तिनी ॥ ३८ ॥

यत्पूर्वमे निराकृतं सुकृतिभिः साम्मुख्यवैमुख्ययो-

र्द्धतं तन्मम वस्तुपालसचिवेनोन्मूलितं दुर्यशः ।

आशास्तेऽद्भुततोरणीभयमुखी लक्ष्मीस्तदस्मै मुदा

श्रीनाभेयविभुप्रसादयशतः साम्मुख्यमेवाऽधुना ॥ ३९ ॥

तस्यानुजश्च जगति प्रथितः पृथिव्यामव्याजपौरुषगुणप्रगुणीकृतश्रीः ।

श्रीतेजपाल इति पालयति क्षितीन्दुमुद्रां समुद्ररसनावधिगीतकीर्त्तिः ॥ ४० ॥

समुद्रत्वं श्लाघेमहि महिमधाम्नोऽस्य बहुधा

यतो भीष्मग्रीष्मोपमविषमकालेऽप्यजनि यः ।

क्षणेन क्षीणायामितरजनदानोदकततौ

दध्यावेलाद्द्वेलादिगुणितगुणत्यागलहरिः ॥ ४१ ॥

यस्त्रापथस्य पन्थास्तपस्विनां ग्रामशासनोद्धारात् ।

येनापनीय नवकरमनवकरः कारयाञ्चके ॥ ४२ ॥

पुण्योल्लासविलासलालसधिया येनात्र शत्रुञ्जये
श्रीनन्दीश्वरतीर्थमर्पितजगत्पावित्र्यमासूत्रितम् ।

एतच्चानुपमासरः परिसरोद्देशे शिलासश्वय-
व्यानद्धोद्धतबन्धमुद्धरपयःकल्लोललुप्तकमम् ॥ ४३ ॥

स्फुटस्फटिकदर्पणप्रतिमतामिदं गाहते
मुधाकृतसुधाकरच्छविपवित्रनीरं सरः ।

विकस्वरसरोरुहप्रकरलक्ष्यतो लक्ष्यते
यदत्र सरिदङ्गनावदनविम्बताडम्बरः ॥ ४४ ॥

शत्रुञ्जये यः सरसीं निवेद्य श्रीरेवताद्रौ च जडाधराणाम् ।
ग्रामस्य दानेन करं निधार्य सङ्घस्य सन्तापमपाचकार ॥ ४५ ॥

क्षोणीपीठमियद्रजःकणामिषत्पानीयविन्दुः पतिः
सिन्धूनामियदद्गुलं वियदियत्ताला च कालस्थितिः ।

इत्थं तथ्यमवैति यस्त्रिभुवने श्रीवस्तुपालस्य तां
धर्मस्थानपरम्परां गणयितुं शङ्के न सोऽपि क्षमः ॥ ४६ ॥

एतत्सुवर्णरचितं विश्वालङ्कुरणमनणुगुणरत्नम् ।
सङ्घाधीश्वरचरितं हतदुरितं कुरुत हृदि संतः ॥ ४७ ॥

श्रीनागेन्द्रमुनीन्द्रगच्छतरणिः श्रीमान्महेन्द्रप्रसु-
जज्ञे क्षान्तिमुधानिधानकलशः पुण्याब्धिचन्द्रोदयः ।

सम्मोहोपनिपातकातरन्तरे विश्वेऽत्र तीर्थेशितुः
सिद्धान्तोऽप्यविमेद्यतर्कथिपमं यं दुर्गमाशिन्त्रिये ॥ ४८ ॥

तत्सिंहासनपूर्वपर्वतशिरःप्रान्तोदयः कोऽप्यभू-
द्भास्वानस्तसमस्तदुस्तमतमाः श्रीशान्तिसूरिप्रभुः ।

प्रत्युज्जीवितदर्शनशुतिलसद्भयौघपद्माकरं
तेजश्छद्मदिगम्बरं विजयते तयस्य लोकोत्तरम् ॥ ४९ ॥

आनन्दसूरिरिति तस्य यन्मूव शिष्यः
पूर्वापरः शमथनोऽमरचन्द्रसूरिः ।

धर्मक्षिपस्य दशनाविध पापवृक्ष-
क्षोदक्षमौ जगति यौ विशदी विमातः ॥ ५० ॥

अस्तावयाअपपयोनिधिमन्दराट्टि-
मुद्रापुपोः किमनयोः स्तुमहे महिम्नः ।

बाल्येऽपि निर्दलितवादिगजौ जगाद

यौ व्याघ्रसिंहशिशुकाविति सिद्धराजः ॥ ५१ ॥

सिद्धान्तोपनिषन्निपण्णहृदयो धीजन्मसस्तत्पदे

पूज्यः श्रीहरिभद्रसूरिरभवचारिन्निणामग्रणीः ।

भ्रान्त्वा शून्यमनाश्रयैरिव चिरायस्मिन्नवस्थानतः

सन्तुष्टैः कलिकालगौतम इति ख्यातिर्वितेने गुणैः ॥ ५२ ॥

श्रीविजयसेनसूरिस्तत्पदे जयति जलधरध्वानः ।

यस्य गिरो धारा इव भवदवभवदवयुविभवभिदः ॥ ५३ ॥

पञ्चासराह्वनराजविहारतीर्थं

प्रालेयभूमिधरभूतिधुरन्धरेऽस्मिन् ।

साक्षादघातकृतभवा तटिनीव यस्य

व्याख्येयमच्युतगुरुक्रमजा विभाति ॥ ५४ ॥

भवोद्भूतवनावनीविकटकर्मवंशावलि-

च्छिदोच्छलितमौक्तिकप्रतिमकीर्तिकर्णाम्बरम् ।

असिश्रियमशिश्रियद्विततभीव्रतं यद्व्रतं

क्षितौ विजयतामयं विजयसेनसूरिर्गुरुः ॥ ५५ ॥

शिष्यं तस्य प्रशस्यप्रशमगुणनिधिं रभ्यदारण्यदाव-

ज्वालाजिह्वालदीप्तिर्भविकजनविषद्वहिवादः कपर्दी ।

देवी चाम्बा निशीथे समसमयमुपागत्य हर्षाश्रुवर्षा-

मेयश्रेयःसुभिक्षाविति निजगदतुर्गद्गदोदामनादम् ॥ ५६ ॥

नाभूयन्कति नाम सन्ति कति नो नो वा भविष्यन्ति के

किं न कापि कदापि सद्गुरुरूपः श्रीवस्तुपालोपमः ।

यत्रेत्यं ग्रहरत्नहर्निशमहो सर्वोभिसारोद्गुरो

येनायं विजितः कलिर्विदधत्ता तीर्थेशघात्रोत्सवम् ॥ ५७ ॥

तस्मादस्य यशस्विनः सुचरितं श्रीवस्तुपालस्य य-

दाचास्माकममोचया किल यथाध्यक्षीकृतं सर्वथा ।

त्यं श्रीमद्युदयप्रभ प्रथय तत् पीयूषसर्वङ्ग्यैः

स्योर्कैर्यत्तव भारती समभव.....यते ॥ ५८ ॥

इत्युक्त्वा गतपोस्तयोरथ पथो दृष्टेः प्रभातक्षणे

विज्ञाप्य स्वगुरोः पुरः सविनयं नम्रीभवन्मौलिना ।

प्राप्यादेशमसुं प्रभोर्विरचयामासे समासेदुपा

प्रागलभीमुदयप्रभेण चरितं निस्यन्दरूपं गिराम् ॥ ५९ ॥

किञ्च श्रीमलधारिगच्छजलधिप्रोल्लासशोतद्युते-

स्तस्यश्रीनरचन्द्रसूरिसुगुरोर्माहात्म्यमाशास्महे ।

यत्पाणिस्मितपद्मवासविकसत्किञ्चलकसंवासिताः

सन्तः सन्ततमाश्रिताः किल मया भृङ्गयेव भान्ति क्षितौ ॥ ६० ॥

श्रीधर्माभ्युदयाह्वयेऽत्र चरिते श्रीसङ्घभर्तुर्मया

दध्रे काव्यदलानि सहृदयितुं कर्मान्तिकत्वं परम् ।

किन्तु श्रीनरचन्द्रसूरिभिरिदं संशोध्य चक्रे जग-

त्पाविश्यक्षमपादपङ्कजरजःपुञ्जैः प्रतिष्ठास्पदम् ॥ ६१ ॥

नित्यं व्योमनि नीलनीरजरुचौ यावन्त्यपामीश्वरो

दिक्पालावलिबन्धुरे कुचलये यावच्च हेमाचलः ।

हृत्पद्मे विदुषामिदं सुचरितं तावन्नवाविर्भव-

त्सौरभ्यप्रसरं चिरं कलयतात् किञ्चलकलक्ष्मीपदम् ॥ ६२ ॥

इति श्रीविजयसेनसूरिशिष्यश्रीमुदयप्रभसूरिविरचिते श्रीधर्माभ्युदयनाम्नि श्रीसङ्घपविच-

रिते लक्ष्ये महाकाव्ये श्रीवस्तुपालतीर्थयात्रोत्सववर्णनो नाम पञ्चदशः सर्गः ।

मुक्तेर्मार्गे यदेतद्विरचितमुचितं सङ्घभर्तुश्चरित्रं

सत्रं पावित्र्यपात्रं पथिकजनमनःखेदविच्छेदहेतुः ।

अस्मिन्सौरभ्यगर्भासमरसवतीं सत्कथां पान्यसार्थाः

प्राप्य श्रीवस्तुपाल प्रवरनवरसास्वादमास्वादयन्ति ॥ १ ॥

श्रीशारदैकसदनं हृदयालयः के नो सन्ति हन्त सकलामु कलामु निष्णाः ।

तादृक्परस्य ददद्मे सुकवित्वतत्त्वबोधाय बुद्धिविभवस्तु न वस्तुपालात् ॥ २ ॥

नैव व्यापारिणः के विदधति करणग्राममात्मैकवश्यं

लेभे सद्योगसिद्धेः फलममलमलं केवलं वस्तुपालः ।

आकल्पस्यायि धर्माभ्युदयनवमहाकाव्यनाम्ना यदीयं

विश्वस्थानन्दलक्ष्मीमिति दिशति यशोधर्मरूपं शरीरम् ॥ ३ ॥

APPENDIX II.

रेवयकप्पसंखेवो

सिरिनेमिजिणं सिरसा नमिडं रेवयगिरीसकप्पमि ।

सिरिवहरसीसभणिअं जहा य पालित्तएणं च ॥ १ ॥

इत्तसिलाइसमीवे सिलासणे दिक्कं पडिवन्नो नेमी, सहसंववणे केवल-
नाणं, लक्खारामे देसणा, अवलोअणं उद्धसिहरे निव्वाणं । रेवयमेह्लाए कण्हो
तत्थ कल्लाणतिगं काऊण सुवन्नरयणपडिमालंकिअं चेइअतिगं जीवंतसा-
मिणो अंबादेविं च कारेइ । इंदो वि वज्जेण गिरिं कोरेऊण सुवन्नवलाणयं
रूपमयं चेइअं रयणमया पडिमा पमाणवन्नोववेया, सिहरे अंबा रंगमंडवे अव-
लोअणसिहरे वलाणयमंडवे संवो एयाइं कारेइ । सिद्धविणायगो पडिहारो;
तप्पडिख्वं श्रीनेमिमुखात् निर्वाणस्थानं ज्ञात्वा निर्वाणादनन्तरं कण्हेण ठा-
विअं । तहा सत्त जायवा दामोयराणुखा कालमेह १ मेहनाद २ गिरि-
विदारण ३ कपाट ४ सिंहनाद ५ खोडिक ६ रेवया ७ तिच्चतवेणं कीडणेणं
वित्तवाला उववन्ना । तत्थ य मेहनादो समदिट्ठो नेमिपयभस्सिजुत्तो चिट्ठइ ।
गिरिविदारणेणं कंचणवलाणयंमि पंच उडारा चिउच्चिआ । तत्थेगं अंबापुरओ
उत्तरदिसाए सत्तहिअसयकमेहिं गुहा । तत्थ य उववासतिगेणं वलिविहाणेणं
सिलं उप्पाडिऊण मज्झे गिरिविदारणपडिमा । तत्थ य कमपण्णासं गए
वलदेवेणं कारिअं सासयजिणपडिमारुवं नमिऊण, उत्तरदिसाए पण्णासकमं
वारोतिगं । पढमवारिआए कमसयतिगं गंतूण, गोदोहिआसणेणं पविसिऊण,
उपवासपंचगं भमररुवं दारुणं सत्तेणं उप्पाडिऊणं, कम्मसत्ताओ अहोमुहं
पविसिऊण, वलाणयमंडवे इंदोदेसेण धणयजक्ककारियं अंबादेविं पृहूऊण,
सुवण्वजालीए ठायव्वं । तत्थट्ठिएणं सिरिमूलनाहो नेमिजिणिंदो वंदिअच्चो ।
घोअवारीए एगं पायं पृहत्ता, सयंवरवावीए अहो कमचालीसं गमित्ता, तत्थ णं
मज्झवारीए कमसत्तसएहिं क्खो । तत्थ वरहंसट्ठिअत्तेण इहावि मूलनायगो
वंदेयच्चो । तइअवारीए मूलदुवारपवेसो अंबाएसेण न अन्नहा । एवं कंचण-
वलाणयमगो । तत्थ य अंबापुरओ हत्थवीसाए विवरं । तत्थ य अंबाएसेण
उववासतिगेण सिलुग्घाडणेण हत्थवीसाए संपुडसत्तगं समुग्गायपंचगं अहो
रसहूविआ अमावसाए अमावसाए उग्घट्ठइ । तत्थ य उववासतिगं काऊण

अंवाएसेण पूयणेण बलिबिहाणेणं गिण्हियब्बं । तद्वा य जुण्णकूडे उववास-
तिगं काऊण सरलमग्गेण बलिपूअणेणं सिद्धविणायगो उवलब्भइ । तत्थ य
चित्तिअसिद्धी दिनमेगं ठाण्यब्बं । जइ तद्वा पच्चको हवइ तद्वा रायमईगुहाए
कमसएणं गोदोहिआए रसकूविआ कसिणचित्तायवल्ली राइमईए पडिमा
रयणमया अंवाया रूपमयाओ अणेगओसहीओ अ चिट्ठंति । तद् छत्तसिलाघं-
टसिलाकोटिसिलातिगं पणत्तं । छत्तसिलं मज्झे मज्झेणं कणयवल्ली सहस्संव-
वणमज्झे रययसुवण्णमयचउवीसं लक्कारामे वावत्तरीचउवीसजिणाण गुहा प-
णत्ता । कालमेहस्स पुरओ सुवण्णवालुआए नईए सट्ठकमसयतिगेण उत्तरदि-
साए गमित्ता गिरिगुहं पविसिऊण उदए ण्हवणं काऊण, विए उववासपओएहिं
दुवारमुग्घाडेइ । मज्झे पढमदुवारं सुवण्णखाणी, दुइअदुवारं रयणखाणी,
संघहेउं अंवाए विउब्बिआ । तत्थ पण कण्हभंडारो । अण्णो दामोदरसमीये ।
अंजणसिलाए अहोभागे रययसुवण्णधूली पुरिसवीसेहिं पणत्ता ।

तस्सत्थमणे मंगलयदेवदालीय संतु रससिद्धी ।

सिरिवहरोवक्तायं संघसमुद्धरणकज्जंमि ॥

सत्सकडाहं मज्झे गिण्हित्ता कोटिविदुसंपोगे ।

घंटसिलाचुण्णयजोयणाओ अंजणसिद्धी ।

विज्जापाहुहुहेसाओ रेवयकप्पसंखेयो सम्मत्तो ॥

APPENDIX III.

श्रीउज्जयन्तस्तवः

नामभिः श्रीरैवतकोज्जयन्ताद्यैः प्रथामितम् ।
 श्रीनेमिपावितं स्तौमि गिरिनारं गिरीश्वरम् ॥ १ ॥
 स्थाने देशः सुराष्ट्राख्यां विभर्ति भुवनेष्वसौ ।
 यद्भूमिकामिनीभाले गिरिरेष विशेषकः ॥ २ ॥
 शृङ्गारयन्ति खङ्गारदुर्गं श्रीऋषभादयः ।
 श्रीपार्श्वस्तेजलपुरं भूपितैतदुपत्यकम् ॥ ३ ॥
 योजनद्वयतुङ्गेऽस्य शृङ्गे जिनगृहाबलिः ।
 पुण्यराशिरिवाभाति शरच्चन्द्रांशुनिर्मला ॥ ४ ॥
 सौवर्णदण्डकलशमलसारकशोभितम् ।
 चारु चैत्यं चकास्त्यस्योपरि श्रीनेमिनः प्रभोः ॥ ५ ॥
 श्रीशिवासुनुदेवस्य पादुकाऽत्र निरीक्षिता ।
 स्पृष्टाऽर्चिता च शिष्टानां पापव्यूहं व्यपोहति ॥ ६ ॥
 प्राज्यं राज्यं परित्यज्य जरत्तृणमिव प्रभुः ।
 बन्धून्विधूय च स्निग्धान् प्रपेदेऽत्र महाव्रतम् ॥ ७ ॥
 जत्रैव केवलं देवः स एव प्रतिलब्धवान् ।
 जगज्जनहितैषी स पर्यणैषीच्च निर्धृतिम् ॥ ८ ॥
 अत एवात्र कल्याणत्रयमन्दिरमादधे ।
 श्रीवस्तुपालो मन्त्रीशश्चमत्कारितभण्डवत् ॥ ९ ॥
 जिनेन्द्रविम्बपूर्णेन्द्रमण्डपस्या जना इह ।
 श्रीनेमेर्मज्जनं कर्तुमिन्द्रा इव चकासति ॥ १० ॥
 गजेन्द्रपदनामास्य कुण्डं मण्डयते शिरः ।
 सुधाविधैर्जलैः पूर्णं स्नानार्हत्स्नपनक्षमैः ॥ ११ ॥
 शशुञ्जयावतारोऽत्र वस्तुपालेन कारिते ।
 ऋषभः पुण्डरीकोऽष्टापदो नन्दीश्वरस्तथा ॥ १२ ॥
 सिंहयाना हेमवर्णा सिद्धयुद्धसुतान्विता ।
 कम्पामलुम्बिभृत्पाणिरत्राम्बा सहस्रविप्रवत् ॥ १३ ॥

श्रीनेमिपत्यद्रुपूतमवलोकननामकम् ।
 विलोकयन्तः शिखरं यान्ति भव्याः कृतार्थताम् ॥ १४ ॥
 शाम्भ्यो जाम्बवतीजातस्तुङ्गे शृङ्गेऽस्य कृष्णजः ।
 प्रद्युम्नश्च महाद्युम्नस्तेपाते दुस्तर्प तपः ॥ १५ ॥
 नानाविधौषधिगणा जाज्वलन्त्यत्र रात्रिषु ।
 किञ्च घण्टाक्षरच्छत्रशिलाः शालन्त उच्चकैः ॥ १६ ॥
 सहस्राभ्रवर्णं लक्षारामोऽन्येपि वनव्रजाः ।
 मयूरकोकिलाभृङ्गीसङ्गीतिमुभगा इह ॥ १७ ॥
 न स गृक्षो न सा बह्वी न तत्पुष्पं न तत्फलम् ।
 नेक्ष्यतेऽत्राभियुक्तैर्यदित्यैतिष्यविदो विदुः ॥ १८ ॥
 राजीमती गुहागर्भे कैर्न नामात्र वन्द्यते ।
 रथनेमिर्षयोन्मार्गात्सन्मार्गमवतारितः ॥ १९ ॥
 पूजालपनदानानि तपश्चात्र कृतानि वै ।
 सम्पद्यन्ते मोक्षसौख्यहेतवो भव्यजन्मिनाम् ॥ २० ॥
 दिग्भ्रमावपि योऽत्राद्रौ क्वाप्यमार्गंऽपि सञ्चरन् ।
 सोऽपि पश्यति चैतस्या जिनार्चाः स्तुतिार्चिताः ॥ २१ ॥
 काश्मीरागतर्त्तवेन कृष्णमण्ड्यादेशतोऽत्र च ।
 लेप्यविम्बास्पदे न्यस्ता श्रीनेमेर्मूर्तिराश्मनी ॥ २२ ॥
 नदीनिक्षैरकुण्डानां खनीनां वीरुधामपि ।
 विदाङ्करोत्वत्र सङ्ख्याः सङ्ख्यावानपि कः श्लु ॥ २३ ॥
 आसेचनकल्पाय महातीर्थाय तापिने ।
 चैत्यालङ्कृतशीर्षाय नमः श्रीरैयनाद्रये ॥ २४ ॥
 स्तुतो मेयेति मूरीन्द्रवर्णिनाष्टजिनप्रभः ।
 गिरिनारस्तारहेमसिद्धिभूमिर्मुदेऽस्तु यः ॥ २५ ॥

इति श्रीउज्जयन्तस्तवः ॥

APPENDIX VI.

श्रीउज्जयन्तमहातीर्थकल्पः

अत्थि सुरद्वारिसए उज्जितो नाम पव्वओ रम्मो ।
 तस्सिहरे आरुहिउं भत्तीए नमह नेमिजिणं ॥ १ ॥
 अंवाइअं च देविं ण्हवणच्चणगंधधूवदीवेहिं ।
 पुइयकयप्पणामा ता जोअह जेण अत्थत्थी ॥ २ ॥
 गिरिसिहरं कुहरकंदरनिज्झरणकवाडविअडकूवेहिं ।
 जोएह खत्तवायं जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ ३ ॥
 कंदप्पदप्पकप्परणकुगइविहवणनेमिनाहस्स ।
 निव्वाणसिला नामेण अत्थि सुवणंमि विक्काया ॥ ४ ॥
 तस्स य उत्तरपासे दसधणुहेहिं अहोमुहं विवरं ।
 दारंमि तस्स लिगं अवयाणे धणुह चत्तारि ॥ ५ ॥
 तस्स पमुमुत्तागंधो अत्थि रसोपलसएण सयतंबं ।
 विंधेहि कुणइ तारं ससिक्कुंदसमुज्जलं सहसा ॥ ६ ॥
 पुव्वदिसाए धणुहंतरेसु तस्सेव अत्थि जागवई ।
 पाहाणमया दाहिणदिसागए बारसधणूहिं ॥ ७ ॥
 दिस्सइ अ तत्थ पयडो हिंगुलवण्णो अ दिव्वपवररसो ।
 विंधेइ सब्वलोहे फरिसेणं अग्गिसंगेणं ॥ ८ ॥
 उज्जिते अत्थि नई विहला नामेण पव्वई पडिमा ।
 दायेइ अंगुलीए फरिसरसो पव्वईदारं ॥ ९ ॥
 सक्कावयार उज्जितगिरिवरे तस्स उत्तरे पासे ।
 सोवाणपंतिआए पारेवयवणिगया पुढवी ॥ १० ॥
 पंचगव्येण वद्धा पिंडीधमिआ करेइ वरतारं ।
 फेडइ दरिहवाहिं उत्तारइ दुक्ककंतारं ॥ ११ ॥
 सिहरे विसालसिगे दीसंते पायकुट्टिमा जत्थ ।
 तस्सासन्ने सिहरे कव्वडहदपासहो तारं ॥ १२ ॥
 उज्जितरेवयवणे तत्थ य सुदारवानरो अत्थि ।
 सो यामकण्णछित्तो उग्घाडइ विवरवरदारं ॥ १३ ॥
 हत्थसएण पविट्ठो दिक्कइ सोवण्णवणिगया शक्का ।

नीलरसेण सवंता सहस्सवेही रसो नूणं ॥ १४ ॥
 तं गह्विऊण निअत्तो हणुवर्तं छिवइ वामपाएण ।
 सो ढक्कइ वरदारं जेण न जाणइ जणो को वि ॥ १५ ॥
 उज्जितसिहरउवरिं कोहंढिहरं खु नाम विक्कायं ।
 अवरेण तस्स य सिला तदुभयपासेसु ओसं तु ॥ १६ ॥
 तं अयसितिल्लमीसं धंभइ पडिवायवंगिअं वंगं ।
 दोगच्चवाहिहरणं परितुट्ठा अंविआ जस्स ॥ १७ ॥
 वेगवई नाम नई मणसिलवण्णाइ तत्थ पाहाणा ।
 तो पिंडि धमिअ संते समसुद्धे होइ वरतारं ॥ १८ ॥
 उज्जंते नाणसिला तस्स अहो कणयवणिआ पुढवी ।
 वोक्कइयमुत्तपिंडी स्वइरंगारे भवे हेमं ॥ १९ ॥
 नाणसिलाकयपुढवी पिंडीवद्वा य पंचमब्बेण ।
 हट्ठपाए वसइ रसो सहस्सवेही हवइ हेमं ॥ २० ॥
 गिरिवरमासन्नठिअं आणीयं तिलविसारणं नाम ।
 सिलवद्धगादपोढे वे लक्खा तत्थ दम्माणं ॥ २१ ॥
 सेणा नामेण नई सुवण्णतित्थंमि लडुअपहाणा ।
 पडिवाएण य सुचं करिति हेमं न संदेहो ॥ २२ ॥
 विह्वलकयंमि नयरे मउहहरं अत्थि सेलगं दिव्वं ।
 तस्स य मज्झंमि ठिओ गणयइरसकुंटओ उवरिं ॥ २३ ॥
 उचयासी कयपूओ गणवइओ वल्लिऊण पचररसो ।
 पामापेवी अत्थि अ धंभइ वंगं न संदेहो ॥ २४ ॥
 सहसासयं ति तित्थं करंजककेण मणाहरं सम्मं ।
 तत्थ य तुरयायारा पाहाणा तेमि दो भाया ॥ २५ ॥
 इप्पो पारयभाओ पिट्ठो सुत्तेण अंयमूसाए ।
 धमिओ करेइ तारं उत्तारइ दुरक्कंतारं ॥ २६ ॥
 अवलोअणसिहरसिला अवरेणं तत्थ वररसो सवइ ।
 सुअपक्खसरिसवण्णो करेइ सुयं वरं हेमं ॥ २७ ॥
 गिरिपज्जुअययारे अंविअआसमपयं च नामेण ।
 तत्थ वि पीआ पुढवी हिमवाए होइ वरहेमं ॥ २८ ॥
 नाणसिला उज्जिते तस्स य मूलंमि मट्ठिआ पीआ ।

साहामिअलेवेणं छायामुक्कं कुणइ हेमं ॥ २९ ॥
 उज्जितपढमसिहरे आरुहिउं दाहिणेण अवयरिउं ।
 तिणिण धणूसयमित्ते पूईकरं जं विलं नाम ॥ ३० ॥
 उग्घाडिउं विलं दिक्किऊण निउणेण तत्थ गंतव्वं ।
 दंडंतराणि वारस दिव्वरसो जंबुफलसरिसो ॥ ३१ ॥
 जउ घोलिअंमि भंडे सहस्सभाणण विंघण तारं ।
 हेमं करइ अवस्सं हट्ठं तं सुंदरं सहसा ॥ ३२ ॥
 कोहंडिभवणपुब्बेण उत्तरे जाव तावसा भूमी ।
 दीसइअ तत्थ पडिमा सेलमया यामुदेवस्स ॥ ३३ ॥
 तस्सुत्तरेण दीसइ हत्थेसु अ दससु पच्चई पडिमा ।
 अवराहमुहरअंगुठिआइ सा दावण विवरं ॥ ३४ ॥
 नवधणुहाइं पविट्ठो दिक्कड कूडाइं दाहिणुत्तरओ ।
 हरिआललक्कवण्णो सहस्सवेही रसो नूणं ॥ ३५ ॥
 उज्जिते नाणसिला विक्काया तत्थ अत्थि पाहाणं ।
 ताणं उत्तरपासे दाहिणय अहोमुहो विवरो ॥ ३६ ॥
 तस्स य दाहिणभाण दसधणुभूमीइ हिं गुल्लयवण्णो ।
 अत्थि रसो सयवेही विंघइ सुचं न संदेहो ॥ ३७ ॥
 उस्सहरिसहाइकूडे पाहाणा ताण संगमो अत्थि ।
 गयवरलिंडाकिण्णा मज्झे फरिसेण ते वेही ॥ ३८ ॥
 जिणभवणदाहिणेणं नउई धणुहेहिं भूमिजलुअपरी ।
 तिरिमणुअरत्तविच्चा पडिवाण तंवण हेमं ॥ ३९ ॥
 वेगवर्द नाम नई मणसिलवण्णा य तत्थ पाहाणा ।
 सुचस्स पंचवेहं सवन्ति धमिआ तयं सिग्घं ॥ ४० ॥
 इय उज्जयंतरुप्पं अविअप्पं जो करइ जिणभत्तो ।
 कोहंडिरुपणामो सो पावइ इच्छिअं सुक्कं ॥ ४१ ॥

श्रीउज्जयतमहातीर्थकल्पः

APPENDIX V

रैवतकल्पः

पच्छिमदिसाए सुरट्टाविसाए रेवयपव्वयपरायसिहरे सिरिनेमिनाहस्स भवणं उच्चुंगसिहरं अच्छइं । तत्थ किर पुब्बिं भयवओ नेमिनाहस्स लिप्पमई पडिमा आसि । अन्नया उत्तरदिसाविभूत्तणकम्हीरदेसाओ अजियरयणना-
माणो दुन्नि बंधवा संघाहिवई होऊण गिरिनारमागया । तेहिं रहसवसाओ
घणघुसिणरससंपूरिअकलसेहिं ण्हवणं कयं । गलिआ लेवमई सिरिनेमिनाह-
पडिमा । तओ अइव अप्पाणं सोअंतेहिं तेहिं आहारो पच्चक्काओ । इक्क-
वीसउववासाणंतरं सयमागया भगवई अंबिआ देवी । उट्टाविओ संघवई ।
तेण देविं दट्ठण जयजयसदो कओ । तओ भणिअं देवीए इमं धिवं गिणिहसु
परं पच्छा न पिच्छिअव्वं । तओ अजिअसंघाहिवइणा एगतंतुकड्डिअं रयणमयं
सिरिनेमिधिवं कंचणवलाणए नीअं । पढमभवणस्स देहलीए आरोवित्ता अइ-
हरिसभरनिग्गभरेणं संघवइणा पच्छाभागो दिट्ठो । ठिअं तत्थेव धिवं निच्चलं ।
देवीए कुसुमवुट्ठी कया जयजयसदो अ कओ । एअं च धिवं वइसाहपुत्तिमाए
अहिणवकारिअभवणे पच्छिमदिसामुहे ठविअं संघवइणा । न्हवणाइमहसव
काठं अजिओ सवंधवो निअदेसं पत्तो । कलिकाले कलुसचित्तं जणं जाणि-
ऊण झलहलंतमणिमयधिवस्स कंती अंबिआदेवीए छाइआ । पुब्बिं गुज्जरघ-
राए जयसिंहदेवेणं खंगाररायं हणित्ता सज्जणो दंडाहियो ठाविओ । तेण य
अहिणवं नेमिजिणंदभवणं एगारससयपंचासीए विक्कमरायवच्छरे कारा-
विअं । मालवदेसमुहमंडणेणं साहुभावडेणं सोवणं आमलसारं कारिअं ।
चालुक्कचकिसिरिकुमारपालनरिंदसंठविअसोरद्वंदडाहिवेण सिरिसिरिमाल-
कुलवभवेण दारससयवीसे विक्कमसंवच्छरे पज्जा काराविआ । तवभावुणा
धवलेण अंतराले पचा भराविआ । पज्जाए चडंतेहिं जणेहिं दाहिणदिसाए
लक्कारामो दीसइ । अणहिल्लवाडयपट्टणे य पोरथाडकुलमंडणा आसराय-
कुमरदेवितणया गुज्जरधराहिवइसिरिवीरधवलरजधुरंधरा वस्तुपालतेजपाल-
नामधिया दो भायरो मंतिवरा हत्था । तत्थ तेजपालमंतिणा गिरिनारतले
निअनामंकिअं तेजलपुरं पवरगढमदपवामंदिरआरामरम्मं निम्माधिअं । तत्थ
य जणंपनामंकिअं आसरायविहाए त्ति पासनाहभवणं काराविअं । जणणीना-
मेणं च कुमरसरुत्ति सरोवरं निम्माविअं । तेजलपुरस्स पुव्वदिसाए उग्गसेणगढं

नाम दुग्गं जुगाइनाहप्पमुहजिणमंदिररेहिल्लं विज्झइ । तस्स य तिण्णि नाम-
धिज्जाइं पसिद्धाइं । तं जहा उग्गसेणगढं ति वा खंगारगढं ति वा उज्जुण्णदुग्गं
ति वा । गढस्स बाहिं दाहिणदिसाए चउरिआवेईलडुअओवरिआपसुवाडया-
इठाणाइं चिट्ठंति । उत्तरदिसाए विसालथंभसालासोहिओ दसदसारमंडवो ।
गिरिदुवारे य पंचमो हरी दामोअरो सुवण्णरेहानईपारे बट्टइ । कालमेहसमीवे
चिराणुवत्ता संघस्स वोलाविआ । तेजपालमंतिणा मिल्हाविआ । कमेण
उज्जयंतसेले वत्थुपालमंतिणा सित्तुज्जावयारभवणं अट्ठावयसंमेअमंडवो कव-
डिजक्कमरुदेविपासाया य काराविआ । तेजपालमंतिणा कल्लाणत्तयचेइअं,
इंदमंडवो अ देपालमंतिणा उद्धाराविओ । एरावणगयपयमुद्दाअलंकिअं गइंद-
पयकुंडं अच्छइ । तत्थ अंगं परकालित्ता दुक्काण जलंजलिं दिति जत्तागय-
लोआ । छत्तसिलाकडणीए सहस्संववणारामो, जत्थ भगवओ जायवकुलपई-
यस्स सिवासमुद्दविजयनंदणस्स दिक्कानाणनिब्बाणकल्लाणयाइं संजाआइं । गि-
रिसिहरे चडित्ता अंविआदेवीए भवणं दीसइ । तत्तो अवलोअणं सिहरं । तत्थ-
ट्टिएहिं किर दसदिसाओ नेमिसामी अवलोइज्जति । तओ पढमसिहरे संबकु-
मारो वीअसिहरे पज्जुण्णो । इत्थ पच्चए ठाणे ठाणे चेइएसु रयणसुवण्णमय-
जिणविवाइं निच्चन्द्विअच्चिआइं दीसंति । सुवण्णमेयणी अ अणेगघाउरसमे-
इणी दिप्पंती दीसइ । रत्तिं च दीवउव्व पज्जलंतीओ ओसहीओ अवलोइज्जंति ।
नाणाविहतुरुवरवल्लिदलपुप्फफलाइं पए पए उवलब्भंति । अणवरयपझरंतनि-
ब्बरणाणं खलहलारावा य मत्तकोयलभमरझंकारा य सुचंति त्ति ।

उज्जयंतमहातित्थकप्पसेसलवो इमो ।

जिणप्पहमुणिदेहिं लिहिओत्थ जहासुअं ॥

श्रीरैवतकल्पः समाप्तः

APPENDIX VI

अम्बिकादेवीकल्पः

सिरिउज्जयंतसिहरसेहरं पणमिऊण नेमिजिणं ।

कोहंडिदेविकप्पं लिहामि बुद्धोचएसाओ ॥

अत्थि सुरट्ठाविसये धणकणयसंपयजणसमिद्धं कोडीनारं नाम नयरं ।
तत्थ सोमो नाम रिद्धिसमिद्धो छक्कम्मपरायणो वेयागमपारगमो वंभणो
हुत्था । तस्स घरिणी अंबिणी नाम महग्घसीलालंकारभूसियसरीरा आसि ।
तेसि विसयसुहमणुहवंताणं उप्पन्ना दुवे पुत्ता पढमो सिद्धो वीओ बुद्धु त्ति ।
अत्तया समागए पिअरपक्के भट्टसोमेणं निमंतिआ वंभणा सद्धदिणे । कत्थ
वि ते वेयमुच्चारन्ति, कत्थ वि आढवन्ति पिण्डपयाणं, कत्थ वि होमं करिति
वइसदेवं च । सम्पाडिआ सालिदालिवंजणपक्कम्मेअखीरखण्डपमुहा जेमणा ।
अविणीए असासुआ प्हाणं काउं पयट्ठा । तम्मि अवसरे एगो साह मासोवयास-
पारणए भिक्खुत्ता संपत्तो । तं पलोइत्ता हरिसभरनिम्भरपुलहंगी उट्ठिआ
अंबिणी । पडिलाभिओ तीए मुणिवरो भत्तिवहुमाणपुब्बं अहापवित्तेहि भत्त-
पाणेहि । जाव गहिअभिको साह वलिओ ताव सासुआ वि प्हाऊण रसवई-
ठाणमागया । न पिच्छइ पढमसिहं । तओ तीए कुविआए पुट्ठा वहुआ ।
तीए जहट्टिए बुत्ते अंवाडिआ सा अज्जूए । जहा पावे किमेवं तए कयं,
अज्ज वि देवया न पहुँआ अज्ज वि न भुंज्जाविआ यिप्पा अज्ज वि न भरिआहं
पिडाहं अग्गसिहा तए किमत्थं साहुणो दिन्ना । तउ तीए भणिओ सच्चो वि
वइअरो सोमभट्टस्स । तेण संग्घेण अप्पच्छंदिअ त्ति निकालिआ गिहाओ ।
सा पडिभवद्मिआ सिद्धं करंगुलीए धरित्ता बुद्धं च कडीए चटावित्ता
यलिआ नयराओ वाहिं । पंथे तिसाभिभूएहिं दारएहिं जलं मग्गिआ । जाय
सा अंसुजलपुन्नलोअणा संवुत्ता ताव पुरओ ठिअं सुक्कसरोवरं तिस्सा अणग्गेणं
सीलमाहप्पेणं तरुणं जलधूरिअं जायं । पाइआ दोघि सीअलं नीरं । तओ
छुहिणहिं भोअणं मग्गिआ वालएहिं । पुरओ सुक्कसद्यारतरु तरुणं फलि-
ओ । दिन्नाहं फलाहं । अविणीए तेसि जाया ते सुत्था । जाय सा चूअट्ठायाए
वीसमइ ताव जं जायं तं निसामेह अंतीए वालयाई पढमं जेमाविआ तेमि भुत्तु-
तरं पत्तलीओ तीए वाहिं उज्झिआओ आसि ताओ सीलमाहप्पाकंपिअमणाए
सासणदेवयाए सोवन्नरुओलयस्वाओ कयाओ । जे अ उचिट्ठसित्थरुणा
भूमोए पडिआ ते मुत्तिआहं मंपाईआई । अग्गमिहा य सिहरेसु तहेव

दंसिआ । एअमचञ्चुअं सासुए दद्वण निवेईअं सोमविप्पस्स सिद्धं च जहा
 वच्छ सुलक्षणा पइव्वया य एसा बहू ता पचाणोहिं एअं कुलहरं ति जणणीपे-
 रिओ पच्छायावानलडज्झंतमाणसो गओ बहुयं वालेउं सोमभट्ठो । तीए पिट्ठओ
 आगच्छन्ते दिअवरं निअवरं दद्वण दिसाओ पलोईआओ । दिट्ठओ अग्गओ
 मग्गकूवओ । तओ जिणवरं मणे अणुसरिज्जण सुपत्तदाणं अणुमोअंतीए अप्पा
 क्वंमि झंपाविओ । सुहज्जवसाणेण पाणे चइज्जण ऊप्पन्ना कोहंडविमाणे
 सोहम्मकप्पहिंटे चउहिं जोअणेहिं अंवीअदेवी नाम महद्धिआ देवी । विमाणना-
 मेणं कोहंडी वि भट्ठइ । सोमभट्ठेण वि तीसे महासईए कूवे पडणं दद्वं अप्पा
 तत्थेय झंपाविओ । सो अ मरिज्जण तत्थेय जाओ देवो । आभिओगिअकम्मुणा
 सिद्धरूवं विउव्वित्ता तीए चेव वाहणं जाओ । अत्ते भणंति अंविणी
 रेवयसिहराओ अप्पाणं झंपावित्ता तप्पिट्ठओ सोमभट्ठो वि तद्देव मओ ।
 सेसं तं चेव । सा य भगवई चउव्वुआ दाहिणहत्थेसु अंबलुंवि पासं च
 धारेइ वामहत्थेसु पुण पुत्तं अंकुसं च धारेइ उत्तत्तकणयसवण्णं च वण्ण-
 मुव्वहइ सरीरे । सिरिनेमिनाहस्स सासणदेशय त्ति नियसइ रेवइगिरिसिहरं ।
 मउडकुंडलमुत्ताहलहाररयणकंकणनेउराइसव्वंगीणाभरणमणिज्जा पूरेइ सम्म-
 दिट्ठीण मणोरहे निवारेइ विग्गसंघायं । तीए मंतमंडलाईणि आरोहित्ताणं
 भविआणं दीसंति अणेगरूवाओ रिद्धिसिद्धिओ, न पद्वंति भूअपिसायसा-
 इणीविसमग्गहा, संपज्जंति पुत्तकलत्तमित्तघणघत्तरज्जसिरिओ त्ति ।

अंविआमंता इमे ।

यययीअसकुलकुलजलहरिद्वयअकंनपेआइं ।

पणइणिथापावसिओ अंविअदेवीइ अह मंतो ॥ १ ॥

धुचभुवणदेवि संवुद्धिपासअंकुसतिलोअपंचसरा ।

णहसिद्धिकुलकलअज्झासिधमायापरपणामपयं ॥ २ ॥

वायुव्वयं तिलोअं पात्तसिणीहाउ तद्वअवत्तस्स ।

कूहंडअंविआए नमु त्ति आराहणामंतो ॥ ३ ॥

एवं अत्ते वि अंवादेवीमंता अप्पपररक्ता वि सया सुरमणा जुग्गा मग्ग-
 सेमाइओअरा य वद्वो चिट्ठंति । तेअ तहा मंडलाणि अ इत्थ न भणिआणि
 गंधवित्थरभएणं ति गुम्मुहाओ नायव्वाणि ।

एअं अंविपदेवीकप्पं अविअप्पचित्तविचीणं ।

यापंतसुणंताणं पुज्जंति समीहिआ अत्था ॥ १ ॥

इति श्रीअंविआदेवीकल्पः ।

APPENDIX VII.

श्रीगिरिनास्कल्पः ।



वरधर्मकीर्तिविद्यानन्दमयो यत्र विनतदेवेन्द्रः ।
 स्वस्तिश्रीनेमिरसौ गिरिनारगिरीश्वरो जयति ॥ १ ॥
 नेमिजिनो यदुराजीमतीत्य राजीमतीत्यजनतो यम् ।
 शिश्राय शिवायासौ गिरि० ॥ २ ॥
 स्वामी छत्रशिलान्ते प्रब्रज्य यदुच्चशिरसि चक्राणः ।
 ब्रह्मावलोकनमसौ गिरि० ॥ ३ ॥
 यत्र सहस्राव्रचणे केवलमाप्यादिशब्दिभुर्धर्मम् ।
 लक्षारामे सोऽयं गिरि० ॥ ४ ॥
 निर्वृतिनितम्बिनोवरनितम्बसुखमाप यन्नितम्बस्थः ।
 श्रीपदुकुलतिलकोऽयं गिरि० ॥ ५ ॥
 बुद्धा कल्याणत्रयमिह कृष्णो रूप्यरूपममणिविम्बम् ।
 चैत्यत्रयमकृताऽयं गिरि० ॥ ६ ॥
 पविना हरिर्यदन्तर्विधाय विवरं व्यधाद्रजतचैत्यम् ।
 काश्चनवलानकमयं गिरि० ॥ ७ ॥
 तन्मध्ये रत्नमयीं प्रमाणवर्णान्वितां चकार हरिः ।
 श्रीनेमेर्मूर्त्तिमसौ गिरि० ॥ ८ ॥
 स्वकूनैतद्विम्बयुतं हरिर्त्रिविम्बं सुराः समवसरणे ।
 न्यदधन्त यदन्तरसौ गिरि० ॥ ९ ॥
 शिखरोपरि यन्नाम्बाऽवलोकनशिरसि रङ्गमण्डपके ।
 शम्भो बलानकेऽसौ गिरि० ॥ १० ॥
 यत्र प्रद्युम्नपुरः सिद्धिविनायकसुरः प्रतीहारः ।
 चिन्तितसिद्धिकरोऽसौ गिरि० ॥ ११ ॥
 तत्प्रतिरूपं चैत्यं पूर्वाभिमुखं तु निर्वृतिस्थाने ।
 यत्र हरिश्चक्रोऽसौ गिरि० ॥ १२ ॥
 तीर्थेतिस्मरणाद् यत्र यादवाः सप्त कालमेवाद्याः ।
 क्षेत्रपतामापुरसौ गिरि० ॥ १३ ॥

विभुमर्चति मेघरवो धलानकं गिरिविदारणश्चक्रे ।
 यत्र चतुर्द्वारमसौ गिरि० ॥ १४ ॥
 यत्र सहस्राग्रवणांतरस्ति रम्या सुवर्णचैल्यानाम् ।
 चतुरधिकविंशतिरयं गिरि० ॥ १५ ॥
 द्वाप्तसतिर्जिनानां लक्षारामेऽस्ति यत्र तु गुहायाम् ।
 सचतुर्विंशतिक्रासौ गिरि० ॥ १६ ॥
 वर्षसहस्रद्वितयं प्रावर्त्तत यत्र किल शिवास्तनोः ।
 लेप्यमयी प्रतिमासौ गिरि० ॥ १७ ॥
 लेपगमेऽन्वादेशात्प्रभुचैत्यं यत्र पश्चिमाभिमुखम् ।
 रत्नोऽस्थापयतासौ गिरि० ॥ १८ ॥
 काञ्चनबलानकान्तः समवसृतेस्तन्तुनेह विम्बमिदम् ।
 रत्नेनानीतमसौ गिरि० ॥ १९ ॥
 बौद्धनिपिद्धः सङ्घो नेमिनतौ यत्र मन्त्रगगनगतिम् ।
 जयचन्द्रमादिशदसौ गिरि० ॥ २० ॥
 तारां विजित्य बौद्धाग्निहत्य देवानवन्दयत्संघम् ।
 जयचन्द्रो यत्रायं गिरि० ॥ २१ ॥
 नृपपुरतः क्षपणेभ्यः कुमार्युदितगाथयाम्बपार्ष्यत यः ।
 श्रीसङ्घाय सदायं गिरि० ॥ २२ ॥
 निलानुष्ठानान्तस्ततोऽनुसमयं समस्तसङ्गेन ।
 यः पठ्यतेऽनिशमसौ गिरि० ॥ २३ ॥
 दीक्षाज्ञानध्यानव्याख्यानशिवावलोकनस्थाने ।
 प्रभुचैत्यपावितोऽसौ गिरि० ॥ २४ ॥
 राजीमतोचन्द्रदरीगजेन्द्रपदकुण्डनागझर्यादौ ।
 यः प्रभुमूर्त्तियुतोऽयं गिरि० ॥ २५ ॥
 छत्राक्षरघण्टाञ्जनविन्दुशिवशिलादि यत्रहार्पस्ति ।
 कल्याणकारणमयं गिरि० ॥ २६ ॥
 पाकुड्वमात्यसञ्जनदण्डेशाद्या अपि व्यधुर्यत्र ।
 नेमिभवनोद्धृतिमसौ गिरि० ॥ २७ ॥
 कल्याणत्रयचैत्यं तेजःपालो न्यवीविशन्मन्त्री ।
 यन्मोखलागतमसौ गिरि० ॥ २८ ॥

शत्रुञ्जयसम्मिताष्टापदतीर्थानि वस्तुपालस्तु ।
 यत्र न्यवेशयदसौ गिरि० ॥ २९ ॥
 यः पङ्क्तिविंशतिविंशतिषोडशदशकद्विषोजनाऽस्त्रशतम् ।
 अरपट्क उच्छिन्नोऽयं गिरि० ॥ ३० ॥
 अद्यापि सावधाना विदधाना यत्र गीतनृत्यादि ।
 देवाः श्रूयन्तेऽसौ गिरि० ॥ ३१ ॥
 विद्याप्राप्तकोद्धृतपादलिप्तकृतोज्ज्वलकल्पादेः ।
 इति वर्णितो मयाऽसौ गिरिनारगिरीश्वरो जयति ॥ ३२ ॥
 इति श्रीधर्मयोफसुरिकृत श्रीगिरिनारकल्प ।

APPENDIX VIII

Inscription of the reign of Alapkhan in the temple of Sthambhana Pārsvanātha at Cambay.

ॐ अहं संवत् १३६६ वर्षे प्रतापाक्रान्तमृतलश्रीअलावदीनसुरब्राण-
प्रतिशरीरश्रीअल्पखानविजयराज्ये श्रीस्तंभतीर्थे श्रीसुधर्मास्वामिसंताननभो-
नभोमणिसुविहितचूडामणिप्रभुश्रीजिनेश्वरसरिपट्टालंकारप्रभुश्रीजिनप्रबोधसु-
रिशिष्यचूडामणियुगप्रधानप्रभुश्रीजिनचंद्रसरिसुगुरूपदेशेन ज्जेशवंशीयसा-
हजिनदेवसाहसहदेवकुलमंडनस्य श्रीजेसलमेरौ श्रीपार्श्वनाथविधिचैत्यकारित-
श्रीसम्मेतशिखरप्रासादस्य साहजैसवस्य पुत्ररत्नेन श्रीस्तंभतीर्थे निर्मापितस-
कलस्वपक्षपरपक्षचमत्कारिनानाविधमार्गणलोकदारिद्र्यमुद्रापहारिगुणरत्नाकर-
स्य गुरुगुर्तरपुरप्रवेशकमहोत्सवेन संपादितश्रीशत्रुंजयोज्जयंतमहातीर्थयात्रा-
समुपाजितपुण्यप्राग्भारेण श्रीपत्तनसंस्थापितकोदण्डिकालंकारश्रीशांतिनाथवि-
धिचैत्यालयश्रीश्रावकपौषधशालाकारापणोपचितप्रसूमरयशःसंभारेण भ्रातृ-
साहराजुदेवसाहबोलियसाहजेहडसाहलपपतिसाहगुणधरपुत्ररत्नसाहजयसिं-
हसाहजगधरसाहसलपणसाहरत्नसिंहप्रमुखपरिवारसारेण श्रीजिनशासनप्र-
भावकेण सकलसाधर्मिकवत्सलेन साहजेसलसुश्रावकेण कोदण्डिकास्थापनपूर्वं
श्रीश्रावकपौषधशालासहितः सकलविधिलक्ष्मीविलासालयः श्रीअजितस्वामि-
देवविधिचैत्यालयः कारित आचन्द्रार्कं यावन्नंदतात् ॥ शुभमस्तु । श्रीभूयात्
श्रमणसंगस्य । श्रीः ।

APPENDIX IX

Inscriptions on the Satrunjaya Hill pertaining Samarā's installation of the image of Ādiśvara.

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि सोमे श्रीमद्वैश्वंशे वेसटगोत्रीयसा०
सलपणपुत्रसा० आजडतनयसा० गोसलभार्यागुणमतीकुक्षिसंभवेन संघपति-
आशाधरानुजेन सा० लुणसीहाग्रजेन संघपतिसाधुश्रीदेसलेन पुत्रसा० सहज-
पालसा० साहणपालसा० सामंतसा० समरसा० सांगणप्रमुखकुटुम्बसमुदायोपेतेन
निजकुलदेवी (सच्चि) कामूर्तिः करिता । यावद्योमनि चंद्राकौ यावन्मेरुर्न-
हीतले । तावत् श्री (सच्च) का मूर्तिः....

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि १४ सोमे.... ज्ञातीयराणकश्रीमहीपाल-
देवमूर्तिः.... संघपतिश्रीदेसलेन कारिता श्रीयुगादिदेवचैत्यालये ।

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि १४ सोमे श्रीमद्वैश्वंशे वेसटगोत्रे सा०
सलपणपुत्रसा० आजडतनयसा० गोसलभार्यासा० गुणमतिकुक्षिसम्भूतेन संघ-
पतिसा० आशाधरानुजेन सा० लुणसीहाग्रजेन संघपतिसाधुश्रीदेसलेन सा०
सहजपालसा० साहणपालसा० सामंतसा० समरसीहसा० सांगणसा० सोमप्रभृ-
तिकुटुम्बसमुदायोपेतेन वृद्धभ्रातृसंघपतिआशाधरमूर्तिः श्रेष्ठिमाढलपुत्रीसं-
घ० रत्नश्रीमूर्तिसमन्विता कारिता । आशाधरः कल्पतरुब्रह्मोयमाशात्रिकं
पूरित..... । लंकृतबाहुयुगो युगादिदेवं प्रयतः प्रणौति ॥ चिरं नंदतात् ॥
॥ शुभं भवतु ॥

संवत् १४१४ वर्षे वैशाखसु १० गुरौ संघपतिदेसलसुतसा० समरस-
मरश्रीयुग्मं सा० सालिगसा० सज्जनसिंहाभ्यां कारितं । प्रतिष्ठितं श्रीकृष्णसूरि-
शिष्यैः श्रीदेवगुप्तसूरिभिः । शुभं भवतु ॥

APPENDIX X

पेथडरासः

विणयवयणि धीनवडं देवि सामिणि वागेसरि
हंसगमणि आकाशभमणि तिहूयणि परमेसरि ।
वीरजिणिदह नमीय चलण चउविहुश्रीसंधिहिं
कवडजक जकाधिराज समरीय मनरंगिहिं ॥ १ ॥
कोडीयनघरनिवासिणी य वंदुं अंविकदेवि ।
शासनदेवति मनि धरीय गुरुचलण नमेवि ॥ २ ॥
रास रमेवउ जिणभुवणि तालमेल ठवि पाउ ।
संघतलायन रोपीउ ए सभगिरि विभगिरि वेवि ॥ ३ ॥
निसुणउ धामी एकमनि महीयलिमज्झि पहाण ।
जास बोध निरचमतिलउ पेथ अगंजीयमाण ॥ ४ ॥
पिण एक तस गुण संभलउ संघपति साहसधीर ।
अकलीअ कलि जिम छेत्रीअ गरुड सुहिर गंभीर ॥ ५ ॥
पोरुआडकुलिमंडणउ वर्द्धमाणकुलिलीह ।
चांडसीहकुलि अवतरीया पेथपमुह सुतसीह ॥ ६ ॥
जिम कंचण कसवटीयए पामिउ बहुगुणरेह ।
बंधवि पेथपरीपीयइ बहूअ कालि धरि एह ॥ ७ ॥
बइसीय पेथड पाटे बंधव बोलावइ
नरसीहरतनह कारे मनि मंत्र चलावइ ।
मणूयजन्म अतिदुलह अनइ श्रावयजम्म
जीव लहइ बहुपुण्य जगि जिणवरधम्म ॥ ८ ॥
घणकणरयणभंडार ते सवि अछइ य असार ।
संचइ मोहनबंध ते सवि जाणे गमार ॥ ९ ॥
लाछितणउ जउ गरव करेई लीजइ राउल छल ह धरेई ।
मणूयजनम हवं सफल करीजइ जीविपयौवनलाहउ लीजइ ॥ १० ॥
अधिरलाछि किम धिर ह करीजइ जिणह धंम तस ऊपम दीजइ ।
सेतुजि रिसहसामि बंदीजइ विविहप्रकारिहं प्रभु पूजीजइ ॥ ११ ॥

मिलि बंधवि कीयउ वयण प्रमाण एकचित्ति सवि समाण जाण ।
साते बंधवि कीयउ विचार सविहुं काजि लिउ नरसीअ भार ॥ १२ ॥
धम्मीय निसुणउ लोयमज्झि संघतणउ समाहउ भवीअणउ

आणुंअ दीजइ भत्तिजत्ति भवीया लहइ लाहउ धणकणउ ।
पेलसि रुलीयइ रंगि रास हवं नवरस नवरंग नवीयपरे
सुणि सामहणी संघतणी जो करइ निरंतर घरेहिं घरे ॥ १३ ॥

जोइन देवालउं सामुहिउं तीहं माहि सुरेसर जिण ठवीय ।
देसदेसाउर वरनघर तिहिं लेवि कंकोत्री पाठवीय ॥ १४ ॥
पाठणि पइसीय सामति तहिं कर्णनरेसर भेटीय बीनवीउ ।
तीरथजात्र जायवउं देव तहिं देसवटउ सपसाउ कीउ ॥ १५ ॥
तहिं वेणि लेउ पण आवीउ ए सयलसंघ तहिं हरसीय नीयमणि
नयर पसाइरउ कीयउ तक्खणि तहिं नाचइं कुतिगकुतिगीयां ।
घरि घरि बइसीय लोय मनावीय साजणसाहसरिस संम्हावी गामागर-
पुरपाटणह ॥ १६ ॥

दूसमसमइ अहि जिम तिरीयु तारणतरंड रिसह मनि घरीय फल
लीजइ जनमहतणउं ।

एकभावि नर जिणह धम्म परिरिहवरकलीय रमाउलीय ॥ १७ ॥
केवि कुतिग नर जोइं निरंतर भलां भलेरां अतिहिं वहिला कपभवर ।
कामिणि धामिणि धवल दियंती गायंती गुण जिणवरह ।
अतिऊमाहु जात्र समाहउ करीयल कंनि सुणंतीहं य ॥ १८ ॥
ते चउरा रुडा तडयां ताडी नवानवेरां दीसइं मेहणमण सघण ।
ते घणाघणेरा समविसमेरा संखि न दीसइं असंखि पुण ॥ १९ ॥

देवालइ वालीय नयणि विसालीय दिंतीय ताली रंगि फिरंती हरिसभरे ।
तहिं नाचइं खेला बहुयत वेला बाला भोला लउडा रसि रमइं ॥ २० ॥
अतिरंगिं पूरी दिता भमरी नवपरि नयरंगइ तिघसपरे ।

परममहोच्छव कीउ देवालइ फागुणपंचमि बीतसीयालइ प्रस्थानं कीयं
पवरदिणि ॥ २१ ॥

संघपत्ति सोहउदेउ बीनवीई तीरथजात्र जाइयउं गोसामीय ।
सेलहुत सीपामणह बहुय परघउ पणवि रहावीय ।
बहथमल्ल लेउ पत्तनि आवीय संघ देवालइन रोपीउ ए ॥ २२ ॥

संघपूज तिहां कीधउं अवारी भोयण सयल लोय सविं पूरीय
महोच्छव कारवीय ॥ २३ ॥

लढण ॥ कागुणदसमि दिणंद चलीय संघ दहदिसितणउ ।

हसमस धसमस जोइ मिलीय लोक पण अतिघणउ ए ॥ २४ ॥

वहतमल्ल अगेवाण तुरीय ठाठ जोइ पापरीय ।

पुलेहिं पलाण जोइ इकि देवालइ फिरीय ॥ २५ ॥

पहिलउं दीधी लागि जोइन देवालां संचरइ ए ।

अचंड पीयाणे जाइ पहिलउं पीलूयाणइ रहीष ॥ २६ ॥

चलीय संघसंजुत्त पहुतउ वेगि डाभलनयरे ।

तींहं दीन्हा वास भास रास क्लीयामणां ए ।

देवालइ उछाहु चैत्रप्रवाडि सोहामणी ए ॥ २७ ॥

वडराउत वपाणि करणराउ मनि सलहीइ ए ।

देद दयापरजाम वील्हणवंस वपाणीइ ए ॥ २८ ॥

पहुतउ देवालइ तोइ हरसीय संघ प्रसंसीइ ए ।

पेथडसमउ न कोइ मारगि मन तुम्हि वीहिसिउ ए ॥ २९ ॥

दीन्ह पीयाणउं तोइ मयगलपरि तुम्हि संचरीय ।

वेगि पहुता तोइ नयरमाहि ते तरवरीय ॥ ३० ॥

आंगणि दीन्हा वास देवालां पापलि फिरीय ।

भविंया पणमउ पास जिणह भूयण क्लीयामणउं ।

कीधीय चैत्रप्रवाडि देवदेवांगणि पेपणउं ए ॥ ३१ ॥

संघह कीउं वत्सल्ल धम्मी नागलपुरतणे ए ।

चलीय पीयाणइ जाम मारगि माग न जाणीइ ए ॥ ३२ ॥

सहू यालइ गीयं ताम संघपति पेथ वपाणीइ ए ।

नयणि निहालइ लोक पृणधवंत धनवंत तहिं ॥ ३३ ॥

पूजीया जिणभूयणाइं भविंया मणोरह चित्ति घरे ।

कीउं पीयाणउं भावि आवलीयछीतीयहारि तहिं ॥ ३४ ॥

पेथावाडइ जाइ भेटीय मंडणदेव तहिं ।

लायउं मानप्रमाण सीकिरि आवइं गुणपयरो ॥ ३५ ॥

भयु मनि करिवउ तुम्हि मारगि जाउ तम्हि ।

गिया ते जंबू जाम संघह पार न पामीय ए ।

भेटीय झलु ताम पणवि पीयाणउं धामीयहं ॥ ३६ ॥
 भडकूण आवास गोहिलसंडउ धरीय मनि ।
 बहुगुणवंत सुजाण राण पहतउ तेण खणि ॥ ३७ ॥
 संघह दीन्ही धीर चलीय संघपति एकमनि ।
 राणपुरे संपत्त संघ कनालइन रहइ ए ॥ ३८ ॥
 चलीय सरीस उपराण वसहसंड संघपति भणइ ए ।
 मइं मन मेलिह निरास प्राण राणहूं मन हरेसो ॥ ३९ ॥
 चइठउ संघपतिपासि रंजीय क्लीयायत हरिसे ।
 गुणगुणउ मुवराउ लोलीयाणपुरसइं घणीय ॥ ४० ॥
 धरउ धर्मनउ ठाउ भवीय भाविं तीणइ वह भणीय ।
 दीन्ह पीयाणनीयाण उपरिं पीपलाइभणीय ।
 चउरा दीन्ह विहाण डूंगरा देपीय मनि क्लीय ॥ ४१ ॥

दीठउ डूंगर दूरिथियां चडीय सरोवरपाले ।
 संघपति दइं वधामणी हरिपीऊ ए हरिपीऊ ए हरिपीउ नयणि निहाले ॥ ४२ ॥
 कुंकुमि च्छडउ दिवारीउ ए तहिं पाथरीया पाट ।
 चाउलि चउक पूरावीउ ए सपरिपरे सपरिपरे सपरि पढइं बहुभट ॥ ४३ ॥
 पढइं भाट संघपति निसुणि पेयड पुण्यपवित्त
 चंडसीहधरि अचतरीउ गुरुदेवे गुरुदेवे गुरुदेवे सुय सत्त ।
 थापीउ डूंगर पण तिलउ फूलपगर ते चंग
 पाउल नाचइं रंगभर गायंती ए गायंती ए गायंती मनह सरंग ॥ ४४ ॥
 कापड कंचण दिन्ह तहिं बहुगुण पूरी आस ।
 संघपति करइ वधामणउं चलीऊ ए चलीऊ ए चलीउ पालीयताणइ वास ॥ ४५ ॥
 गंगाजल जिम निर्मलउं ललतासर सुपवित्त ।
 सीधपेव तीरथतिलउ तिससयरे तिससयरे तिससयरे संपत्त ॥ ४६ ॥
 मन्देवि सामिणि पय नमीय संतिनाह सुरराउ ।
 पालितसुरमितिष्ठिउ ए सोलमू ए सोलमू ए सोलमउ जिणराउ ॥ ४७ ॥
 डूंगरसिरि जे पाहरीय कवडिजकवडिहारो ।
 संघ जि सांनिध सो करइ पहिलं ए पहिलं ए पहिलं पास जुहारे ॥ ४८ ॥
 अणुधम सर देषेवि तहिं पट्टा पालिदयारि ।
 सरगारोहण दिट्ट तहिं अहिणय ए अहिणय ए अहिणय ईणं संसार ॥ ४९ ॥

अष्टापद अवलोइई ए इंद्रमंडप अतिचंग ।

नंदीसर अहिणव तहि देपीऊ ए देपीऊ ए देपीउ मनिहि सुरंग ॥ ५० ॥

मंडपि पहुतउ पवित्र तहि लोदींगणां करेउ ।

पणमीय सामीय रिसहजिण तिन्नि प्रदक्षिण तिन्निप्रदक्षिण तिन्नि प्रदक्षिण
देउ ॥ ५१ ॥

दीठल्ला पदमहकमल निम्मल युगादि जिण पयठला सामी पढमजिण विम-
लगिरे ।

भवीयच्छुणंत सामी लागल्ला तम्ह वइं नामिं नमो य नमो नमो सेवुजसिहरो५२

वायवद्धामणउं अतिहिं सोहामणुं रिसहभूअणि कलीआम्णं ए

भवीयजन कलस कंचणमय मंडियले ए दुक्ख जलंजलि देयंति कुसुमंजले ॥

धुणंति दीणरीण जीण उत्तारंति जललवणनम्हण करंति सामी सुगंधजले ॥

कपूरिपूरि पूरीय तिणि कीय लि मृगनाभिमंडण त्रिजगगुरु

गुणनिलउ देवाधिदेव जोउ वेलचउ सेवत्रीपाडल पहल कुसुम परमल त्रिपुल
पूजहे । वायवद्धामणं ॥

भवीयमणि बहआणंदि आरती उत्तारइ जिणिंद पढइं भट्ट मंगलिक रिसह-
सामि ।

तिलक भलउ लि कीय ले कंठि वरमाला ठविय ले चाउलि सिरि बद्धावीय लि ।
धन धामी बद्धामणउं ॥

भवीयजण रंजिय मनि दियंति ते दीण दुधीय जण मग्गण दाणु

नचंति नवनवी रमणि वीणवंसमृदंगमणि तिवट्ठि तालनिनाद सुणि पूरीय
भवण । वाइवद्धामणुं ॥

आय कि रिसहेसर तम्ह परमेसर सामीसाल चिरकालि सुखिवर ।

तम्हची पाय ए कमलममर भविक जन जयउ जगनाथ तुं जगतगुरो ॥ वाय-
वद्धाम ॥

अग्वंडकोडाकोडि सिद्धि ले तीथयर गोत्र बंधीय ले पूजीयु हरिसह मनि मन
मिलीउ ।

आयस मग्गीय जब चलीय पूरीय संघ मल्लीय मनि निचंतीय पेथटकंठि टो-
डर ढलीउ । वायवद्धामणं ॥

आयस मग्गीय पेथ ज चलीउ ढलीय टोडर संघपति मोकलावए

सयलसंघो पहत पालीताणए घरि घरि साहमीवच्छल कारण ।

वावीय विस तिहि सयलसिद्धिक्षेत्रे जन्मफल लेउ जो बहुधणवतइं रूपावटी
चलीय पीयाणए ।

वडउ संघातिपति लोक वखाणए सेलटीया संघ पहत तहि चलयउ अखंड
पीआणए ।

जाइ अमरेलीयपीयाणए पहतउ वेगि तहि पण विक्रीयाणए विसमगिरि लं-
वीयउ पूरि मनि आसह ॥

तेजलपुरि अंगणि दीन्हा वास उग्रसेनमंदिरु दीठ पगार अयनरकचि भणइं
गढवि खइंगार ।

गरुअउ दीसए पोःपगार नरपम नरसीअ नरआधार ॥

मंडलकि मंडिउ वास तहि विसमए सुरठ वडदेस भोल लोक तहि निवसयए ।
गिरि गुरुउ गिरनार स पसिद्धउ ता लहि दमोदरो देय प्रसिद्धउ वदि सोबन-
रेख नदी जलपूरीय ।

कालमेघो क्षेत्रपाल गिरिपाहरी मंत्रिवाहड वेचि पाज करावीय धवलीय वर
परय तीण करावीय ।

विसम इंगर गुरुउ गिरनारो चटीय नेमिकुमारि लीयउ संजमभारो
दिनि चउपनि घरनाण ऊपजइण जगतिगुरु जिणिह चर तसु सिद्धरे सिज्झण ॥
सीधु सामी सामलउ तसु सिद्धरि संघ पहतउ ऊलठ आंगिहि अतिघणउ देवीउ
राजलकन ! तहि नाचिनए ए सहिलडो ए लला गीय गिरिनारे

राजलिवर रुलिआमणउ सामलडउ संसारो । तहि नाचिनए०॥

अंग पखालि सुगयंदमइ ए जल पहरीय भोति प्रवीत ।

इंद्रमहोत्सव आयरंभी तहि वपठ लि बहुधणयंत । तहि नाचिनए सहि० ॥

इंद्रमालउच्छाह करी जो वेचीय विभव नोयाणि ।

सफलमणोरह पूरीय संघपति चटीयलि इन्द्रविमानि ॥ तहि नाचिनए० ॥

चमरधारि सरतारसवंगी गावंती बहु आसीस ।

सामलसावि किरि संघपति नंदउ वहत यरीस ॥ तहि नाचिनए० ॥

गयंदमइ ए नीरि कलस जलभरीय लि कपूरिहि भंगी महापूज अहिभीम ।

नय कलीय लि आरती उत्तारउ मंगलिक संघपति ईम ॥ तहि ना० ॥

अंकि आस मणोरह पूरी अवलोईय जगन्नाथ

सांवपजन जुहारीय वलीयउ पेथ जन्म सुकीयाथ ॥ तहि नासहललो ए श्ली-
या गइ गिरिनारि ॥

सोमनाथचंदपह वंदीय देखीउ बलीउ जाम

दिउ पीयाणं हिय मन रहिसउ मंडलिक भणइ ईम ॥ तहि ना० ॥

दिउ पीयाणं वेगि तहिं हरीयाला सूटा रे सुरवाहे संपत्त मनीला सूटारे ॥

इति श्रीभागवतवंगमौक्तिकव्यास० पेशवराजः समाप्तः ॥
